

Class → 1#

## हिन्दी

→ 40 प्रश्न → 100 अंक

खण्ड 'क'

त्याकरण

(1) वर्णमाला

(2) सैक्षा

(3) सर्वनाम

(4) विशेषण

(5) क्रिया

(6) अव्यय

(7) संधि

(8) समास

(9) विराम चिन्ह

(10) उपसर्ग

(11) प्रत्यय

(12) वर्ण किन्यास/वर्तनी

खण्ड 'ख'

शब्द/वाक्य

(1) रस, छंद, अंलकार

(2) वाक्य

(3) वाक्य शुद्धि

(4) विलोमार्थी

(5) पर्यायवाची

(6) समञ्जुत भिन्नार्थक शब्द

(7) अनिकार्थी शब्द

(8) मुहावरे/लोकोक्तियाँ

(9) अपठित गद्यांश

(10) लिंग, वचन, काल, कारक

(11) तत्सम्, तद्भव (शब्दरूप)

खण्ड 'ग'

हिन्दी साहित्य

(1) हिन्दी भाषा का इतिहास एवं विकास

(2) प्राचीन रूपों

(3) लेखक, रचनाएँ, पुस्तकार

### अध्याय-1

## वर्णमाला

# वर्णमाला की परिभ्राषा :-

"वर्णों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।"

# अक्षर व वर्ण में अन्तर :-

जो ध्वनि  
मुख से निकल  
कर आकाश में  
प्र्याप्त हो जाती  
है।

मुख से निकली ध्वनि की लिखित रूप  
देना ही 'वर्ण' कहलाता है।

# भाषा की सबसे छोटी लिखित इकाई - वर्ण

# भाषा की सबसे छोटी मौखिक इकाई - ध्वनि

# कुल वर्ण :- 52

11 + 33 + 2 + 4 + 2  
 ↓ ↓ ↓ ↓  
 स्वर व्यंजन और्याग्राह संकृत उत्क्षण  
 व्यंजन

↓ श, षा, द्व, द्व ड, ञ, न्ट, र, रे औ औं	क, ख, ग, घ, ङ च, छ, ज, झ, ञ ट, ठ, ड, ढ, ण त, थ, द, ध, न प, फ, ब, भ, ग य, र, ल, व श, ष, स, ह	अं, अः	क्ष(कृषि) त्र(तु+र) ङ्ग(जु+ग) ञ्च(श्च+र)	डू, ढू डृ, ढृ
--	---	--------	---	------------------

\* केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने → 1985 में

‘देवनागरी लिपि और हिंदी वर्तनी का मानकीकरण जारी कराया।’

\* अन्तर्राष्ट्रीय अंक → १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०

\* देवनागरी अंक → १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०

### स्वर-:

परिभाषा - वे वर्ण जिनका उच्चारण स्वतंत्र (विना रूकावट) रूप से होता है।  
 आं, इं, ऊ आदि

### व्यंजन-:

परिभाषा - वे वर्ण जो स्वतंत्र रूप से नहीं बोले जाते हैं। अर्थात् स्वरों की सहायता से उच्चारित होते हैं।  
 औंसि - क → कु+अ  
 ख → खु+अ  
 ग → गु+अ  
 ड → डु+अ

लिपि - किसी भाषा की लिखने का तरीका।  
 हिंदी भाषा की लिपि  
 ↳ देवनागरी  
 (नागरी)

# ROJGAR WITH ANKIT

क → कूर्ण  
क  
(आधा) → यदि हलन्त लगा है, तो प्रकृति में अद्वृत रूप है।

- ज → जू+अ  
जा → जू+आ  
जी → जू+ई  
जे → जू+इ  
जु → जू+उ  
जू → जू+ऊ  
जू → जू+ऋ  
जौ → जू+ए  
जौ → जू+ऐ  
जौ → जू+ओ  
जौ → जू+औ  
रु → रु+उ (रुपया)  
रु → रु+ऊ (रुपवान)

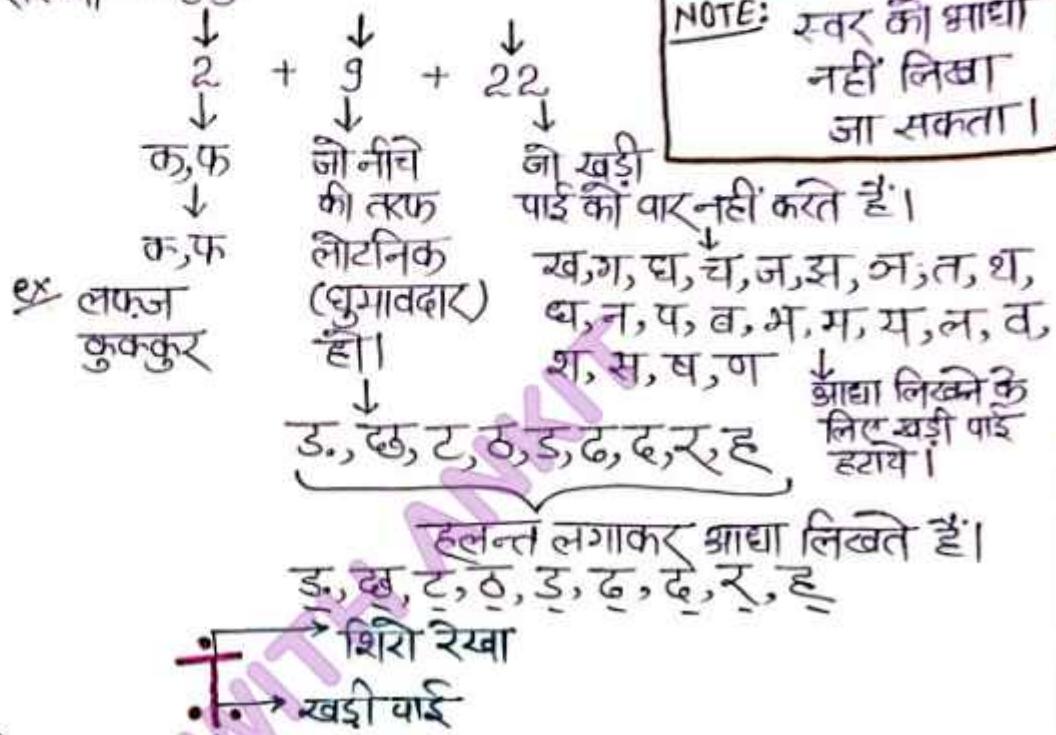
Class → 2 :-

\* वर्णमाला \*

PART-2

⇒ व्यंजनों को आधा लिखने का तरीका :-  
व्यंजनों की कुल संख्या → 33

⇒ **T, श्वः संयुक्त**



**# बिंदु लगाने का तरीका :-**

- (1) T → पंचमाक्षर → ड.
- (2) त् → क़, ख्, श्, ज्, फ् → अरबी फारसी के शब्द  
→ नुज्जता
- (3) ठ् → अनुस्वार → यंप्, आउंबर्, हलंत्, शंकर्, दंड्, मंगल, छंख  
→ पम्प्, आइम्बर्, हलन्त्, शड्.कर्, दण्ड्, मड्.गल
- (4) त् → अतिक्षण/ताड़नजात/द्विगुण  
→ डु ठु डु ठु

→ 5 नियम जिनमें अतिक्षण का प्रयोग नहीं होगा :-

- (1) किसी शब्द की शुरूआत में अतिक्षण नहीं होगा → अरू, ढीलू, छक्कल
- (2) अंग्रेजी के शब्दों में नहीं होगा → रोड, बोर्ड, मूड, ग्राउण्ड, रिकार्डि
- (3) द्वितीय व्यंजन में नहीं होगा → हड्डी, टिड्डी, उड़ायन, कबड्डी
- (4) असर्ग यदि है, तो नहीं प्रयोग होगा → निउर
- (5) ड/ठ के तुरंत पहले या तुरंत बाद अनुस्वार हो, तो नहीं प्रयोग होगा  
→ आउंबर्, ग्लाउंड

इरपोक्ट → अतिक्षण होगा या नहीं

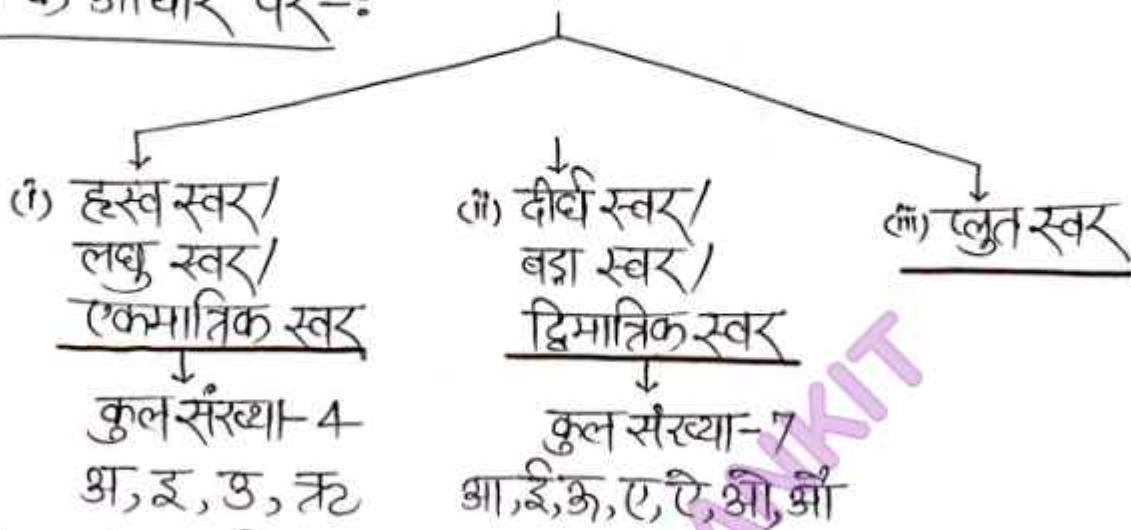
HW

Class→3#.

\* वर्णमाला \*  
PART-3

स्वरों का वर्गीकरण-: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ओ, औ

(1) मात्रा के आधार पर-:



- हृस्व/लघु/एकमात्रिक स्वर-: जिसके उच्चारण में जम समय लगे अ, इ, उ, ऋ (दर्शन चिन्ह-: ।)
- दीर्घ/द्विमात्रिक स्वर-: जिनके उच्चारण में लघु स्वर से दोगुना समय लगे। आ, ई, ऊ, ए, ओ, औ (दर्शन चिन्ह-: ५)
- लुत स्वर-: जिनके उच्चारण में कीर्ध स्वर से कुछ अधिक समय संस्कृत में प्रयोग लघु स्वर से दोगुना समय लगे। (या) ऐड्म, राड्म

र→र+अ (1) | रा→र+आ (5)

NOTE व्यंजन की मात्रा नहीं होती है, मात्रा सिर्फ़ स्वरों की होती है।

(2). जिह्वा के आधार पर-:

(i) अग्न स्वर

जो जीवं के अग्नि हिस्से से उच्चारित किए जाते हैं। (इ, ई, ए, ओ) (4)

(ii) मध्य स्वर (अकासीन)

जीव के मध्य हिस्से से उच्चारित (अ) (1)

(iii) पश्च स्वर

जीव के पिछले हिस्से से उच्चारित होते हैं। आ, उ, ऊ, औ, ओ (5)

अच्→स्वर  
हल्→व्यंजन

⇒ जिह्वा के आधार पर वर्गीकरण हो, तो 'ऋ' को क्यों शामिल नहीं किया जाता है।

⇒ उच्चारण के आधार पर स्वरों की संख्या = 10

'ऋ' तथा 'र' का गेद

उत्तर ल्यैजन

NOTE 'र' का रेफ रूप आधा 'र' होता है, जबकि अन्य श्रम, प्रवेश

रिहानि गृह दृष्टि, फृण, ऋद्धि, सृष्टि, दृष्टि, वृष्टि, मृदा,

'र' का सामान्य रूप (ज्ञिश, ग्रोश)

'र' का रेफ रूप (क्ष्म, ध्म, न्माना)

'र' का पदेन रूप (क्ष्म, प्रकार, क्षिया)

'र' का रेफ रूप आधा 'र' होता है, जबकि अन्य श्रम, प्रवेश

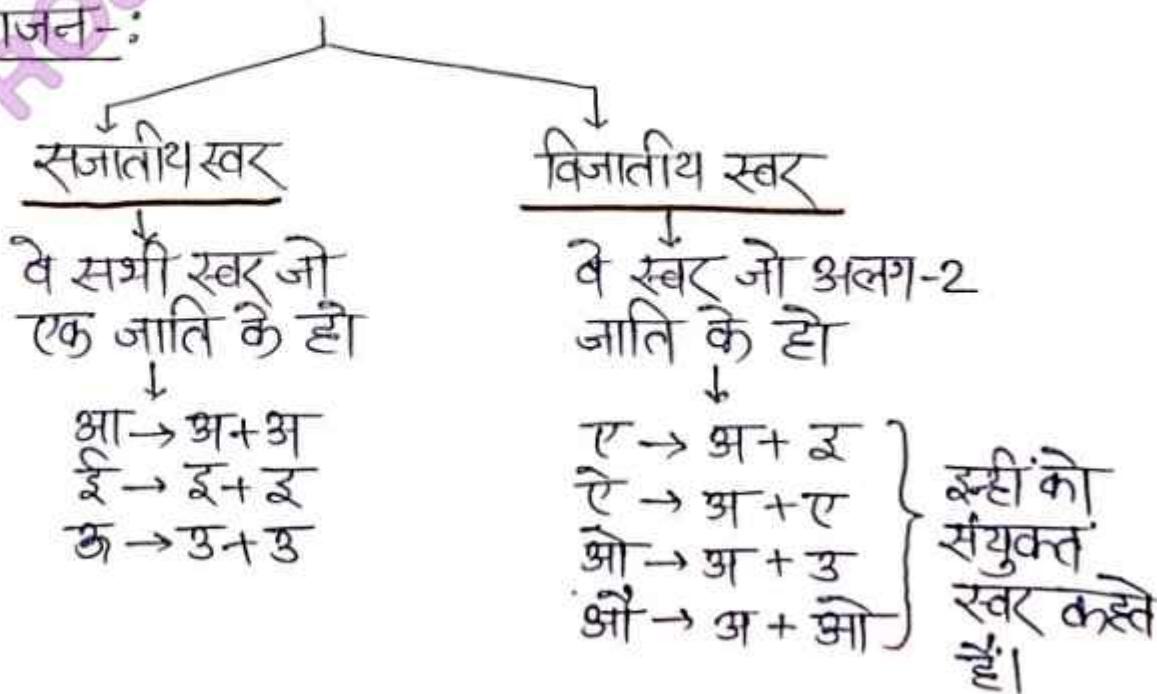
'र' पूर्ण होते हैं।

द्रूक क्रम  
'र' का पदेन रूप  
(पूर्ण 'र')

(3). मुख खुलने के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण -:

- (i) विवृत्त स्वर -: मुख पूरा खुला → आ
- (ii) अद्वृत्त विवृत्त स्वर -: मुख आधा खुला → ए, ऐ, ओ
- (iii) संवृत्त स्वर -: मुख लगभग बंद → इ, ई, उ, ऊ
- (iv) अद्वृत्त संवृत्त स्वर -: मुख आधा बंद → ए, औ

(4). जातीय विभाजन -:

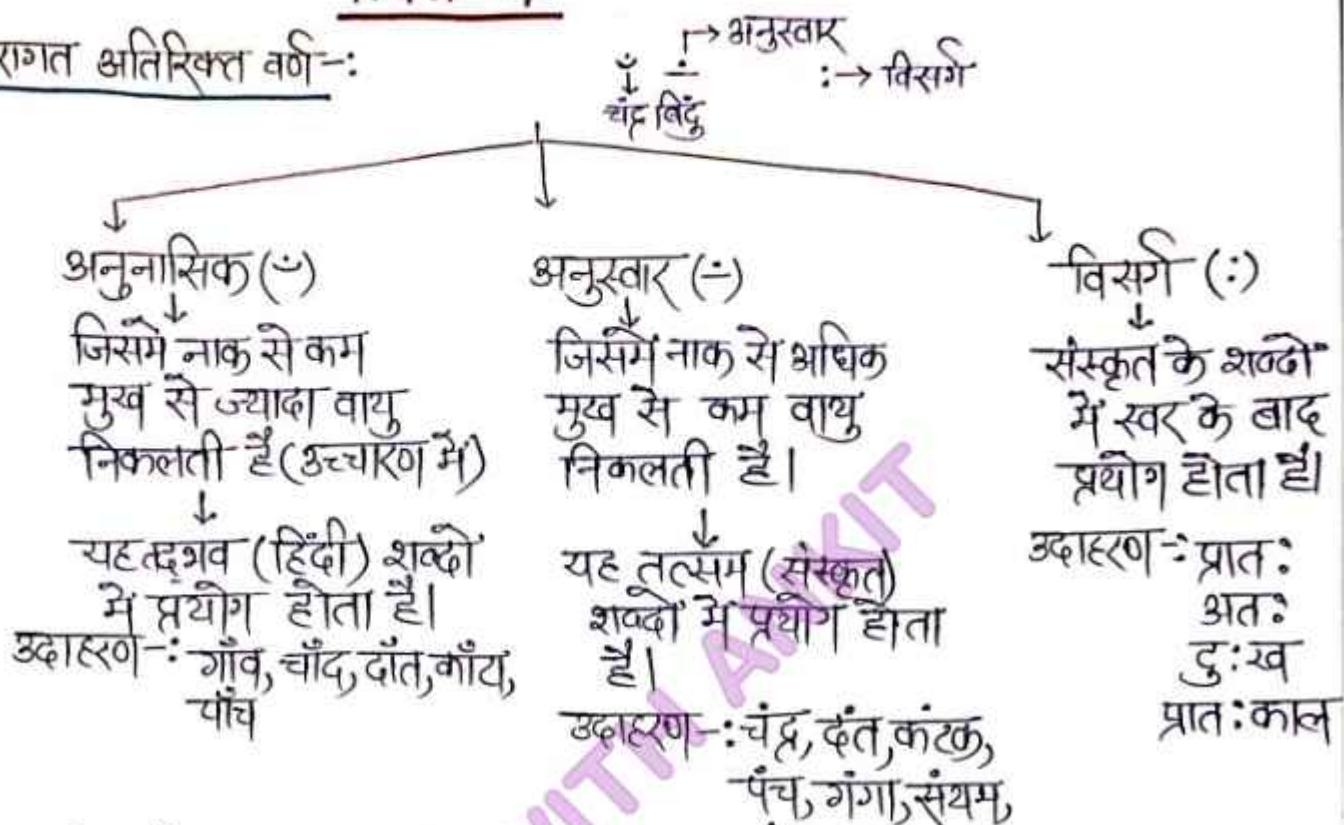


Class → 4#

## \* वर्णमाला \*

### PART - 4

\* परम्परागत अतिरिक्त वर्ण :-



NOTE पं. किशोरी प्रसाद बाजपेयी के अनुसार, अनुस्वार और विसर्ग स्वर नहीं हैं।  
→ यह व्यंजनों की तरह स्वर से पहले नहीं आते, बाद में आते हैं, अतः इनका अयोगवाह करा (पूर्व)

ठंड क → कु+अ  
अतः→अनुसार ख → खु+अ  
प्रातः ग → गु+अ  
जी → जु+ई  
तः→ तु+अ+ः

↓  
व्यंजन स्वर

घ→ घु+अ+ः  
↓  
व्यंजन व्यंजन X

# व्यंजन, स्वर से पहले आता है  
# हिंदी में जोई हो स्वर साथ नहीं लिखे जा सकते हैं। (वह किया शब्द नहीं)

तद्ग्रव	तत्सम	स्वर के बाद
अनुनासिक	तत्सम	स्वर के बाद

## व्यंजन

रूपर्णी संघधी  
च, छ, ज, झ

ক	খ	গ	ঢ	ঢ
চ	ছ	জ	ঝ	ঝ
ট	ঠ	ড	ঢ	ঢ
ত	ধ	দ	ধ	ধ
প	ফ	ব	ম	ম

ঢ  
ঝ  
ঝ  
ন  
ম

⇒ वर्गीकृत व्यंजनों की कुल संख्या → 25

(16 + 4 + 5)

ক, খ, গ, ধ  
ট, ঠ, ড, ঢ  
ত, ধ, দ, ধ  
প, ফ, ব, ম

রূপর্ণী  
ব্যঞ্জন

রূপর্ণ  
সংঘধী

নাসিক ব্যঞ্জন (ঢ, ঝ, ন, ম)

## অন্ত:স্থ ব্যঞ্জন - :

য, র, ল, ব

ইনকোড়. ভেলানাম  
তিবারী নে  
সংঘধীহীন  
সপ্রতাহ ব্যঞ্জন  
শ্বি কষা হৈ

য, ব → অদৃশ্বর  
কৌশা মহিলাই আইএ  
কৌণা মহিলায়ে আইয়ে

র → প্রক্ষিপ্ত /  
লুভিত ব্যঞ্জন  
ল → পার্শ্বিক  
ব্যঞ্জন

অষ্টমিয় ব্যঞ্জন - : জিন বর্ণের উচ্চারণ মেঁ জোর সে শ্বাস খীঁচনা  
পড়তা হৈ

শ, স, ষ, হ

গৰ্ভ অষ্মা  
বাহু নিম্নলিখী  
হৈ।

আগত স্বর - : যদি অংগৃহী কে শব্দের কো হিন্দী মেঁ লিখা  
জাএ-

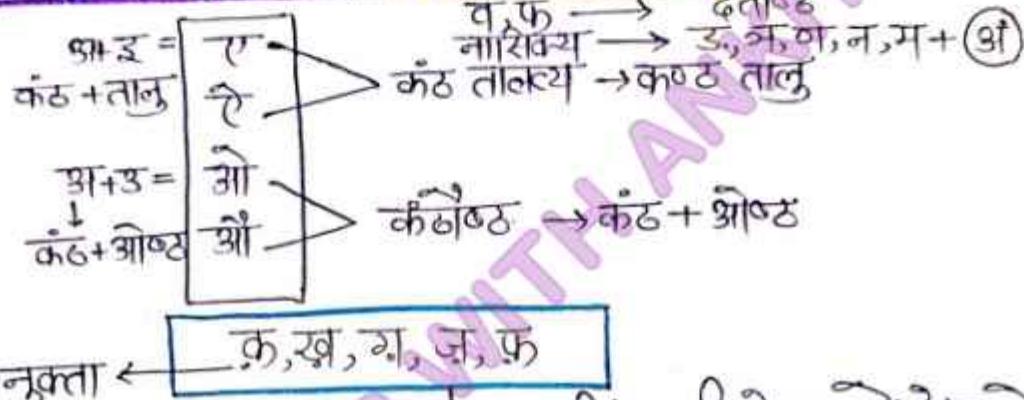
- Hostel → হাস্টেল
- Hospital → হাস্পাতাল
- College → কলেজ
- Knowledge → জ্ঞান
- Coffee → কফি
- Operation → ওপ্রেশন

## वर्णमाला

### PART-5

⇒ उच्चारण के शास्त्र पर तरीकों का वर्गीकरण :-

कंठत्वा	कण्ठ	क'र्ग'के लिंगन	कृ खू खृ घृ ङृ	अ,आ,ह,तिर्गि(विधार)	योग्य
तालत्वा	तालु	ध'र्को के लिंगन	चू,कू,जू,झू	ड,ङ,ग,ঁ,ঁ(ইয়াজ)	দেত
মুধীন্য	মুধী	ট'র्को के लिंगन	ট,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ	ট,ঁ,ৱ,ষ(স্বাপি) নাক	মুধী
দंতत्वा	দঁত	ত'র्क'কे लिंगन	ত,থ,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ	ল,ঁ,ৱ,জ,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ (লাস জেলা)	তালু
আঁষ্ট্র্যা	হোঁঠ	ঁ' র্ক'কে लिंगন	ঁ,ফ,ঁ,ব,ঁ,ঁ,ঁ	ঁ,ফ(উক্ত)	কঁষ্ট



→ অরুবী/ফারসী কে শব্দে মেঁ প্রযোগ  
# নई বিকসিত ধ্বনিথোঁ, ইন্হী কো কহতে হৈ, ইনকা সবৈসে পহলে স্বয়োগ হিঁড়ি  
ভাষা মেঁ 'রাজা শিব পুস্তাদ' সিতোরে হিঁড়' দ্বাৰা কিয়া গয়া।

হিন্দি	উত্তু শব্দ
ক.খ, গ, জ, ফ	কফ(বলগম)
জিহ্বা(জীব্র)	খানা(ঝোজন)
কে মুল রে	গোল(বৃত্ত)
উচ্চারণ	জরা(বুদ্ধা)
জিহ্বামূলীয় কল্পে	ফন(সাঁপ)
জিহ্বামূলীয় কল্পে	কফ(বটন কা হিস্সা)
জিহ্বামূলীয় কল্পে	খানা(কমরা, ডিবা)
জিহ্বামূলীয় কল্পে	গোল (দেল)
জিহ্বামূলীয় কল্পে	জরা (থোড়া)
জিহ্বামূলীয় কল্পে	ফন (হুনর)

ঢসালৈ অলিজিছা যা  
জিহ্বামূলীয় কল্পে হৈ।

১.১ খ → কঁ-ঁ (ক,খ,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ, আ, বিস্র্গ)

১.২ ল → তথ, দ, থ, ন, ল, স, জ

১.৩ র → ট,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ,ঁ, র,ষ (মুধীন্য)

১.৪ য → (ঁ-ত)

১.৫ ই → (তালত্বা) → চ, ছ, জ, ঝ, ব, ই, ঁ, য, ষ

# ROJGAR WITH ANKIT

⇒ प्राणत्व के आधार पर ल्यंजन का वर्गीकरण :-

↓  
अल्पप्राण ल्यंजन

जिनके उच्चारण में  
कम श्वास खर्च हो/  
कम प्राण वायु की  
आवश्यकता है।

I+III+IV+अन्तःस्थ ल्यंजन+उ+सभी  
(य, र, ल, व) स्वर (11)

कुल अल्पप्राण = 31

I	II	III	IV	V
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	ঝ	ঙ
ট	ঠ	ড	ঢ	ণ
ত	থ	দ	ধ	ব
ষ	ফ	ব	ঘ	ম

↓  
महाप्राण ल्यंजन

जिनके उच्चारण में शाधित  
श्वास खर्च है। शाधिक  
प्राण वायु की आवश्यकता  
है।

↳ II+ছ+ঠ+ক্ষণিক  
ল্যঁজন  
(শ, ষ, স, হ)

कुल महाप्राण = 15

## वर्णमाला

### PART-6

अल्प प्राण → १, ३, ५ + रागी रत्नन शन्तः २० + ३

→ 31

गहाप्राण → २, ४, + क्षणिय + द

→ 15

\* स्वरतंत्रियों के आशार पर वर्णों का विश्लेषण :-

घोष (राधोष)

स्वरतंत्रियों के पास प्राणे पर उसके बीच से हवा निकलती है।

⑯

⑤

⑪

३, ४, ५ + य, र, ल, व, ह + सभी स्वर  
कुल घोष वर्ण → ३१

आधोष

स्वरतंत्रियों के पास जाने पर उनके बीच से हवा नहीं निकलती है।

१+२+य, ष, स

कुल आधोष → १३

\* संयुक्त व्यंजन :-

संयुक्तस्वरः ए, ऐ, ओ, औ

→ वे व्यंजन जिनका मिर्चाव सक रे अधिक व्यंजन से हुआ है।

→ इनमें कुल संख्या ५ होती है।

ए → क्+ष → क्+ष+आ

ऐ → त्+र → त्+र+अ

ओ → ज्+र्ष → ज्+र्ष+आ

औ → श्+र → श्+र+अ

ex भृंगा

कृगाल ✕

\* स्वरक्रम :- अं अँ अः आ आ इ ई उ ऊ ऊ र रे ओ ओ

\* व्यंजनक्रम :- क् (अ) ख् ग् घ् ड्

च् छ् ज् (ज) झ् भ्

ट् ठ् ड्(ड) ढ्(ढ) ण्

त् (त्र) ध् द् ध् न

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् (ऋ) ष् स् ह्

# ROJGAR WITH ANKIT

**क -:** कं, कै, कः, क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कॊ, को, की  
**ख -:** खं, खै, खः, ख, खा, खि, खी, खु, खू, खे, खॊ, खो, खी

## \* तरीं विच्छेद -:

क	→ कू+षा	त	→ तं+षा
कि	→ कू+ड	ल्य	→ लं+यू+षा
की	→ कू+ई	राल्य	→ रां+ल्यू+षा
कु	→ कू+स्ट	ह्ल	→ हं+ल्यू+षा
के	→ कू+रा	द्व	→ दं+वू+षा
कॊ	→ कू+रै	क	→ कं+षा
		ख	→ खं+षा

कम	→ कू+आ+गू+आ
नाम	→ कू+आ+गू+आ
कम्	→ कू+आ+रू+मू+आ
कार्य	→ कू+आ+र+थू+आ
नकि	→ नं+आ+रू+कू+आ
द्रेन	→ डं+रू+ए+नं+आ
ह्लिल	→ ह्ल+रू+ई+लू+आ
द्रव	→ दं+रू+अू+वू+आ
कृषि	→ कू+श्टू+षू+ई

१००	सिंट	→	क्षमा	→
	अंकुश	→	हृष	→
	घाँद	→	कंपन	→
	ज्वृति	→	फ्रीझ	→
	ब्रूह्मान	→	ज्वरा	→
	ज्येष्ठ	→	ब्रॉका	→
	ज्वरा	→	ज्वला	→
	ज्वरण	→	ज्वर	→

## वर्णमाला

### PART-7

- (1) सिंह
- (2) अंकुश
- (3) चाँद
- (4) श्रुति
- (5) बुद्धिग्रान्त
- (6) ज्येष्ठ
- (7) अद्वा
- (8) अवण
- (9) क्षमा
- (10) कृष्ण
- (11) कंपन
- (12) क्लीड़ा
- (13) शम्भे
- (14) श्रम
- (15) शंका
- (16) ज्वला
- (17) ज्ञान
- (18) चिन्ह
- (19) निक्षिप्त
- (20) हँस
- (21) हँस
- (22) रूपया
- (23) उद्यान
- (24) हृदय
- (25) विद्यारथी

रा+इ+अं+ह+आ  
 अं+कृ+उ+श+आ (अड्डकुश→अ+ड्ड+कृ+उ+श+आ)  
 च+ओं+हृ+ए  
 शृ+रृ+उ+तृ+दृ  
 बृ+ए+दृ+धृ+दृ+मृ+आ+नृ  
 जृ+यृ+ए+षृ+ठृ+आ  
 शृ+रृ+अ+दृ+धृ+आ  
 शृ+रृ+अ+वृ+आ+णृ+अ  
 कृ+षृ+अ+मृ+आ  
 कृ+तृ+षृ+अ  
 कृ+अं+पृ+अ+नृ+अ/कृ+अ+मृ+पृ+अ+नृ+अ  
 कृ+रृ+उृ+दृ+आ  
 शृ+अ+रृ+मृ+अ  
 शृ+रृ+अ+मृ+अ  
 शृ+अं+कृ+आ/शृ+अ+दृ+कृ+आ  
 जृ+वृ+आ+लृ+आ  
 जृ+भृ+आ+नृ+अ  
 चृ+दृ+हृ+नृ+अ  
 नृ+दृ+शृ+चृ+दृ+तृ+अ  
 हृ+डृ+सृ+आ  
 हृ+अ+सृ+आ  
 रृ+उ+ए+अ+थृ+आ  
 उ+दृ+यृ+आ+नृ+अ  
 हृ+टृ+हृ+अ+यृ+आ  
 वृ+इ+हृ+यृ+आ+रृ+थृ+हृ

→ सबसे शुष्टु पंचाक्षर

# ROJGAR WITH ANKIT

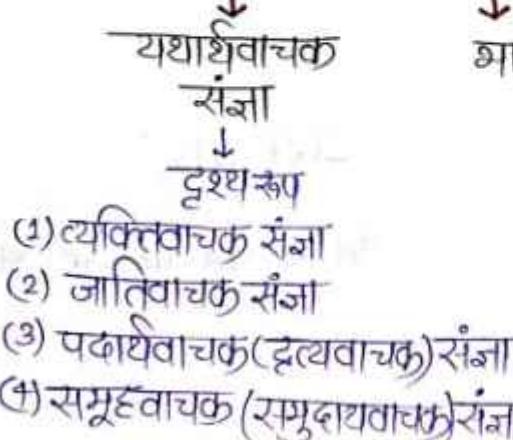
(२६) लाद्दा	लं+न+ष+न+कु+न+च+न+ट+ञ+ञ
(२७) त्रिशूज	ते+रू+न+ह+ श+ञ+ञ+ज+ञ+ञ
(२८) विलापन	व+इ+न+ ज+ग+ञ+आ+प+ञ+ञ+ञ
(२९) गदांशि	ग+ञ+ञ+द्+ન+થ+ આ+શ+ા+અ
(३०) गुरुद्वारा	ગ+ડ+ર+ન+ ટ+દ+ન+ લ+આ+રુ+આ
(३१) पीड़िती	પ+થ+દ+પ+દ+ટ+ન+દ
(३२) उज्ज्वल	ઉ+જ+ન+જ+ન+વી+અ+ન+લે+અ
(३३) कंगन	કુ+ણ+ડ+ગ+અ+ન+ન+અ
(३४) चंचल	ચ+અ+થ+બ+ચ+ન+અ+ન+અ
(३५) डंडा	ડ+અ+ગ+ન+ડ+આ
(३६) चुंघरू	ઘ+ઉ+ઘ+અ+ર+ડ
(३७) रूप	ર+કુ+ પ+અ
(३८) छमु	ઝ+કુ+ષ+ટ
(३९) कृत्रिम	કુ+ ક્ર+તી+ર+ડ+ઝ+મ+અ
(४०) ब्रह्मास्त्र	બુ+રી+ડ+હ+મ+આ+સુ+ટ+રુ+અ
(४१) संक्रान्ति	 
(41) (HW)	 
(४२) रविक्रियाएँ	ર+ઉ+કુ+મ+ર+ળ+ડ
(४३) आशीर्वाद	અ+શ+ડ+ર+ર+વુ+આ+દ+શ

## \* संज्ञा \*

परिभाषा— किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान और ग्राव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

रेश बाली प्रयागराज खुशी

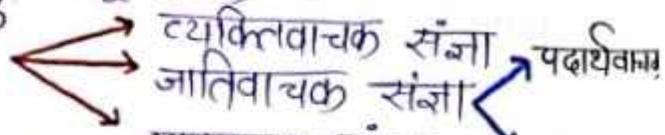
# संज्ञा मूल रूप से 02 प्रकार की होती हैं—



# प्राचीन हिंदी के अनुसार संज्ञा के ग्रेद-5

- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- जातिवाचक "
- आववाचक "
- पकार्थवाचक (द्विवाचक)
- समूहवाचक "

# आधुनिक हिंदी के अनुसार संज्ञा के ग्रेद-3



\* व्यक्तिवाचक संज्ञा— दृश्य + सदैव एकवचन + दुनिधि में विशेष और अकेली प्रयागराज, मेरठ, रेश, ताजगहल, मांझी एवरहस्ट

\* जातिवाचक संज्ञा— दृश्य + बहुवचन बन सकता है + जिसके जैसे ओर हो फुला, लड़का, लड़की, पसड़

\* आववाचक संज्ञा— अदृश्य + एकवचन + जिसे प्लेट में न परोसा जाए।  
 → मोहब्बत → मोहब्बते  
 → नफरत → नफरते → जातिवाचक होंगी क्योंकि ये बहुवचन हैं।  
 → बुराई → बुराईयाँ

## व्यक्तिवाचक संज्ञा

→ जो किसी पिशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का नाम बताती है—

उदाहरण— ताजमहल

यमुना

गंगा

दिल्ली का लाल किला

हैदराबाद	गोपीणा
गोतम्बुद्धनगर	जनतारी
पवन	चैत्र
उत्तरप्रदेश	धूपिया
माझे एवरेस्ट	चंद्रगा
हरांरो	भारत
अमेरिका	
बुद्ध इंटरनेशनल समिट	
सचिन	

## जातिवाचक संज्ञा → दृश्य + वक्तव्यन + जिसके जैसे थीर

→ वह संज्ञा जो किसी जाति या अजाति का वेग कराती है।

उदाहरण-ः नकी, जानवर, अध्याण्यक, गंत्री, तकील, आम, चावल, रोब, लौखिक, लैपटॉप, मोबाइल, डयरी, घेन, लड़का, काली गाय

# प्राकृतिक जापदा को जातिवाचक में रखा जाएगा-ः शुक्रप, ज्वालामुखी आदि।

## \* संज्ञा \*

### PART-2

#### (३) भाववाचक संज्ञा-

→ वह संज्ञा जो भाव, गुण, दोष, अवस्था आदि को व्यक्ति है।

अदृश्य + एकवचन  
+  
खेट में नहीं

सूखी डैमानदारी बैंडमानी यौवन  
दुःख परिस्थिति लुराई खुदापा  
झुकासी अच्छाई  
पूर्ण च्यास  
क्रोध शुख

सजावट, बनावट, वीरता, गुस्सा, क्रोध, साहस  
गरीबी, जवानी, दूरी, पढ़ाई, मोहब्बत, मिठास

#### (४) द्रव्यवाचक संज्ञा-

द्रव्यवाचक → प्रव (प्रियपद)

द्रव्य → Matter

ठोस, प्रव, गेस, प्लाज्मा, BEC

मीठा-विशेषण

मिठाई → जाति-

वाचक संज्ञा

→ वे संज्ञा जो किसी द्रव्य का बोध करती है।

→ खाने-पीने की चीजें → तेल, पानी, दूध, घी

→ खनिज ओर धातु → लोहा, सीना, चांदी

→ जिनकी गिनती न हो सके।

#### (५) समूहवाचक संज्ञा-

गिनती की जा सकती है।

→ जी इक समूह का बोध कराएँ

→ व्यक्तियों के समूह - : श्रीड़, संगठन, गिरोह, सभा,  
परिवार, ढल, कक्षा, संसद,

पुलिस, आर्मी, सेना

शुट्टा, पुँज

भाववाचक संज्ञा का निर्माण

\* भाववाचक संज्ञा का निर्माण (०५) प्रकार से होता है -

(क) विशेषण से

(ड). अव्यय से

(ख) क्रिया से

(ग) जातिवाचक संज्ञा से

(घ) सर्वनाम से

(क) विशेषण से शावचाचक संज्ञा का निर्गणि:-

कुटिला →	कुटिलता
सरल →	सरलता
युवा →	यौवन
अँचा →	छाँचाई
लम्बा →	लम्बाई
बुढ़ा →	बुढ़ापा
वीर →	वीरता
अमीर →	अमीरी
गरीब →	गरीबी
बड़ा →	बड़प्पन
भला →	भलाई
उरावना →	उर
शांत →	शान्ति
शोणी →	शोण
ठंडा →	ठंडक
भ्रुखा →	भ्रुख
पीला →	पीलापन
विद्वान् →	विद्वता
स्वस्थ →	स्वास्थ्य

\* संज्ञा \*

PART-3

(ख) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा का निर्माण-

इसान	इसनियत	आदमी	आदमीयत	नेता	नेतृत्व
पुरुष	पुरुषत्व	घर	घरेलू	छातारी	ब्रह्मचर्य
स्त्री	स्त्रीत्व	डाकू	डॉक्टरी		
माता	मातृत्व	ठग	ठगी		
पिता	पितृत्व	दोस्त	दोस्ती		
बच्चा	बचपन	शिशु	शैशव		
तप्स्वी	तप (तपस्था)	चिकित्सक	चिकित्सा		

(ग) क्रिया से भाववाचक संज्ञा का निर्माण-

उड़ना	उड़ान	बनना	बनावट	झुकना	झुकाव	जाना	(जा + ना)
उभरना	उभरार	सजना	सजावट	थकना	थकान	मूलधातु	'ना'प्रत्यय
गड़गड़ना	गड़गड़ाहट	मिलना	मिलावट	चुनना	चुनाव		
हँसना	हँसी	गाना	गान	खेलना	खेल		
दौड़ना	दौड़	चमकना	चमक	बाँटना	बाँटवारा		
सौचना	सौच						
फैलना	फैलाव	जागना	जागण				

(घ) प्रत्यय से भाववाचक संज्ञा का निर्माण-

अधिक	अधिकता
निकट	निकटता
समीप	समीय
मना	मनाई
हाहा	हाहाकार
बहुत	बहुतायत

|अत्यय:- ते भविकारी शब्द हैं, ↓

लिंग, क्षण, काल, आरक के अनुलार नहीं बदलते हैं।

(ङ) सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा का निर्माण-

अहं	अहंकार	अपना	अपनापन
निज	निजत्व/निजता	सर्व	सर्वस्व/सर्विदा

मैं, तुम, हम  
यह, वह, वे, वे

## \* सर्वनाम \*

परिशाषा-: वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं।

→ **रकेश** अच्छा द्यात्र है; सकैश विधि को समझने पर व्यक्तिवाचक ध्यान देता है। (वह) संज्ञा

→ सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्दों की पुनरावृत्ति को रोकते हैं। \* सचिवानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अजिय' एक शानदार लेखक थे। (वह) सचिवानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अजिय' हिन्दी साहित्य पर अच्छी धड़ रखते थे।

\* सर्वनाम के भेद-: ⑥

- (1) निश्चयवाचक सर्वनाम
- (2) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- (3) सम्बन्धवाचक सर्वनाम
- (4) प्रश्नवाचक सर्वनाम
- (5) निजवाचक सर्वनाम
- (6) पुरुषवाचक सर्वनाम

\* मूल सर्वनाम शब्दों की कुल संख्या-: ⑪

- मैं, तू → पुरुषवाचक सर्वनाम
- जो, सी → सम्बन्धवाचक सर्वनाम
- यह, वह → निश्चयवाचक सर्वनाम
- आप → निजवाचक सर्वनाम
- कौन, क्या → प्रश्नवाचक सर्वनाम
- कौई, कुछ → अनिश्चय सर्वनाम

निश्चयवाचक सर्वनाम-:

→ इसे संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।

→ यह किसी निश्चित व्यक्ति/वस्तु का बोध कराता है। क) यह मेरा पैन है।

- (ख) यह गेही शर्ट है। → रखनाग का पड़ोसी रखनाग है।

(ग) यह मेरा घर है।

(घ) ये मेरे हथिथार हैं।

(ङ) वह उनकी मेज है।

(च) वे तुम्हारे लोग हैं।

**NOTE:-**

यदि सर्वनाम के साथ संक्षा शब्द आ जाए तो 'सर्वनामिक विशेषण' हो जाएगा—

**उदाहरण-ः** यह पेन मेरा है।

(प्रवनाम) (जातिवाचक)

⇒ यह कुला मेरा है → सार्वनामिक विशेषण  
(सर्व) (संज्ञा)

→ यह मेरा कुला है → निश्चयतावाक् विशेषण  
(एवं) (सर्व)

## •अनिश्चयवाचक सर्वनाम—:

→ यह अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध करता है।

- (क) बाहर गेट पर **कोई** आया है।  
(ख) **कोई** आ रहा है।  
(ग) **कुछ** आ रहा है।  
(घ) द्वारे पर **कुछ** आया है।  
(ङ) मैं **कुछ** लाया हूँ।

## कोई-प्राणीवाचक कुछ- वस्तुवाचक

## • प्रश्नवाचक स्वेनाम-ः

→ वह सर्वेनाम् जो पूश्न करने में पृथक्ति किए जाए।  
(क) यह किसकी पसंद हैं?

- (क). यह किसका पुस्तक है ?  
(ख). दूध में क्या गिर गया ?  
(ग). यह किसकी कलम है ?  
(घ). यह काम कैसे हुआ ?  
(ड). बाहर दरवाजे पर कौन खड़ा है ?  
(च). गोरखपुर से क्या लाना है ?  
(फ). आपका क्या नाम है ?

## \* सर्वनाम \*

### PART-2

**• सम्बंधवाचक सर्वनाम :-** वे सर्वनाम जो दो उपताकियों को जोड़ते हैं।

- (क) जैसा करीगे; तैसा भरीगे।
- (ख) जिसकी लाठी; असकी लौंस।
- (ग) जैसा देश; वैसा भेष।
- (घ) जितनी मेहनत; छत्ती सफलता।
- (ड) जो जीता वही सिक्कदर।
- (च) जैते पांव पसारिए; तैते लम्बी सीर।
- (छ) जो करीगे; सो भरीगे।
- (ज) जो सीवेगा सो खेवेगा।

**• निजवाचक सर्वनाम :-** वे सर्वनाम जो → स्वयं/खुद/स्वतः/अपने आप का बोध कराएँ।

- (क) मैं खुद चोला लगाऊंगा।
- (ख) मैं स्वयं खाना बनाऊंगा।
- (ग) मैं स्वयं दिल्ली जाऊंगा।
- (घ) मैं अपना काम स्वयं करता हूँ।
- (ड) वह खुद पर आस्था रखती है।
- (च) मैं अपने आप आ जाऊंगा।

**• पुरुषवाचक सर्वनाम :-** वे सर्वनाम जो किसी उपर्युक्त का वर्णन करते हैं।

\* पुरुषवाचक सर्वनाम के ३ श्रेद होते हैं—

- मेरा, मुझको, मुझसे, हमारा
  - हमारी, हमें, हमको आदि
  - गैं, हम + कार्कु विभक्ति
- (1) उल्टम पुरुषवाचक सर्वनाम तू तेरा, तुझको, तुम्हारा,  
(वक्ता) + विभक्ति तुम्हणी,
- (2) गद्यम पुरुषवाचक सर्वनाम आप तुमणी,  
(भ्राता) + विभक्ति आपका,
- (3) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम आपेसी
- यह, वह, ये, वे + कार्कु विभक्ति
- (तीसरा अन्य कोई जिसके बारे में बात हो)
- वो, इन्होंने, उन्होंने, उसका, उसका, इनका, उनकी

## ROJGAR WITH ANKIT

- (1) वह हीमानदार लड़की है। (अन्य)
- (2) गें जिम्मेदारी प्राप्ति चाहती है। (उत्तम)
- (3) तुझे काग बोलना चाहिए। (गैरिक)
- (4) गें खाना खाना चाहता है। (उत्तम)
- (5) तुम गुजे पर्सद हो। (गैरिक)
- (6) इसकी तुम में कोई रुचि नहीं। (अन्य)
- (7) छन्दे बाहर का रास्ता दिखा दो। (अन्य)

अन्य पुरुष—प्राणि

निश्चयवाचक—पस्तु

यह मेरी पुस्तक है → निश्चयवाचक

यह पढ़ाई में तेज है → अन्य पुरुष

वह मेरी कार है → निश्चयवाचक

वह जा रहा है → अन्य पुरुष

## \* क्रिया \*

परिभाषा-: वे शब्द जो किसी कार्य का होना दर्शति हैं।

धातु/मूल धातु-: वह मूल शब्द या शब्दांश जिसमें 'ना' जोड़ने पर क्रिया का निर्गण होता है।

मूल धातु + 'ना' = क्रिया शब्द

हँस + ना = हँसना  
(मूलधातु) (शब्दांश) (क्रिया)

टहलना	$\Rightarrow$ टहल + ना	मरना	$\Rightarrow$ मर + ना
रोकना	$\Rightarrow$ रोक + ना	मुकरना	$\Rightarrow$ मुकर + ना
पीना	$\Rightarrow$ पी + ना	गुजरना	$\Rightarrow$ गुजर + ना
भटकना	$\Rightarrow$ भटक + ना	तीड़ना	$\Rightarrow$ तीड़ + ना
धातु		मूल क्रिया	

पढ़ लिख देख माँग पीस थूल नहा दौड़ नाच चढ़

पढ़ना लिखना देखना माँगना पीसना थूलना नहाना दौड़ना नाचना चढ़ना

प्रथम प्रेरणार्थिक क्रिया:

→ इस क्रिया में कर्ता प्रेरक होता है और उसकी मौजूदगी में काम हो रहा होता है।  
→ इसमें 'आना' प्रत्यय का प्रयोग होता है।  
जैसे- पढ़ना, लिखना, दिखाना

द्वितीय प्रेरणार्थिक क्रिया:

→ जब कर्ता स्वयं कार्य न करके असे कियी दूसरे व्यक्ति से कराएं।

→ इसमें 'वाना' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

जैसे- सिद्धि ने नवीन से पत्र लिखवाया।  
पढ़वाना, लिखवाना, दिखवाना, माँगवाना आदि

(कर्म)  
राम से ब खाता है  
कर्ता  
(कार्य को करने वाला)  
खाना  
(क्रिया)

# ROJGAR WITH ANKIT

धातु	मूल क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया	द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया
पढ़	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
लिख	लिखना	लिखाना	लिखवाना
देख	देखना	दिखाना	दिखवाना
माँग	माँगना	मँगाना	मँगवाना
पीस	पीसना	पिसाया	पिसवाना
थुल	थुलना	थुलाना	थुलवाना
नह	नहना	नहलाना	नहलवाना
दोँड़	दोँडना	दोँडाना	दोँडवाना
नाच	नाचना	नचाना	नचवाना
चढ़	चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
रो	रोना	रऱ्लाना	रऱ्लवाना
सिल	सिल → मूल धातु		
	सिलना → क्रिया		
	सिलाना → प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया		
	सिलवाना → द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया		
	* क्रिया के भेद *		

कर्म के आधार पर : 02 :- इन्हे ही क्रिया के मुख्य शेष कहते हैं।

अकर्मक क्रिया

अ + कर्म

कर्म के बिना

कर्म की अपेक्षा नहीं होती है।  
जिनमें 'क्या' से प्रश्न करने पर जवाब 'न' मिले।

सकर्मक क्रिया

स + कर्म

कर्म के साथ

कर्म की अपेक्षा रहती है।  
जिनमें 'क्या' से प्रश्न करने पर जवाब मिले।

# ROJGAR WITH ANKIT

→ उड़ना, कूदना, झोना, गरना  
 चलना, बरसना, जागना,  
 डरना, नाचना, ढैठना, हँसना,  
 जीना, रोना, उछलना, झुकना  
 ठहरना, दौड़ना, जाना, नहाना  
 सजना, तैरना

→ खाना, जाना, घकाना, धीना  
 देखना, खेलना, धोना,  
 बनाना, लिखना, पढ़ना,  
 सुनना

उदाहरण वृक्ष से पले गिरते हैं— कर्ता-पले क्रिया-गिरना  
 पक्षी आकाश में उड़ते हैं— पले क्या गिरते हैं— अकर्मक क्रिया  
 (कर्ता) (क्रिया) पक्षी क्या उड़ते हैं?  
 राम बाजार जा रहा है— राम क्या जा रहा है? अकर्मक क्रिया  
 रमेश पढ़ता है— रमेश क्या पढ़ता है? सकर्मक क्रिया  
 आकाश दिनभर खेलता रहता है— आकाश खेलना—सकर्मक क्रिया  
 बच्चे ने खिलौना तोड़ दिया—बच्चे ने क्या तोड़ दिया—सकर्मक क्रिया  
 अखिलेश चिक्किलता है— अकर्मक क्रिया  
 सिंहि साठा दिन सोती रहती है— उकर्मक क्रिया  
 मैरे हाथ खुजलाते हैं— अकर्मक क्रिया  
 वह पानी में तैर रहा है— अकर्मक क्रिया  
 वह फूल तोड़ता है— सकर्मक क्रिया  
 श्रावर गाड़ी चलाता है— सकर्मक क्रिया  
 मैं खुशी से नाचता हूँ— अकर्मक क्रिया  
 बादल बरस रहा है— बादल क्या बरस रहा है—  
 अकर्मक क्रिया  
 हरीश गवाई दे रहा है—  
 वह तेजी से दौड़ रहा है—

\* क्रिया \*  
PART-2

॥ साकर्मिक क्रिया के श्रेद - 02

एकार्मिक साकर्मिक  
(कर्ता) क्रिया

(क) हरीश सौब खाता है।

(ख) नवीन ने छात्रों को पढ़ाया।

(ग) नवीन ने छात्रों को हिन्दी पढ़ाई।

(घ) नवीन ने सिद्धि को वर्चन दिया।

(ङ) राम ने किरायेदार की मानन दिखाया।

(ख) पुकानदार ने **ग्राहक** को **पुस्तक** दी।

द्विकार्मिक साकर्मिक  
क्रिया

→ एकार्मिक सर्वम.

→ एकार्मिक स.क.

→ द्विकार्मिक स.क.

→ द्विकार्मिक स.क.

→ द्विकार्मिक स.क.

→ द्विकार्मिक स.क.

(सजीवकर्म) (निजीविकर्म)

अप्रत्यक्ष कर्म

गौण कर्म भी कहते हैं।

कौन/किसको लगाकर

सजीव कर्म ढूँढ़ा जाता है।

प्रत्यक्ष कर्म

मुख्य कर्म भी कहते हैं।

'कथा' लगाकर निजीवि

कर्म ज्ञात करते हैं।

(छ) राजा ने **गरीब** को **दान** दिया — एकार्मिक स.क.

गरीब के लिए जर्मीकारक

सम्प्रदान कारक

इकु वाक्य में 8 कारक हो सकते हैं, लेकिन 1 शब्द में 2 कारक नहीं हो सकते हैं।

**NOTE:-** इकु वाक्य में 8 कारक हो सकते हैं, लेकिन 1 शब्द में 2 कारक नहीं हो सकते हैं।

जब देने की बात की जाए-

गलत चीज तथा किया— इनपु, पुरुकार, दान जाए

वापस किया— किताब, उधार जाए

वापस न किया— इनपु, पुरुकार, दान जाए

तथा किया— तमवालू, शराब जाए

वापस न किया— शाप, बटुदड़ा

⇒ सही चीज़ जो वापस न की जाए वहाँ सम्प्रदान कारण होता है, कर्म कारण नहीं होगा। लेकिन वाकी तीनों में कर्म कारण होगा—

(क) हरीश ने धोबी की कपड़े दिये।

# संखना के आधार पर क्रिया के श्रेद-: 05

- (1) पूर्वकालिक क्रिया
- (2) प्रेरणार्थिक क्रिया
- (3) नामधातु क्रिया
- (4) कृदंत क्रिया
- (5) संयुक्त क्रिया

पूर्वकालिक क्रिया—: जब एक कार्य के तुरंत बाद दूसरे कार्य का होना पाया जाए।

(क) हरीश पढ़कर चला गया।

(पढ़ना) (चलना)

पूर्वकालिक पद (क्रिया)

(ख) वह चाय पीकर सो गया।

(पूर्वकालिक)  
क्रिया

(ग) वह खेलकर पढ़ने लगा।

(पूर्वकालिक)  
क्रिया

(घ) राम अभी सोकर उठा है।

(पूर्वकालिक)

प्रेरणार्थिक क्रिया—: जब कार्य अन्य व्यक्ति से कराया जाता है।

(क) मिहिने नवीन से सज्जी बनवाई।

(ख) नैन ने मालिक से पोटा लगवाया।

(ग) माली ने मालिक से पोटों को पानी दिलवाया।

(घ) अध्यापक ने छात्रों से सफाई करवाई।

\* क्रिया \*

PART-3

नामधातु क्रिया:-

# व्याना, आना से निर्गत :-

नामधातु  
क्रिया

- वे क्रिया जो रांजा, सर्वनाम और विशेषण से बनती हैं।
- लाठी = लठियाना (रांजा से)
- हाथ = हथियाना ( „ „ )
- बात = बतियाना ( „ „ )
- गाली = गरियाना ( „ „ )
- लंगड़ा = लंगड़ाना (विशेषण से)
- शर्म = शर्मना (भाव, सज्जा से)
- लाज = लजाना (ग्राव. „ „ )
- आपना = आपनाना (सर्व. से)
- ठंडा = ठंडाना

कृदंत क्रिया:-

से क्रिया जिनमें 'ना' प्रत्यय नहीं होता है।

खेल  $\Rightarrow$  खेलना, खेलता

चल  $\Rightarrow$  चलाना, चलाई, चले-

(एगा) (एगी) (ए)

संयुक्त क्रिया:- जब किसी एक कार्य के लिए एक से अधिक क्रिया पद स्थोर होते हैं।

- (क) वह मुझे मार डालेगी (गारना, डालना)
- (ख) गोहन सामान को ले जाएगा (लेना, जाना)
- (ग) विक्रम ने नाश्ता कर दिया है (करना, लेना)
- (घ) वह संस्कृत बोल सकता है। (बोलना, सकना)
- (ङ) तुगं महाभारत पढ़ने लगे थे। (पढ़ना, लगा)

$\Rightarrow$  संयुक्त क्रिया के कुल 11 में होते हैं।

(1). आरंगबोधक संयुक्त क्रिया :-

आरम्भ का बोध करती है।

$\rightarrow$  पर्वा होने लगी

$\rightarrow$  मीहन पढ़ने लगा।

- (2). समाप्ति बोधक संयुक्त क्रिया-:
- समाप्ति का बोध करती है।
  - राधा नहीं चुकी है।
  - रमेश खाना खा चुका है।
- (3). आवकाशबोधक संयुक्त क्रिया-:
- आवकाश का बोध करती है।
  - राम गाना नहीं गा पाया।
  - रावण युद्ध नहीं जीत पाया।
- (4). अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया-:
- अनुमति का बोध करती है।
  - राधा को बोलने दी
  - मुझे जनि दी
- (5). नियता बोधक संयुक्त क्रिया-:
- नियता का बोध करती है।
  - हृषि बहु रही है।
  - मैं बोल रहा हूँ।
- (6). आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया-:
- आवश्यकता का बोध करती है।
  - राधा को घर का कार्य फलापड़ता है।
  - अश्रिष्ट को यह कार्य करना चाहिए।
- (7). निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया-:
- निश्चितता का बोध करती है।
  - मोहन ने कहा कि अब पीटेंगे।
  - हरीश ने कहा कि अब कले दिखाऊँगे।
- (8). इच्छाबोधक संयुक्त क्रिया-:
- इच्छा का बोध करती है।
  - वह बाजार जाना चाहती है।
  - मैं धूमने जाना चाहता हूँ।
- (9). अभ्यास बोधक क्रिया-:
- अभ्यास का बोध करती है।
  - वह पत्र लिखा करता है।
  - वह बाजार जाया फलता है।
  - वह त्यापार किया करता है।

(10). शक्ति बोधक संयुक्त किया:-

शक्ति का बोध करती है -  
 → हरीश कीवाट तोड़ सकता है।  
 → सविता चल सकती है।

(11). पुनरुक्तबोधक संयुक्त किया:-

समान व्यनि का बोध करती है।  
 → मंजीत पढ़ाई लिखाई करता है।  
 → प्रियंका विद्यालय आया-जाया करती है।  
 → सिंह धूमाती फिरती रहती है।

खाना -	वाना
पानी -	वानी
चाय -	वाथ
रोटी -	वोटी
सार्थक शब्द	निर्धक शब्द

Made by -

ARPIT KUMAR

\* किया \*

Part - #4

\* संरचना संख प्रयोग के आधार पर किया के मेंद - ०७

१. पूर्वानुक्रमिक किया
२. प्रेरणात्मक
३. नामधातु किया
४. कृदित किया
५. सौख्यत किया

६. सहायक किया :-

वह किया जो मुख्य किया की सहायता करती है।

- (क) वह खाना खाता है। [खाना] मुख्य किया, ता → सहायक किया।  
 (ख) वह बाजार जा रहा था। [जा-] "रहा था" → "

७. सामान्य किया :-

जब किया को पुराने के लिए सिर्फ एक किया यदि असश्यकता हो।

- (क) बड़ी गई।  
 (ख) रामकृष्ण जागा।  
 (ग) सिहुती चलो।

८. समानिय किया :-

जब एक किया शब्द की दो रूपों में लिखा जाए।

- (क) उन्होंने ऊँची चढ़ाई चढ़ी।  
 (ख) लड़की ऊँची चाल चलती है।  
 (ग) महाराणा प्रताप जी ने बहुत लड़ाइयाँ लड़ी।  
 (घ) हमने खाना खाया।  
 (ड़.) हरीश की पुलिस ने बहुत मार मारी।

\* अन्य महत्वपूर्ण कियाये :-

- \* क्रियार्थक संज्ञा :- पढ़ाई करने से चरित का निमित्त होता है।  
 :- दौँड़ना स्वास्थ्य के लिए ऊँचा होता है।

## ROJGAR WITH ANKIT

### \* योगिक क्रिया

↓  
मूल धातु + ना प्रत्यय को दो ओर  
अन्य कोई भी प्रत्यय हो  
↓  
चढ़ना, चढ़वाना  
चलना, चलवाना

### कठ क्रिया

↓  
मूल धातु + ना प्रत्यय  
↓  
चढ़ना  
चलना

\* विहिक्रिया :- जिस क्रिया से आज्ञा का पता चले।  
:- यहाँ से तुरन्त चले जाती।  
:- सारे चुप चाप बैठ जाती।

### \* अनुक्रत्मक क्रिया :-

जिसमें शब्दों का अनुक्रण हो।  
 ↗ भिनभिनाना, भमभनाना, बडबडाना  
 ↗ फडफडाना, झनझनाना, हनहनाना  
 ↗ खटखटाना, हिनहिनाना, थरथराना  
 ↗ धपधपाना

### \* समापिका क्रिया :-

सिफी वाक्य की समाप्ति पर क्रिया  
 (क) बच्चे कहाँ में पड़ते हैं।  
 (ख) मदुमती तत्य करती हैं।

### उसमापिका क्रिया :-

↓  
सिफी वाक्य की समाप्ति पर ही  
क्रिया नहीं होती, अन्य स्थान पर  
होती।  
 (क) सामने बहता हुआ कमल बहुत  
अच्छा लगा रहा है।  
 (ख) मैं अद्यापि से मिलकर अभी  
लौटा हूँ।

## \* विशेषण \*

परिभाषा-: वे शब्द जो विशेषण (संज्ञा, सर्वनाम) की विशेषता बताते हैं।

क) सुन्दर बच्चा

विशेषण संज्ञा

(विशेषक) (विशेष्य)

NOTE: जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बारे में बात की जाती हैं, उन्हें "विशेष्य" कहते हैं।

ख) चालाक व्यक्ति

(विशेषण) (विशेष्य)

ग) बुद्धिम पुरुष

(विशेषण) (संज्ञा)

घ) यह बहुत अच्छा है।

(सर्वनाम) (विशेषण)

ङ.) यह शानदार है।

(सर्वनाम) (विशेषण)

## विशेष्य-:

यह बहुत अच्छा है।

सर्वनाम प्रविशेषण विशेषण

प्रविशेषण-: वे शब्द जो विशेषण से पहले प्रयोग होकर विशेषण पर जोर डालते हैं।

क) श्रीजन बहुत स्वादिष्ट है।

(विशेष्य) (प्रविशेषण) (विशेषण)

ख) राम बहुत अच्छा लड़का है।

(विशेष्य) (प्र.वि.) (विशेषण)

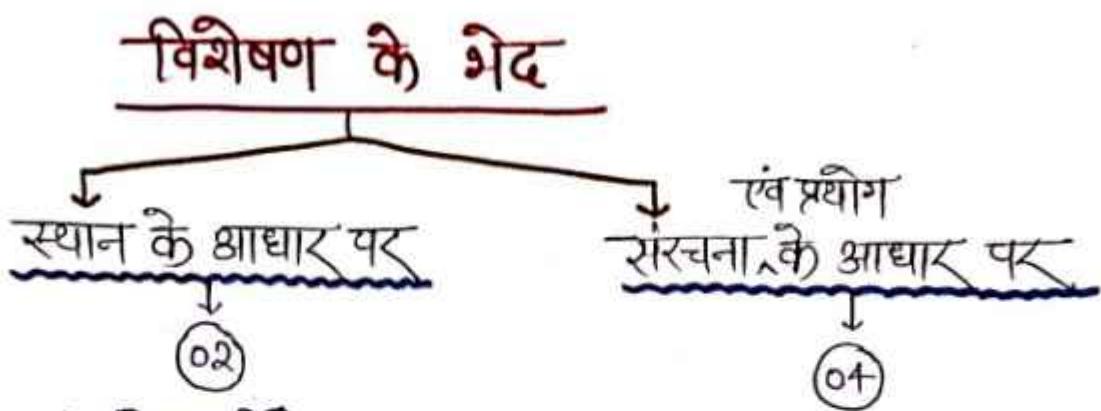
ग) गाय कम ठण्डा दूध देती है।

(प्र.वि.) (विशेषण) (विशेष्य)

घ) चाय बैठक गरम है।

(विशेष्य) (प्र.वि.) (विशेषण)

(ङ.) यह आति सुंदर हस्य है।



- क) उद्देश्य विशेषण  
ख) विधीय विशेषण

- क) संख्यावाचक विशेषण (संख्या का बोध)  
ख) परिमाणवाचक विशेषण (परिमाण का बोध)  
ग) सार्वनामिक विशेषण  
घ) गुणवाचक विशेषण

### स्थान के आधार पर विशेषण के भेद :-

(1) उद्देश्य विशेषण :- लाल तरबज़ (विशेषण) (विशेष्य)

Ex यदि वाक्य में विशेषण, विशेष्य से पहले आ जाये।

आज सुहावना मीसम है।  
(विशेषण) (विशेष्य)

गाय मीठा दूध देती है।  
(विशेषण) (विशेष्य)

यह बहुत मीठा आम है।  
(विशेषण) (विशेष्य)

(2) विधीय विशेषण :- यदि वाक्य में विशेष्य, विशेषण से पहले आए आज मीसम सुहावना है।

(विशेष्य) (विशेषण)

गाय दूध मीठा देती है।  
(विशेष्य) (विशेषण)

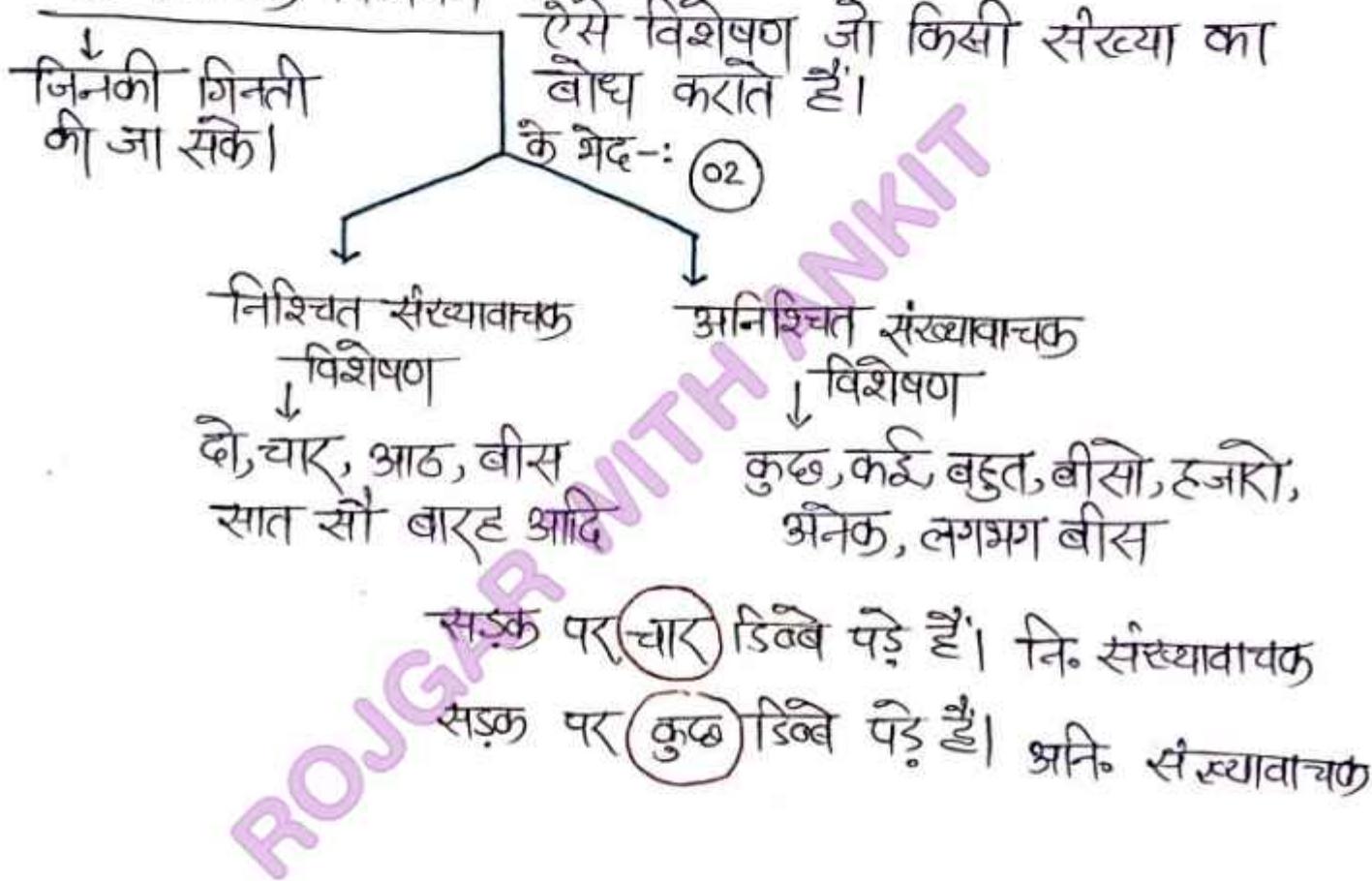
यह आम बहुत मीठा है।  
(विशेष्य) (विशेषण)

चादी असली है।  
(विशेष्य) (विशेषण)

स्त्री बुद्धीन है।  
(विशेष्य) (विशेषण)

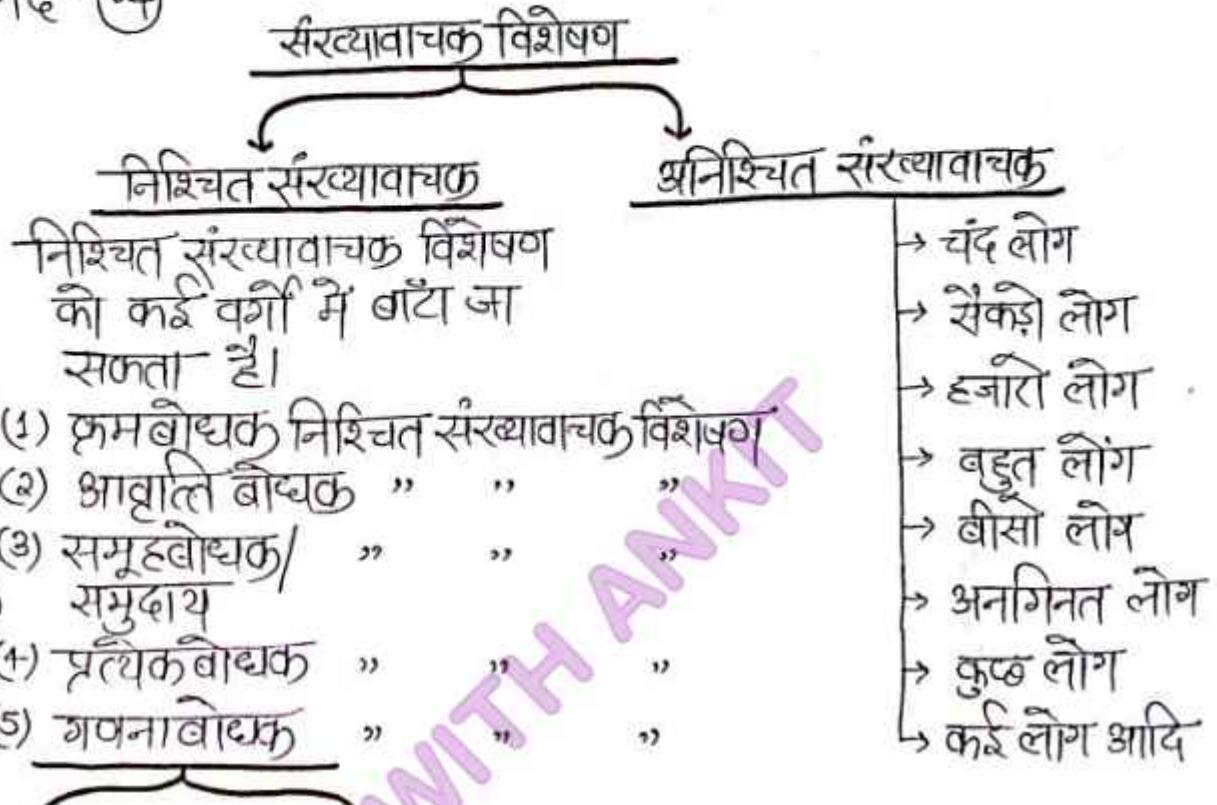
- ⇒ यह व्यक्ति बहुत <sup>(विशेषण)</sup> ईमानदार है—: विधेय विशेषण
  - ⇒ यह बहुत ईमानदार <sup>(विशेषण)</sup> व्यक्ति है—: उद्दृश्य विशेषण
  - ⇒ दिशा पटानी बहुत दिलजली है—: विधेय विशेषण
- प्रयोग एवं संरचना के आधार पर विशेषण—: (04)

(1). संख्यावाचक विशेषण—:



## विशेषण

## किंशुषण के श्रेष्ठ - ०४



- (१) माँ ने तीन दर्जन किले खरीदे। → निश्चित संख्यावाचकः (पुणीकबोल)

(२) कक्षा में तीस बच्चे हैं। → " " :- " "

(३). वह आठवीं कक्षा में पढ़ता है। → " " :- (क्रमबोधक)

(४) वह कई रोटी खाता है → अनिश्चित संख्यावाचकः

(५) सिंडू ने तीन कोट खरीदे → निश्चित संख्यावाचकः

(६) आकाश में अनगिनत तारे हैं → अनिश्चित संख्यावाचक

(७) पंचीं ट्यकित आ रहे हैं- (समुदाय) → निश्चित संख्यावाचक [दीनों, तीनों, यारह के पंचीं नों के नों ट्यकित आ रहे हैं]

(८) बीसों ट्यकित आ रहे हैं- → अनिश्चित संख्यावाचक [बीसों, तीसों, चालीसों, पचासों] पचासों → पचास के पचास

↳ अनिश्चित

- (७). जलियाँवाला बाग हत्याकाष्ठ में हजारों लोग मारे गए। अनिश्चित
- (८). जलियाँवाला बाग हत्याकाष्ठ तो अंग्रेजी शासन की रिपोर्ट के अनुसार लगभग चार सौ लोग मारे गए — अनिश्चित
- (९). जलियाँवाला बाग हत्याकाष्ठ में अंग्रेजी शासन की रिपोर्ट के अनुसार ३४४ लोग मारे गए — निश्चित संख्या वाचक

### # परिमाणवाचक विशेषण :-

→ माप-तौल का बोध

निश्चित परिमाणवाचक

जो एक निश्चित माप-  
तौल की वस्तु का बोध  
कराएगा।

→ 5 किलो आलू, ५ फीट  
2 किलो सेव  
५ लीटर दूध  
200 ग्राम पनीर  
5 मीटर कपड़ा  
खुदाई में एक टन सोना मिला  
5 घामनमफ

अनिश्चित परिमाणवाचक

जो एक अनिश्चित माप-तौल  
का बोध कराएगा।

→ थोड़ा दूध ले आना  
बोतल में कुछ पानी ले  
कुछ मीटर कपड़ा ले  
आना।  
खुदाई में टो सोना मिला  
थोड़ा-सा नमफ, चुटकी अनमफ

### # सार्वनामिक विशेषण :-

मौखिक सार्वनामिक  
विशेषण

योगिक सार्वनामिक  
विशेषण

## प्रशिक्षण

### PART-3

#### (3). सार्वनागिक प्रशिक्षण :-

प्रत्यय → गे, हा  
गद्य → तु  
प्रान्त → गह, वह, ये, वे, कुछ  
जोड़

##### गौलिक सार्वनामिक प्रशिक्षण

तुम, यह, वह, ये, वे, जो, सो  
हम आदि

उदाहरण) यह हैं गेरा है।  
(सर्वका) (राजा)

उ) यह घर मेरा है।

ग) वह मीबाज़ल तुम्हारा है।

घ) रेसा घर बनाना है। → यौगिक सार्वनामिक प्रशिक्षण

# कोनो भाइयो मे बहुत प्रिय है। → संख्यावाचक (नि. समुदायवाचक)

# बाजार से २किलो गेहूँ ले आना → परिमाणवाचक (नि.)

# वह आढ़मी व्यवहार मे ठिक है। → मौलिक सार्वनामिक प्रशिक्षण

##### यौगिक सार्वनामिक प्रशिक्षण

इसका, इसका, जैसा, ऐसा, वैसा  
हमारा, तुम्हारा

→ गौलिक सार्वनामिक प्रशिक्षण

" " "

" " "

#### (4). गुणवाचक प्रशिक्षण :-

→ यह किसी संज्ञा, सर्वनाम की गुण, दीष, आकार, रंग, स्वाद, दशा, स्पर्श, संज्ञा सम्बन्धी स्थान आदि का वर्णन करता है।

गुणः अच्छा, हालु, हमानलार, सच्चा, सीधा

दीषः लालची, बेईमान, डर्पीक, कायर, घमण्डी

आकारः चौकोर, गील, वर्गाणार, आयताकार, लम्बा, चौड़ा, तुकीला

रंगः नीला, धीला, हरा, काला

स्वादः अड़वा, खट्टा, मीठा, फीणा, नमकीन

दशाः तरूण, किशोर, जवान, बूढ़ा

स्पर्शः मुलायग, फठोर, यिकाना, खुरदरा, गर्म, ठंडी

संज्ञासम्बन्धीः बनास्सी, लखनवी, फिरोजाखादी, जोशफुरी, चीनी, शर्तीय

समयः दैनिक साप्ताहिक, गासिण, वार्षिक, प्राचीन, आधुनिक

क) वह ईमानदार व्यक्ति है।

गिन X  
माप-तोल X

विशेषण की भवस्थाएँ

मूलावस्था  
जब किसी से  
कोई तुलना नहीं।  
  
नीम कड़ता है  
राम ईमानदार है  
राकेश हेशियार है  
सिद्धि सुंदर है

उल्लावस्था  
जब किसी और से  
तुलना हो।  
  
राम, हीरा से ज्यादा ईमानदार है  
राकेश, मोहन से हेशियार है  
सिद्धि नवीन से सुंदर है

उत्तमावस्था  
जब सभी से  
तुलना की जाए।  
  
राम सबसे ईमानदार है  
राकेश कक्षा में  
सबसे हेशियार है  
सिद्धि सबसे सुंदर है

उच्च	उच्चतर	उच्चतम्
निम्न	निम्नतर	निम्नतम्
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम्
तेज	अधिक तेज	सबसे तेज
चतुर	आधिक चतुर	सबसे चतुर
मोटा	अधिक मोटा	सबसे मोटा

विशेषण की पहचान-

विशेषण के बाद व्यक्ति/पस्तु लगाकर देख लो—  
ईमानदारी व्यक्ति, बेईमानी व्यक्ति  
ईमानदार व्यक्ति, बेईमान व्यक्ति  
मीठा रसगुल्ला  
मोटा  
खराब  
पतला  
नरखट  
ब्रोला → अलाष्ट

## + + **लिंग** + +

**परिशाखा:-** वह शब्द जो किसी के पुरुष या स्त्री जाति का होने का बोध करता है।

# पुरुष जाति का बोध करने वाले शब्द : पुल्लिंग शब्द

# स्त्री जाति का बोध करने वाले शब्द : स्त्रीलिंग शब्द

\* हिन्दी भाषा में सिर्फ दो लिंग होते हैं।

\* लिंग का शाविदक अर्थ है—:(निशान, चिह्न)

(2) भेद-:

पुल्लिंग शब्द

↓  
पुरुष जाति का बोध

स्त्रीलिंग शब्द

↓  
स्त्री जाति का बोध

NOTE: लिंग की पहचान के तीन मुख्य तरीके हैं—

(1) सर्वनाम द्वारा-: मेरा मेरी  
(पुल्लिंग शब्द) (स्त्रीलिंग शब्द)

(2) विशेषण द्वारा-: अट्ठा अट्ठी  
(पुल्लिंग शब्द) (स्त्रीलिंग शब्द)

(3) क्रिया द्वारा-: रहा है रही है  
(पुल्लिंग शब्द) (स्त्रीलिंग शब्द)

<u>पुल्लिंग शब्द</u>	<u>स्त्रीलिंग शब्द</u>
लड़का, मीबाइल	लड़की, रोटी
गिलास, पंखा	कटोरी, घड़ी
कटोरा, खर्च	चमच, अलमारी
बैंड, मोती	चाटपाई, दीवार
तकिया, पानी	चादर, लाईट
चश्मा, हाथी	कुर्सी, झील, बालटी
सोफा, गाल, मॉनिटर	गेज, डायरी, नाक
पायजामा, पैन, मजा	नकेला, डोर, आय, कजा
कुर्ता, जूता	

## आपके प्रश्न -:

लता	→ स्त्रीलिंग
रोषनी	→ स्त्रीलिंग
बीजम्	→ पुलिंग
(प्र०) उड़द	→ पुलिंग
दही	→ पुलिंग
बौतल	→ स्त्रीलिंग
घुঁঁট	→ पुलिंग
व्याथाम्	→ पुलिंग
उड़ान	→ स्त्रीलिंग
कारोबार	→ पुलिंग

## पुलिंग शब्द -:

### (1) महासागरों के नाम -:

प्रशान्त महासागर, अटलांटिक महासागर, हिन्द महासागर इत्यादि।

### (2) देशों के नाम -:

भारत, जापान, चीन आदि।  
(अपवाद -: ज्ञालंका) [स्त्रीलिंग]

### (3) ग्रहों के नाम -: (नक्षत्र)

सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्मस्पति, अरुण, राहु, केतु  
(अपवाद -: पृथ्वी) [स्त्रीलिंग]

### (4) अनाजों के नाम -:

जौ, गेहूँ, बाजरा, चना, उड़द  
(अपवाद -: मक्का, जई, ज्वार, मसूर, अरहर, मूँग, सरस)

### (5) पर्वत का नाम -: हिमालय, अरावली, सतपुड़ा, यूराँल

### (6) धातु/रत्न के नाम -: सोना, ताँबा, हीरा, विद्युत्यांचल (अपवाद -: चाँदी)

### (7) द्रव पदार्थ के नाम -: दूध, घी, पानी, दही, तेल (अपवाद -: छाठ, शराब, चाय, लस्सी, स्याही)

(8) वार महीना का नाम-: सोन्तार, गंगलवार  
 जांच, अप्रैल  
 चैत्र, फाल्गुन

(अपवाद-: जनवरी, फरवरी, मार्च, जुलाई)

जनवरी → इकारान्त

फाल्गुन → आकारान्त

गमला → आकारान्त

जलि → एकारान्त

मणि → इकारान्त

(9) सभी वर्ण-: अ, आ, क, ख, त्र, ऊ आदि  
 (अपवाद-: इ, ई, तट)

(10) वृक्षों के नाम-: नीम, पिपल, बरगद, शीशम

(अपवाद-: इमली, चुड़ा, बेकाइन, खेजड़ी आदि)

\* लिंग \*

PART-2

### स्त्रीलिंग शब्द

- (1) तत्त्वजी के नाम-: शरद, ग्रीष्म (अपवाद-ः पतझड़, ऋवण)
- (2) तिथियों के नाम-: रुक्षादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या
- (3) नदी के नाम-: गंगा, जमुना (अपवाद-ः ब्रह्मपुत्र, सीन)
- (4) भाषा बोली लिपि के नाम-: हिन्दी, झंगेबी, मेवाती, खड़ी, बोली, देवनागरी, गुरुगुरी
- (5) झीलों के नाम-: डल, बुलर, चिल्हा
- (6) दालों के नाम-: (अपवाद-ः उड़ा)
- (7) मसालों के नाम-: द्वादशची, सौफ़, मिर्च, हल्दी, लौंग (अपवाद-ः नमक) जीरा
- (8) पुस्तकों के नाम-: रामायण, महाभारत, कुरान
- (9) राशि के नाम-: कुम्भ, मीन, तुला, ईंट, मैष, कर्कि
- (10) 'आवट' प्रत्यय वाले शब्द-: सजावट, बनावट, लिखावट, ऊँवाहट

### \* आनी प्रत्यय

भव	→	भवानी
नौकर	→	नौकरानी
मुगल	→	मुगलानी
देवर	→	देवरानी
जेठ	→	जेठानी
मेहर	→	मेहरानी
खती	→	खत्ताणी

## \* आइन/इन प्रत्यय

गिरिर → गिरिराइन  
 चीवे → चीवाइन  
 कहर → कहरिन  
 कुमार → कुमारिन  
 ठकुर → ठकुराइन  
 पाण्डित → पाण्डिताइन  
 गुरु → गुरुजाइन  
 सुनार → सुनारिन

तेली → तेलिन  
 लाला → ललाइन  
 बाबू → बबूजाइन  
 हलवाई → हलवाइन  
 बनिशा → बनयाइन  
 पुजारी → पुजारिन  
 जोगी → जोगिन

जुआ → जुआहिन  
 पड़ोरी → पड़ोरिन

## \* 'नी' प्रत्यय

स्वामी → रखामिनी  
 तपस्वी → तपस्तिवनी  
 यशस्वी → यशीस्तवनी  
 अभिमानी → आजिमानिनी

## \* 'इका' प्रत्यय

लेखक	→ लेखिका/लेखिका <sup>x</sup>	दर्शक	→ दर्शिका
पाठक	→ पाठिका	शिक्षक	→ शिक्षिका
नाथक	→ नाथिका	सेवक	→ सेविका
गायक	→ गायिका		
संयोजक	→ संयोजिका		
संरक्षका	→ संरक्षिका		
पालक	→ पालिका		
बालक	→ बालिका		

## \* मती/वती प्रत्यय

ज्ञीमान → ज्ञीमती  
 आयुष्मान → आयुष्मती  
 खलवान → खलवती  
 भाग्यवान → भाग्यवती  
 पुत्रवान → पुत्रवती  
 सत्यवान → सत्यवती

→ मान-ः मती  
 वान-ः वती

धनवान → धनवती  
 रूपवान → रूपवती

\* **'त्रि'प्रत्यय**

नेता → नेत्री  
 कर्ता → कर्त्री  
 स्वयिता → स्वयित्री  
 आभिनेता → आभिनेत्री  
 वक्ता → वक्त्री  
 दाता → दात्री  
 धाता → धात्री

\* **'आ'प्रत्यय**

शिष्य → शिष्टा  
 आत्मज → आत्मजा  
 सुत → सुता  
 तनथ → तनथा  
 अनुज → अनुजा  
 अग्रज → अग्रजा  
 प्रियतम → प्रियतमा  
 महाशय → महाशया  
 महोदय → महोदया

Made by -:

Rajpit Kumar dwarka.

# लिंग

## PART-3

\* उम्रयलिंगी शब्द - :

→ वे पद जिनका स्त्रीलिंग निर्गण उनसे पूर्व 'महिला' लगाकर किया जाता है।  
 मुख्यमंत्री, सचिव, डॉक्टर, आहुक  
 प्रधानमंत्री, परिषद्, सभापति, शिशु  
 राष्ट्रपति, चित्रकार, खिलाड़ी, वफ  
 राजदूत, पत्रकार, स्वन्धन, दोस्त  
 उच्चायुक्त, वकील, इंजीनियर

⇒ वे शब्द जो 'नर' या 'मादा' लगाकर बदल जाते हैं -

तीता → मादा तीता  
 गिलहरी → नर गिलहरी  
 कौयल → नर कौयल  
 जिराफ → खरगोश, खटमल  
 मकड़ी, मकड़ी, मटछर  
 भेड़िया, चील, कछुआ  
 छिपकली, कीआ, चीता

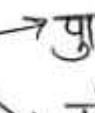
\* एकदम भिन्न रूप में लिंग का परिवर्तन - :

कवि	कवियित्री	साधु	साध्वी	ऋषि	ऋषिका
युवा	युवती	विधुर	विधवा	कुँवर	कुँवारी
विद्वान	विद्विही	नर	मादा		
पति	पत्नी	चिड़ा	चिड़िया		
भाई	भाई	वीर	वीरांगना		
पिता	माता	ननदोई	ननद		
चाचा	चाची	पुत्र	पुत्रवधु		
बहनोई	बहन	इंदु	इंद्राणी		
साहब	साहिबा				
नर्तक	नर्तकी				
अविवाहित	अविवाहिता				
हीही	हीहिणी				
सम्माट	सम्माशी				
पृथिवी	पृथिवरी				

# ROJGAR WITH ANKIT

# लिंग किस भाषा का शब्द है— संस्कृत

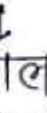
# लिंग का निर्धारण किस आधार परः संज्ञा

# मिनक  पुलिंग (✓) (डॉ. वासुदेव नन्दन के अनुसार)  
 स्त्रीलिंग

राम लिख रहा है → वर्तमान | सीता लिख रही है।

राम लिखेगा → भविष्यकाल | सीता लिखेगी।

राम ने पत्र लिखा → भूतकाल | सीता ने पत्र लिखा।

# काथ, कथन, व्याख्या, उघम, कितने स्त्रीलिंग  भूतकाल में लिंग  
पु. पु. स्त्री. ऊ.

# \* वचन \*

परिभाषा-: वे शब्द जो किसी के एक या अनेक हेतु फा बोध करते हैं।

एक = अकेला (एकवचन)

→ संख्या में एक का बोध

अनेक = अन्+एक  $\Rightarrow$  अगर एक से अन्य भी हो (बहुवचन)

→ संख्या में एक से अधिक का बोध

**वचन:- संख्या का ज्ञान**

# लड़का खाता है  $\rightarrow$  एकवचन

# लड़के खाते हैं  $\rightarrow$  बहुवचन

# गमला सूख गया  $\rightarrow$  एकवचन

# गमले अट्ठे हैं  $\rightarrow$  बहुवचन

उपरका-:

का, की, के, ना, ने,  
नी, रा, रे, री, को, रो, पर  
के लिए

बच्चा  $\rightarrow$  बच्चे(क)  $\rightarrow$  बहुवचन

↓  $\rightarrow$  बच्चों(ष)  $\rightarrow$  तिर्यक् रूप

एकवचन

बच्चा रो रहा है। एकवचन

बहुवचन लड़का खेलता है।

लड़के खेलते हैं।

बच्चे खाना खा लिया।

लड़कों अद्याय समाप्त

बच्चों का खाना खिलाओ।

लड़कों उपर लिया।

बच्चों के लिए फल लाओ।

लड़कों उपर लाए दो।

बच्चों में मिठाइयाँ वितरित कर दो।

ब्यवस्था जीजिए

**NOTE:**

एक शब्द के कभी भी दो बहुवचन नहीं हो सकते हैं।

लड़कों पर व्यापार मत दे

→ एक बहुवचन हो सकता है और दूसरा "तिर्यक् रूप" होगा।

# ROJGAR WITH ANKIT

कार्यक्रम	बहुवचन	तिर्थक रूप → विनाविग्रहि
धारा	धारों	कार्य, पर्यायि
सङ्केत	सङ्केतों	के नहीं
पंख	पंखों	बनेगा।
रूपया	रूपयों	
दरवाजा	दरवाजों	
महिला	महिलाओं	
बात	बातों	
किताब	किताबों	
भेड़	भेड़ों	
सभा	सभाओं	

**आँख** → आँखों → आँखों में ढवाई डाल दो।  
 (एकवचन) → आँखें → आँखें खुल रही हैं।

**बहुवचन निर्माण :-**  
(एकवचन)      (बहुवचन)

(1) इ / ई → इया

रोटी	→ रोटियाँ
कहानी	→ कहनियाँ
नदी	→ नदियाँ
डुकड़ी	→ डुकड़ियाँ
सखी	→ साखियाँ
टीपी	→ टीपियाँ
<u>झौंडी</u>	→ झौंडियाँ

बुराई	→ बुराईयाँ
मिठाई	→ मिठाईयाँ
सव्जी	→ सव्जियाँ
स्त्री	→ स्त्रियाँ
तितली	→ तितलियाँ
जाति	→ जातियाँ
नीति	→ नीतियाँ
विधि	→ विधियाँ
परछाई	→ परछाईयाँ

## वचन

### PART-2

\* द्वया → द्वयाँ

गुड़िया → गुड़ियाँ  
 चिड़िया → चिड़ियाँ  
 चुहिया → चुहियाँ  
 बिंदिया → बिंदियाँ  
 पुड़िया → पुड़ियाँ  
 डिविया → डिवियाँ  
 खिड़की → खिड़कियाँ

\* 'अ' → एँ

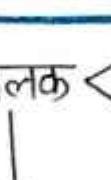
गेंद → गेंदेँ  
 कलम → कलमे॑  
 पुस्तक → पुस्तके॑  
 बहिन → बहिने॑  
 मूँछ → मूँछे॑  
 तलवार → तलवारे॑  
 आँख → आँखेँ  
 रात → राते॑  
 बात → बाते॑  
 नहर → नहरे॑

\* ऊ/ऊ → एँ

वधू → वधुए॑  
 बहू → बहुए॑  
 धातु → धातुए॑  
 धेनु → धेनुए॑  
 वस्तु → वस्तुए॑  
 तत्तु → तत्तुए॑

इट्ठा → इट्ठाए॑  
 सभा → सभाए॑  
 लता → लताए॑  
 अध्यापिका → अध्यापिकाए॑  
 कन्या → कन्याए॑  
 माता → माताए॑  
 भाषा → भाषाए॑  
 कक्षा → कक्षाए॑  
 कथा → कथाए॑

एकवचन और बहुवचन में समान रहने वाले शब्द

बालक  बालक सो रहा है  
(एकवचन)  
 बालक सो रहे हैं।  
(बहुवचन)

इन शब्दों की  
 गण, जन, वर्ग, वृद्ध  
 आदि लगाएँ  
 भी बहुवचन  
 द्योया जा सकता  
 है।

गुरु → गुरुजन, भक्तजन, सुधिजन

लेखक → लेखकगण

अधिकारी → अधिकारी वर्ग, जंतु वर्ग, कर्मचारी वर्ग

पाठक → पाठकगण

# ROJGAR WITH ANKIT

चाचा → चाचा लोग

मुनि → मुनिहृद [मुनि आ रह है]

तुम → तुम लोग [तुम आ रहे हैं]

आप → आप लोग [मुनिजन]

# वे सभी शब्द सदैव एकत्रयन रहते हैं, जो—:

व्यक्तिवाचक संज्ञा—: राम, ताजमहल

द्वयवाचक संज्ञा —: दूष, धी, तेल, पानी

आववाचक संज्ञा —: क्रीद, घ्यास, प्रेम

जनता, तांड़ा, लोहा, सोना,

हवा, दया, आग, सामग्री, वर्षा

# वे शब्द जो सदैव बहुत्रयन रहते हैं—

प्राण, हस्ताक्षर, हालचाल, समाचार  
दाम, लोग, बाल, अक्षत, केश, तेवर  
हौश, दर्शन, झाँसु, अनेक, रोम, रोंगटे

आदरसूचक शब्द—:

- (1) पिताजी आ रहे हैं।
- (2) गुरुजी पढ़ा रहे हैं।

# ROJGAR WITH ANKIT

→ ↵ काल ↶ →

परिभाषा → जो किसी क्रिया के हीने के समय को दर्शाएँ।

- काल के भौद → 03
  - 1. वर्तमान काल (उपस्थित या गुजार रहे समय का बोध) - 05
  - 2. भूतकाल (वीते हुए समय का बोध) - 06
  - 3. भविष्यकाल (आने वाले समय का बोध) - 03

1. वर्तमान काल :- वर्तमान काल के भौद पाचं हीने हैं।

- A. साधारण वर्तमान काल (आहत, दिनचर्या, ताहै, ही है, तो है आदि)
- B. अपूर्ण (तात्कालिक) वर्तमान काल (वर्तमान में भारी)
- C. घूर्ण वर्तमान काल (वर्तमान में घूर्ण हीने का लोध)
- D. सदिग्दा वर्तमान काल (वर्तमान में किसी अन्य स्थान पर सदेह की स्थिति)
- E. समावेश वर्तमान काल (वर्तमान में समावनाएँ)

(A) साधारण वर्तमान काल :-

- झूरज पत्र लिखता है।
- गीता गाना गाती है।
- सौचन मैंज आफ करता है।
- मैं शैम पढ़ता हूँ।

(B) अपूर्ण (तात्कालिक) वर्तमान काल :-

- मैं पढ़ा रहा हूँ।
- तुम लौग अभी तैयारी कर रहे हो।
- भाविता आना आ रही है।
- मिट्टि भृत्य के गार पर चल रही है।

(C) घूर्ण वर्तमान काल :-

- मैं आना आ चुका हूँ।

- तुम लोग तैयारी कर पुके हो।
- आविता पढ़ पुके हो।

**(D) संदिग्ध वर्तमान काल :-**

- वह बाजार खाती होगी।
- भौद्धन खेल रहा होगा।
- मनीष लौटे कर रहा होगा।
- सविता स्कैटर बनाती होगी।

**(E) सम्भाल्य वर्तमान काल :-**

- वह बाजार गया हो।
- शायद वह लैटा हो।
- शायद वह राज्यी खाता हो।
- राम ने खाया हो।

**2. भूतकाल :- 6 भींद हीने हैं**

- (A) भावारण भूतकाल
- (B) अपूर्ण भूतकाल
- (C) मूर्छ भूतकाल
- (D) असान भूतकाल
- (E) संदिग्ध भूतकाल
- (F) दैत्येन्द्रियमद् भूतकाल

**(A) भावारण भूतकाल :-** किया के हीने के समय का पता नहीं चलता है।

- राम ने मङ्गबार पढ़ा।
- उसने अपना काम भत्तम कर लिया।
- सीता ने पत्र लिया।
- बच्चे विद्यालय गौये।

(B) अपूर्ण भूतकाल :- भूतकाल में किया थारी हीने का बोध

- Ex → • राम अभ्यास पढ़ रहा था।  
• वह अपना काम अत्यं ज़रूर कर रही थी।  
• सीता पत्र लिखा रही थी।  
• बच्चे विद्यालय आ रहे थे।

(C) झूर्ण भूतकाल :- किया के बहुत समय पहले पृष्ठित हीने का बोध

- Ex → • राम ने अभ्यास पढ़ा था।  
• 3 से अपना कार्य अत्यं ज़रूर निया था।  
• सीता ने पत्र लिखा था।  
• बच्चे विद्यालय गए थे।

काल

PART-2

भूतकालः

(1) संदिग्ध भूतकाल-ः बीते हुए समय में, संदिग्धता का बोध रिहित होगी।

मनोज आथा होगा।

बस छठ गई होगी।

तुमने लिखा होगा।

यह उपजिलाधिकारी वन गई होगी-

(5). आसन्न भूतकाल-ः बीते हुए समय में, निकटता का बोध

गीता ने अखण्ड पढ़ा है।

माताजी ने चाय बनाई है।

सीता गयी है।

सोनू विद्यालय गया है।

(6) हेतुहेतुमह भूतकाल-ः ठीक हुए समय में यदि एक अवाक्य दूसरे

अवाक्य पर निर्भर करे

अगर तुमने अच्छी मेहनत की होती तो जरूर ढारिगा बनते।

यदि उसने मन लगाया होता तो, सज्जी अच्छी बन जाती।

यदि मन में अटकाव न होता तो नौकरी मिल जड़ि होती।

अगर वह बुलाती, तो मैं जरूर जाता।

अविष्य कालः 03 भेद

(1) सामान्य अविष्य काल-ः होगा, रहेगी, रहेगी जादि शब्द

भारत ट्रिकोट विश्व का प्र जीतेगा।

सीता च्छाना बनाएगी।

किराट कूहनी १७वीं शतक लगाएगा।

हम ढारागा लेनेगी।

हमारी नौकरी लगेगी।

- (2). रुद्रं शात्यं भविष्यत् काल-ः गतिक्षय में रामशात्वा  
 → शायद् सीता खाना दानाएँगी ।  
 शायद् हरीश पोख्ता लगाएँगा ।  
 शायद् राम पुस्तक पढ़े ।
- (3). हेतुहेतुभृत् भविष्यत् काल-ः  
 भविष्यत् में एक उपवाक्य दूसरे उपवाक्य  
 पर निर्वर करेगा ।  
 → यदि तुम मेहनत करोगी, तो जरूर सफल हो  
 जाओगे ।  
 यदि आप दिन-मेहनत करेंगे तो जरूर  
 दरिंगा बनेंगे ।  
 यदि बारिश होगी, तो फसल अच्छी होगी ।
- \* आकार्थिक भविष्यत् काल-ः  
 → न्याय घर आइएगा ।  
 तुम बाजार जरूर जाऊगा ।

# कारक

परिशाखा:-

वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम का रातन्दृ किया जैं  
जोइते हों-

→ श्री राम ने राघव को बाण से गारा ।

→ संज्ञा संज्ञा संज्ञा किया  
कारक को विभक्ति और परसर्ग भी कहते हैं।

कारक विभक्ति या परसर्ग रद्देव संज्ञा या सर्वनाम के  
बाद प्रयोग होता है।

# एक वाक्य में आठों कारक हो सकते हैं, लेकिन एक  
शब्द में एक ही कारक होगा।

# कारक के कुल 8 भेद होते हैं।

# कारक के संज्ञा या सर्वनाम के आधार पर भेद → 06

विभक्ति

- प्रथम विभक्ति ने
- द्वितीय " की
- तृतीय " से(के द्वारा)
- चतुर्थ " को, के लिए
- पंचम " से(अलगाव, पृथक्करण)
- षष्ठ " का, के, की, ना, ने, नी  
रा, रे, री
- सप्तम " में, पर
- अष्टम " हे, हो, अरे

कारक का  
नाम  
करता

कर्म

करण

सम्प्रदान

आपादान

सम्बन्ध

अधिकरण

सम्बोधन

कारक की पहचान

→ कार्य को करने वाला

→ जिस पर किया का प्रभाव पड़े

→ साधन या वजह

→ जिसके लिए कार्य किया जाए

→ ढो-चीजे एक दूसरे से अलग  
होंगे

→ एक पद का अन्य पद से संबंध

→ संज्ञा/सर्वनाम का स्थान

→ जब किसी को संबोधित किया  
जाएगा।

# ROJGAR WITH ANKIT

कर्ता कारक- (१) राकेश ने रोटी बनाई।

(२) रोहन ने पत्र लिया।

(३) रगा ने दूध पिया।

(४) गाता जी ने खाना खिलाया।

(५) चन्द्रगा चमकता है। } ५,६,७-इन्हीं कारण विभिन्न ढंगों में और ऐसी विभिन्न को

(६) लड़की स्कूल जाती है। } शून्य कारक/अप्रत्यक्ष/परीक्षा विभवित करते हैं।

(७) सीता गाना गाती है। }

(८) हरीश ने अखबार पढ़ा। }

शून्य कर्ता कारक किसमें होता है—

(१). हरीश ने गाना गाया।

(२). बबीता ने रोटी बनाई।

(३). सिद्धि ने भरतनाट्यम् की प्रस्तुति दी

(४). राकेश रहने रहा है।

कर्म कारक-:

(१) माताजी कपड़ों को धो रही है।

(२) माँ ने धोबी को कपड़े दिए। (जो वस्तु हमेशा के लिए न दी

(३) बड़ों को सम्मान देना चाहिए। जाए, तो कर्म कारक होता

(४) अध्यापक छात्रों को पीटता है। है)

(५) अध्यापक ने छात्रों को पढ़ाया।

(६) राम बन को जूते हैं। (शमन की बात → कर्म कारक)

(७) हमारे घर के चारों ओर बगचा है। } दिशा की बात- कर्म

(८) सड़क के दोनों ओर बृक्ष लगे हैं। } कारक

## कारक

### PART-2

(३). करण कारक :- से (के द्वारा)

- (१) बच्ची बस से रकूल जीते हैं।
  - (२) बच्चों के द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया।
  - (३) माताजी ने चाक से कल फटा
  - (४) मैं चेन से लिख रहा हूँ।
  - (५) मीहन द्वारा बहुत श्रद्धा कविता सुनाई गई।
  - (६) वह उल्लंगड़ा है (अंग-शंग)
  - (७) अभी ४ बजे है (समय पुछा या बताया गए)
  - (८) वह अभिषेक के साथ बाहर गयी है।
- } अपवादः

(१). सम्प्रदान कारक :- को → के लिए

- (१) ज़िन्दिनेश के लिए चाय बना रहा हूँ।
- (२) माताजी ने भिखारी को दाने दिया।
- (३) राजा ने भिखारी को कस्त दिए।
- (४) भगवान के वास्ते जाने दो।
- (५) बच्चों के निमित्त मिठाई लाओ।
- (६) दादाजी को मेरा नमस्कार।
- (७) रोहन के लिए साइकिल ले चलो।

(५). अपादान कारक :- से → (अलगाव, पृथक्करण)

- (१). बबीता, रोहन से दूर चली गई।
- (२). मैं दिल्ली जा रहा हूँ।
- (३). मैं दिल्ली से कलकत्ता जा रहा हूँ।
- (४). हिमालय से गंगा निकलती है।
- (५). पेड़ से पत्ता गिरता है।
- (६). वह बस से उतर रहा है।
- (७). सीमा, सचिन से दुर्दंर है। (तुलना की बात)
- (८). बबीता, रविता मेरे तेज ढौड़ती हैं।
- (९). सोहन, गोहन के बनिस्तत श्रेष्ठ हैं।
- (१०). सानू सांप को देखकर डर गया।

(6) आधिकरण कारक :-

- (1). बन्दर डाल पर बैठे हैं।
- (2). गद्दी पानी में रहती हैं।
- (3). तीर सिपाही युद्धग्राम में शहीद हुए।
- (4). किताब मेज पर रखी है।
- (5). कुख्यक्षेत्र में महाभारत का युद्ध लड़ा गया।
- (6). बोल दो ना जरा, दिल में क्या है दुपा।
- (7). आकाश में बहुत तारे हैं।

(7) सम्बन्ध कारक :-

→ का, के, की  
→ रा, रे, री  
→ ना, ने, नी

- (1). राम का भाई दोड़ रहा है।
- (2). थह मनीषा की पुस्तक है।
- (3). तुम्हारा भाई अच्छा है।
- (4). उपनी बहन के जैसे औरी को भी इज्जत दीजिए।
- (5). यह वर्दी मेरी है।

(8) संबोधन कारक :-

- (1). देवियों भीर सज्जनों! 10 मिलियन सव्सक्राइबर पूरे होने वाले हैं।
- (2). हे राम! यह कथा ही गया।
- (3). ओरे! आप आ गये।
- (4). हे ईश्वर! रक्षा करो।
- (5). वाह! तुम सफल हो गये।

# ROJGAR WITH ANKIT

## समास

- रसोईद्वारा → रसोई का घर  
रसोई के लिए घर
- सम् + आस  
'पास', 'बिठाना'
- (1) अन्न और जल → अन्न-जल
  - (2) पथ से ब्रह्मण्ड → पथब्रह्मण्ड
  - (3) विद्या के लिए आलय → विद्यालय
  - (4) घीड़ों की दौड़ → घुड़दौड़
  - (5) जल में नम्रन → जलनम्रन

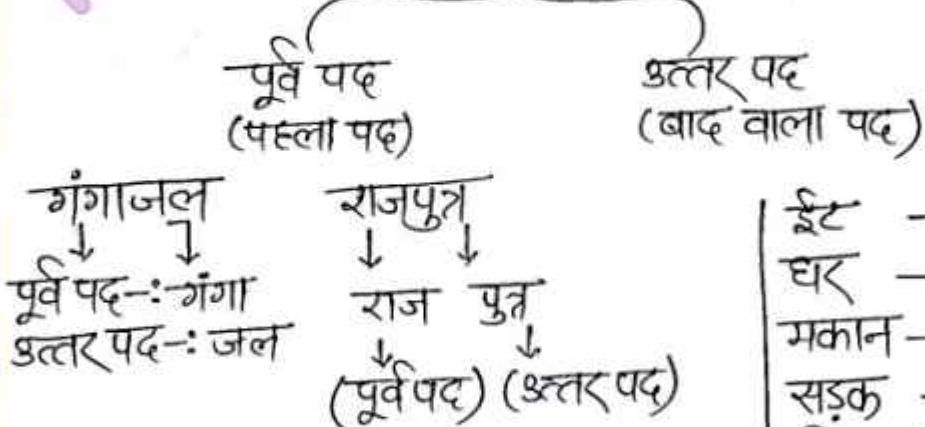
# समास का अर्थ होता है - संदिग्धीकरण

# समास की प्रक्रिया में बना शब्द 'सामासिक शब्द' या 'सामासिक पद' कहलाता है।

- (1) माखनचोर → माखन को चुराने वाला
- (2) हवन-सामग्री → हवन के लिए सामग्री
- (3) धन इथाम → धन के समान इथाम

# सामासिक पद ही समस्त पद कहलाता है और समस्त पद दो पदों से मिलकर बनता है।

### समस्त पद



इट	→	ट
घर	→	×
मकान	→	×
सड़क	→	×
किताब	→	×
अलगारी	→	×
कुर्ती	→	×

# ये शब्द असामासिक हैं।

# ROJGAR WITH ANKIT

प्र०:- निलोगी अरामारिक शब्द याएँ।-

- (2) शला-बुरा }  
 (3) नवरात्र }  
 (4) नीलकंगल }  
 (5) कुरी → अरामारिक पद

समाज + इकु ⇒ सामाजिक  
 सप्ताह + इकु ⇒ साप्ताहिक  
 नीति + इकु ⇒ नीतिक  
 विज्ञान + इकु ⇒ वैज्ञानिक  
 → क्ष=कु+ष

समास विग्रह:-

किसी संक्षिप्त पद को पूरी विस्तार से (अत्यय, योजक, विभक्ति) आदि को लिख देना

सप्ताह:- सात दिनों का सप्ताह

चन्द्रमुख:- चन्द्रमा के समान मुख

पीताम्बर:- धीले हैं जो वस्त्र

# हिंदी भाषा के अनुसार समास के ०६ श्रेद होते हैं

(1) द्विगु (द्विगु) समास

(2) कर्मधारय समास

(3) द्वन्द्व (द्वन्द्व) समास

(4) अत्यर्थीश्वर समास

(5) तत्पुरुष समास

(6) बहुवीहि समास

# ROJGAR WITH ANKIT

## समास

### PART-2

(१). द्विगु समास-: वह समास जिसका पहला पद (पूर्व पद) सेरल्यावाची हो और उत्तर पद (बाद वाला पद) प्रधान हो-  
उदाहरण-: नवरात्र → नीं रातों का समूह  
(७ रात)

चौराहा तिलोक अठनी सप्तश्चिं चतुर्श्चिं  
त्रिवेणी दोपहर चवली आष्टाद्यायी चारणई  
तिरंगा नवग्रह सतसई क्षीन त्रिकीण  
पंचामृत नवरत्न चौमासा दुपटा त्रिपला  
ए, दो, तीन, चार, ५, ६, ७, ८, ९, १०, २०, ३०, ४०, ५०, ६०, ७०, - १००  
११, १२, १३, १४, २३, २६, ३७, ४६, ५७, ६८, ७३, ८७, ९६  
↳ द्वितीय समास (दोनों पद प्रधान)  
↳ बीच की सीरल्या → इन्द्र समास (दोनों पद प्रधान)

(२). कर्मणारथ समास-: वह समास जिसमें एक पद विशेषण और एक पद विशेषण हो-

काला आदमी  
विशेषण विशेषण  
विशेषण की विशेषता (जिसके बारे में बात हो)

उदाहरण-: अधपका, सुविचार

परमानंद, नीलकमल

लौह पुरुष — लौह है, जो पुरुष

लौह के समज पुरुष

अदामरा — मरा है जो आधा

गुणवू — अच्छी है जो दू (मैदान)

बदवू — खुरी है, जो महळ

नील — नीली है जो गाथ

श्वेताम्बर — श्वेत (सफेद) है जो अम्बर (वस्त्र)

कमलन्थन, सज्जन, सुखी, सद्भावना, दुष्प्रभाव, बुरीआत्मा,

चंद्रमुख, लालमणि

# ROJGAR WITH ANKIT

# कर्मचार्य समास के भेद → ①

- (1) विशेषण पूर्व पद कर्मचार्य समास = पीलावरत, नीला अवर
- (2) विशेष " " " " = चरणकमल (पूर्व पद - विशेष)
- (3) विशेषणोऽथ कर्मचार्य समास = कृताकृत (क्रिया - विक्रिया)
- (4) विशेषणोऽथ " " " = आग्रहक्त (दोनों पद - विशेषण)  
आग्रहात्

रसांकुर

प्र० तैजगति में कर्मचार्य पा कौन-सा भेद है—  
(विशेषण) (विशेषण) ↳ विशेषण पूर्व पद कर्मचार्य समास

3) इन्ड्र समास :- वह समास जिसमें दोनों पद पुधान (मुरल्य) हों और उनका विवरण किया जाता है तो 'ओर', 'भा', 'अचन' आदि को प्रादुर्भाव होता है,

उदाहरण = माता - पिता , अन्न - जल (अन्न ओर जल)

पाप - पुण्य , अपना - परामा

खरा - खोटा , आगा - पीढ़ा

सीता - राम , आज - कल

राम - लक्ष्मण , धनुर्भाणी

रात - दिन , फल - फूल

एक है पंक्ति , तिरेसठ

### इन्ड्र समास के भेद :- ③

1. वैकल्पिक इन्ड्र समास : विलोन शब्द

2. समात्र इन्ड्र समास : एक जाति का बोध

3. इतरतर इन्ड्र समास : सिर्फ लिखे शब्द अपना अर्थ नहीं है,

① वैकल्पिक इन्ड्र समास : विलोन शब्द

सुखः दुर्ख , जीवन - मरण

खरा - खोटा , भला - बुरा

यरा - अपना , दैनासुर

शीतोष्ण , सन्धासत्य

कहा - सुनी , ऊँच - नीच

2) समाहर इन्ड समासः एक जाति का बोध



कंकड़ - पत्थर , चाय - पानी  
धास - फूस  
कीड़ा - मक्कीड़ा  
पैड़ - पौधे  
गाय - मैस  
खूपमा - पैसा

3) झरैतर इन्ड समासः सिफ़ लिखे शब्द अपना अर्थ देंगे ।

भाई - बहिन  
राधा - कुमार  
सीता - राम  
तिरसड़ (८३) -

4) अध्ययी भाव समासः जिसका प्रथम पद पुढ़ाम हो ।

जिन शब्दों में उपसर्ग का प्रयोग हो ।

अ, आ, नि  
निर्, स, (पुनि)  
भथा, भर, जनु  
जाति, बै

उपसर्ग, प्रथम

↓  
प्रदानश

शब्द से      शब्द के  
पहल      लाद  
लेशन  
उपसर्ग

उदाहरण - अनाथ, असत्प, अशुभ, उनाघन, आजीवन, अनुकरण, अतिरूपि  
आमरण, निडर, निधान, निर्जीव, निर्विरोध, लेशन, लैवर्जन  
नीरोग, समाप्त, पुनिपल, प्रैषक, प्रत्याघात, प्रतिशत, मरसक, प्रपैट  
पैम्पता के अनुसार ← भथाभौग्य, भथाशक्ति ( राक्ति के अनुसार ), भथार्थ, उन्त्युक्ति

[ निः + रौग = नीरौग ]  
[ निः + रज = नीरज ]  
[ निः + रव = नीरव ]

② पुनरावृति वाले शब्द में अव्ययी भाष समास के अंतर्गत आते हैं।

संलग्न की पुनरावृति : धर-धर, पल-पल, गाँव-गाँव  
हाथी-हाथ, रातों-रात, दिनों-दिन, कानों-कान  
प्यार-प्यार, गली-गली

सर्वनाम की पुनरावृति : कुदू न कुदू, कोई न कोई

विशेषण की पुनरावृति : मंद-मंद, साफ-साफ  
धीर-धीर, दाढ़ाड़ - डम्प

[ शुविचार → अव्ययी भाष ]  
[ कर्मधार्य ]

# ROJGAR WITH ANKIT

(5) बुद्धीहि सामारः - जब पूर्व पढ़ और उत्तर पढ़ किसी तीरोंट पढ़ की तरफ इशारा करे - (अप्रश्नान) (अन्य पद)

त्रिनेत्र - तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् शिव

त्रिलोचन - तीन हैं लोचन (केत्र) अर्थात् शिव

पीताम्बर - पीला है, अम्बर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण

आशुतोष - आशु (जीव) हो जाते हैं, जो तोष (संतुष्टि)

अर्थात् शिव

द्वानन - रावण

चतुरानन - षष्ठा जी

चतुर्भुज - विष्णु जी

रत्नगत्री - समुद्र

सुर्यीव -

पञ्चमुखी - हनुमान जी

हिमकल्या - पार्वती जी

नीलकण्ठ - शिव

चंद्रचूड़ - शिव

चतुर्भुजीलि - शिव

अजातशत्रु - राजेन्द्र प्रसाद

मुरलीधर - कृष्ण

पुष्पघन्ता - कामदेव

शूलपाणि - शूल (क्रिश्वल) को छारण किए हुए

चक्रपाणि - कृष्ण

वीणापाणि - सरस्वती

(6) तत्पुरुष समासः - पह समास जिसका उत्तर पढ़ प्रधान हो और साथ ही फारक विभक्ति का लोप हो -

राजपुत्र - राजा का पुत्र

→ सम्बंध फारक (लोप)

⇒ तत्पुरुष समास के शेष - ⑥

(7) कर्म तत्पुरुष समासः

वनगमन - वन को गमन

माखनचौर - माखन को चुराने वाला

# ROJGAR WITH ANKIT

जनप्रिय - जन को प्रिय  
रथचालक - रथ की चलाने वाला  
जेवकतरा -  
वैद्यज -  
आपत्तिजनक -  
गगनचम्बी -  
श्रृंयकार -  
लोकार्पण - लोक को अर्थण

## (ii) करण तत्पुरुषःः से (के डारा)

स्वरचित - स्वयं से रचित  
मनचाहा - मन से चाहा  
रसभरा - रस से (के डारा) भरा  
अनुपूर्ण - अनु से पूर्ण  
आखो देखी - आखो से देखी  
शुगायुक्त -  
आमाल पीड़ित -  
स्वरनालिखित -  
पवनचक्की - पवन से चलने वाली चक्की  
रोग शूहत -  
रेलथाता -  
बिलारी रचित -  
रस्मजड़ित - रस्म से जड़ा हुआ

# ROJGAR WITH ANKIT

## (iii) रामप्रदान तत्पुरुष-

विद्यालय - विद्या के लिए आलय  
रसोई घर - रसोई के लिए घर  
जौशाला - जौ के लिए शाला  
प्रश्नवडाला - प्रश्न " " "  
मसालदानी -  
विद्युतगृह -  
शिवर्पण -  
संग्रामतन -  
प्रयोगशाला -  
स्नानघर -  
देशभक्ति -  
गुरु-दरिंदा -  
देवालय -  
नाट्यशाला -  
युद्धाभ्यास -  
मधुमाला -  
सत्याग्रह -  
घर खर्च -  
कठी कूल -  
रनिवास -  
आराम कुरी -

## (iv) अपादान तत्पुरुष - से (अलगाव)

रोगमुक्त - रोग से मुक्त  
दीघमुक्त - दीघ से मुक्त  
अपराधमुक्त - अपराध से मुक्त  
पथ भ्रष्ट - पथ से भ्रष्ट  
सैवानिवृत्त -  
देशनिकाला -  
नेतृधीन -  
कर्तव्यप्रिमुख -  
कामचौर -

# ROJGAR WITH ANKIT

- कलारहित
- शृणातीत - शुणो से परे (श्रीत)
- इन्द्रगातीत - इन्द्रियों से परे
- विचारहित
- चुटिहीन
- धनहीन
- जाति - लहिष्कृत
- ललहीन
- आगथहीन
- घंटनमुज्ज्ञा
- लोकोत्तर - लोण से उत्तर (पेरे)
- स्नाकोत्तर - स्नातक से उत्तर (पेरे)
- शुणयुक्त - शुण से युक्त → कर्ता
- शुणमुक्त - शुण से मुक्त → अपाहान

(v) समर्बंध तत्पुरुष :- ऊ, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी

राजपुत्र - राजा ऊ पुत्र

देशरक्षा -

जलधारा -

भूतिपूजा

जंगाजल

राजनीति

विमालय

सौरयज्ञल

शहदखासी

मनोविज्ञान

नैतिक

कृष्णमूर्ति

पतनपुत्र

राजदत्तवार

सूर्योदिय

चंद्रोदिय

रक्तदीन

विद्यार्थी

थशीपरांत

विद्यादान

जन्यादान

कैश्चत्तेष्य

चालखुदाई

पशुबला

क्रतिकल्या

(vi) भाष्यिकरण तत्पुरुष (मे, पर)

ज्ञापवीती - ज्ञाप (खण्ठ) पर वीती

शृणुप्रवेश - शृणु मे ध्वेश

# ROJGAR WITH ANKIT

जन्मग्रन्थ  
विद्यारथग्रन्थ  
सिरदर्द  
पुड़हवार - योड़े पर सवार  
धर्मवीर  
आत्मविश्वास  
आनंदमग्न  
पुरुषोल्लभ  
वनवास  
खेगवासा

नीतिकृशल  
पूर्णनिपुण  
रेलगाड़ी (रेलस्ट्री) पर चलने वाली  
जाड़ी)  
विद्या प्रतीक

## अन्य स्मार्तः

### (1) नप्त तत्पुरुषः

नकारात्मक शब्द आते हैं  
अ, न, अनि, ना आदि उपसर्ग के रूप में  
रहते हैं।

असत्य	नाभालिग
अनादि	नास्तिक
नापस्कर्त्ता	अनिश्चय
अनपह	

### (2) अलुक तत्पुरुषः : जिनमें एक विश्रिति/काल

फा लोप हो -  
खेचर (खे में चलने वाला)  
(आकाश) (विचरण)  
मनसिज - मन में सिज

### (3). मध्यम पद लोपी तत्पुरुषः : जिनमें एक से आधिक पद का लोप हो -

ददीबड़ा - दही में डूबा दुग्धा बड़ा  
रेलगाड़ी - रेल पर चलने वाली जाड़ी

सप्त खिंचु, दिव्युनग, पंचगंगनग } - दिग्गु इ भात्यरी शात् थदि हो  
तो भात्यरी शात् ऊजे।

## संनिधि

परिभाषा-: दो शब्दों के मील से उत्पन्न विकार (परिवर्तन), संधि कहलाता है।

स्वर + व्यंजन

विद्यायिल = विद्या + शालय

# संधि का अर्थ जोड़ होता है।

# क्या हर एक शब्द में कोई संधि होती है? [नहीं]

पानवाला → पान + वाला

सर्वजीवाला → सर्वजी + वाला

# संधि के कुल ③ भेद होते हैं

स्वर संधि  
व्यंजन संधि

# संधि का निर्माण कितने प्रकार से संश्लेष्ट है?

(1) स्वर संधि → स्वर + स्वर

(2) व्यंजन संधि → व्यंजन + स्वर

स्वर + व्यंजन

व्यंजन + व्यंजन

(3) विसर्ग संधि → विसर्ग + स्वर

विसर्ग + व्यंजन

स्वर संधि-:

स्वर + स्वर

# स्वर संधि के भेद → ⑤

(i) दीर्घ स्वर संधि ⇒ अपने परिवार में संधि ( $A+A, B+B$ )

(ii) ग्रन्थि स्वर संधि ⇒ ( $A+B$ )

(iii) बृद्धि स्वर संधि ⇒ ( $A+C$ )

(iv) व्यंजन स्वर संधि ⇒  $B+$  अन्य कोई स्वर

(v) अयादि स्वर संधि ⇒  $C+$  अन्य कोई स्वर

आ, आ	इ, उ, औ, न्ट	ए, ए, ओ, ओ
------	--------------	------------

दीर्घ स्वर संधि-: अपने परिवार में संधि होगी और परिवार को 'बड़ा' बनायगे—

# ROJGAR WITH ANKIT

गज + आनन्द  $\Rightarrow$  ग + आ + न + अ + आ + न + अ + न + अ

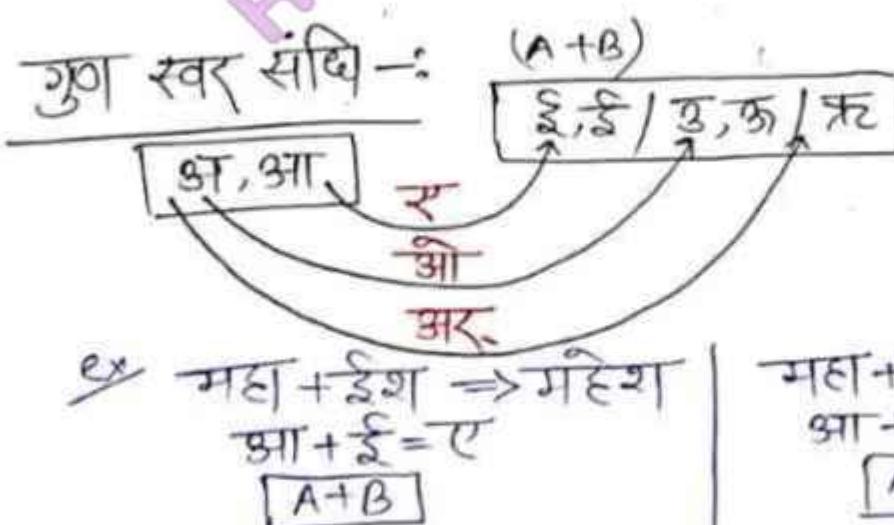
- |   |   |
|---|---|
| $[A+A]$<br>धर्म + आधा $\Rightarrow$ धर्माधा (आ + आ)   | $A+A$<br>$[A+A \rightarrow AA]$<br>शान आ $\rightarrow$ आ॒ |
| शिक्षा + शक्षी $\Rightarrow$ शिक्षाश्क्षी (शा + श)    |   |
| रवि + इंद्र $\Rightarrow$ रवीन्द्र (इ + इ = ई)        |   |
| कपि + ईश $\Rightarrow$ कपीश                           |   |
| अभि + ठृष्ट $\Rightarrow$ अभीष्ट                      |   |
| पितृ + त्रटण $\Rightarrow$ पितृण (त्रट + ट्रट = ट्रट) |   |
| मातृ + त्रटण $\Rightarrow$ मातृण                      |   |
| नारी + ईश्वर $\Rightarrow$ नारीश्वर                   |   |
| शुक्र + अपेक्षा $\Rightarrow$ शुक्रपेक्षा             |   |
| हरि + ईश $\Rightarrow$ हरीश                           |   |
| महीश $\Rightarrow$ महि + ईश (इ + ई = ई)               |   |

उर्मि  $\rightarrow$  समुद्र की तरंग  
 अर्मि  $\rightarrow$  सजीव की तरंग

सूक्ष्मि  $\Rightarrow$  सू + उक्ष्मि

वधुर्मि  $\Rightarrow$  वधु + उर्मि

शुष्मा  $\Rightarrow$  शु + उष्मा

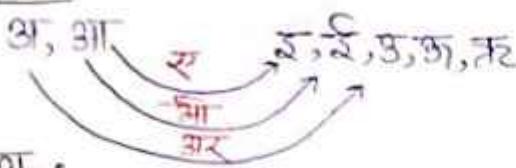


महा + उत्सव  $\Rightarrow$  महोत्सव  
 आ + उ = ओ

$A+B$

# ROJGAR WITH ANKIT

(2) गुण संनिधि :- 'A + B'



उदाहरण :-

- भारत + इन्द्र = भारतेन्द्र
- गज + इन्द्र = गजेन्द्र
- साहित्य + इतर = साहित्यितर
- उप + ईशा = उपेशा
- महा + उत्तर = महीत्तर
- जान + उदय = जानीदय
- जल + झीजी = जलोर्जी
- उच्च + ऊर्ध्वे = उच्चीर्ध्वे
- योग + इन्द्र = योगेन्द्र
- महा + तटीषि = महीषि
- देव + तटीषि = देतष्टीषि
- रथी + तट्टु = रथृत्टु
- शीत + तट्टु = शात्टु

(3) वृद्धि स्वर संनिधि :- 'A + C'



उदाहरण :- एक + एक = एकेक  
आ + ए

- विलत + एषणा = विलैषणा
- प्रिय + एषी = प्रियैषी
- मत + एकता = मैतैकता
- धन + एश्वरी = धैशैश्वरी
- लोक + एश्वरी = लौकैश्वरी
- रादा + एत = सैदैव
- थथा + एत = थैथैव
- परम + ओजर्खी = परगौजर्खी
- गंगा + ओद्य = गंगौद्य
- महा + ओजा = महौज
- यथा + ओचित्य = यैथैचित्य

गौषध = महा गौषध  
परगौदार्थ = परम गौदार्थ  
शास्त्रोहिती = शास्त्रा ओहिती  
ग्रोड = प्र + ओड

अपवाद :-  
↳ आयग वृद्धि मेही



# ROJGAR WITH ANKIT

## संधि

### PART-3

#### \* स्वर संधि :

##### (5) अयादि संधि :-

परन् → पी + अन  
 भवन् → भो + अन  
 पवित्र → पी + इत्र  
 भवित्य → भो + इत्य  
 शाव → शो + अ  
 भवति → भो + अति  
 ज्ञावण → ज्ञो + अन  
 कवक → कौ + अकु  
 लवण → ला + अन

$$\begin{array}{l}
 \text{अय} = \text{ए} + \text{अ} \\
 \text{आय} = \text{ऐ} + \text{अ} \\
 \text{अत} = \text{ओ} + \text{अ} \\
 \text{आव} = \text{ओ} + \text{अ}
 \end{array}$$

चयन → चे + अन

नयन → ने + अन

विलय → विले + अ

जथ → जे + अ

चायन → चै + अन

नायन → नै + अन

गायिका → गै + इका

विद्यायिका → विद्यै + इका

नायक → नै + अक

पावन → पौ + अन

भावन → भौ + अन

धावक → धौ + अक

शावक → शौ + अक

भाव → भौ + अ

नाव → नौ + अ

नाविका → नौ + इका

#### \* व्यंजन संधि :

a. व्यंजन संधि का कोई भेद नहीं होता है —

b. संधि विट्ठेद के लिए कुछ नियमों का पालन किया जाता है —

##### नियम 1.

'त् और द'	च	छ	ज	झ
	ट	ठ	झ	ঢ

• यदि त् और द् के बाद 'च' या 'छ' आये, तो 'त्' या 'द्'  $\Rightarrow$  आचे च(च) में परिवर्तित हो जाएगे।

उदाहरण—: महत् + छत्र  $\Rightarrow$  महच्छत्र

सत् + चित  $\Rightarrow$  सच्चित

फत् + चारण  $\Rightarrow$  फच्चारण

उत् + छेद  $\Rightarrow$  उच्छेद

# ROJGAR WITH ANKIT

रात्यरिति  $\Rightarrow$  रात् + चरित्

जगत्कृत्या  $\Rightarrow$  जगत् + कृत्या

अचिन्तन  $\Rightarrow$  अत् + चिन्तन

वृहत्कृत  $\Rightarrow$  वृहत् + कृत्

अचिन्तल  $\Rightarrow$  अत् + चिन्तल

सत् + जन  $\Rightarrow$  सज्जन

जगत् + जीवन  $\Rightarrow$  जगज्जीवन

अत् + स्थिका  $\Rightarrow$  अज्ञस्थिका

अज्ज्वल  $\Rightarrow$  अत् + ज्वल

विपज्जाल  $\Rightarrow$  विपद् + जाल

जगज्जननी  $\Rightarrow$  जगत् + जननी

(ट्, ठ्)  $\rightarrow$

तत् + टीका  $\Rightarrow$  तट्टीका (तटीका)

वत् + टीका  $\Rightarrow$  वट्टीका

मत् + टीका  $\Rightarrow$  मट्टीका

(ડ्, ଠ)  $\rightarrow$  ଡ

अत् + ଡथन  $\Rightarrow$  ଅଇଥନ

# ROJGAR WITH ANKIT

## संधि

### PART-4

८. यदि पहले वर्ग के व्यंजन के साथ 'कोई राखोष' वर्ण आए तो पहला वर्ण → तीसरे वर्ण जो परिवर्तित हो जाएगा।

उदाहरण-: दिक् + गज = दिग्गज

(१+ संघोष)  $\rightarrow$  ३

क	খ	গ	ধ	ঢ
চ	ছ	ঝ	ঝ	ঝ
ট	ঠ	ঢ	ঢ	ঢ
ত	থ	ঢ	ঢ	ঢ
য	ফ	ত	ঢ	ঢ

संघोष  $\rightarrow$  ३, ४, ५ + স্বর + য, র, ল, ব, হ

অপ + জ = অক্ষ

সত্ + ভাবনা = সাদুভাবনা

সিত্ + ধি = সিদ্ধি

ভগবত্ + গীতা = ভগবদ্গীতা

তাক্ + ঈশ = বাগীশ

সুপ্ + পাংত = সুবন্ত

দিক্ + বিজয় = দিগ্বিজয়

জগত্ + ঈশ = জগদ্বীশ

লত্ + রূপ = তদ্বূপ

সত্ + ধৰ্ম = সাধুম

९. यदि प्रथम वर्ग के वर्ण के साथ  $\rightarrow$  पाँचवे वर्ग का कोई व्यंजन नहीं आए, तो प्रथम वर्ग का व्यंजन अपने पाँचवे में परिवर्तित हो जाता है—

उदाहरण-: অপ + মথ = অম্ময়

१+ পাঁচवे वर्ग का व्यंजन = अपने पाँचवे में

অত্ + নবন = উন্নবন

অত্ + নতি = উন্নতি

অত্ + মূলন = উন্মূলন

অচ্ + নাশ = অচ্ছনাশ

প্রাক্ + মুখ = প্রাইমুখ

ষট্ + মূর্তি = ষণ্মূর্তি

এতত্ + মুরারী = এতন্মুরারী

জগত্ + নাথ = জগন্নাথ

বাক্ + মাত্ = বাড়মাত্

বাক্ + মথ = বাড়ম্মথ

# ROJGAR WITH ANKIT

Q. 'छ' का नियम :-

त् + ह  $\Rightarrow$  हृ

उदाहरण :-

अत् + हरण = अहरण

तत् + हित = तहित

सित् + हाल्त = सिहाल्त

उत् + हत = उहत

पत् + हति = पहति

Q. यदि 'छ' से पहले कोई स्वर आए, तो 'च' का निर्माण होगा :-

उदाहरण :-

अनु + छेद = अनुच्छेद  
 (अ + न + उ + छ + र + द + अ)  
 ↓  
 (च)

वि + छेद = विच्छेद

स्व + छेद = स्वच्छेद

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया  
 ↓  
 (व + छ + अ)

आ + छादन = आच्छादन

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

Q. यदि 'त' या 'द' के बाद  $\rightarrow$  'श' आए तो (त)  $\rightarrow$  आधे च में

उदाहरण :-

सत् + शास्त्र = स्त्रास्त्र

उत् + जृत्युखला = उत्त्रुखला

↓  
 (श + र + त)

सत् + शासन = स्त्राशन

महत् + शक्ति = महत्त्रक्ति

H.W श्रीमद् + शंकराचार्य =

(श)  $\rightarrow$  'छ' में बदलेगा

# ROJGAR WITH ANKIT

## सन्धि PART-5

\* अनुस्वार का नियम :- अनुस्वार का परिवर्तन 'म्' में हो जाता है।

- संवाद → सम् + वाद
- संहार → सम् + हार
- संशय → सम् + शय
- संकुत → सम् + थुक्त
- संजीवनी → सम् + जीवनी
- संविधान → सम् + विधान
- अहंकार → अहम् + कार
- संसार → सम् + सार
- संतोष → सम् + तोष
- किंचित् → किम् + चित्
- संकल्प → सम् + कल्प
- संलग्न → सम् + लग्न

\* नियम  $\Rightarrow$  म् + न = न्न :-

किम् + नर → किन्नर

- सम् + निवेश → सन्निवेश
- सम् + न्यासी → सन्न्यासी
- सम् + निकट → सन्निकट

\* नियम  $\Rightarrow$  'ष्ठ'  $\rightarrow$  'स्थ' में परिवर्तन :-

- |                            |                      |
|----------------------------|----------------------|
| प्रतिष्ठा → प्रति + स्था   | ज्येष्ठ → ज्ये + स्थ |
| प्रतिष्ठित → प्रति + स्थित |                      |
| थुद्घिष्ठर → थुधि + स्थिर  |                      |
| अनुष्ठान → अनु + स्थान     |                      |
| निष्ठा → नि + स्था         |                      |

\* 'ष्ट'  $\rightarrow$  'ष्' + 'त'

- उत्कृष्ट → उत्कृष् + त
- मिष्टान्न → मिष्टत् + अन्न
- आकृष्ट → आकृष् + त

# ROJGAR WITH ANKIT

\* नियम :- यदि 'स' से पहले कोई रखर हो, तो 'ष' का निर्माण होगा।

अनु + संग → अनुसंग

नि + सिद्ध → निषिद्ध

वि + सम → विषम

आशि + सेक → आशिषेक

सु + सुप्त → सुखुत

सु + समा → सुधमा

\* नियम → 'ण' का 'न' में परिवर्तन :-

राम + अयन → रामायण

परिणाम → परि + नाम

परिमाण → परि + मान

भ्रूषण → भ्रूष + अन

प्रणेता → प्र + नेता

परिणय → परि + नय

प्रमाण → प्र + मान

उत्तर + अयन → उत्तरायण

# ROJGAR WITH ANKIT

## सान्धि

### PART - 6

#### विसर्ग संधि :-

a. विसर्ग(:)+धीष वर्ण  $\Rightarrow$  विसर्ग के स्थान पर 'ओ' निर्मित होगा-

यशः + शान्  $\rightarrow$  यशोशान्  
(विसर्ग) (धीषवर्ण)

मनः + नीत्  $\rightarrow$  मनोनीत्

तपः + बल्  $\rightarrow$  तपोबल्

तमः + गुण  $\rightarrow$  तमोगुण

तपः + धन्  $\rightarrow$  तपोधन्

यशः + दा  $\rightarrow$  यशोदा

मनः + विकार्  $\rightarrow$  मनोविकार्

अथः + भूमि  $\rightarrow$  अथोभूमि

शिरः + आग  $\rightarrow$  शिरोआग

मनः + रीग  $\rightarrow$  मनोरीग

सरः + सहृ  $\rightarrow$  सरोसहृ

तपः + भूमि  $\rightarrow$  तपोभूमि

b. विसर्ग(:)+अ  $\Rightarrow$  विसर्ग के स्थान पर 'ओ' निर्मित होगा।

मनः + अभिलाषा  $\rightarrow$  मनोभिलाषा (मनोप्रभिलाषा)  
(लुप्त चिन्ह)

मनः + अनुकूल  $\rightarrow$  मनोनुकूल

c. विसर्ग(:)+च, छ, श  $\Rightarrow$  तो आधा 'र' [श] निर्मित होगा— विसर्ग के स्थान पर

हरिः + चन्द्र  $\rightarrow$  हरिरश्चन्द्र

दुः + चक्र  $\rightarrow$  दुरुचक्र

मनः + चेतना  $\rightarrow$  मनश्चेतना

यशः + शरीर  $\rightarrow$  यशश्चरीर

प्राथः + चित  $\rightarrow$  प्रायश्चित

पुनः + चर्या  $\rightarrow$  पुनश्चर्या

निः + छल  $\rightarrow$  निश्चल

निः + चय  $\rightarrow$  निश्चय

d. विसर्ग(:)+त, थ, स  $\Rightarrow$  तो विसर्ग के स्थान पर आधा 'स' [स] निर्मित होगा

निः + तेज  $\rightarrow$  निस्तेज

विः + तीर्ण  $\rightarrow$  विस्तीर्ण

# ROJGAR WITH ANKIT

नगः + ते →	नगर्ते
गनः + ताप →	गनरताप
दुः + रास्ता →	दुरगास्ता
अंतः + थल →	अंतरथल
निः + संतान →	निःसंतान
विः + तार →	विस्तार

८. झ, झ के साथ विसर्ग (:) + क, ट, ठ, प, फ ⇒ तो विसर्ग के स्थान पर आधा घ [ঁ] का निर्माण होगा —

পুঃ + কর →	পুঁকর
দুঃ + কাল →	দুঁকাল
বহিঃ + কৃত →	বহিঁকৃত
চতুঃ + টীকা →	চতুঁটীকা
ধনুঃ + টঁকার →	ধনুঁষ্টঁকার
নিঃ + দুর →	নিঁদুর
নিঃ + প্রাণ →	নিঁপ্রাণ
নিঃ + পাদন →	নিঁপাদন
নিঃ + পাপ →	নিঁপাপ
জ্যোতি + ফলক →	জ্যোতিঁফলক

९. ঝ, ঝ কে साथ विसर्ग (:) + र ⇒ तो (लघु झ, लघु झ) होनी → झ, झ में परिवर्तित हो जाएगी —

মিঃ + রীগ →	নীরীগ
মিঃ + রজ →	নীরজ
মিঃ + খ →	নীরখ
দুঃ + রাজ →	দুরাজ

## सन्धि

### PART-7

#### विसर्ग संधि :-

- a. रवर (ः) + धोष वर्ण  $\Rightarrow$  र्
- निः + धन  $\rightarrow$  निधन  
 न् + इ(ः) + धन  
 र्
- निः + तोह  $\rightarrow$  निर्वाह  
 दुः + जन  $\rightarrow$  दुर्जन  
 निः + मल  $\rightarrow$  निमल  
 बहिः + मुख  $\rightarrow$  बहिमुख  
 आयुः + विशान  $\rightarrow$  आयुर्विशान  
 ज्योतिः + मथ  $\rightarrow$  ज्योतिमथ  
 दुः + माघ  $\rightarrow$  दुमाघ  
 दुः + ग्रंथ  $\rightarrow$  दुग्रंथ  
 धनुः + विद्या  $\rightarrow$  धनुर्विद्या  
 निः + अक्षर  $\rightarrow$  निराक्षर  
 निः + आधार  $\rightarrow$  निराधार  
 निः + आशा  $\rightarrow$  निराशा  
 निः + ईक्षण  $\rightarrow$  निरीक्षण  
 निः + आदर  $\rightarrow$  निरादर  
 निः + अपराध  $\rightarrow$  निरपराध  
 निः + आकार  $\rightarrow$  निराकार

#### विसर्ग के बने रहने की स्थिति :-

- (1). ः + क, ख, प, फ

रजः + कण  $\rightarrow$  रजःकण  
 प्रातः + काल  $\rightarrow$  प्रातःकाल  
 अधः + पतन  $\rightarrow$  अधःपतन  
 पथः + पान  $\rightarrow$  पथःपान  
 अधः + फलित  $\rightarrow$  अधःफलित

## ROJGAR WITH ANKIT

(2). अ(;) + द्व/उ ⇒

यशः+द्वला→ यशःद्वला

अतः+एव→ अतःएव

ROJGAR WITH ANKIT

## उपसर्ग और प्रत्यय

a. उपसर्ग और प्रत्यय शब्दांश् होते हैं।  
 ↓  
शब्द + अंश  
 ↓  
हिस्सा

क → वर्ण/अक्षर/व्यंजन  
 कल → शब्द  
 \* हिन्दी भाषा में रावरों द्वारी इमार्ति  
 जिसका अपना अर्थ होता है—"गढ़"

b. शब्दांश का अपना कोई अर्थ नहीं होता है।

c. उपसर्ग मूल शब्द से पहले जुड़ते हैं। → उपसर्ग + शब्द ex अनाथ (अ + नाथ)

d. प्रत्यय मूल शब्द के बाद में जुड़ते हैं। → शब्द + प्रत्यय

अनिकेत → अ + निकेत  
 ↓

ex रखवाला (रख + वाला)

e. उपसर्ग और प्रत्यय किसी शब्द — आवास के साथ जुड़कर उसका अर्थ परिवर्तन या उस पर एक विशेष प्रभाव डालते हैं।  
 हार → प्रहार  
 (आभूषण) (अर्थ परिवर्तन)

f. उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग से नए शब्द का निर्माण सम्भव है।

g. शब्द निर्माण की चार विधियाँ हैं — {1). संधि  
 {2). स्मास }  
 {3). उपसर्ग }  
 {4). प्रत्यय }

h. एक ही मूल शब्द के साथ एक से अधिक उपसर्ग प्रयोग हो सकते हैं।

### उपसर्ग के भेद

\* हिन्दी के उपसर्ग (22)

\* संस्कृत के उपसर्ग (22)

\* विदेशी उपसर्ग (22)

### संस्कृत के उपसर्ग—:

- (1). अति → अतिरिक्त, अत्यंत (अति+अंत), अत्यधिक, अतिक्रमण, अत्याचार
- (2). अधि → अध्ययन (अधि+अक्ष), अधिकार, अध्यात्म
- (3). अभि → अभिमान, अभिलाषा, अभियोग, अभ्यास

# ROJGAR WITH ANKIT

- (१). नि → निबंध, नैदानिक (निदान + इक), निडर
- (२). प्रति → प्रतिश्वनि, प्रतिशत्, प्रतिमूल, प्रत्येक (प्रति+एक), प्रत्याघात
- (३). परि → पर्यटन (परि+ आठन), परिमाण, परित्याग, परिअम
- (४). अनु → अनुचर, अनुजं, अन्वेषण, अनुट्टेद
- (५). वि → विश्वास, विशुद्ध, विराम, व्यथा
- (६). अप → अपवश, अपशुकुन, अपत्यय
- (७). अपि → अपिद्धान
- (८). अत → अवगुण, अवमूल्यन, अवशेष
- (९). सु → सुपुत्र, सुकर्म, सुपात्र, स्वागत (सु + आगत), स्वर्चष्ट (सु + अच्छ)
- (१०). आ → आरक्षण, आवास, आजीवन, आमरण
- (११). उप → उपसर्ग, उपग्रह, उपवास, उपाद्याय
- (१२). प्र → प्रचार, प्रसार, प्रवेश
- (१३). दुर् → दुर्भाग्य, दुर्लभ, दुर्जन
- (१४). निर् → निरपराध, निर्बल, निराकार, निर्दिय
- (१५). दुर् → दुर्स्साहस, दुर्घटिणाम, दुश्शासन
- (१६). निस → निसंदेह, निष्कल, निष्पाप
- (१७). उत् → उद्धाटन, उद्गम, उद्भव, उच्चारण, उद्योग
- (१८). सम् → संसार, संयोग, सम्मुख, संतोष
- (१९). परा → परामर्श, पराभव, पराजय

## उपर्सग तथा प्रत्यय

### PART-2

\* हिन्दी के उपर्सग :- (22)

- (1). अ → अनाथ, अदूता
- (2). आप → आपबीति, आपसुनी
- (3). अन → अनपढ़, अनमोल
- (4). अध → अध्यपक्ष, अधमरा, अधकचरा
- (5). ऊ → ऊजडना, ऊतारना
- (6). ऊन → ऊनसठ, ऊनचालीस, ऊयासी
- (7). औं → औंजार, औंधर
- (8). क → कपूत
- (9). कु → कुचक्कु, कुकमि
- (10). चिर → चिरायु, चिरकाल
- (11). चौ → चौराहा, चौमासा
- (12). दु → दुबला, दुभाषिया
- (13). पच → पचमेल, पचरंगा
- (14). बहु → बहुवचन, बहुमूल्य
- (15). सम् → समतल, समकाण
- (16). तिं → तिराहा, तिरंगा
- (17). नि → निडर, निफम्मा, निहत्या
- (18). पर् → परीपकार, परलीक, परहिन.
- (19). भर् → भरमार, भरपेट, भरसक
- (20). स → सपूत, सहित
- (21). सु → सुफल, सुश्री, स्वागत (सु+आभत)
- (22). विन → विनबाकल, विनत्याहा

→ संसार (सम्+सार) X  
 ↓  
 (हलन्त)

NOTE

हिन्दी भाषा का उपर्सग कभी-भी छिपा हुआ नहीं होता है।

# ROJGAR WITH ANKIT

## \* अंग्रेजी के अपसर्ग :-

- (1). जनरल (General) → जनरल गेनरल, जनरल सीक्रेटरी
- (2). सब (Sub) → सब-इंस्पेक्टर, सब जज
- (3). वाइस (Vice) → वाइस प्रेसीडेंट, वाइस प्राइम मिनिस्टर
- (4). डिप्टी (Deputy) → डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल, डिप्टी सुप्रिरिटेंट आँफ
- (5). चीफ (Chief) → चीफ सेलिक्टर, चीफ कमिश्नर फुलिस
- (6). हेड (Head) → हेड मास्टर हेड कॉर्टेबल

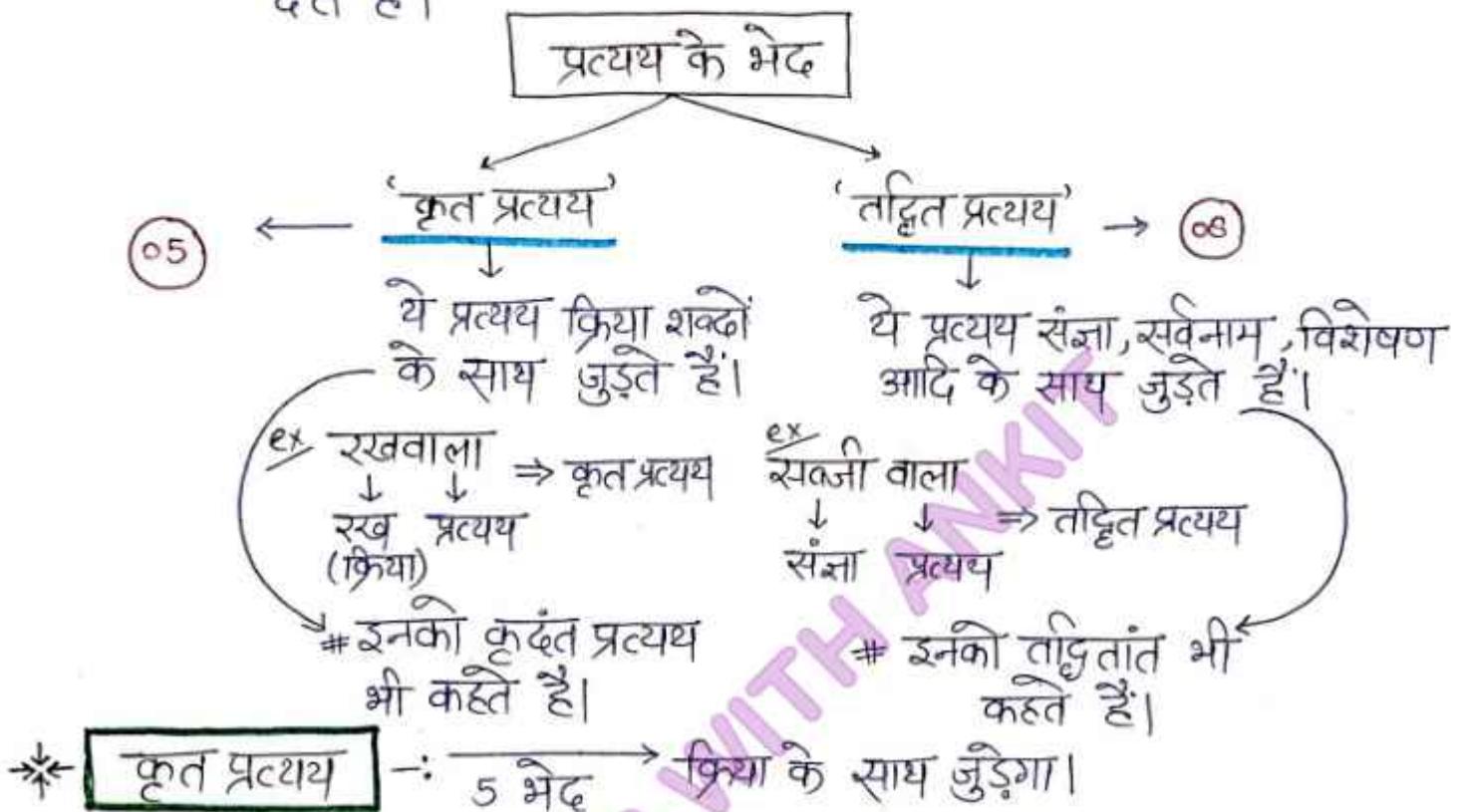
## \* अरबी/फारसी के अपसर्ग :- ( क, ख़, ग़, झ, फ़ )

- (1). دَر → دَرْكَل, دَرْكَلْوَسْتَ, دَرْغَاه, دَرْكِنَار
- (2). گَئِر → گَئِرْکَانْدُنَی, گَئِرْجِمِمَدَار, گَئِرْکَم
- (3). ہَن → ہَنْمَبِکا, ہَنْوَکَل
- (4). اَل → اَلْبَلَهَا, اَلْبَوْرَا
- (5). کَم → کَمَسِن, کَمَجَار
- (6). خُش → خُشَّاہَل, خُشَادِل, خُشَمِیْجَاج
- (7). نَا → نَاڈَسَاف, نَاپَسَانْد, نَامُمَکِن
- (8). بَد → بَدَنَام, بَدَسُورَت
- (9). هَم → هَمَشَکَل, هَمَرَاه, هَمَسَافَر
- (10). لَا → لَاہَلَاج, لَاجَوَاب, لَاوَیِرَس
- (11). حَر → حَرَفِن, حَرَپَل, حَرَبَدِی

## उपसर्ग और प्रत्यय

### PART-3

प्रत्यय-: वे शब्दांश जो शब्द के बाद में जुड़कर एक विशेष परिवर्तन ला देते हैं।



(1) कर्तुं प्रत्यय

↓  
कृत  
कर्ता का बोध करने वाला

ex पढ़ाकू → आकू  
लड़ाकू → आकू  
भगोड़ा → ओड़ा  
मिलनसर → सर  
खिलाड़ी → आड़ी  
पढ़ने वाला → वाला  
तराक → आक  
जुझार → आर  
खिलौना → ओना

(2). कर्म कृत प्रत्यय-:

बच्चे ने खिलौना तोड़ दिया।  
(कर्ता) (कर्म) (किया)

(3). करण कृत प्रत्यय-: साधन (वजह) का बोध करता है।

झाड़न → अन  
झाड़ → ऊ  
झुला → आ  
ठक्करन → अन

# ROJGAR WITH ANKIT

ठेला → आ  
लेखनी → नी  
कतरनी → नी  
बेलन → अन

## (4). भाववाचक कृत प्रत्यय -:

आप → मिलाप  
ओंता → समझौता  
आवा → शुलावा, पहनावा  
आव → खिंचाव, चढ़ाव  
आई → लड़ाई, चढ़ाई, सिलाई  
आवट → बनावट, सजावट  
आहट → घबराहट  
ओंती → चुनौती, कटौती  
आन → थकान, उड़ान

## (5). क्रिया कृत प्रत्यय -:

भरता (ता) , भरे (ए) , चली (ई)  
गाता (ता) , गरी (ई) , चलेगी (ऐगी)  
हस्ता (ता) , हँसेगी (एगी)

\* **तद्दित प्रत्यय** → संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के साथ जुड़ते हैं।

## (1) कर्तृ तद्दित प्रत्यय -:

↓ कर्ता का बोध करने वाला

कार → स्वर्णकार, गीतकार, सलाहकार  
आर →  
वान →  
आरी →  
वाला →  
हार →

## उपसर्ग और प्रत्यय

### (1) कर्तृ तद्वित प्रत्यय :-

कार	→ स्वर्णकार, सलाहकार
आरी	→ जुआरी
वाला	→ सजीवाला
हार	→ पालनहार
आर	→ सुनार, लुहार (लोहा + आर), गँवार
वान	→ दयावान, गुणवान
रेत	→ लैठत, डैक्टेत
इया	→ मजाकिया, बिचौलिया
ची	→ तोपची, अफीमची

### (2). भाववाचक तद्वित प्रत्यय :-

आवट	→ महावट
आस	→ मिठास
आयत	→ पंचायत, बहुतायत
आई	→ मिठाई
ई	→ मँगाई, बुराई
पन	→ खचपन, सीधापन, अपनापन
आहट	→ कड़वाहट

### (3). लघुतावाचक तद्वित प्रत्यय :-

री	→ छतरी
की	→ ढोलकी
इया	→ लुटिया, खटिया, गुडिया, डिलिया
डी	→ पगड़ी, गठड़ी, संदुकड़ी
ई	→ रस्सी, छुरपी, प्याली, घाली

### (4). संबंधवाचक तद्वित प्रत्यय :-

ताल/आल	→ ननिहाल, ससुराल
एरा	→ फुफेरा, चेरा
ई	→ बंगाली, राजस्थानी, बिहारी

# ROJGAR WITH ANKIT

## (5). क्रमवाचक तद्वित प्रत्यय-:

पाँ → गाँचवा, साँतवा

सरा → दुसरा, तीसरा

## (6). गुणवाचक तद्वित प्रत्यय-:

ई → पापी, ईमानदारी

इक → शारीरिक, मालिक

ईन → कुलीन

आ → थ्रुखा

ऐला → विषेला

ईला → रसीला,

## (7) अपत्यवाचक तद्वित प्रत्यय-:

संतानका  
बोध

अ → कौरव (कुरु+अ), मानव (मनु+अ)

य → देव्य (दिति+य)

एय → बाध्य, गौण्य

आथन → वात्स्याथन

इ → दाशरथि, मार्खीति

## (8). विशेषण तद्वित प्रत्यय -:

आ → छँचा, गीला, नीचा

## अविकारी शब्द (अत्यय)

विविकारी शब्द-: वे शब्द होते हैं, जिनमें परिवर्तन आ जाता है।

→ लिंग, वचन, काल, फारक की दृष्टि से ना + खच्च

ना + परिवर्तन

संज्ञा → पत्ता, सड़क

सर्वनाम → अपना, तुम

क्रिया → रहा है, रही है

विशेषण → जाला, जाली

परिभाषा-: वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, काल और फारक की दृष्टि से कोई परिवर्तन नहीं होता है, वे अविकारी (अत्यय) शब्द कहलाते हैं।

जैसे-: जहाँ, किंतु, इसलिए, और, तथा, कब, तब, अतः, धीरे-

### अत्यय के भेद

१. अत्यय के ०४ मुख्य भेद होते हैं। अत्यय के ०४ भेद होते हैं।

२. अत्यय के कुल भेद ०५ होते हैं -

- (१) क्रिया विशेषण अत्यय
- (२) संबंध बोधक अत्यय
- (३) समुच्चय बोधक अत्यय
- (४) विस्त्रयादि बोधक अत्यय
- (५) निपात अत्यय

# क्रिया विशेषण अत्यय-: वे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया विशेषण कहलाते हैं, इसके ०४ भेद होते हैं

- i) स्थानवाचक क्रिया विशेषण-: स्थान का बोध -: कहाँ लगाकर?
- ii) जालपाचक क्रिया विशेषण-: समय का बोध -: जब लगाकर?
- iii) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण-: माप-तौल का बोध -: कितना लगाकर?
- iv) रीतिवाचक क्रिया विशेषण-: क्रिया के दैनि के पृकार का बोध -: कैसे लगाकर?

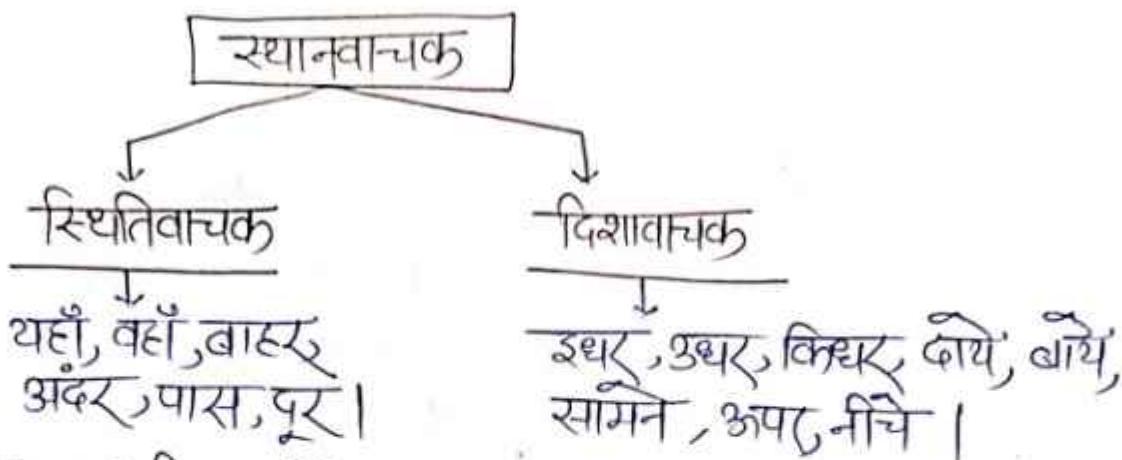
५) स्थानवाचक क्रिया विशेषण-:

→ गेंद ऊपर उठल रही है।

→ पर्षी में कहाँ जाओगे?

→ शिवांश इधर आ रहा है।

# ROJGAR WITH ANKIT



(2) कालवाचक क्रिया विशेषणः

- वह [अब] पानी पी रहा है।
- वह [परसो] दिल्ली जाएगी।
- महाराष्ट्र [आज-कल] बढ़ रही है।



## अविकारी शब्द

### PART-2

#### १. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

- (1) तुम बहुत ढौँडै।
- (2) तुम थोड़ा खाओ।
- (3) मैं खूब चलता हूँ।

परिमाणवाचक

#### (A) ऋणी बोधक - :- बारी-बारी, हल्के से हल्का

कम से कम  
ज्यादा से ज्यादा  
थोड़ा से थोड़ा (थोड़ा-योड़ा)

- (B) अधिकता बोधक - :- चूब, बहुत, अत्यंत, आति
- (C) न्यूनता बोधक - :- कुछ, जरा, थोड़ा, अल्प
- (D) पर्याप्त बोधक - :- ठीक, काफी, बस
- (E) तुलना बोधक - :- कम, ज्यादा, इतना, उतना, अधिक, लगभग

#### २. श्रेत्रिवाचक क्रिया विशेषण - :-

- (1) अमित [द्यान-से] चलता है।
- (2) लिट्टि- धरि- धारि चलती है।
- (3) घनश्याम कैसे आ गया ?
- (4) अचानक से वर्षा होने लगी।
- (5) वह फ्याफ्ट पल रही थी।
- (i) स्वीकार बोधक - :- जी, ठीक, हाँ, अवश्य, जल्द
- (ii) निषेद्ध बोधक - :- नहीं, मत, कभी नहीं
- (iii) निरैयय बोधक - :- लेशक, निस्संदेह
- (iv) अनिरैयय बोधक - :- संभव है, शायद
- (v) प्रश्न बोधक - :- क्या, कौन, कैसे ?
- (vi) कारण बोधक - :- अतएव, किसलिए
- (vii) आकस्मिकता बोधक - :- बरकारक, अचानक

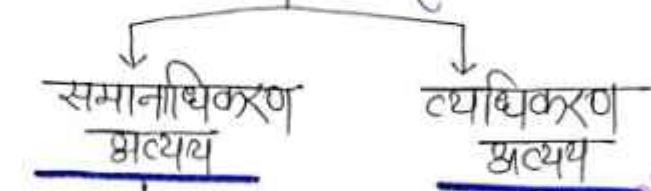
# ROJGAR WITH ANKIT

## १. समुच्चय वीचकः-

→ को शब्दों, ताकियों या बात्यांशों को जोड़ने के लिए अक्षर समुच्चय वीचक उपलब्ध है।

(१) रसिम (ओर) प्रिया बहिन हैं।

→ समुच्चय वीचक अत्यथ प्रपाद या होता है—



ये मुख्य वाक्यों  
को जोड़ते हैं।

ये प्रश्नान् वाक्य से आज्ञित  
अवाक्य को जोड़ते हैं।

(१) सुनंदा खड़ी थी और अलमा  
देंडी थी।

(२) मेरी छोटी दुर्वेल है अतः  
आप मेरी सहायता करो।

(३) मुझे शादी में आना था इसलिए  
भागना पड़ा।

(२) ब्रैण्ठ काष्ठ करो जिससे माँ-बाप गर्वि  
कर सके।

(३) यदि दारोगा बनना है, तो पढ़ना  
पड़ेगा।

### समानाधिकरण अत्यथ

- (१) संयोजकः तथा, और, एवं, व।
- (२) विभाजकः या, अथवा, नहीं तो।
- (३) परिवर्ध दर्शकः पर, पहुँच, लैकिन, मगर
- (४) परिमाण दर्शकः परन्, बल्कि  
इसलिए, अतः, अतएव

(५) उद्देश्यवाचकः जै जैकि, तत्कि, जिससे

(२) रैके तवाचकः जो, सो, यदि, तो

(३) स्वरूपवाचकः आनि

(५) पारणवाचकः क्योंकि, कुंगि,  
इसलिए

## अविकारी शब्द

### PART—3

#### संबंध बोधक अव्ययः—

वे शब्द जो संज्ञा/सर्वनाम शब्दों की पान्य संज्ञा/सर्वनाम शब्द से जोड़ते हैं—

उदाहरण— (1) इस जंगल के चींड़े पर्वत हैं।

(2) तुम घर के आनंदर चोर को ढूँढ़ो।

(3) चंचल मित्रों के साथ शिमला गई।

(4) विद्यालय के सामने कुछ लोग खड़े हैं।

→ के पास, के ऊपर, से दूर, के कारण, के लिए, के भीतर, के ओर, के आगे, के निकट, के पहले, के विरुद्ध

#### विस्मयादि बोधक अव्ययः ( ! )

→ वे शब्द जो अचानक से हृषि, शोक, अथ, प्रेम, घृणा आदि की वजह से पैदा होते हैं। वे प्रायः वाक्य के शुरूआत में प्रयोग होते हैं।

(1) वाह! तुम सब इस्पेक्टर बन गये।

(2) हट! दसे छूना नहै।

(3) और! आप यहाँ।

(4) हाथ! थे क्या हुआ!

(i) हृषिबोधक → आहा!, वाह!, शावास!

(ii) शोकबोधक → हाथ!, आह!, उफ!, जाश!, त्राहि-त्राहि!, बाप-रेबाप

(iii) चितावनीबोधक → हट!, खबरखार!, सावधान!

(iv) घृणाबोधक → छि-छि!, थू-थू!

(v) क्रोधबोधक → चुप!

(vi) स्वीकृतिबोधक → हाँ!, हाँ, हाँ!, अच्छा!, जी!

(vii) सम्बोधनबोधक → ओर!, भाई!, अजी!

(viii) इच्छाबोधक → जाश!

# ROJGAR WITH ANKIT

निपात-: ये शुद्ध अव्यय नहीं होते हैं।

- इसका प्रयोग वाक्य के भाव को परिवर्तित करता है।
  - निपात वाक्य में विशेष बल देने के लिए प्रयोग किया जाता है।
  - सुनीता बाजार जाएगी।
- (1) सुनीता ही बाजार जाएगी।  
(2) सिंह ने ही सारी बतें की।  
(3) आकाश ने ही सविता को मारा।  
(4) मैं भी उसके साथ जाऊँगा।

## शब्द रूप/शब्द विचार

→ भाषा के तीन अंग होते हैं-

- (1) वर्ण
- (2) शब्द
- (3) वाक्य

+ किरणी भी भाषा } मीणिक  
को व्यक्त करने } लिखित  
के तरीके } चाकुलिक

वर्ण :- हिन्दी भाषा की सबसे छोटी इकाई

↳ वर्ण का अपना कोई अर्थ नहीं होता

शब्द :- वर्णों के सार्थक योग से शब्द का निर्माण होता है

अ + ध + र + क + अ  $\Rightarrow$  आधिक

र + अ + त + न + आ + क + अ + र + अ  $\Rightarrow$  रत्नाकर

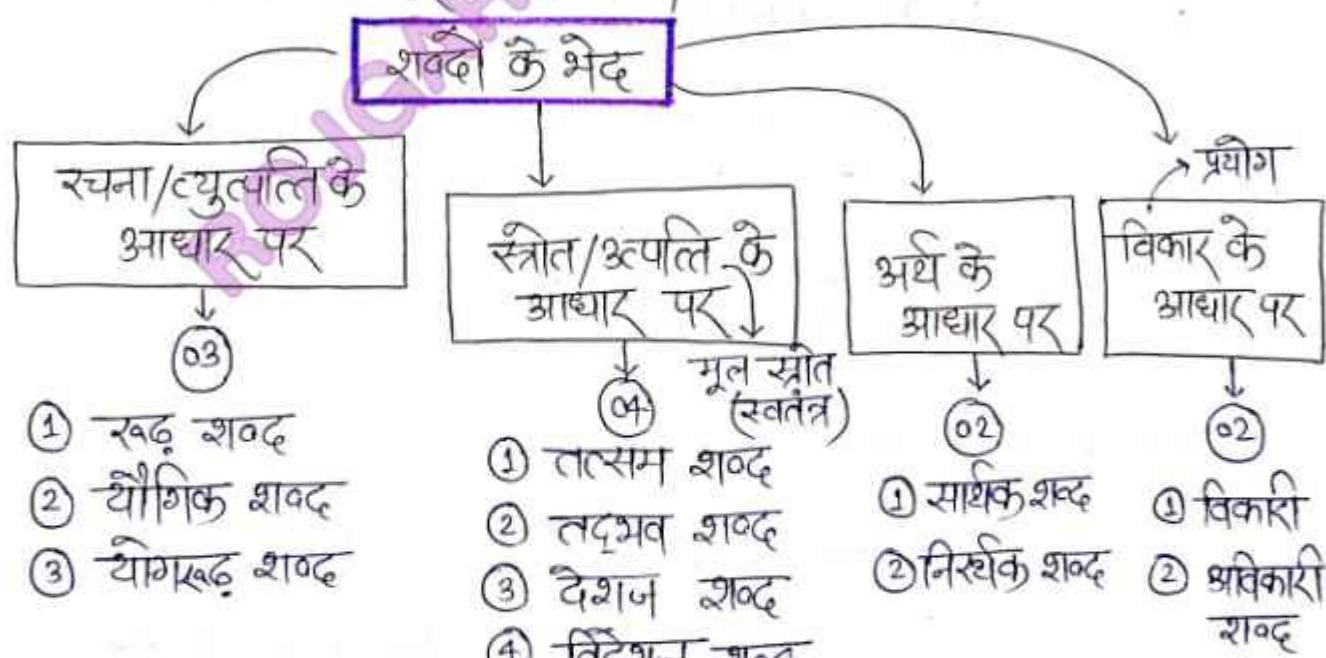
→ प्रत्येक शब्द जो अपना एक अर्थ होता है।

→ अर्थ के आधार पर हिन्दी भाषा की सबसे छोटी इकाई  $\rightarrow$  शब्द

वाक्य :- शब्दों के सार्थक क्रम के योग से वाक्य का निर्माण होता है।

~~✗~~ मीना चली बाजार गई।

✓ मीना बाजार चली गई।



\* रचना के आधार पर शब्दों के भेद :- 03

① रूढ़ शब्द :- वे शब्द जिनमें संधि, समास, उपसर्ग और प्रत्यय न हो रूढ़ शब्द कहलाते हैं।

# ROJGAR WITH ANKIT

पत्ता, पेड़, जड़, जल, पानी, पेट,  
कालम, कुर्सी, दिन, चावल, शाम,  
आम, गति, फल, पुरतक, दूध, भूमि।

② योगिक शब्द :- वे शब्द जो कोई शब्दों से मिलकर बने हैं।



योगिक शब्दों में  
संयुक्ति, समास,  
असर्ग और  
प्रत्यय ही  
सकते हैं।

सु+पुत → सुपुत्र  
रुद + रुद = योगिक  
भित्रा+ता → भित्रता  
प्रति+दिन → प्रतिदिन  
चंचल + मन → चंचलमन  
उछल + कूद → उछलकूद  
भाग + दोड़ → भाग-दोड़  
पीक + दान → पीकदान

NOTE लेकिन बहुत्रीहि समास नहीं ही सकता है।

③ योगरुद शब्द :- वे शब्द जो किसी अन्य अर्थ की ओर इशारा करते हैं, बहुत्रीहि समास के सभी उपाधन इसके अन्तर्गत आते हैं।

मुरलीधर, चंद्रशेखर  
चक्रपाणि, चंद्रमौलि  
शूलपाणि, दशानन  
लम्बोदर  
यंचानन

\* अर्थ के आधार पर शब्द शेद :- 02

सार्थक शब्द

जिनका एक अर्थ  
होता है।

उपाधन :-  
-चाथ  
-शरी  
-पानी  
-लस्सी  
-जूते

निर्धारक शब्द

जिनका अपना जोई अर्थ  
नहीं होता है।

-वाथ  
-पोटी  
-वानी  
-वस्सी  
-बूते

# ROJGAR WITH ANKIT

## शब्द रूप

### PART-2

\* उत्पत्ति के आधार पर-: कुल 5 शब्द

(1) <u>तत्सम शब्द</u> -: <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">तत् + सम</td><td style="width: 50%; vertical-align: bottom; text-align: right;">  :- वे शब्द जो हिंदी भाषा में संस्कृत भाषा से</td></tr> <tr> <td style="text-align: center;">↓</td><td style="text-align: center;">↓</td></tr> <tr> <td style="width: 50%;">उसके समान</td><td style="width: 50%; vertical-align: bottom; text-align: right;">जीवों के त्यों ले लिए गए हैं-:</td></tr> <tr> <td style="text-align: center;">↓</td><td style="text-align: center;">↓</td></tr> <tr> <td style="width: 50%;">संस्कृत के समान</td><td style="width: 50%; vertical-align: bottom; text-align: right;">जैसे-: अश्वोट, धीत्र, धीर <math>\Rightarrow</math> तत्सम</td></tr> </table>	तत् + सम	:- वे शब्द जो हिंदी भाषा में संस्कृत भाषा से	↓	↓	उसके समान	जीवों के त्यों ले लिए गए हैं-:	↓	↓	संस्कृत के समान	जैसे-: अश्वोट, धीत्र, धीर $\Rightarrow$ तत्सम	(2) <u>तद्भव शब्द</u> -: <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">तत् + भव</td><td style="width: 50%; vertical-align: bottom; text-align: right;">  :- वे शब्द जो तत्सम शब्दों में परिवर्तन</td></tr> <tr> <td style="text-align: center;">↓</td><td style="text-align: center;">↓</td></tr> <tr> <td style="width: 50%;">उसके उत्पन्न</td><td style="width: 50%; vertical-align: bottom; text-align: right;">करके उत्पन्न किए गए हैं।</td></tr> </table>	तत् + भव	:- वे शब्द जो तत्सम शब्दों में परिवर्तन	↓	↓	उसके उत्पन्न	करके उत्पन्न किए गए हैं।
तत् + सम	:- वे शब्द जो हिंदी भाषा में संस्कृत भाषा से																
↓	↓																
उसके समान	जीवों के त्यों ले लिए गए हैं-:																
↓	↓																
संस्कृत के समान	जैसे-: अश्वोट, धीत्र, धीर $\Rightarrow$ तत्सम																
तत् + भव	:- वे शब्द जो तत्सम शब्दों में परिवर्तन																
↓	↓																
उसके उत्पन्न	करके उत्पन्न किए गए हैं।																
(2) <u>तद्भव</u> -: <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%;">तत् + भव</td><td style="width: 50%; vertical-align: bottom; text-align: right;">  :- वे शब्द जो तत्सम शब्दों में परिवर्तन</td></tr> <tr> <td style="text-align: center;">↓</td><td style="text-align: center;">↓</td></tr> <tr> <td style="width: 50%;">उसके उत्पन्न</td><td style="width: 50%; vertical-align: bottom; text-align: right;">जैसे-: अखरोट, खेत, खीर आदि</td></tr> </table>	तत् + भव	:- वे शब्द जो तत्सम शब्दों में परिवर्तन	↓	↓	उसके उत्पन्न	जैसे-: अखरोट, खेत, खीर आदि											
तत् + भव	:- वे शब्द जो तत्सम शब्दों में परिवर्तन																
↓	↓																
उसके उत्पन्न	जैसे-: अखरोट, खेत, खीर आदि																

\* तत्सम और तद्भव शब्दों की पहचान-:

- (1). संयुक्ताक्षर  $\rightarrow$  क्ष, त्र, ज्ञ, श } तत्सम शब्द  
 $\rightarrow$  छ, ठ, ङ }
- (2). अनुस्वार  $\rightarrow$  ॐ  $\rightarrow$  तत्सम
- (3). अनुनासिक  $\rightarrow$  ु  $\rightarrow$  तद्भव
- (4). अतिक्षण/ताइनजात  $\rightarrow$  ड, ढ  $\rightarrow$  तद्भव

अक्षि  $\rightarrow$  आँख  
 $\downarrow$  (तत्सम)       $\downarrow$  (तद्भव)

तत्सम	तद्भव
अंगुष्ठ	अंगूठा
अंधकार	अंधेरा
अकार्य	अकाज
अक्षर	आखर/अट्ठर
अक्षवाट	अखाड़ा
अक्षि	आँख
अश्वोट	अखरोट

# ROJGAR WITH ANKIT

अग्रिमिटका  
 अग्रणी  
 अज्ञान  
 अद्वालिका  
 अद्य  
 अपादहस्त  
 अमिलका  
 अरिष्ट  
 आर्चि  
 अवगुंठन  
 अवमूर्ध  
 अष्टाविति  
 अष्ट  
एकादशी → अठारह  
 अष्टादश  
 अस्थि  
 आंत्र  
 आणि  
 आदेश  
 आशीर्व  
 आमलक  
 आम्र  
 आम्रचूर्ण  
 आखिट  
 आश्रय  
 आषाढ  
 इक्षु  
 इषिटका  
 ईदृश  
 ईब्यां  
 उत्पावास  
 उज्जवल  
 उत्थान  
 उद्भवन  
 उद्दीपन  
 उपर्युक्त

अँगीठी  
 अगुआ  
 अजान  
 अटारी  
 आज  
 आपाहिज  
 इमली  
 रीठा  
 आँच  
 घुँघट  
 आँधा  
 अस्सी  
 आठ  
 अठारह  
 हड्डी  
 आँत  
 अनी  
 आयसु  
 अहीर  
 आँवला  
 आम  
 आमचूर  
 अहेर  
 आसरा  
 आसाढ  
 ईख  
 ईट  
 ऐसा  
 रीस  
 उसास  
 उजाला  
 उठान  
 उगलना  
 उद्बूटन  
 उपरोक्त

# ROJGAR WITH ANKIT

उपल	ओला
आह्याय	ओझा
उपालम्ब	उलाहना
उणी	अन
उलूक	उल्लू
उलूखल	ओखली
उपद्र	फॉट
तटक्ष	रीच
एला	इलायची
एवम	थी
ओष्ठ	ओठ/होठ
कंकती	कंधी
कंटक	काँटा
कंदुक	गेंद
कुक्ष	कीरब
करघ्य	कप्पुम्बा
कण्टकल	कटहल
कति	कई
कदली	केला
कपटिका	कोड़ी
जपाट	किवाड
कर्कटी	ककड़ी
कर्पट	जपडा
कर्पुर	कपूर
काक	कीआ
कान्य कुवज	कन्नीज
काण्ठ	काठ
कास	खाँसी
नीदृश	केसा
कुकुर	जुत्ता
कुमार	कुवर

# ROJGAR WITH ANKIT

कृषक  
केविका  
कैवर्त  
क्षीर  
क्षुरिका  
क्षेत्र  
क्षोड़  
खट्टा  
खजन  
गमन  
गर्दम

किसान  
केवड़ा  
कैवर  
खीर  
चुरी  
खेत  
खूंटा  
खट्ट  
खुजली  
जाना  
गधा

# ROJGAR WITH ANKIT

## तत्त्वाभ्याम्

रालगति  
 राहन  
 शुण  
 शुष्ठन  
 गोत्र  
 गोधूम  
 गोपालक  
 गोमय  
 गंथि  
 ग्राम  
 ग्राहक  
 ग्रीवा  
 घट  
 घटिका  
 घृत  
 घोटक  
 चंचु  
 चटिका  
 चणक  
 चतुष्पद  
 चत्वाल  
 चर्वण  
 चित्रक  
 चित्रिकार  
 मूलिलः  
 चौर्य  
 चाया  
 जटा  
 जग्बुल  
 जिद्वा  
 जीर्ण

## तद्वात्

शिरगिट  
 द्वाना  
 शुन  
 द्वृघट  
 शोत  
 शेहू  
 द्वाला  
 शोबर  
 शाँठ  
 शाँव  
 शाहक  
 शदिन  
 शडा  
 शडी  
 शी  
 शोजा  
 शैच  
 शिडिया  
 शना  
 शौपाथा  
 शबूतरा  
 शहाना  
 शीता  
 शितेरा  
 शूल्ष  
 शोरी  
 शौख  
 जड़  
 जपुन  
 जीञ  
 इग्नी

# ROJGAR WITH ANKIT

जुटिका  
 जृम्भिका  
 ज्ञातिश्रह  
 ज्येष्ठ  
 टंकशाला  
 तड़ाग  
 ततः  
 तपस्ती  
 तिक्ति  
 तैल  
 तदा  
 दक्षिण  
 दधि  
 दयूतकारी  
 दर्शन  
 दण्डा  
 दीपक  
 दीपशलाका  
 द्रवी  
 दृष्टिद्रवा  
 दूत  
 द्विपट  
 धरणी/धरित्री  
 धूम  
 धैर्य  
 नकुल  
 नगन  
 नारिकेल  
 नालिका  
 निंब  
 निम्बक

चोटी  
 जगहाड़  
 खेंहर  
 जोठ  
 टकसाल  
 लालाब  
 ती  
 तपसी  
 तीता/तीखा  
 तैल  
 त्यो  
 कफ्किवन/कफिखन  
 दही  
 जुआरी  
 दरसन  
 दाढ़  
 दीया  
 दियासलाई  
 दूब  
 दाढ़ी  
 जुआ  
 दुपट्टा  
 धरती  
 धुण्डा  
 धीरज  
 नैवला  
 नंगा  
 नारियल  
 नाक  
 नीम  
 नींबू

# ROJGAR WITH ANKIT

निर्दर्शक	झारना
वृत्त्या	नाना
पांचित	पंगत
पंचाशत	पचास
पक्षी	पंखी
पत्र	पत्ता
परिधा	परख
पर्याफ़	पलंग
पिप्ल	घिप्ल
फुत्र	पूत्र
फुत्रवधु	पतोहु
फुष्टर	पेखर
फन	घोन
प्रतिवेशी	पड़ेसी
प्रस्तवदृ	पसीना
प्रादूर्ण	पाहुना
फुफ्फुस	फेफड़ा
बद्धि	बहरा
बुद्धिका	भुख
भक्त	भगत
भगिनी	बहिन
भल्लुक	भालू
भागिनीय	भाजा
भिक्षा	भीख
भ्रमर	भीरा / भवंता
भूँझ	भेंड़े
भसिणा	मफ्ली
भट्ट्य	मछली

# ROJGAR WITH ANKIT

मत्स्यर	महार
मनुष्य	मानस
मया	मैं
मक्टी	गकड़ी
महतक	माथा
महार्घ	महँगा
महिली	बेस
मातुल	मामा
मातृ	मै
मानिक	माला
मित्र	मित
मिडि	मिठाई
मृतिका	मिट्टी
मृत्यु	मौत
मोढ़क	लड्डू
मौकिक	मोती
मृक्षण	मृक्खन
थव	जौ
थुकित	जुगाति
थुथ	जउद्धा
योगी	जोगी
रक्षा/रक्षिका	राखी
रज्जु	रसी
रसवती	रसोई
राजपुत्र	राजपूत
रक्ष	रखा
लस	लाल
लग्ज	लकड़ी
लवंग	लौग
लवण	तीन
लुंचन	नौचना

# ROJGAR WITH ANKIT

लोभशा	लौगड़ी
तंदथा	बाँझ
वक्त	ढगुला
वचन	खात
वज्रांग	बपरंग
वटु	घोटा
वत्स	वत्त्वा
वरथाता	वरात
वर्षा	बाहिश
वारिदि	बादल
वार्ताकि	बैंगन
वाष्प	भाप
विभूति	भवूत
विगाह	ल्याद
विर्धि	बद्दि
वृक्ति	भेड़िया
वृत्तिक	बूटी
वृक्षिक	बिट्ठू

# ROJGAR WITH ANKIT

तत्सम	तदुभव
शिधिल	ढीला
शिष्य	सिक्ख
बधि	खेस
रुठि	सौंठ
झूँगार	झिंगार
झूँगाल	झियार
झमञ्जु	मूँछ
रथामल	सॉवला
रथाला	साला
रथाली	साली
रथालीवाट	साठु
झावण	सावन
झृँगला	रोजल
झूँगारक	सिंघाड़
न्हेधी	रोडी
झृञ्जु	सारा
झैसुर	साहुर
झैसुरालय	साहुराल
संन्यासी	सन्यासी
सत्य	सच
सप्ततार	हितार
सर्सप / सष्प	सर्सो
सुची	खुड़ी
सीमाग्रथ	खुणग
स्कंध	कंदा
स्तंश	खम्जा
स्तव	ठडा
स्तम्भन	थामना
स्तोक	थोडा
स्थग	ठग
स्थाली	थाली
स्पर्शी	परस
स्मरण	सुमिरन
स्वक	संगा

# ROJGAR WITH ANKIT

खण्डकार  
 स्वामी  
 हरित  
 हरिद्रा  
 हस्त  
 हस्ति  
 हृदय  
 अंगरक्षक  
 अमृत  
 आशीष  
 अङ्ग  
 आसिन  
 आद्रिक  
 क्षाण्डु  
 कुपज  
 गायक  
 मिल्जन  
 जमाता  
 तृण  
 तिथिवार  
 तीर्थ  
 नदन  
 नापित  
 प्रस्तर  
 पूर्व  
 फाल्गुन  
 बलिवद  
 थलोपवीत  
 धरमान  
 राशि  
 लक्ष्मण  
 वणिक  
 वट  
 स्फोटक  
 शान्त

युनाईट  
 राष्ट्र  
 हरा  
 हल्दी  
 हाथ  
 हाथी  
 हिथ  
 अंगरखा  
 आभिय  
 असीस  
 आधा  
 आसान  
 आदरक  
 कच्छी  
 कुबश  
 गवेया  
 चिल्हा  
 जँवाई  
 तिनका  
 ल्योहार  
 तीरथ  
 चैन  
 नाई  
 पत्थर  
 पूरब  
 फाल्गुन  
 बैल  
 जनक  
 जगमान  
 रास  
 लखन  
 बनिया  
 बड़  
 फोड़ा  
 साग

# ROJGAR WITH ANKIT

शंकर  
 ज्ञानी  
 ज्ञाप  
 जूँग  
 कुण्ठ  
 चंद्रिका  
 ताम्र  
 दौहिता  
 देतधावन  
 लज्जा  
 सच्चक  
 चत्वार  
 भूमर  
 मण्डूक  
 सौश्राग्य  
 झुवान  
 सज्जान  
 लिंगपट्ट  
 वर्कर  
 सुस्थिर  
 सप्तनी  
 नववर्णण  
 सतिय  
 अवर  
 मूल्यना / मृक्षण  
 गोस्वामी  
 उन्मेष  
 किंचित  
 ज्वाथ  
 शंकट  
 ताप  
 अर्कट  
 सन्तापन

शंकर  
 रीठ  
 ज्ञाप  
 सींग  
 लोड  
 बांदनी  
 तोंबा  
 दोहिता  
 दातुन  
 लान  
 सौचा  
 चार  
 भवंता / भोंरा  
 मैंदूक  
 सुहाग  
 जवान  
 सधाना  
 लंगोट  
 बकरा  
 सुयरा  
 सौंत  
 नहना  
 खती  
 झीर  
 मक्खन  
 गोसाई  
 उन्मेष  
 कुण्ठ  
 काढा  
 छकडा  
 ताब  
 केकडा  
 सताना

# ROJGAR WITH ANKIT

विक्षेप  
 ज्योत्स्ना  
 क्रोड  
 नकुल  
 लक्ष  
 द्यूत  
 आका  
 प्रावृष्ट  
 कास  
 मानव  
 विस्मृति  
 उठिका  
 शुष्ठि  
 दुर्लभ  
 किंपुन  
 अहिफ्त  
 प्रव्यशालिक

विद्योह  
 जून्ह  
 गोद  
 नेवला  
 लाख  
 झुआ  
 आथसु  
 पावस  
 खाँसी  
 मनई  
 विसुमिरन/विसरना  
 चोटी  
 सौंठ  
 दुल्हा  
 कथो  
 अफीम  
 पंसारी

# संकर शब्द- : ऐ शब्द जो दो भाषाओं से मिलकर बने हैं -

उदाहरण- : रेल गाड़ी, टिकटघर, सजापत्र

Rail      गाड़ी      (विदेशी)      तत्सम  
 (अंग्रेजी)      (हिंदी)

⇒ लघुत बैंकू, अन्नुगेस, आपैशन-कक्ष  
 (हिंदी) (अंग्रेजी) (तत्सम) (अंग्रेजी) (तत्सम)

⇒ जेल थाता, लाठी चार्ज, सिनेमा घर  
 (अंग्रेजी) (तत्सम) (हिंदी) (अंग्रेजी) (हिंदी)

# देशज :- वे शब्द जो देश के अंदर स्थानीय रूप से पैदा होते हैं।

↳ लोटा, चप्पल, डिंबा आदि।

# ROJGAR WITH ANKIT

विदेशी शब्द-: वे शब्द जो हिंदी भाषा में अन्य विदेशी भाषाओं से लिए गए हैं-

(1) पुर्तगाली शब्द-: साबुन, बाल्टी, तौलिया, इस्तिरी, कमीज, पतलून, मिस्त्री, चाली, मेज, काजू, अन्नानास, आलू, गोभी, संतरा, पपीता, कनस्टर, इस्पात, पादरी, अलमारी, आलपीन, गमला, फीता, गोदाम, पिस्तौल, रिक्षा, इमोजी, ईके बाना, शम्पान, करीटे, सौयोनरा, जूडी, सूमो, सुनामी, सुडीकू

(2) जापानी शब्द-: जज, पुलिस, पिलनिक, क्यार्य, टेबूल, कारतूस, रेस्त्रा, मीनू, अंग्रेज, अंग्रेजी, रिपारेज

(3) चीनी शब्द-: चीनी, चाथ, चाउमीन, लीची, चीकू, तुफान, पटाखा

(4) डच शब्द-: चिड़िया, बम, ड्रिल, स्काउट, तुख्य

(5) लैटिन शब्द-: महिनों के अंग्रेजी नाम (जनवरी, फरवरी...), रोज़िया, कोटा

ईच, कोरम

बुजुर्ग, सूतनिक, वोड़का

(6) अरबी शब्द-: मलूक, इंसान, आशिक, इज़ाजत, इज़हार, औलाद, असीर, जिंकरी, जिस्म, इस्तेमाल, ईमान, इज्जत, कदम, गुलाब, इत्र, ऐनक, झक्कल, जौहरी, गुफाहा, मशहूर, मज़बूर, तारिस, खबर, फफन, हौसला, मुत्तियम

कसम, शराब, लाइलाज, लिफाफा, दुनिया, औसत, मुनीम, मुसीबत, दुलिया, हुक्स, हजिर, वर्णिल, हौलत, लिहाज, लफ्ज, कमर, किला, अदा, ईतेहार, अदालत, हवालत

नुक्ता

अरबी शब्द

क, ख, ग, झ, फ

# ROJGAR WITH ANKIT

(9) फारसी शब्द-: नजाथज, जलान, कमजोर, हैश, नामदे, हीशियार  
↓ खामीश, आफत, मुर्गी  
कुश्ती, दंगल, किशमिश, जिरोह, तंमचा, आतिशाबाजी  
खाकी, खुराक, बघाना, भफलौस, जिंदगी, आमदनी, मुफ्ल  
मलाई, आसमान, शुल, हमउम्र, हमदम, हमलफर  
हरगिज, बाजार, शादी, दुकान, शायद, मजा, तमाशा  
पुल, नाव, बारिश, सौंपाणर, चेटा, सल्कार, सखार  
शोर, हफ्ता, पैमाना, सितार, खितार, दवा, जादु  
नीम, हफ्फीम, बेपनाह, आजादी, रास्ता, गवाह,  
कीपार, शायद, जहर

# ROJGAR WITH ANKIT

परिभाषा-:

## वाक्य

सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह की वाक्य कहते हैं।

शब्दों के सार्थक मेल से बनने वाली इकाई

→ वाक्य के निर्माण के लिए 06 अनिवार्य तत्व होते हैं—

(1) सार्थकता : अर्थपूर्ण शब्दों का सम्योग → हरीश पानी खाता है।

(2) घोग्यता : पदों का एक निश्चित अर्थ → हरीश पानी पीता है।

(3) आकांक्षा : जो जानने की इच्छा बनाए → खिलाड़ी अंतिम गेंद पर

(4) निकटता : शब्द एक निश्चित दूरी पर लिखा जाए।

(5) पदक्रम : पदों का क्रमसही हो — राम है खाता X

(6) अन्वय : लिंग, पक्वन, काल और कारक का मेल हो  
→ उन्होंने भोजन खाता पकाया।

वाक्य के अवयव — अंग  $\Rightarrow$  02

### उद्देश्य

जिसके बारे में  
वाक्य में बात की  
जाए।

### विधेय

जो उद्देश्य के बारे में  
बताता है।

(1) अमरेन्द्र आम खाता है।

उद्देश्य                    विधेय

(2) मोहन ने बाँसुरी बजाई।

उद्देश्य                    विधेय

(3) कीपा ने सबको जर्वत दी।

उद्देश्य                    विधेय

(4). लम्बे-लम्बे वाली लड़की ने सच्चा टिल जीत लिया।

उद्देश्य

NOTE

उद्देश्य में कर्ता का  
विस्तार भी शामिल  
होता है।

(5). शुभम और शोफेश राति में बैडमिण्टन खेलते हैं।

उद्देश्य

विधेय

# ROJGAR WITH ANKIT

(6). तलवारें लैकर चल रहे सैनिकों ने मेलान कहा कर लिया।

(7). परिस्थिति करते वाले हर्ष सका सफल होते हैं।

## वाक्य के भेद

रचना के आधार पर = 03

अर्थ के आधार पर = 08

- (1) सरल वाक्य / साधारण वाक्य
- (2) संयुक्त वाक्य
- (3) मिश्र वाक्य

# सरल वाक्य :- जिन वाक्यों में केवल एक उद्देश्य और एक विधेय होता है।

(उद्देश्य) सौरभ लंबी जैकेट पहनता है। (विधेय)

(उद्देश्य) सौरभ और राहुल दोनों त्यायाम करते हैं।  
→ सीहन ने भोजन किया। (विधेय)  
(उद्देश्य) (विधेय)

# संयुक्त वाक्य :- जिन वाक्यों में को थाको से अधिक वाक्यांश जुड़े हैं, और ये वाक्यांश संयोजकों से जुड़े हैं।

और, तथा, एवं, तो, नहीं तो,  
फिर भी, पर, लेकिन, किंतु, परन्तु  
अथवा इसलिए, जातः

- वह पढ़ने गया और खेलने लग गया।
- वह बार-बार असफल हुआ परन्तु उसने द्यमान नहीं हारी।
- तुम आओगी तो सही किंतु मुझ नहीं पाओगी।
- तुम सही दिशा में जा रहे हो, फिर भी मैं कुछ समझ नहीं देता हूँ।
- उसने बंहुत कोशिश की इसलिए वह सफल हुआ।
- रीता खाना बनाती है और रोटी रखल जाता है।

# ROJGAR WITH ANKIT

## \* वाक्य के भेद \*

### रचना के आधार पर: 03

- (1) सरल वाक्य
- (2) संयुक्त वाक्य
- (3) मिश्र वाक्य :-

ज्यों ही, व्यों ही,  
जितना, उतना,  
गि, जब, तब  
यद्यपि, तथापि  
ताकि, जैसा,  
वैसा, जहाँ, बहाँ

- वह वाक्य जिसमें एक प्रधान वाक्य और अन्य आकृति  
उपवाक्य गौजूद ही।
- (1) राम को विश्वास है कि श्याम आएगा।
  - (2) वह जितना कमाता है उतना खर्च भी कर देता है।
  - (3) उसने कहा कि मैं निर्देषिष्ठ हूँ।
  - (4) जिसे आप ढूँढ़ रहे हैं, वह तो चला गया।
  - (5) छत पर गए तब धूप मिले।
  - (6) जिसने कार्य नहीं किया वह खड़ा हो जाओ।

### अर्थ के आधार पर: 08

- (1) विद्यानवाचक  
(साधारण वाक्य) → पंकज यादव एक होशियार द्वात्र हैं।  
→ रोजगार विद्य अंकित एक कोचिंग सेंटर है।
- (2) निषेधवाचक  
(नकारात्मक) → वह दिल्ली नहीं जाएगी।  
→ वह कभी भी चल नहीं पायेगी।
- (3) प्रश्नवाचक  
(प्रश्नवाचक चिन्ह) → तुमने क्या खाया है?  
→ तुम कब तक सफल हो जाओगे?
- (4). आशावाचक → जाओ एक गिलास पानी लेकर आओ।  
→ यहाँ गत बैठो।
- (5). विस्मयवाचक → वाह! कमाल की जोड़ी है।  
→ अरे! आप भी कमाल हो।  
→ शावाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया है।
- (6). इच्छावाचक → भगवान् तुम्हारी लंबी उम्र करे।  
→ ईश्वर् तुम्हि जल्दी से सफल करे।  
आपकी यात्रा गंगलभय हो।

# ROJGAR WITH ANKIT

(7) संकेतवाचक  
(निर्भरता)

यदि रोहन पास हुआ तो उसे लैपटॉप मिलेगा।  
यदि धूप निकली तो कपड़े रखेंगे।  
अगर तर्हा होगी तो फराल बढ़ी होगी।

(8) संदेहवाचक  
(शक)

शायद वह लौट आए।  
शायद उसने पूरी पुस्तक पढ़ ली होगी।  
शायद वह कल आएगा।

ROJGAR WITH ANKIT

ପାତ୍ର

**परिभाषा-**: वाक्य की लोलने का सही तरीका  
 \* हिन्दी भाषा में तीव्रताचय होती है-

- (1) कर्तृवाच्य  
 (2) कर्मवाच्य  
 (3) भाववाच्य

## # कुछ नियमः (क्रिया के लिंग के अनुसार)

- (1). यदि कर्ता के साथ विभक्ति चिन्ह ही और कर्म के साथ विभक्ति चिन्ह न हो तो क्रिया का लिंग “कर्म” के अनुसार होगा।

(२) सोहन ने चाय पिया।  
 (कर्ता)                  ↓ (कर्म)                  (क्रिया)  
 स्त्रीलिंग              पुल्लिंग

\* राकिश को खाना दी।

सौहन ने चाय पी।

\* सोहन ने खार खाई।

- (2). थदि कर्ता विभक्ति सहित हो और कर्म भी विभक्ति सहित हो किया का लिंग और वचन न हो कर्म के अनुसार होगा और न हो कर्ता के अनुसार होगा, तब यह किया सर्वेक्षण एकवचन और पुलिंग होगी।

(क) भिलाओं ने लड़कियों को पीटा।

(ख) पृथ्वी ने सूर्य का चक्कर ~~लोभहृषि~~। लगाया

(ग) गिलहरी ने बादाम को काटा।

- (3). यदि कर्ता विभक्ति रहित हो तो क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होगा।

(क) विजली भाग ग्रेश। गर्थी

(ख) सूर्य चमक रहा है।

(ग) लाइट चल रहा है।

(घ) सीता भाग गया।

नाम, लिंग वा निर्धारण नहीं

# ROJGAR WITH ANKIT

**कर्तृवाच्य-** यदि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का लिंग और वचन कर्ता के अनुसार बदले।  
 ⇒ कर्तृवाच्य में क्रिया भार्मिक और सर्वार्थक दोनों हो सकती है।

- (क) लड़का क्रिकेट खेलता है।  
 (कर्ता) (कर्म) (क्रिया)  
 ↓ ↓  
 (पुलिंग) (पुलिंग)
- (ख) लड़की क्रिकेट खेलती है।  
 (कर्ता) (कर्म) (क्रिया)  
 ↓ ↓  
 (स्त्रीलिंग) (स्त्रीलिंग)
- (ग) स्त्रियाँ बाजार में धूमती हैं।  
 (कर्ता) (कर्म) (स्त्री)  
 ↓  
 (स्त्रीलिंग)
- (घ) पुरुष बाजार में धूमता है।  
 (कर्ता)  
 ↓  
 (पुलिंग)

**अपवाद-** ने पहचान कर्तृवाच्य की होती है।

- (क) लड़की ने अखबार पढ़ा।
- (ख) लड़के ने रोटी खाई।
- (ग) नवीन गुरुजी ने क्लास लिखा। ली।

**कर्मवाच्य-** क्रिया का लिंग और वचन कर्म के अनुसार होगा।  
 ⇒ मुख्य क्रिया सदैव सर्वार्थक होगी।

**पहचान-** “के छारा”

- (क) सोता के छारा गात गाया गया।
- (ख) हीश के छारा गाना गाया जाता है।
- (ग) बच्चों के छारा खेल खेला जाता है।
- (घ) रथाम के छारा बंसी बजायी गयी।
- (ङ.) मेरे पिताजी के छारा वधे पढ़ी गये।

# ROJGAR WITH ANKIT

→ चिड़िया के हारा रोटी खाई गई।

व्यावसाय → मुख्य क्रिया सदैव अकर्मक होगी।

→ क्रिया सदैव एकत्रित और पुलिंग होती है।

→ असमर्थता और समर्थता दोनों का बोध होता है।

(क) रमेश से बोला नहीं जाता।

(ख) सविता से खाया नहीं जाता।

(ग) चली भब्ब चला जाए।

(घ) चली घूमने चला जाए।

(उ.) रमेश से बोला जाता है।

(च) सविता से खाया जाता है।

# ROJGAR WITH ANKIT

## वर्तनी- (आजारा) शब्दों को राहीं लिखने का तरीका

\* गतंशेषु से गृह्णते निशा-:

टार्ट → तर्त

लीजिए → लीजिंग

टैंडर → टंडर

(1) वैकल्पिक व्रति 'था' को न लिखा जाए-

संरा	रुद्रीय X	-	रुपए ✓
	किराये	-	किराए
	अनुयायी	-	अनुयाइ

क्रिया	नये	-	नए
	नयी	-	नई
	उत्तरदायी	-	उत्तरदाइ
	स्थायी	-	स्थाई
	आघायी	-	आघाइ
	ग्रेये	-	ग्रए
	जायेगी	-	जाएगी
	लीजिये	-	लीजिए
	चाहिये	-	चाहिए
अव्यय	दिखायी	-	दिखाई
	सोयी	-	सीई
अव्यय	के लिये	-	के लिए
		-	

(2) पंचम वर्ण और अनुसार में, अनुस्वार को प्राथमिकता देंगे-

चंचल ✓	-	चँचल
दंड ✓	-	दण्ड
हिंदी ✓	-	हिन्दी
संबंध ✓	-	सम्बन्ध
संधि	-	सन्धि

(3) परस्मीय शब्द अलग-अलग लिखे जाएं।

×आपका — आप का ✓

×आप सबका — आप सब का ✓

रात भर के साथ — रात भर के साथ

(4) छिप्त और एकाकी व्यंजन में, एकाकी व्यंजन को चुना जाए—

# ROJGAR WITH ANKIT

<u>कर्तव्य</u>	→ कर्तव्य
<u>माधुर्य</u>	→ माधुरी
<u>तत्व</u>	→ तत्व
<u>महत्व</u>	→ महत्व
<u>कर्ता</u>	→ कर्ता

(5). जब पूरे और अधिक व्यंजन का विकल्प हो तो पूरा व्यंजन ही लिखा जाए-

<u>बदीश्वर</u>	→ बरदाश्वर ✓
<u>गदीन</u>	→ गरदन ✓
<u>बर्तन</u>	→ बरतन ✓
<u>गम</u>	→ गरम ✓
<u>अकस्मा</u>	→ अकस्मा ✓

(6). इक का नियम—:

अ → आ , उ → ऊ , इ → ई

समाज + इक = सामाजिक  
स → स + अ

प्रशासन + इक = प्राशासनिक
त्यवहार + इक = त्यावहारिक
संविधान + इक = संविधानिक
आद्यात्म + इक = आद्यात्मिक
चमत्कार + इक = चामत्कारिक
रसाथन + इक = रासाथनिक
त्यवसाय + इक = त्यावसायिक
तात्काल + इक = तात्कालिक
साप्ताह + इक = साप्ताहिक
परस्पर + इक = पारस्परिक
वर्ष + इक = वार्षिक
सम्प्रदाय + इक = साम्प्रदायिक

शूगोल + इक = शौगोलिक
उद्योग + इक = औद्योगिक
मुख + इक = मौखिक
उचार + इक = औपचारिक
योग + इक = थोगिक

नीति + इक = नैतिक
विद्यान + इक = वैद्यानिक
इतिहास + इक = ऐतिहासिक
विज्ञान + इक = वैज्ञानिक

# ROJGAR WITH ANKIT

(7) कुछ शब्दों के बाहर हल् चिन्ह का प्रयोग

श्रीमान्	मूल्यतात्	प्रसरणात्
समाट्	पश्चात्	अगावात्
शरद्	पृथक्	बुद्धिमान्
विराट्	जगत्	
विधिवत्	धरिष्ठि	

(8) बहुवचन में ई→इ में परिवर्तन

ईकाई	- इकाईयाँ
द्वाई	- द्वाईयाँ
रेजाई	- रेजाईयाँ

# ROJGAR WITH ANKIT

## तर्तनी - 2

- |  |   |
|--|---|
| <p>(1) अतिथिगृह (अ+तिथि + गृह)</p> <p>(2) अभिषेक (भजि + सेक)</p> <p>(3) अस्वास्त (अभि+अस्त)</p> <p>(4) अजन्मा</p> <p>(5) अंगलि (गीतांजलि)</p> <p>(6) अल्पायु (अल्प + आयु)</p> <p>(7) अन्तर्धान</p> <p>(8) अन्तर्लीय</p> <p>(9) अविलंब</p> <p>(10) अद्वितीय</p> <p>(11) आधिकारिक (आधिकार+इक)</p> <p>(12) अनाधिकार (अन् + आधिकार)</p> <p>(13) अनिर्वचनीय</p> <p>(14) अनुकरणीय</p> <p>(15) अनुभूति</p> <p>(16) अनुग्रहीत (अनुग्रहीत में अनुग्रहीत-ः २) <span style="border: 1px solid black; padding: 2px;">अनुग्रह</span></p> <p>(17) अनुनासिक</p> <p>(18) अँकन</p> <p>(19) अकाठ</p> <p>(20) अकु</p> <p>(21) अकस्मात्</p> <p>(22) अनन्तास्</p> <p>(23) प्रत्यधिक →(अति+अधिक)</p> <p>(24) अनसुथा</p> <p>(25) अशोहिणी</p> <p>(26) अश्वाही</p> <p>(27) अद्वैताधिक</p> <p>(28) अनधिकृत</p> <p>(29) अहोरात्र</p> <p>(30) अहोरात्र</p> <p>(31) अहल्या</p> <p>(32) अहनिशि</p> | <p>(33) अट्टतुकी</p> <p>(34) अलीकिक</p> <p>(35) अन्तर्दृष्टि</p> <p>(36) अन्तर्दैशीय</p> <p>(37) अत्यंत (अति + अंत)</p> <p>(38) अन्तर्शेष्यतना</p> <p>(39) अन्तरिष्ट्रीय</p> <p>(40) अनुकम्पा</p> <p>(41) अतिशयोक्ति (अतिशय+उक्ति)</p> <p>(42) अत्युक्ति (अति + उक्ति)</p> <p>(43) अभ्यारण्य</p> <p>(44) आभ्यन्तरिक (अभ्यन्तर+इक)</p> <p>(45) अन्त्याक्षरी</p> <p>(46) अर्थात्</p> <p>(47) अस्पृश्यता</p> <p>(48) उपाधीन</p> <p>(49) अध्ययन</p> <p>(50) अनीष्ट</p> <p>(51) अनुसरण</p> <p>(52) अनभिज्ञ</p> <p>(53) अद्घगति</p> <p>(54) अँगठी</p> <p>(55) अँगीठी</p> <p>(56) आगामी</p> <p>(57) आरीर्वाद</p> <p>(58) आदरणीय</p> <p>(59) आकर्षक</p> <p>(60) आकर्षित्वक</p> <p>(61) आवश्यकता</p> <p>(62) आयुष्मान</p> <p>(63) आविभवि</p> <p>(64) आत्मीत्सग (आत्म+उत्सग)</p> <p>(65) आकांक्षा</p> |
|--|---|

# ROJGAR WITH ANKIT

(66)	आविवका॒	(98) उद्योगीकरण → 3।
(67)	आराधना	(99) उन्मीलित
(68)	आधुनिकीकरण	(100) अहापीट
(69)	अनिवार्य	(101) नहतु
(70)	आधुनिक	(102) नहपि
(71)	आद्यात्मिक (आद्यात्म+इक)	(103) नफादशी
(72)	अविस्मरणीय	(104) नेक्य
(73)	आजीतिक	(105) नेश्वर्यशाली
(74)	आतिथेय	(106) नेतिहासिक
(75)	आन्त्रित	(107) नेक्ट
(76)	आदरणीय	(108) ओंदार्य
(77)	आनुषंगिक	(109) ओंधार्य
(78)	इसालिए	(110) ओंदीगीकरण ओंघीगीकरण
(79)	इकाइया	(111) ओंपचारिक
(80)	इष्टिलु	(112) कूपया
(81)	इख	(113) कौतहल
(82)	इसाई	(114) केन्द्रीय
(83)	इक्ष्या	(115) कारिगर
(84)	इन्द्रवजा	(116) कावयित्री
(85)	इच्छाद्रुम	(117) कालिङ्ग
(86)	उत्तरदायी	(118) कायीक्रम
(87)	उत्कृष्ट	(119) कृशांगी
(88)	उत्पात	(120) कीमलांगी
(89)	उपर्युक्त (अरि+युक्त)	(121) कुमुद्नी
(90)	उज्ज्वल	(122) कालिंदी
(91)	उच्छृंखल	(123) किलाष्ट
(92)	उन्नयन	(124) कीचड़ी
(93)	छवा	(125) कारागृह
(94)	उत्पात	(126) कीड़ा
(95)	उपलस्थ	(127) कृतकृत्य
(96)	उऋण	(128) केन्द्रिकरण
(97)	उहरण	(129) कैलास

# ROJGAR WITH ANKIT

- (129) रेतिहार
- (130) खूबसूरती
- (131) रेवेया
- (132) गगनचुंबी
- (133) गायिका
- (134) गरमी
- (135) शरिष्ठ
- (136) गुरु
- (137) गृहिणी
- (138) गान्धीर्थ
- (139) पिडियाधर
- (140) चतुर्भुज

ROJGAR WITH ANKIT

# ROJGAR WITH ANKIT

## वर्तनी

### PART-3

(1) चतुर्छक्षीण	(33). द्विर्धशास
(2) चिकनाहट	(34). दुरवस्था
(3) चरमीत्कषि (चरग + उत्कषि)	(35). लहिरुक्ति (B) दिरुक्ति (✓)
(4) चिकित्सालय	(36). दृष्टीनि
(5) चिह्न → चिह्न	(37). (A) द्रवाइयाँ (✓) (B) द्वारियाँ
(6) चामत्कारिक	(38). दृश्य
(7) चहरदीवारी	(39). द्वारका
(8) छिद्रान्तेषी	(40). दुर्घटनांखल
(9) छियासठ	(41). द्वाराशी धराशायी
(10) जगज्जननी (जगत् + जनना)	(42). धोबिन
(11) ज्योत्स्ना	(43). ननिहाल
(12) जिजीविधा	(44). विद्य
(13) जाग्रत् जागृति	(45). नासमझी
(14) जगत्प्राण	(46). नक्षत्र
(15) जामाता	(47). निरामिष
(16) जाज्वल्यमान	(48). निराकार
(17) जन्मांध	(49). निमीलित
(18) ज्येष्ठ	(50). निर्लिप्त
(19) झंडा	(51). (A) निरपराध (B) निरपराधी (X)
(20) तटरथ	(52). निरनुत्तासिक
(21) ताज्जुह	(53). निष्पक्ष
(22) तात्कालिक	(54). निरपेक्ष
(23) तस्त्वत्त्वाया	(55). निश्चिष्ट
(24) तीपची	(56). न्योद्यावर्, त्योहार्
(25) तदुपरान्त	(57). नूफुर
(26) ताकात्म्य	(58). पूज्य
(27) दुःस्वप्न	(59). (A) पूजनीय (✓) (B) पूज्यनीय
(28) दिवस	(60). परमार्थ
(29) दृष्टि	(61). प्रव्यान्मत्ती
(30) दूरदृशी	(62). पारलोंकिक
(31) दयालु	
(32) दीक्षा	

# ROJGAR WITH ANKIT

(63) परिवार	(97) परिषाते
(64) परिपार्श्विक	(98) पूजनीय
(65) प्रतिवधि	(99) पर्याप्त
(66) प्रतिदर्श	(100) परीक्षण
(67) प्रियदर्शी	(101) पेंटूक
(68) (a) प्रदर्शनी (✓) (b) प्रदर्शिनी	(102) प्रैंड
(69) प्रसाद	(103) पृष्ठ
(70) प्रेमातुर	(104) पोराणिक
(71) पीकदान	(105) फिटकिरी
(72) पत्रकार	(106) कालगुनी
(73) पितृहंता	(107) भागीरथी
(74) पौरुष	(108) भास्कर
(75) पुरस्कार	(109) बिछौना
(76) पुष्पांजलि	(110) लाडपीड़ित
(77) पुनर्जीवरण	(111) ब्राह्मण
(78) (a) पश्चिराज (✓) (b) पक्षीराज	(112) बरात
(79) प्राशासनिक	(113) शुलकमड़
(80) पारितीविक	(114) भास्कर
(81) पड़ोसिन	(115) भातृगण
(82) प्रतिनिधि	(116) भरमीछूत
(83) प्रातिनिधिक (प्रतिनिधि + इक)	(117) महीना
(84) पदभिन्नी	(118) मौखिक
(85) पुनरवलोकन (पुनर् + अवलोकन)	(119) माखनचौर
(86) परिणामि	(120) मालूम
(87) प्रज्वलित	(121) महात्मा
(88) पारस्परिक	(122) महत्वाकीज्ञा
(89) प्राविधिकी	(123) मिष्टान्न
(90) प्रस्तुतिकरण	(24) मृत्यूपरात मर्त्योपरात X
(91) सरिस्थिति	(125) मृत्यु
(92) प्रमाणिक (प्रमाण + इक)	(126) माहात्म्य
(93) प्रत्युपकार (प्रति + उपकार)	(127) मातृहीन
(94) परिशिष्ट	(128) मित्राधी
(95) परिस्थिति	
(96) प्रह्लाद	

# ROJGAR WITH ANKIT

(129)	गुरलीदार	(161)	बनतास
(130)	गैंगिलीशरण	(162)	वागर्शी
(131)	गहराजा	(163)	त्यावरसा
(132)	थथाशक्ति	(164)	ट्यालहारिक (त्यवहार + इक)
(133)	थानी	(165)	विदुबी
(134)	थ्रुधितिर	(166)	विनती
(135)	थोगिराज	(167)	वाल्मीकि
(136)	राजनीतिक	(168)	वांछनीय
(137)	रासायनिक	(169)	विक्रेता
(138)	रुढ़िवादी	(170)	वनस्पति
(139)	रसोईघर	(171)	त्यावसायिक
(140)	रसोइया	(172)	विवृज्ज्योति
(141)	रोहिणी	(173)	विभीषिका
(142)	राष्ट्रीयता	(174)	वाङ्मय
(143)	रचयिता	(175)	वापस
(144)	रूपवान्	(176)	विद्यार्थी
(145)	लालिमा	(177)	वन्दना/ वंदना (✓)
(146)	लघुत्तर	(178)	बहुव्रीहि
(147)	लिजिए लीजिए	(179)	शब्दांश
(148)	लक्षण	(180)	शोकाकुल
(149)	लालायित	(181)	शूपिणखा
(150)	विद्वांस	(182)	शोणित
(151)	विधिवत्	(183)	शशि
(152)	वीणापाणि	(184)	शश्या
(153)	विरहिणी	(185)	शमशान
(154)	विषाद	(186)	शैक्षणिक (शिक्षण + इक)
(155)	विस्तार	(187)	शाप
(156)	विशेषण	(188)	शुञ्जुआ
(157)	विस्मृति		
(158)	विस्मरण		
(159)	वैमनस्थ		
(160)	वैदेही		

# ROJGAR WITH ANKIT

तर्तनी

Part - 4

(1)	शताव्दी	(25)	स्वादिष्ट
(2)	सदुपदेश	(26)	संव्यास
(3)	सौनिक	(27)	स्तामिश्रकित
(4)	सम्मुख	(28)	सुषमा
(5)	सभापति	(29)	सुषुप्त
(6)	सर्वभक्षी	(30)	संयम
(7)	संस्कार	(31)	सांप्रदायिक (सम्प्रदाय+इक)
(8)	स्नेहरिक्त	(32)	साम्प्रदायिकता
(9)	स्थावर	(33)	साप्ताहिक (सप्ताह+इक)
(10)	संपादिका	(34)	सीढ़ी
(11)	सञ्जनता	(35)	स्वादिष्ट
(12)	सुषुम्ना	(36)	षष्ठ
(13)	स्थायित्व	(37)	हस्ताक्षर
(14)	सौहाद	(38)	हिंदुत्व
(15)	सौन्दर्यवहक	(39)	हस्तांतरित
(16)	संगृहीत	(40)	हतोत्साह
(17)	साक्षर	(41)	हासिल
(18)	सदृश	(42)	हस्तक्षेप
(19)	सच्चिदानन्द	(43)	हरिति
(20)	स्पर्धा	(44)	हिण्यकशिपु <span style="float: right;">हिण्यकशप</span>
(21)	सुहृद	(45)	हंसवाहिनी
(22)	ससीम	(46)	क्षुधा
(23)	सामुद्रिक	(47)	ज्ञुतिलिपि
(24)	समुज्ज्वल	(48)	ज्ञांखला
		(49)	ज्ञांगार
		(50)	ज्ञीमती
		(51)	ज्ञाहलु
		(52)	धारवल्कय, नक्द

# ROJGAR WITH ANKIT

## पाक्ष्य शुद्धि

### रीजा रातंकी आशुद्धियाँ

- (1) हम आपकी थह ~~अलित~~ गानी को तैयार नहीं हैं। बात
- (2) नेताजी की मृत्यु ~~क्षोभनक~~ है। दुःखद
- (3) उनकी ~~मोहिला~~ भी उनके साथ आयी है। पत्नी
- (4) इस घंते की उत्पाति को सोंवेष्ट पूर्व छुर्ह थी। का, अविकार, दुग्धा गा
- (5) पुस्तक सम्पर्ण की रामर्पित
- (6) ~~फसल~~ ग्रेश हो गयी। नष्ट
- (7) मैं शनिवार के दिन वहाँ पहुँच रहा हूँ। को
- (8) उनका रहन-सहन का ढर्जा ऊँचा है। स्तर
- (9) ~~उन्हें~~ की बोधार हो रही थी। गोलियों
- (10) इस विषय को पूर्ति कठिन है। जा प्रतिपादन
- (11) आपने थहाँ बुलाकर अशुद्धि की। बैज्ञती/गलती
- (12) उन्हींने बीसियों लेखकों का निर्माण किया। जो बनाया
- (13) प्रेम करना तलवार की त्रोक्त पर चलना है। धार
- (14) सभा में विरोध प्रकर किया गया।
- (15) ~~मेरे~~ से कुछ न पूछो। मुझ
- (16) हमारे प्रेतर जी बहुत अच्छे हैं। पिता
- (17) ~~तुम्हारे~~ से कोई क्यों बात करें ? तुम से
- (18) दूध में ~~जौल~~ पड़ गया है। क्या
- (19) डाल-पतली होती है, ~~मोहिला~~ नहीं।
- (20) बुद्धि - सूक्ष्म होती है, पतली नहीं। या स्थूल बुद्धि
- (21) ढाल - गाढ़ी होती है, मीटी नहीं।
- (22) अध्यापक - ~~बड़े~~ अच्छे नहीं, बहुत अच्छे।
- (23) श्रूख - भारी नहीं बहुत।
- (24) उसने धूरे स्पर में कहा। धीमे
- (25) हमें शिर्सा उपरस्ती से भेट की। अपशिक्षामन्ती
- (26) मुझे ऐक्स फलों का ~~विक्रेता~~ प्रतिदिन फल देता है।
- (27) उसने उनके गले में ऐक्स गेंदों की ~~एक~~ माला पहनायी।
- (28) घट चित्र ब्रेस सुंदर है। बहुत

# ROJGAR WITH ANKIT

- (29). आज भी वह तैसा को तैसा है। तैसे का तैसा  
 (30). असे कितने तीरता से भरि हुए गाने सुनायें?

## क्रिया-सम्बंधी अशुद्धियाँ

(31).	दौरा आता है।	दौरा पड़ता है।
(32).	अब आना।	अब जाना।
(33).	प्रश्न पूछना।	प्रश्न करना।
(34).	दान दिया।	दान किया।
(35)	थुड़ लड़ना।	थुड़ होना (करना)
(36)	संकल्प लेना।	संकल्प करना
(37)	शिक्षा ले रहे हैं।	शिक्षा पा रहे हैं।
(38)	प्रतीक्षा देखना।	प्रतीक्षा करना
(39).	स्मरण दिलाना।	स्मरण कराना।
(40).	प्रयोग होना।	प्रयोग करना।
(41).	आटा गूँथना।	आटा गूँथना।
(42).	शराब ढालना।	शराब ढालना।
(43).	तकलीफ शोगना।	तकलीफ उलना।
(44).	गाना गाना।	गीत गाना।
(45).	राग गाना।	राग बजाना।
(46).	अभियोग -चलना।	अभियोग लगाना।

## अन्य क्रियाएँ

(47).	शीशा	(शुद्ध) फूटता है।
(48)	द्रूष्ट	उखलता है।
(49)	पानी	खीलता है।
(50)	दाल	चुरती है।
(51)	खीर	पकती है।
(52)	हाथ	दूरता है।
(53)	आँख	फूटती है।
(54)	तूफान	झाला है।
(55)	हवा	बहती है।

# ROJGAR WITH ANKIT

- (56) बादल गरजते हैं।  
 (57) कट ओगा जाता है।  
 (58) तफलीफ़ छायी जाती है।  
 (59) कविता रची जाती है।  
 (60) मत दिया जाता है।  
 (61) मतदान किया जाता है।  
 (62) इसी प्रकार सरदार पूर्णसिंह किसान की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करोरहा है। करते हैं। मानता है।  
 (63) लेखक किसान को भगवान का स्वरूप मानते हैं।  
 (64) आज के साहित्य व्यक्ति को मनोरंजन के लिए लिखे जाते हैं। सब  
 (65). उन्होंने कहा आज की दुनिया में पैसा ही सभी कुछ है।  
 (66). बहुत से पशु और पक्षी चर और चंडे रहे थे।  
 (67). मैं उनको धन्यताद करता हूँ।  
कवन सर्वधी अष्टुदियाँ

- (68) आपने जैविक निर्बंधों तथा कहानियों की रचना की है। अनेक  
 (69) मुझे सन्द्याकाल के समेश बाहर जाना है।  
 (70) उसकी ओर से आँखें बहते हैं। आँखें; बहते हैं।  
 (71) गौरु अपने लच्छे को देखती जा रही थी। गाय  
 (72) वहाँ सभी जैविक लोग थे।  
 (73) प्रार्थनापत्र पर उसने हस्ताक्षर कर दिया। दिए

# ROJGAR WITH ANKIT

## लिंग सम्बन्धी शब्दों

- (७४) साहित्य दो प्रकार के होते हैं। जा होता
- (७५) सभी नाम के लिए आपको फीस देना पड़ेगा। नी पड़ेगी
- (७६) तुम्हारे माँ-बाप क्या नाम होते हैं? नाम करते हैं?
- (७७) उसकी आशा पूरी भी नहीं हो पाएगा कि तब तक पाई, जयी शाम हो गेगा था।
- (७८) सुभद्राकुमारी-चौहान उच्चकोटि नी जावी थी। ज जायी नी
- (७९) बातें सुनता पड़ती हैं। सुननी
- (८०) तुम्हे ~~जावी~~ अपन्यास पढ़ने में मजा आता है। अठड़ा

\* वाक्य शुद्धि \* Class-2<sup>nd</sup>

\* कारक अथवा विभावित-सम्बन्धी अशुद्धियाँ \*

1. घनता शासक के आला का पालन करती है।
2. बिना रूपये का किसी भी व्यक्ति का कोई आदर नहीं, सम्मान नहीं।
3. शुक्रन भी नयी सभ्यता की 'भारतीय सभ्यता' कहा है।
4. देश की उन्नति के लिए साहित्य की प्रेरणा लेना जरूरी है।
5. इस करण से समाज से साहित्य का अस्तित्व आवश्यक है।
6. पूँजीबाद व्यक्ति के स्वतंत्रता को महळ देता है।
7. जिससे दोनों की जिन्दगी चल सके।

\* विभिन्न परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों में दिए गए अशुद्ध वाक्य \*

- | अशुद्ध | शुद्ध वाक्य-सहित   |
|--------|--|
| 8.     | → मेरा प्राण संकट में हूँ। गेरे हैं।                     |
| 9-     | → मैंने अनेकों कहानियों पढ़ी हैं। अमेल,                  |
| 10-    | → बहुत से भारत के वैज्ञानिक विदेश गये हैं। बहुत से       |
| 11-    | → यह बात हमारे देशभार में छैल गयी।                       |
| 12-    | → देशभक्त बड़ी-बड़ी यातनाएं सहते हैं। यातनाएं            |
| 13-    | → दोनों की कृषा स्थ-स्थ है। कृषा हैं।                    |
| 14-    | → किसी और दूसरे आदमी को भोजो।                            |
| 15-    | → उसने अपनी सब कमज़ोरी पूरी कर ली। सभी कमज़ोरियों द्वारा |
| 16-    | → ताजमहल की सौंदर्य अनुपम है। वा                         |
| 17-    | → अपराधी को रस्सी बांधकर ले गये। रसी                     |
| 18-    | → यह ग्रन्थ विद्वतापूर्ण लिखा गया है। विद्वतापूर्ण       |

- 19- → उसका आवेदन सुनायी पढ़ा। उसकी, पढ़ी
- 20- → अधिकांश लौहों का यही विचार है।
- 21- → वह पैड़ जो कीने पर लगा है, उसके फल मिठि हैं। मैं
- 22- → (राम धक्कर) उसके हर मैं सौ गया। धक्कर राम
- 23- → मैं अनुग्रहीत हूँ। अनुग्रहीत
- 24- → कृतज्ञता से बढ़कर कीड़ी पाप नहीं है। पुण्य
- 25- → यामा की रचिता की जानपीठ पुरस्कार मिला। स्वयिता/स्वयिता
- 26- → मैंने कई वर्षों तक उनकी प्रतीक्षा की। की
- 27- → नेता जी ने हमको यही काम करने की कही है। कहा
- 28- → सौन ने श्याम की छड़ी चुरा लिया। जी
- 29- → शीर की देख उसका प्राण सखा गई। उसके, गए
- 30- → उपर्युक्त अवतरण की उपर्युक्त शीर्षक लिखिए। उपर्युक्त, उपर्युक्त
- 31- → मैं (कहा- कहा से) काम करता हूँ। कहे से कहा
- 32- → रामचरित मानस, उच्चकौटि का ग्रन्थ है। सङ्ग
- 33- → स्वयं प्रतिदिन पूर्व मैं (उग रहा है)। आता है,
- 34- → मैंने भगवन्नीता (पढ़ा) है। पढ़ी
- 35- → कौयल का कठ सबसे महुरतम् है।
- 36- → यह छी की शुष्टु दुकान है। शुष्टु छी, दुकान
- 37- → जैसे मरणीफरान्त (बद) राष्ट्रीय सम्मान मिला।
- 38- → बाह्द केवल संकेतम् है।
- 39- → उसने तरह-तरह को लप धारण किया। को लिए
- 40- → यह जींदगी से दैनिक घटना है।
- 41- → उसके पास केवल दस लपये में हैं।
- 42- → इस समय मेरी ओरु लीस वर्ष की है। अवस्था
- 43- → सम्मा के प्रत्येक सदस्यों की यही राय थी। सदस्य
- 44- → वह कक्षा का सर्वश्रेष्ठ अछूटा कात है।

45. → मैंने दो घड़ियों का खलौदी । खरीदा
46. → गलियों की चौड़ी करना आवश्यक हो गयी । गया
47. → वह सकुन्तल सोहित अपने हार में पहुँच गया।
48. → तुमने अच्छा काम किया । किया
49. → परीक्षा की प्रणाली बदलना चाहिए । बदलनी
50. → इस काम में दैरी हीनी स्वाभाविक थी । दैरी
51. → इसका मूल्य नापा या तीला नहीं जा सकता । औंका
52. → लिखने से शुभ्रता बरती । मैं
53. → बैंगिष्ठुल छील रहे हो ।
54. → दस स्त्रियों और पाँच बालकों की शोषण हो । स्त्रियों
55. → तुम कौन से गांव से आये हो ? किस
56. → मेरा नाम श्वी भीष्म है ।
57. → शिकारी ने उस पर गोली चलायी पर शेर बच निकला । शेर, वह
58. → मैं कपड़े नहीं दिखा हूँ । मैंने, दिए हैं)
59. → यह आम्यवाना रही है । आम्यवती
60. → अपराधी को लखी बोलकर लै गये । से
61. → बिल्ली गर्जना रही है । कड़क
62. → औंबों से औसू निकल पड़ा । यह
63. → छवन सामग्री जल गया । गई
64. → दस लफेद्दा में क्या आता है ? कपड़े
65. → मैं गुकणी से सहा करता हूँ । के प्रति, रखता
66. → निराशा की किरणों छायी हुई है । किरणों
67. → यह संस्कृति शोध का मागला है । विभाग
68. → इस पुस्तक से यहीं विशेषज्ञ होता है । की
69. → उसके प्राण पर्खेस उड़ गये ।
70. → आपकी रखना शैष्टकम है ।
71. → लड़का और लस्सी पीकर नमने धाना की । बाकर
72. → श्री सरोजनी नायडू एक विद्वान महिला थी । श्रीमती, विद्वानी
73. → कारगिल युद्ध में सेना वीरता के साथ क्रेड़े । लड़ी

74. → तितली के पोस्ते सुन्दर पंख हीते हैं।
75. → गत रविवार को वह मुम्बई आएगा।
76. → राकेश नया पोशाक घर्षकर गया है।
77. → नीबू पानी डंडा स्कूल गिलास लीजिए।
78. → हिन्दी साहित्य की भाष्टिकाल का 'स्वरक्काल' माना जाता है।
79. → अभितकाल की हिन्दी साहित्य का स्वरक्काल माना जाता है।
80. → प्रत्येक आत्मनिर्भर की व्यक्ति हीना चाहिए।  
प्रत्येक व्यक्ति की आत्मनिर्भर हीना चाहिए।
81. → मैरामान की उल्लेट में रखकर लाला दो।
82. → सभी अक्तगण माताजी का प्राञ्छाद लैकर आना। प्रसाद
83. → जाम का आचार बहुत बढ़ता है। आचार
84. → रेखा बहुत (दिन) है। दीन
85. → मंगल (गृह) पर जीवन है। गृह
86. → जैसा लिखो, जैसा रेखा जैसा लिखा। जैसा
87. → सीमा गा रही है और नीलम चुप है। पर
88. → यद्यपि अग्रिम गरीब है, किंतु ईमानदार है। तथापि
89. → तू पढ़ ले जहाँ तो टी. वी. देख ले। या
90. → किंकर भारत की पिया खेल है। का
91. → हिमालय गंगा निकलती है, सी
92. → झाँसी की राजी वीर थी। वीरांगना
93. → दीपक और ली अगमगा उठी। ली, अगमगा
94. → सुनील, रमेश और सारिका बाजार की गई। गए
95. → गुणवान महिला की सब प्रशंसा करते हैं। गुणवती

# ROJGAR WITH ANKIT

## ताकथ शुहू

### PART-3

- (1) अब आप ~~खेलों~~ खेलिए
- (2) प्रजा ने राजा की जय जयकार ~~कर~~ दिया। की
- (3) थह बात सुन इसके होश उड़ गेत्ता। गए
- (4) ~~ऐ~~ कहानी बढ़कर मेरा मन प्रफुल्लित हुआ। यह
- (5) पुस्तक ~~विद्वतापूर्ण~~ लिखी गई है। विद्वतापूर्वक
- (6) ~~शेर्वें~~: उसको सफलता मिलने लगी। शनिः: शनि:
- (7) रमा ने नताशा के ~~छेँच~~ से आवाज लगाई। जीर
- (8) सुनीता को प्रसिद्धि ~~रात्र~~ सब नहीं मिली रातो-रात
- (9) बिना परिज्ञिम ~~के~~ कोई सफल नहीं हो सकता। किर
- (10) बाढ़ पीड़ित कोष में करोड़ों रु. संकलित हुए। जमा
- (11) न्यूटन ने मुख्त्वाकृष्णिं ~~अविज्ञार~~ किया। की, खोज की
- (12) अच्छे विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार की आज्ञा मोक्षदीर्घि~~चाहिए~~ का पालन करना चाहिए। मधुर
- (13) <sup>(A)</sup> मैरी संगीत सुनकर आनंद आ गया। आरी
- (14) विदेशी जहान को गंभीर क्षति हुई। बहुत
- (15) अब महँगाई मोर्से मोक्ष ऐंबढ़ रही है। अंश
- (16) लामायनी सबसे 3-न्तमक्रैस भृणात्य है।
- (17) यह वही घात है, उसको प्रदानमंत्री ने पुरस्कृत किया। जिसको
- (18) गांव के मधुष्य ईमारद्दार और परिश्रमी होते हैं। लोग
- (19) आपने इस कहानी का कितना भ्रार पढ़ लिया?
- (20) तुम अपनी प्रतिज्ञा ~~के~~ शेषों पर ध्यान दो।
- (21) इस प्रेर्बण समाधान मुझे मिल गया। समस्या
- (22) ~~मैं~~ आपको परनाम किया हूँ। मैंने, प्रणाम है।
- (23) मौर्से के पंख सुंदर होते हैं। मौर
- (24) कर्म ही जीवन की ऊसेंवी हैं। ऊसोंटी
- (25) तुम श्वेषा दाम देते जाओ। इसके

# ROJGAR WITH ANKIT

- (26) तीन ~~नेशर~~ के नाम बताइए। नजरों
- (27) हम कब तक रहेंगे और अप्सान का दृष्टि पीते रहें। अप्सान दृष्टि
- (28) इसके लिए एक प्राग्माणिक कथा प्रचलित है। प्राग्माणिक
- (29) ईमानदारी मनुष्य जा ब्रेष्ट लेकर है। गुण
- (30) यहाँ लगभग को कर्जन के करीब संतरे हैं। यहाँ
- (31) वे हैं! कितना धृष्टिपूर्ण है। ठि!
- (32) आप निः संकोच चला जाओगो। चले जाऊँ।
- (33) विज्ञान से अनेक असंभव जगति वाली घटियों को संभव कर दिया गया है। ने, वहोंने
- (34) आधी रात से सोने के क्रमसूत में भी भारी उत्तराल आया है। की
- (35) करवा चौथ के बत जी पूर्ण तरीन वामन पुराण में किया गया है। जा
- (36) कुछ लोगों की लगता है कि बदला लेने से जलजे को छँडक पहुंचती है। की
- (37) देश प्रेम के बारे ही किसी देश के निवासियों में उसके दैव के प्रतिभ्रह्म की भावना ज्ञानियों द्वारा जाग्रत
- (38) ~~तृष्णा, छाँड़ा और तुम बाजार जाएंगे।~~ तृष्णा, तुम और वह
- (39) कई सालों से निर्मला के भूत में तीर्थयात्राओं की बड़ी भालखा थी। जो
- (40) आकाशवाणी से यह समाचार सुनेगा गोका। प्रसारित किया।
- (41) नेताजी ने आजाद हिन्दू को जा नियंत्रण किया। नेतृत्व
- (42) धार्मिक असहिष्णुता को देखकर महात्मा गांधी की मृत्यु आत्मा को कितना सन्ताप होता होगा।
- (43) ~~एक~~ माँ की हृषिकेश से असला बालक ही सबसे सुंदरक्रृष्ण होता है।
- (44) वह पतिव्रता ~~हो~~ है।
- (45) अश्वमेध का धोड़ा निर्विघ्न चक्रवर्जिक घुमता रहा।
- (46) विद्याचल प्रवर्त्त सद्य पृदेश में है।
- (47) प्रत्येक धर्म के लिए अल्लाह सुदृढ़ रखना हमारा कर्तव्य होता है।
- (48) इस बात का स्पूतिकरण ~~कर्त्ता~~ आवश्यक है।
- (49) ~~प्रत्येक~~ भाल ~~कर्त्ता~~ ज्योति में एक मुख्यमंत्री है।
- (50) कृपया आज ~~कर्त्ता~~ अवकाश देने को कृपा करो। का
- (51) इसे मृत्यु-दण्ड ~~कर्त्ता~~ संज्ञा मिली। मिला
- (52) उसके बाद ~~कर्त्ता~~ राम जा राज्याभिषेक हुआ।
- (53) प्रेमचन्द्र ने पर्याप्त मोक्ष में अन्यास/कषानियाँ ~~लिये~~। संख्या
- (54) प्रयाग विश्वविद्यालय ने नेहरू जी को उपाधि वितरित की। प्रदान
- (55) हर ट्यूकिल जी कोई न कोई स्फुतकारी ~~जो~~ नाम सीखना चाहिए। सीखनी

# ROJGAR WITH ANKIT

- (५६) देश की जितनी दुर्गति पहले कभी नहीं हुई। इतनी
- (५७) थट विलाप ~~करके~~ रोने लगी।
- (५८) तुम अपनी सुविधानुसार थट काम करना। करिए
- (५९) वट एक ग्रेस्ट अपराधी है। कुरच्यात्
- (६०) दोनों चोरियों में से कौन-सी उच्चतम है ? उच्चतर
- (६१) वट गर्भ आग में हथ सेक रहा था।
- (६२) आपकी राय से थट काम जरूरी है। में
- (६३) भाइ ~~काश्मीर~~ से लगाकर जन्याकुमारी तक जैला है। कश्मीर, लेकर
- (६४) उन्होंने बहुत-सी पुस्तकें एकत्रित कर ली हैं। पुस्तकें

## रस

परिभाषा— जब किसी पाठ्य, दर्शक था श्रीता को किसी कहानी को पढ़कर, हृश्य को देखकर था कोई बात सुनकर जो भाव पैदा होते हैं, उन्हें रस कहते हैं।

उदाहरण— प्रेमी का प्रेमिका को देखना

कोई गजेदार गुरुकुला पढ़ना

आचानक के गुड़ी पर अपने पीछे शेर को देखना

अन्य परिभाषाएँ:

\* विभाव, अनुभाव और व्यषियारी भावों के संयोग को रस कहते हैं।

\* रसयते आस्वादते इति : → विश्वनाथ

जिसका आस्वादन किया जाए, वही रस है।

\* विभावानुभाव व्यषियारी संयोगाद सनिष्पत्ति: वाट्य शास्त्र में भरत-मुनि

कुल-: ३६(अध्याय)

6<sup>th</sup> अध्याय-: रस

7<sup>th</sup> अध्याय-: भाव

\* सर्वे इति रसः — उद्दट

जो प्रवाहित होता है, वही रस है।

\* भरत मुनि के अनुसार, रसों की संख्या = 8  
लेकिन रसों की कुल संख्या = 9

\* रस का शाविदक अर्थ = आनंद

⇒ रस काव्य की प्रणाली कहलाता है। रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार

⇒ शृंगार रस को रसराज / रसपति कहा जाता है। :- भोजराज ने कहा

⇒ रस के अंग ⇒ ०५

(1) स्थायी भाव - ०५

(2) अनुभाव - ०५

काव्य-शास्त्र

→ पंचम वेद की संबंध

→ भारतीय शास्त्रीय नृत्य  
की जानकारी

# ROJGAR WITH ANKIT

(3). विभाव - 02.

(4). संचारी भाव - 33

\* स्थायी भाव :- वह भाव, जो काल्पन में अंत तक बना रहता है, इसे ही हम प्रदान भाव/मुख्य भाव कहते हैं।

रस	संयोग	स्थाई भाव
शृंगार रस	विद्योग	राति
हास्य रस		हँसी/हास्य
करुण रस		शोक
रीढ़ रस		क्रोध
वीर रस		उत्साह
भयानक रस		भय
वीभत्स रस		दृष्णा/जुगुझा
अद्भुत रस		विसर्य/आश्चर्य
शांत रस		शम (निर्विद)
		रथाई भाव
खोज :- अभिनव गुप्त		
परिभाषा :- उद्भव		क्रियावदास
वात्सल्य रस		वत्सल (स्थाई भाव)
खोज :- सूरदास		
	परिभाषा :- विश्वनाथ	
भक्ति रस		अनुराग (स्थाई भाव)
परिभाषा :- ऋग्वेद स्वामी		

\* विभाव :- ये सोए हुए भाव रहते हैं, जो सहारा पाकर जाग्रत हो जाते हैं।

\* विभाव 02 प्रकार का होता है-

(1) आलंबन विभाव → आन्तरिक आलंबन : जिसके मन में उत्पन्न हो :- नायक/नायिक

→ विद्युत आलंबन : जिसे देखकर उत्पन्न हो :- नायक/नायिक

(2) उद्धीपन विभाव

भावों को तीव्र करने वाले साधन

आन्तरिक (1) सुनील, शिल्पा को देखकर मोहित हो जाया।

(2) प्रियंका, निक को देखकर मोहित हो जाये।

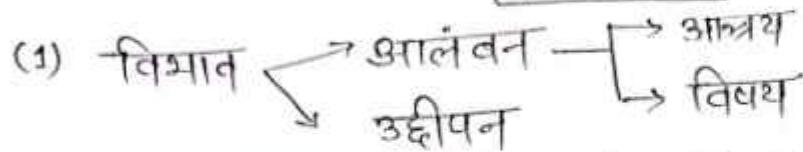
↪ सुनसान झगड़, भिंधीरी रात, चाँदनी रात,

उल्लू की आवाज, सरसराहट, रजीत, रिमझिम बाटिश, चमेली के फूल ढालो में होना

# ROJGAR WITH ANKIT

रस

PART-2



⇒ हरीश काँधेरी रात में चुईल को देखकर घबरा गया।  
(आत्मय) (उद्धीपन) (विषय)

अनुभाव—: वे भाव जो शारीरिक क्रियाओं द्वारा जान-वृद्धालूपन किये जाते हैं।

→ कुछ शारीरिक चैष्टा:

- मुँह बनाना, औंखे दिखाना
- आंख मारना, मुख करा देना
- थप्पड़ दिखाना, =हो जाना
- सीटी बजाना, चुल्फ़ी को सँवासना
- इशारे करना

→ अनुभाव के 4 श्रेद हीते हैं—

(i) सात्त्विक (स्वतः होने वाली क्रिया) इसे अवलम्बन भी कहते हैं।

- अग्नि, वैवर्ष्य
- स्तम्भ, कंपन
- तेज़, प्रलय
- स्वरभंग, जृग्मा → इसे सात्त्विक अनुभाव
- रोमांच

(ii) काथिक: जान-वृद्धालूपन काथा (शरीर) के द्वारा

- थप्पड़ दिखाना
- तेज-2 पलकें झपकना
- तात मारना, भौंहे सिनोड़ना

(iii) वाचिक—: वाणी के द्वारा, क्रियाएँ करने पर उत्पन्न भाव

- गाली देना, शायरी सुनाना
- उट्कुला सुना देना
- सीटी मारना

# ROJGAR WITH ANKIT

(iv) आहर्य: वेश-भूषा के हारा  
→ छोटे कपड़े पहन लेना आदि।  
→ जसखरे के कपड़े पहन लेना।

# संचारी भाव:

- जो भाव स्थाई भाव के सहायक होते हैं।  
जौर में होने वाले संचरण से ऐसा होते हैं।
- इनकी संख्या ३३ है (भरत-मुनि के अनुसार)

\* ३४वाँ संचारी भाव → ठलः महाकवि देव

\* संचारी भाव कुछ समय के लिए ही ऐसा होते हैं, इसलिए भरतमुनि ने इन्हें पत्नी के बुलबुले की ओरति माना है।

आवेग, आलस्य

रूपज्ञ, स्मृति

शंका, ऋग

पित्रा, निर्विदि

चपल, चिंता

असुकता, फून्माद, उत्तुता

त्रिडि, विषोद्ध, वितकि

त्यादि, विषाद

असूथा, अपस्माद्, अमषि, अवहित्या

भति, मौह, मरण, मद्, धृति, त्रास

गवि, ग्लानि, ज़ता, हृषि, कैन्य

1. करत बतकही अनुत सन मन सियरूप लुभान।  
मुखसरोज मकरन्द छवि कर मधुप, इव पान॥
2. देखन मिस मृगा विहँग तरु फिरति वहोरि वहोरि ।  
निरखि- निरखि रघुबीर - छबि वाढ़ी प्रीति न थोरि ॥

3. बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय ।  
सौंह करें भौहँनि हँसै, देन कहै नटि जाय॥
4. नहि पराग नहिं मधुर मधु, नहि विकास इहि काला।  
अली कली ही सो विध्यों आगे कौन हवाला ॥
5. निसिदिन वरसत नैन हमारे।

6. फिर पीटकर सिर और छाती 'अश्रु वरसाती हुई।  
कुररी सदृश सकरूण गिरां से दैन्य दरसाती हुई ॥  
वहुवधि लिपि- प्रताप वह करने लगी उस शोक में ॥॥  
निय प्रिय-वियोग सभाव दुखः होता ना कोई लोक ये
7. जय के दृढ़ विश्वास-युक्त थे दीमिमान जिनके मुखमण्डल ।  
पर्वत को भी खण्ड-खण्ड कर रजकण कर देने को चंचल ॥  
फड़क रहे ये अतिप्रचण्ड भुजदण्ड शत्रुमर्दन को विहल ॥॥  
ग्राम-ग्राम से निकल-निकलकर ऐसे युवक चले दल को चंचल

8. उस काल मारे क्रोध के तनु कॉपने उनका लगा ।

माना हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

मुख वाल रवि सय लाल होकर ज्वाल सा बोधित हुआ

प्रलयार्थ उनके मिस वहाँ क्या काल ही क्रोधित हुआ ॥

9. समस्त सर्पों संग श्याम ज्यों कढ़े

कलिन्द को नन्दिनी को सुअंक से।

खड़े किनोर जितने मनुष्य थे सभी महाशक्ति भीत हो उठे॥

10. ही पूर्ण जब तक पार्थ प्रति प्रभु का कथन ऊपर कहा तब  
तक महा अद्भुत हुआ यह एक कौतुक सा अहा ।  
मार्तण्ड अस्ताचल निकट धनमुक्त सा देखा गया है  
जान सकता कौन हरि का वृत्य नित्य नया-नया ॥

11. मैया ! कवहि बढ़ेगी छोटी  
वहुत बार मोहि इच पियत भई यह अज हूँ है छोटी।  
काचो दूध पियावत पचि-पचि देत न माखन रोटी  
सूर श्याम चिर जिगे दोऊ भैया हरि-हलधर की जोटी ॥

12. जनक सुता जग जननि जानकी अतिसम प्रिय  
करूणनिधान की ताके युगपद मनाऊँ नासू कृपा निर्मल मति पाँऊ
13. हाय ! राम कैसे झेले हम अपनी लज्जा अपना शोक।  
गया हमारे ही हाथों से अपना राष्ट्र पिता परलोक ॥
14. धोखा न दो भैया मुझे इस भाँति आकर के यहाँ।  
मझधार में मुझको वहाकर तात जाते हो कहाँ॥

15. देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया  
क्षणभर को वह वनी अचेतन हिल न सकी कोमल काया ॥
16. एक और अजगर किंलखि एक ओर मृगसराय  
विकल वटोही बीच ही पर्यो मूर्छा खाय ॥
17. आँखे निकाल उड़ जाते क्षण भर उड़ कर आ जाते  
शब जीभ खींचकर कौवें चुभला-चभला का खाते ॥

**18. देखी मैने आज जरा!**

जो जावेगी क्या ऐसी मेरी ही यशोधरा?  
हाय मिलेगा मिट्ठी में वह वर्ण-सुवर्ण खरा?  
सूख जायेगा मेरा उपक्न जो है आज हरा?

**19. मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गई दासी रे।**

लोग कहै मीरा भई बावरी न्यात कहै कुलनासी रे॥

**20. व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी।  
सत चेतन घन आनंद रासी ॥**

ROJGAR WITH ANKIT

21. "प्रिय व मेरा प्राण प्यारा कहाँ है,  
दुःख जल निधि में डूबी का सहारा कहाँ है ॥ "
22. "हिमाद्रि तुंग शृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती ।  
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती ॥

23. यह देख, गगन मुझमें लय है,  
यह देख पवन मुझमें लय है,  
मुझमें विलीन झंकार सकल,  
मुझमें लय है संसार सकल ।  
अमरत्व फूलता है मुझमें,  
संसार झूलता है मुझमें ॥

POJGAR WITH ANKIT

24. 'रिपु- आंतन की कुँडली करि जोगिनी चबात।  
पीबहि में पागी मनो, जुबति जलेबी खाता।'

25. " एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय ।  
विकल बटोही बीच ही, पर्यो मूर्छा खाय ॥'

26. अखिल भुवन चर-अचर सब, हरि मुख में लखि मातु ।  
चकित भई गद्द वचन, विकसित दृग पुलकातु ॥

27. हे दयालू, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।

हे प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी ।

रथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसों।

हे समान आरत नहिं, आरतिहर तोसों।

28. 'मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोई ।

जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होई ।

29. मन की उत्तम वेदना, मन ही मन में बहती थी ।

चुप रहकर अन्तर्मन में, कुछ मौन व्यथा कहती थी ।

दुर्गम पथ पर चलने का, वो सम्बल छूट गया था।

अविचल, अविकल वह प्राणी, भीतर से टूट गया था ॥

# ROJGAR WITH ANKIT

आध्यातः द्वंद

परिशासा :- गहरी पाणिनी के अनुसार जो आहादित करे, प्रमाण करे, तभी द्वंद है।

→ द्वंद का अर्थ : द्वंद्वन्

→ द्वंद का सर्वप्रथम श्लेष्मः त्तट्वेद्

→ द्वंद का दूसरा नाम : पिंगल

→ द्वंद के अत्यव (अंग) : 07

(1) संख्या (मात्रा)

(2) वर्ण

(3) गति (लय)

(4) थति (विश्वाम)

(5) तुक

(6) गण

(7) चरण / पाद

\* मात्रा (संख्या) - वर्णों और मात्राओं की गिनती की संख्या कहते हैं।

अर्थात्

वर्णों के उच्चारण में लगा स्वयं  
मात्राएँ का प्रकार की होती है -

(क) एकमात्रिक → अ, इ, उ, ऋ → क, कि, कु, कृ

(ख) द्विमात्रिक → आ, ई, ऊ, ए, ओ, ओ → का, की, कु, कू  
कौ, को, ऊ

राम ⇒ र + आ + म + अ  
↓           ↓           ↓           ↓  
2 मात्रा      1 मात्रा

लघु वर्ण :- अ, इ, उ, ऋ → 1 (खड़ी पाई)

गुरु / दीर्घी वर्ण :- आ, ई, ऊ, ए, ओ, ओ → 5 (वर्तुल रेखा)

रीकेश

स्त्र॑+आ+कृ॒+ए+कृ॑+अ॒  
↓           ↓           |           ↓  
S           S           |           S

सरज

स॑+ऊ॒+र॒+आ॑+ज॒+अ॒  
↓           ↓           |           ↓  
S           S           |           S

मोहिनी

म॑+ओ॒+ह॑+ई॑+न॑+म॑

# ROJGAR WITH ANKIT

- \* गति (लय) :- छंद की पढ़ने में जो लश अत्पन्न हो जाती है।  
 (या)  
 जो निरंतरता अत्पन्न होती है।
- \* थति (विराम) :- छंद पाठन के द्वारा जब नियत समय पद्धति लेनी पड़ती है तो शब्दों वर्षीय में विराम खेद होता है।  
 → ऐसे रोको मत, जो नहीं हो।  
 → उसे रोको, मत जनि हो।
- \* तुक्क (ताल) :- छंद के अंतिम शब्दों में थदि तुक हो तो वे तुकांत छंद और थदि तुक न हो तो वे अतुकांत छंद कहलाता है।  
 → मुझे नहीं बात में कहाँ हूँ।  
 → प्रओ! यहाँ हूँ प्रथमा वहाँ हूँ।
- \* चरण या पाद :- चटपीठ दोनों मिलकर हैं एक → चरण 1  
 - यह रहा लकुरिया टेक ॥ → चरण 2  
 → छंद की प्रत्येक पंक्ति को चरण कहते हैं।  
 → अधिकतम चरण → ⑥  
 → न्यूनतम चरण → ②  
 → दोष और सोरठा की प्रत्येक पंक्ति में दो चरण होते हैं; जिसे द्विकहलाते हैं।
- \* गण :- शब्दों की संख्या छंद शास्त्र में ४ होती है।  
 प्रत्येक गण तीन भजन/वर्ण का होता है।  
 : गणों को याद रखने का सूत्र ।  
 “थमातराजभान सलगा”

- (1) यमाता :- थ + अ + म + आ + त + आ = 155 → यगण
- (2) मातरा :- म + आ + त + आ + र + आ = 555 → मगण  
 = 551 → तगण
- (3) ताराज :- = 515 → झगण
- (4) राजभा :- = 161 → जगण
- (5) जभान :- = 511 → भगण
- (6) भानस :- = 511 → भगण
- (7) नसल :- = 111 → नगण
- (8) सलगा :- = 115 → सगण
- भारत में कौन-सा गण :- भगण  
 (111) भरत में कौन-सा गण :- नसल

# ROJGAR WITH ANKIT

छंद

PART-:2

छंद के भेद → 03

- (1) मात्रिक छंद :- वह छंद जिसमें मात्राओं की गिनती होती है,  
 मात्रिक छंद होता है।  
 (मात्रा सिफ़ खर की)  
 भानु → भ् + आ + न् + श्
- (2) वर्णिक छंद :- वह छंद जिसमें वर्ण की गिनती होती है और  
 सभी चरणों में चर्णों की संख्या, लघु और गुरु  
 का प्रस भी समान होता है।  
 राकेश → र् + आ + क + ए + श् + श् → कुल उच्चण है।
- (3) मुक्त छंद :- जिसमें न तो कोई ताल, न नोई क्रम, न कोई अधिकार्थ हो  
 जिसमें न तो तर्ह की गिनती से और न ही मात्रा की

मात्रिक छंद

सममात्रिक छंद

- जिसमें प्रत्येक चरण में समान मात्रा ही होती है।
- प्रत्येक में चार चरण होते हैं।

(1) अहीर (11 मात्रा)

(2) तीमर (12 मात्रा)

(3) चौपाई (16 मात्रा)

(4) राधिका (22 मात्रा)

(5) रोला (24 मात्रा) - 11, 13

(6) गीतिका (26 मात्रा) - 14, 12

अड्डे सम-मात्रिक छंद

- विघ्न चरणों में मात्राओं की संख्या समान होती है।
- $\frac{1}{3}, \frac{2}{4}$

(1) खरव (विघ्न में 12, सम में 7) में 6 चरण होते हैं।

(2) दोहा (विघ्न चरण में 13, सम चरण में 11) (1) कुण्डलिया

(3) सोरठा (विघ्न चरण में 11, सम चरण में 13) (2) ठप्पथ (10 + 8 रोला)

(4) छलाला (विघ्न चरण में 15, सम चरण में 13) (3) रोला + छलाला (R + O)

ROJGAR WITH ANKIT

- (७) सरसी (२७ मात्रा)
  - (८) हरिगीतिका (२४ मात्रा) :- १६, १२
  - (९) तीटक (३० मात्रा)
  - (१०) तीर/आल्हा (३१ मात्रा)

कुहड़लिया  
जिस शब्द से शुरू उसी  
शब्द पर खत्म  
रस \_\_\_\_\_  
\_\_\_\_\_  
\_\_\_\_\_  
रस

रोला	सोरठा
11, 13	11, 13
सम मात्रिक अंत में कीर्धवर्ण (S) आता है।	अट्ट-सम-मात्रिक अंत में लघु वर्ठ (V) आता है।
4-चरण	2-चरण
सम ↓ 4-चरण	अट्ट-सम ↓ 2-चरण
	विषम ↓ 6-चरण

# वार्षिक दंड

- |                     |                         |
|---------------------|-------------------------|
| (1) इन्द्रवज्रा     | → 11 वर्षी (२तण, १जण)   |
| (2) रुप-इन्द्रवज्रा | → 11 वर्षी (1J, 1T, 1J) |
| (3) वंशस्थ          | → 12 वर्षी (J, T, J, R) |
| (4) द्रुत क्षमित    | → 12 वर्षी (N, 2B, 1R)  |
| (5) वस्त तिलका      | → 14 वर्षी (1T, 2B, 2J) |
| (6) मालि नी         | → 15 वर्षी (2N, 1M, 2Y) |
| (7) शिखवरिणी        | → 17 वर्षी              |
| (8) सैवेया          | → 22-26 वर्षी           |
| (9) मालिनी सैवेया   | → 22 "                  |
| (10) मालती सैवेया   | → 23 "                  |
| (11) मालिका सैवेया  | → 24 "                  |
| (12) धनाक्षरी       | → 31 "                  |
| (13) रूप धनाक्षरी   | → 32 "                  |
| (14) देव धनाक्षरी   | → 33 "                  |
| (15) अवित्त         | → 31-33 वर्षी           |
| तोटक                | → 12 वर्षी (4S)         |

\* संसार है एक अरथ्याभारी  
 SS | S SI | SI SS  
 T T J

# ROJGAR WITH ANKIT

**दुर्दृढ़**

**PART-2**

\* दुर्दृढ़ में मात्राओं की गिनती करना—  
लघु मात्रा: एक मात्रा

क → क् + अ

कि → क् + इ

कु → क् + उ

कृ → क् + औ

दीर्घ मात्रा: द्विमात्रिक

का → क् + आ

की → क् + ई

कू → क् + ऊ

कृ → क् + औ

कौ → क् + ऑ

के → क् + ए

कै → क् + ऐ

कं → क् + अं

कः → क् + अः

\* चन्द्र द्विंदु (८) की अपनी कोई मात्रा  
की गिनती नहीं होती।

\* लघु मात्रा- 1

\* दीर्घ मात्रा- 2 (S)

(1) काकू → क् + आ + क् + ऊ  
                  S                  S

(2). जानकारी → झ् + आ + त् + अ + क् + आ + र् + ई  
                  S                  1                  S                  S

(3). वस्तन → 1111

(4) कीपक → SII

(5) अनुयाई → भ्र + न + उ + य + आ + ई

(6) शीशपाल → 1 1 2 1 2 2

(7) अहमदनगर → 1111111

(8) जिजीविषा → 1212

(9) लीहपथगमिनी → SIII SIS

(10) न्याय → न् + य + आ + य + अ  
                  S                  1

नोट: शब्द के शुरूआत में यदि आधा व्यंजन हो तो उसकी गिनती  
वही होती है।

(11) न्यून → SI → न् + य + क + न् + अ

(12) श्लोक → SI

(13) स्वागत → SII → स् + व् + आ + ग् + अ + त + अ

# ROJGAR WITH ANKIT

- (44). भ्रोता → SS → शू + रू + भ्रो + तू + आ
- (45). शानी → SS → जू + श + शा + नू + ई
- (46) व्योद्याकर् → SSII
- (47) अन्नावत → SII
- (48) प्यापार् →SSI
- (49) क्षेत्र → SI → कू + षू + ई + तू + रू + अ
- (50) अमिक → III → शू + रू + अ + मू + ई + कू + अ
- (51) सम्मथ → सू + अ + तू + थू + अ  

$$\frac{2}{2}$$
- (52) वास्तव → 2II
- (53) कर्म → कू + अ + रू + मू + अ → SI
- (54) पत्र → पू + अ + तू + रू + अ → SI
- (55) शौत → SI
- (56) शुद्ध → शू + उ + दू + थू + अ → SI
- (57) कुद्ध → कू + रू + उ + दू + थू + अ → SI
- (58) प्रजा → पू + रू + अ + जू + आ → IS
- (59) क्रिया → कू + रू + दू + थू + शा → IS
- (60) भ्राता → भू + रू + भा + तू + आ → SS
- (61) प्रजा → पू + रू + अ + जू + अ + आ → SS
- (62) समस्या → ISS → सू + अ + मू + अ + सू + थू + अ
- (63) हिमत → SII
- (64) अनुचित →

Home work

# ROJGAR WITH ANKIT

दृढ़

PART- 4

- ⇒ अनुचित्थ → ॥ SI
- ⇒ दूळहा → SS
- ⇒ जम्हाई → SSS
- ⇒ कुम्हार → ISI
- ⇒ तुम्हारा → ISS
- ⇒ मल्हार → ISI
- ⇒ अंग → SI
- ⇒ अतः → IS
- ⇒ कंचन → SII
- ⇒ मंथरा → SIS
- ⇒ अंगूर → SSI
- ⇒ अंथाक्षरी → SSIS
- ⇒ पंचायत → SSII
- ⇒ त्रैषि → ॥
- ⇒ अंगना → ॥ S
- ⇒ आँगन → SII
- ⇒ चाँद → SI
- ⇒ संस्कृत → SII
- ⇒ विश्व → SI
- ⇒ विद्यालय → SSII

{ थोड़े 'ह' से पहले कोई शब्द व्यंजन नहीं तो आधे वर्ण का भार शामिल नहीं होगा प्रार्थीत् लघु वर्ण, लघु वर्ण ही रहेगा।

भुनासिक (८) की  
 गिनती नहीं होती है।  
 वि + द् → थ + आ + लय  
 S            S      ॥



# UPSI 2023

विनायक शैक्षण्य

## ठिक्की

छंद

Part-05

LIVE 03-01-2024 08:00 AM



यमाताराजभानस्तलगा

ताराज=551

तगण

जात्रा की गिनती X

आधारण की गिनती X

त्र॑-त॒+१०

(S S)

म

॥ वर्ण

इन्द्रवज्ञा

३०,१५

उपेन्द्रवज्ञा

३४,१५

10. मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ,  
ज ज न य र थ व ल क त हु  
भाता मुझे सो न ब मित्र सा है।

देखूँ उसे मैं नित नेम से ही,

मानो मिला मित्र मुझे पुराना।

\* निम्नलिखित पंक्तियों में कौन सा वार्षिक दृढ़ होगा ?

इन्द्रवज्ञा

जमन जगण  
१५

11. बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै।

परन्तु पूर्वापर सोच लीजै॥

बिना विचारे यदि काम होगा।

अज्ञान-~~T~~ कभी न अच्छा परिणाम होगा॥

उपर्युक्त अवधारणा

12. जो राजपंथ बन-भूतल में बना था,  
धीरे उसी पर सधा रथ जा रहा था।  
हो हो विमुग्ध रुचि से अवलोकते थे,  
ऊधा छटा विपिन की अति ही अनूठी।

14 - वसंतीलाल

13. प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?  
र्य पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है  
दुःख जलधि में डूबी, का सहारा कहा है?  
अब तक जिसको मैं, देख के जी सकी हूँ,  
वह हृदय हमारा, नेत्र-तारा कहाँ है?

15 (सालिनी)

14. सेस महेश गनेस सुरेश, दिनेसहु जाहि निरन्तर गावैं।  
स सूर्यहरु गनेस सूर्यहरु जहु न रत्रगव  
नारद से सुक व्यास स्टे, पचि हार तजु पुनि पार न पावै॥

हम जिधर कान देते उधर, सुन पड़ता हमको यही।  
जय जय भारतवासी कृति, जय जय भारत मही॥

: २३-: मालती स्त्रेया  
(मलतान् भी कहते हैं)

15. बसन्त ने, सौरभ ने, पराग ने प्रदान की भी अति कान्त भाव से।  
बसन्त ने सौरभ ने परग ने दन के अति कान्त भव से  
वसुन्धरा को, पिक को, मिलिन्द को, मनाज्ञता, मादकता, मदान्दता॥  
(: २५( मलिल का स्वेच्छा))
16. रस के प्रयोगिन के सुखद सजोगिन के,  
रस कर्यजन के सखद सज्जन के - १६  
जत उपचार चारु मंजु सुखदाइ है।

17. चारों चरणों में समान मात्राओं वाले छन्द को क्या कहते हैं?

- (A) मात्रिक सम छन्द
- (B) मात्रिक विषम छन्द
- (C) मात्रिक अर्द्धसम छन्द
- (D) उपर्युक्त सभी

॥१३

18. जो सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिवर बदन।  
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

- (A) दोहा
- (B) चौपाई
- (C) बरवै
- (D) सोरठा

अंत मे लधु वर्ण

19. जो जग हित पर प्राण निछावर है कर पाता।

जिसका तन है किसी लोकहित में लग जाता॥

(A) दोहा

२५→॥, १३

(B) रोला

(C) बरवै

(D) हरिगीतिका

20. मुनि पद कमल बदि दोउ भ्राता। चले लोक लोचन मुख दाता॥

बालक वन्द देखि अति सोभा। चले संग लोचन मनु लोभा ॥

(A) दोहा

(B) सोरठा

(C) चौपाई

(D) बरवै

21. वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार ।  
          ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥

सरद सुवारिद में जनु, तड़ित बिहार ॥

- { (A) सबैया X
- { (B) घनाक्षरी X
- { (C) रोला
- { (D) बरवै

एल पल जि सक से पथ कुदखत थ  
22. पल-पल जिसके मैं पथ को देखती थी,  
निशिदिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती ।

(A) मालिनी

(B) सोरठा

(C) चौपाई

(D) हरिगीतिका

23. मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सु दशरथ अजिर बिहारी॥

(A) सोरठा

(B) सवैया

(C) चौपाई

(D) दोहा

24. कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।

हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए॥

- (A) कवित
- (B) बरबै
- (C) हस्तिका
- (D) घनाक्षरी

25. जिस छन्द के पहले तथा तीसरे चरणों में 13-13 और दूसरे तथा चौथे चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं, वह छन्द कहलाता है-

- (A) रोला → ॥, ॥ → अंतमें शीर्षवर्ण  
(B) चौपाई → ॥, ॥  
(C) कुण्डलिया → ॥, ॥  
**(D) दोहा**



## अलंकार



अलम् + कार्



आभाषण करने वाला

(या)

परिभाषा—“अलंकार किसी काव्य की गोभा बढ़ाते हैं।”

“अलंकार काव्य का अनिवार्य गुण है” केशव दास

अलंकार के भेद → 02 (क) शब्दालंकार (ख) अर्थालंकार

अलंकार के कुल भेद → 03 (क) शब्दालंकार (ख) अर्थालंकार (ग) अनुप्रासालंकार

शब्दालंकार: वाक्य में शब्दों के कारण जो चमत्कार (आभूषित) पैदा होता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

→ शब्दालंकार के 05 भेद होते हैं—

- (1) अनुप्रास अलंकार
- (2) थमक अलंकार
- (3) छेलघ अलंकार
- (4) वक्तीकिंति अलंकार
- (5) वीर्या अलंकार

## अनुप्रास अलंकार

→ जब एक ही वर्ण की आवृत्ति बार-बार हो

उदाहरण—: तरनि तनुजा तट तमाल तरखर बुदु छाए।  
मुदित महीपति मंदिर आए।

सैवक सचिव सुमंत बुलाए।

चारू चंद्र की चंचल किरणि, खेल रही जल धलमे  
रघुपति राघव राजा राम।

चरर मरर खुल गए अरर अरर।

अनुप्रास अलंकार के भेद



# ROJGAR WITH ANKIT

तर्जनुप्रास

- (क) देंगानुप्रास
- (ख) बृत्यानुप्रास
- (ग) वृत्यानुप्रास
- (घ) अन्त्यानुप्रास

शब्दानुसार

- लाटानुप्रास

(क) छोनुप्रास अलंकार :- एक वर्ण की बार आए चोहे लगातार आए या-  
छोकमर आए।

- (१) चोदहवीं का चाँद हो या आफताव हो।
- (२) रीझि-रीझि रहसि रहसि हँसी हँसी उठे।
- (३) वचन विनीत मधुर रधुवर के।
- (४) आनन लिलि भर्यकर भारी।
- (५) चोरी चोरी दिल तरा चुराएँगे।

(ख) बृत्यानुप्रास अलंकार :- ऐसे शब्द जिनका उच्चारण स्थान एक

द्वंत्य { (१) दिनान्त था, ये दिनान्त इबते। .  
स्थल { (२) ता दिन दान दीन्ह, धन धानी।

(ग) वृत्यानुप्रास अलंकार :- अनुप्रास अलंकार के सभी उदाहरण, वृत्यानुप्रास  
के उदाहरण होते हैं।

→ धीरे-धीरे से मेरी जिंदगी में आना

(घ) अन्त्यानुप्रास अलंकार :- अंत में तुकु बनती है-

- (१) लगा की किसने आकर आग।  
कही था तू संशय के नाग ?

(२) पवन तनथ संकट हरण, मंगल मूरति रूप।

राम-लखन सीता सहित, हृदय वसौं सुर शूप।

(ङ) लाटानुप्रास अलंकार :- पूरी पंक्ति पुनरावृत्त होती है।

- (१) उसे रोको, जोने मत दो।  
उसे रोको मत, जोने दो ॥

- (२) माँगी नाव, न केवट आना।  
माँगी नाव न, केवट आना ॥

# ROJGAR WITH ANKIT

## थमक अलंकार

→ थम्हाँ पर् के समान शब्द आएँगे लेकिन उनके अर्थ अलग-2 होंगे—

- (1) फाली धाया का धर्मड धाटा।  
 ↓   ↓  
 वाढ़ल   कम होना
- (2) कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।  
 सौना   बैतूरा
- (3) जे तीन बेर खाती थी, ते तीन बेर खाती थी।  
 ↓   ↓  
 -फल   बार
- (4) सारंग ले, सारंग चली।  
 धड़ा   +सुंदरी
- (5) सजना है, मुझे सजना के लिए।  
 ↓   ↓  
 सजावट   प्रियतम
- (6) जेते पुपा तारे, तेते न नभ में तारे हैं।  
 ↓   ↓  
 पार छारना                                   नक्षत्र

# ROJGAR WITH ANKIT

## अलंकार

PART-: 2

### श्लोष अलंकार

जैसे:-

- (1). मंगन को देख पटकी बार-बार है।  
(मँगने वाली) (वस्त्र धरवाजा)
- (2). जो रहीम गति दीप की  
कुल कपूत गति सोय  
बारे उजियरों कर, बढ़े अद्यरो होय  
(वधन, जलना) (बुझना, बढ़ाना)
- (3). प्रिथतम बतला दो, मेरा लाल कहाँ है।
- (4). सुवरन को दूंदत फिरत काव, ह्यभिचारी चोर।  
(सुवन, बुद्धि करत)

रूपरंग

### वीप्सा अलंकार

जैसे:-

हे- हे

राम- राम

शिव- शिव कहते हो क्या ?

मधुर- मधुर मेरे दीपक जल

राधे- राधे

हर- हर महादेव

### वक्रीकित अलंकार

- जब वक्ता की वात को श्रोता (सुनने वाला)  
उल्टा समझ ले अर्थात् कोई अन्य अर्थ  
निकाल ले-

# ROJGAR WITH ANKIT

जैसे-:

(1) कौन तुम? मैं घनश्याम (कृष्ण)  
तो बरसी कित जाथ। → काले बादल

(2) कौन द्वार पर? राधे मैं हरि → (कृष्ण)  
कथा बानर का थहाँ काम? → बन्दर

(3) जानु जाऊ मत बेंढो।

(4) आप जाइये तो।

## अर्थालंकार

→ शब्द के अर्थ के आधार पर चमत्कार उत्पन्न -

→ वह अलंकार जिसमें उपमेय की तुलना उपमान से की जाए। ↗ उपमा का अर्थ-: तुलना  
↖ उपमा के 4 भंग होते हैं -

(क) उपमेय-: जिसकी तुलना हो।

जैसे- झील सी गहरी आँखें अमेय  
(खान धर्म)

(ख) उपमान-: जिससे तुलना हो-: झील

(ग) वाचक शब्द-: सा, से, सी, जैसे, सरिस, सम, समान-: सी

(घ) समान धर्म-: जो गुण उपमेय और उपमान में समान हो।

\* पीपर पात सरिस मन डैला।  
 ↓ ↓ ↓ ↓  
 (उपमान) (वाचक शब्द) (उपमेय) (समान धर्म)

\* मुख चंद्रमा के समान हैं।  
 ↓ ↓ ↓  
 (उपमेय) (उपमान) (वाचक शब्द)

\* पहाड़ सा बड़ा दुःख।  
 ↓ ↓ ↓ ↓  
 (उपमान) (वाचक शब्द) (समान धर्म) (उपमेय)

\* चाँद सा रोशन चेहरा।  
 ↓ ↓ ↓ ↓  
 (उपमान) (वाचक शब्द) (समान धर्म) (उपमेय)

# ROJGAR WITH ANKIT

जेरो :- चाँद सा सुन्दर नेहरा

- \* राम सीता से सुंदर है → पूणीपिंगा अलंकार  
(अमीर) (आमान)
- \* मुख सूर्य के समान है → लुटीओमा अलंकार
- \* मुख सूर्य के समान तेज है → पूणीपिंगा अलंकार  
(अमीर) (आमान) (वाचक शब्द) (रामान धर्म)

नोट :- जब जेरो हो, तो पूणीपिंगा अलंकार होगा—

- उपर्युक्त
- उपमान
- वाचक शब्द
- समान धर्म

\* फूल खी कोमल बच्ची | ⇒  
(आमान) (वाचक) (साधारण) (उपर्युक्त)  
शब्द धर्म

## रूपक अलंकार

- ↳ जब उपर्युक्त और उपमान को एक वीजक चिन्ह द्वारा जोड़ दिया जाता है।
- ↳ जब उपर्युक्त और उपमान को एक कर दिया जाए।
- ↳ उपर्युक्त में उपमान का थेद रहित (अभ्रेद) आरोप कर दिया जाए।

जैसे :-

नीलता है यह जीवन-पतंग  
परण-कमल लंदो हरिरदि।  
मैया मैं तो चेंद्र-खिलोना लैहो।

## अलंकार

### PART- 3

#### उत्प्रे का अलंकार

→ जहाँ उपमेय और उपमान में समानता के कारण एक ही नीति की सम्भावना की जाए (अर्थात् उपमान की कल्पना की जाए)

पहचान-: (गानो, मनु, मनहु, जानो, जनु, जानहु, जनहु)

- जैसे-:
- कहती हुई थू उतरा के नेत्र जल से भर गये हिमी के कणों से पूर्ण मनो हो गये धंकज नहे
  - मानो कलानिशि इलगले कालिंदी के नीर
  - छढ़त ताइ की पैड़ थट चूमन की आकाश
  - सिर पाट गया उसका वही मनो अरुण रंग का द्वाज हो।
  - ले चला तुझे मैं खाथ बनल ज्यो ग्रिसुक लेकर रखो
  - पाहुन ज्यो शार हो गाँव में शहर के।

#### संदेह अलंकार

→ सादृश्यता की वजह से, जिन चीजों में किं करना गुणिकाल हो जाए-

पहचान-: था, प्राथता, कैद्यो, किंता

- जैसे-:
- यह काया है, था शेष उसी की छाया
  - विरह है आथता वरदान
  - ये ओस की बूढ़े था मंजुल गोती
  - सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।

#### प्रांतिमान अलंकार

→ उपमान में उपमेय की निश्चयथात्मक हिति

- जैसे-:
- चन्द्र सगाशकर चालोर लुम्हरेन्पीछे ढौँड़ता है।
  - पथ मतवर दैन को, नाळ बैठी आय,
  - फिर-फिर बैठी महावरी, एड़ी मीड़ती जाए।

# ROJGAR WITH ANKIT

## विज्ञातना अलंकार

- जैसे-:
- नारण के शगात में कार्यत्पति का अलंकार
  - बिंदु पद चले सुने बिनु काना
  - दिन धनश्याम धाम-धाम छंगमाण्डल में
  - बिन पानी रातुन विर्मल करे सुभाष
- ## विशेषाभास अलंकार

→ जहाँ वारतविक विरोध न हेकर विरोध का आभास मात्र हो।

- जैसे-:
- मोहब्बत एक धीमा जहर है।
  - या अनुरागी चित्त की गति समझे न कोय,
  - ज्यों-ज्यों रुथाम रंग, ज्यों-ज्यों उज्ज्वल होय।

## मानविकरण अलंकार

- जैसे-:
- निर्जिवि को सजीव की तरह पेश किया जाए-
  - हँसती हुई हवा
  - संद्या धनामाला सी सुंदर
  - थमुना जी शुनगुना रही है।
  - रोता हुआ आसपान
  - दुःखी ताजमहल
  - भुस्कुरोते हुए बाढ़ल
- ## अतिश्योक्ति अलंकार

→ जहाँ बात को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाए-

- जैसे-:
- लहरे ल्योम धूमने को उठती
  - देख लो सकेत नगरी यही, र्खर्ग में मिलने गगन में जा रही,
  - बाँधा था बिनु क्लू किसी काली ज़ीरो से
  - मणिवाले काणिया का मुख क्यों भरा हुआ है ईरि सा
  - हनुमान जी की पूँछ में लगन न पर्हि आग
  - लँका सारी जल गई, गये निवान्चर भाग
  - आगे नाला पड़ा अपार, घोड़ा कैसे उतेर पार
  - राणा ने सोचा इस पार, चीतक था उस वार।

# ROJGAR WITH ANKIT

## त्यतिरेक अलंकार

जैसे-: अमान की अपेक्षा उपमेय की छेष्टा होती है।  
→ यहाँ चेहरे सा है।

→ शूर्य उसके मुख जैसा है।

→ राधा मुख को चन्द्र कहते हैं।

## विशेषोक्ति अलंकार

जैसे-: कारण होते हुए भी कार्य का न होना।

देखो. दो-दो मेघ वरस्ते मैं प्यासी भी यादि  
→ नीर भरे निसदिन रहे, तक न प्यास बुझाय।

## प्रतीप अलंकार

जैसे-: यह अपमा अलंकार का उल्टा होता है।

यन्हमा मुख के समान सुंदर हैं।

→ नेत्र के समान सुंदर कमल हैं।

## अपहुति अलंकार

जैसे-: उपमेय का निषेध करके अमान का आरोप  
किया जाता है।

→ यह मुख नहीं, चन्द्रमा है।

→ हूँ गरजते मेघ नहीं, बजते नगड़।

## दृष्टांत अलंकार

जैसे-: उपमेय और उपमान के साधारण धर्म में विच्छ  
प्रतिविम्ब होता है।

→ एक ही म्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती,  
किसी और पर प्रेम नहीं, पति का क्या सह सकती

ROJGAR WITH ANKIT

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

1.	जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
2.	‘जो उचित समय पर न हो’	असामयिक
3.	जिस पेड़ पर पत्ते झड़ गए हो	अपर्ण
4.	जिसका दूसरा उपाय न हो	अनन्योपाय
5.	जिस घटना को वचन से वयत्त न किया जा सके	अनिर्वचनीय
6.	जिसके पास न पहुँचा जा सके	अगम्य
7.	जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
8.	जिसकी गहराई का पता न लग सके	अगाध
9.	सामान्य या व्यापक नियम के विरुद्ध बात	अपवाद
10.	किसी के पीछे—पीछे चलने वाला	अनुगामी
11.	उच्चवर्ण के पुरुष का निम्न वर्ण की स्त्री का विवाह	अनुलोम विवाह

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

12.	अतिथि की सेवा करने वाला	आतिथेय
13.	धरती और आकाश के बीच का स्थान	अंतरिक्ष
14.	दोपहर के बाद का समय	अपराह्ण
15.	जिसकी सीमा न हो	असीम
16.	आवश्यकता या उचित मात्रा से अधिक खर्च करने वाला	अपव्ययी
17.	जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो	अजातशत्रु
18.	गिने न जा सके	अनगिनत
19.	बिना विचारे किया गया विश्वास	अन्धविश्वास
20.	कर या शुल्क का वह अंश जो किसी कारण वश अधिक से अधिक लिया जाता है	अधिभार
21.	सर्वाधिकार सम्पन्न शासक या अधिकारी	अधिनायक

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

22.	धन से संबंध रखने वाला	आर्थिक
23.	शरीर का कोई भाग	अवयव
24.	अत्यधिक बढ़ा—चढ़ा कर कही गई बात	अतिशयोक्ति
25.	सीमा का अनुचित उल्लंघन	अतिक्रमण
26.	जो प्रमाण द्वारा सिद्ध न हो सके	अप्रमेय
27.	जो अपनी जगह से न डिगे	अड़िग
28.	जो खाने योग्य न हो	अखाद्य
29.	कुबेर की नगरी	अलकापुरी
30.	जो गाये जाने योग्य न हो	अगेय
31.	जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा न हो	अगोचर
32.	विधायिका द्वारा स्वीकृत नियम	अधिनियम

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

33.	जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके	अगोचर, अतीन्द्रीय
34.	जिसकी माँग न की गई हो	अयाचित
35.	जिसका आदर न किया गया हो	अनादृत
36.	जो सबके आगे रहता हो	अग्रणी
37.	जिसका जन्म बाद में हुआ हो	अनुज
38.	दर्पण जड़ी अँगूठी, जिसे स्त्रियाँ अँगूठे में पहनती है।	आरसी
39.	जो सदा से चला आ रहा है।	अनवरत
40.	दो दिशाओं के बीच की दिशा	उपदिशा
41.	मन मे होने वाला स्वाभाविक ज्ञान	अंतर्ज्ञान
42.	दक्षिण दिशा	अवाची
43.	जिस पुस्तक में 8 अध्याय हो	अष्टाध्यायी

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

44.	आवश्यकता से अधिक धन का संचयन करना	अपरिग्रह
45.	देह का दाहिना भाग	अपसव्य
46.	जिस पर आक्रमण न किया गया हो	अनाक्रांत
47.	न जोता गया खेत	अप्रहत
48.	बिना वेतन काम करने वाला	अवैतनिक
49.	दोपहर के बाद का समय	अपरान्ह
50.	दागकर छोड़ा गया सॉड़	अंकिल
51.	जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध हैं।	अपथ्य
52.	जो कहा ना जा सके	अकथ्य
53.	जिसमें शक्ति न हो	अशक्त
54.	जिसकी गिनती पहले हो	अग्रगण्य

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

55.	जिसका परिहार्य न हो सके / जिसको छोड़ा न जा सकें	अपरिहार्य
56.	जो व्यक्ति विदेश में रहता हो	अप्रवासी
57.	जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
58.	जिसका इलाज न हो सके	असाध्य
59.	जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो	अन्यमनस्क
60.	जो आज तक से सम्बन्ध रखता हो	अद्यतन
61.	जिसकी पहले से कोई आशा न हो	अप्रत्याशित
62.	6 महीने मे एक बार होने वाला	अर्द्धवार्षिक
63.	जिसका जन्म छोटी जाति से हुआ हो	अंत्यंज
64.	जो न जाना जा सके	अज्ञेय
65.	ऐसा स्थान का वास जहाँ कोई पता न पा सके	अज्ञातवास

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

66.	जो कुछ न जानता हो	अज्ञ, अज्ञानी
67.	वास्तविक मूल्य से अधिक लिया जाने वाला मूल्य	अधिशुल्क
68.	जिस स्त्री के पुत्र व पति न हों	अवीरा
69.	कम बोलने वाला	अल्पभाषी, मितभाषी
70.	थोड़ा जानने वाला	अल्पज्ञ
71.	अविवाहित महिला	अनूढ़ा
72.	जो बहुत गहरा हो	अगाध
73.	वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो	अन्योदर
74.	आत्मा व परमात्मा का द्वैत	अद्वैतवादी
75.	पहाड़ का ऊपरी भाग	अधित्यका
76.	जो रचना अन्य भाषा की अनुवाद हो	अनूदित

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

77.	बिना प्रयास किये	अनायास
78.	कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली	अनामिका
79.	जिसे बुलाया न गया हो	अनाहृत
80.	पलक को बिना झपकाए	अनिमेष / निर्निमेष
81.	जिसे शब्दों में न कहा जा सके	अकथनीय
82.	जिसे किसी बात का पता न हो	अनभिज्ञ
83.	पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन	अधित्यका
84.	किसी प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया	अनुमोदन
85.	राजभवन के अन्दर महिलाओं का निवास	अन्तःपुर
86.	बिना प्रयास किए	अनायास
87.	जिसका कोई घर न हो	अनिकेत

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

88.	किसी को भय से बचाने का वचन देना	अभयदान
89.	परम्परा से चली आ रही कथा	अनुश्रुति
90.	जो मापा न गया हो	अपरिमेय
91.	जो दोहराया न गया हो	अनावर्त
92.	जो ढक्कर न रखा गया हो	अनावृत
93.	वह कवि जो तत्काल कविता कर सके	आशुकवि
94.	जिसे सूँघा न जा सके	अनाघ्रेय
95.	जिसे सूँघा जा सके	आघ्रेय
96.	उत्तरती युवावस्था	अधेर
97.	जो हिसाब—किताब की जाँच करता हो	अंकेक्षक
98.	बहुत कम बरसात होना	अल्पवृष्टि

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

99.	बिल्कुल बरसात न होना	अनावृष्टि
100.	आवश्यकता से अधिक बरसात	अतिवृष्टि
101.	जो परिणय सूत्र में न बँधा हो	अपरिणीत
102.	बिना देख—रेख का जानवर	अनेर
103.	वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले	अध्यूढा
104.	नीचे की ओर लाना या खींचना	अपकर्ष
105.	आग से झुलसा हुआ	अनलदध
106.	वह पत्र जिसमें किसी को कोई काम करने का आदेश हो	अधिपत्र
107.	आदेश जो निश्चित अवधि तक लागू हो	अध्यादेश
108.	जिसकी बाँहे घुटनों या जाँघों तक हो	आजानुबाहु
109.	किसी पक्ष का समर्थन करने वाला	अधिवक्ता

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

110.	जो बहुत क्रूर व्यवहार करता हो	आततायी
111.	अपनी हत्या करने वाला	आत्मघाती
112.	आशा से बहुत अधिक	आशातीत
113.	आदि से लेकर अंत तक	आद्योपान्त
114.	दूसरों के (सुख के) के लिए अपने सुखों का त्याग	आत्मोत्सर्ग
115.	जिसकी कामनाएँ पूरी हो गई हो	आप्तकाम
116.	नवीन बनाने की क्रिया	आधुनिकीकरण
117.	आशा से अधिक, जिसकी आशा न की गई हो	आशातीत
118.	जिस पर आक्रमण हुआ हो	आक्रांत
119.	वह क्लर्क जो आशुलिपि जानता हैं।	आशुलिपिक
120.	वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो	आगतपतिका

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

121.	जो परदेश से आने वाला हो	आगमिस्यतपतिका
122.	अग्नि से सम्बन्धित या आग का	आग्नेय
123.	आत्मा और ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाला	आध्यात्मिक
124.	अपने को धोखा देने वाला	आत्मवंचक
125.	जिसकी इच्छा की गई हो	ईप्सित
126.	पूरब और उत्तर के बीच की दिशा	ईशान कोण
127.	सूर्योस्त की समय दिखने वाली लालिमा	उषा
128.	ऊपर की ओर उछाला या फेंका हुआ	उत्क्षिप्त
129.	सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है	उदयाचल
130.	जिसके ऊपर किसी का उपकार हो	उपकृत
131.	उत्तर दिशा	उदीची

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

132.	खाने से बचा हुआ झूठा भोजन	उच्छिष्ट
133.	जिसने ऋण चुका दिया हो	उऋण
134.	निरन्तर ऊँचे उठने की इच्छा	उदीपा
135.	पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि	उपत्यका
136.	जो छाती / पेट के बल चलता हों	उरग, सर्प
137.	जिस भूमि में कुछ उत्पन्न न होता हो	ऊसर, बंजर
138.	ऊपर की ओर जाने वाला	ऊर्ध्वगामी
139.	जो दिन मे एक बार भोजन करता हो	एकभुक्त
140.	जो खाने योग्य हो	ओदनीय
141.	झाड़—फूंक करने वाला	ओझा
142.	अपनी विवाहित पत्नी से उत्पन्न पुत्र	औरस

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

143.	ऊपरी दिखावे के रूप में होने वाला	औपचारिक
144.	नियमविरुद्ध या निंदनीय कार्य करने वालों की सूची	कालीसूची
145.	दुराचारिणी स्त्री	कुलटा
146.	अपने ही कुल का नाश करने वाला व्यक्ति	कुलांगार
147.	कठिनाई से होने वाला कार्य	कष्टसाध्य
148.	'राजनीतिज्ञों एवं राजदूतों की नीति संबंधी कला'	कूटनीति
149.	जिस की उत्पत्ति स्वभावगत न हो	कृत्रिम
150.	कान का नीचे लटकता हुआ कोमल भाग	कर्णपाली
151.	वह बात या कथा जो प्रचलित हो	किवदन्ती
152.	व्यक्ति, जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो	कूपमंडूक
153.	सारे शरीर की हड्डियों का ढांचा	कंकाल

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

154.	काँटो से भरा हुआ	कंटकाकीर्ण
155.	जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो	कानीन
156.	किये हुये उपकार को भूल जाने वाला	कृतघ्न
157.	बर्तन बेचने वाला	कसेरा
158.	अपने काम के बारे में कुछ भी निश्चय न करने वाला	किंकर्तव्यविमूढ़
159.	अपना उद्देश्य पूर्ण होने पर संतुष्ट	कृतार्थ
160.	जो दुःख या भय से पीड़ित हो	कातर
161.	स्त्री जो कविता रचती है।	कवयित्री
162.	जिसे खरीद लिया गया हो	क्रीत
163.	जो कम खर्च करने वाला हो	कंजूस, मितव्ययी
164.	आकाश चूमने वाला	गगनचुम्बी

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

165.	गज के समान गति से चलने वाली	गजगामिनी
166.	ग्राम का रहने वाला	ग्रामीण
167.	दिन और रात के बीच का समय	गोधूलि बेला
168.	शरीर का व्यापार करने वाली स्त्री	गणिका
169.	जो बात छिपाई जाए	गोपनीय
170.	जो पहाड़ को धारण करता हो	गिरिधारी
171.	जो आँखों से सुनता हो	चक्षुश्रवा
172.	जो सदा से चला आ रहा हो	चिरन्तन, शाश्वत
173.	जिसके सिर पर चन्द्रमा हो	चंद्रशेखर
174.	चार भुजाओं वाला	चतुर्भुज
175.	वह कृति जिसमे गद्य एवं पद्य दोनों हो	चम्पू

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

176.	चार वेदों को जानने वाला	चतुर्वेदी
177.	छोटे से छोटे दोष को खोजने वाला	छिंद्रान्वेषी
178.	जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
179.	अन्न को पचाने वाली पेट की अग्नि	जठराग्नि
180.	अधिक समय तक जीवित रहने का इच्छुक	जिगीषु
181.	जो अवैध संतान हो	जारज
182.	एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला	जंगम
183.	जो जन्म से अन्धा हो	जन्मांध
184.	किसी को जीतने की चाह	जिगीषा
185.	कुछ जानने या ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा	जिज्ञासा
186.	अपनी इज्जत बचाने के लिए किया गया अग्नि प्रवेश	जौहर

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

187.	जिसने इन्ड्रियों पर विजय पा ली हो	जितेन्द्रिय
188.	जो अवैध संतान हो	जारज
189.	ऐसी जीविका जो आकस्मिक हो	तदर्थजीविका
190.	अध्यात्म के तत्वों को जानने वाला	तत्वज्ञ
191.	तैर कर पार होने की इच्छा रखने वाली	तितीर्षु
192.	जिसमें बाण रखे जाते हैं	तरकस, तुणीर
193.	तैरने की इच्छा	तितीर्षा
194.	जो किसी का पक्ष न ले	तटस्थ
195.	तर्क के द्वारा जो माना गया हो	तर्कसम्मत
196.	बुरे उद्देश्य से की गई सन्धि	दुरभिसंधि / कुमंत्रणा
197.	कठिनाई से समझने योग्य	दुर्बोध

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

198.	जिस समय बड़ी मुश्किल से भिक्षा मिलती है	दुर्भिक्ष
199.	अपराध ओर दण्ड देने के नियम निर्धारित करने वाला ग्रन्थ	दंडसंहिता
200.	गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
201.	स्त्री एवं पुरुष का जोड़ा	दंपत्ति
202.	जो दुबारा जन्म लेता हो	द्विज, द्विजन्मा
203.	जंगल की आग	दावानल
204.	अनुचित बात के लिये आग्रह	दुराग्रह
205.	ज्ञान नेत्र से देखने वाला अंधा व्यक्ति	द्विव्यदष्टा
206.	कठिनाई से समझने योग्य	दुर्बोधागम्य
207.	दो मित्र भाषा, भाषियों के बीच मध्यस्था	द्विभाषिया

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

208.	जिसने गुरु से दीक्षा ली हो	दीक्षित
209.	जिसे किसी ने डसा हो	दंशित
210.	जिसका मुख दक्षिण की ओर हो	दक्षिणाभिमुख
211.	जिसका दमन करना कठिन हो	दुर्दम / दुर्दम्य
212.	'जिसे पार करना कठिन हो'	दुस्तर
213.	जिसे लाँघना बहुत कठिन है	दुर्लभ्य
214.	जो द्वार की रक्षा करता है	द्वारपाल
215.	मछली पकड़कर आजीविका चलाने वाला	धीवर
216.	जो गणना के अयोग्य हो	नगण्य
217.	एक देश से दूसरे देश में माल भेजना	निर्यात
218.	रंग—मंच के पर्दे के पीछे का स्थान	नेपथ्य

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

219.	माँस न खाने वाला	निरामिष
220.	जिसके हृदय में ममता न हो	निर्मम
221.	जिसमें दया की भावना न हो	निर्दय
222.	बिना स्वार्थ के कार्य करने वाला	निःस्वार्थी
223.	जिसको किसी प्रकार का लोभ न हो	निःस्पृह
224.	आकाश में विचरण करने वाला	नभचर, खेचर
225.	रात्रि के मध्य—भाग का समय	निशीथ
226.	जिसके विषय में मत—भेद न हो	निर्विवाद
227.	जिसमें तेज न हो	निस्तेज
228.	हाल ही की ब्याही स्त्री	नवोढ़ा
229.	जिसका कोई अर्थ न हो	निरर्थक

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

230.	नख से शिखा तक के सब अंग	नखशिख
231.	किसी के साथ सम्बन्ध न रखने वाला	निःसंग
232.	जिसकी जड़ या आधार का पता न हो	निर्मूल
233.	पृथ्वी से सम्बन्धित या मिट्टी का बना हुआ	पार्थिव
234.	जिसके सभी दाँत झड़ चुके हैं	पोपला
235.	जिसके पार देखा जा सके	पारदर्शक
236.	इतिहास के युग से पूर्व का	प्रागैतिहासिक
237.	मार्ग मे खाने के लिये भोजन	पाथेय
238.	जो पहरा देता है	प्रहरी
239.	पिता से प्राप्त हुई सम्पत्ति	पुरन्धि
240.	पत्ते की बनी हुई कुटी	पर्णकुटी

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

241.	कही बात को बार—बार दोहराना	पिष्टपेषण
242.	प्रश्न के रूप में पूछे जाने योग्य	प्रष्टव्य
243.	दिन का पहला भाग (सवेरे से दोपहर)	पूर्वाह्न
244.	आटा पीसने वाली स्त्री	पिसनहारी
245.	पुस्तक या लेखक की हस्तालिखित प्रति	पाण्डुलिपि
246.	जिसकी परीक्षा ली जा चुकी हो	परीक्षित
247.	प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियवंदा
248.	स्त्री, जिसे पति ने छोड़ दिया हो	परित्यक्ता
249.	जो निगाह (आँखो) से परे हो	परोक्ष, अप्रत्यक्ष
250.	जिस पर मुकदमा चल रहा हो	प्रतिवादी
251.	ग्रन्थ के बचे हुए अंश	परिशिष्ट

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

252.	जो दूसरों के अधीन हो	पराधीन
253.	जो पढ़ने में रोचक लगे	पठनीय
254.	स्त्री जिसने बच्चा जना हो	प्रसूता
255.	जिसका जन्म शरीर से हुआ हो	पिण्डज
256.	सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक पवित्र समय	ब्रह्ममुहूर्त
257.	जो भूमि उपजाऊ न हो	बंजर
258.	जो बहुत से विषयों का जानकर हो	बहुज्ञ
259.	खाने की इच्छा	बुभुक्षा
260.	आधे से अधिक लोगों की मिलकर एक राय	बहुमत
261.	जिस स्त्री के संतान न पैदा होती हो	बंध्या, बाँझ
262.	बहुत सी भाषाओं का जानने वाला	बहुभाषाविद्

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

263.	भक्तों पर कृपा और प्रेम रखने वाला	भक्त वत्सल
264.	भू—गर्भ विज्ञान का जानकार	भू—गर्भवेत्ता
265.	मरने की इच्छा रखने वाला	मुमूर्षु
266.	बादल की तरह गरजने वाला	मेघनाद
267.	'जो कम बोलता है'	मितभाषी
268.	मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखने वाला	मुमुक्षु
269.	कमल की दण्ड	मृणाल
270.	फूलों का मधु	मकरन्द
271.	शीत ऋतु की वर्षा	महावट
272.	जिसने मृत्यु को जीत लिया हो	मृत्युंजय
273.	किसी बात के मर्म को जानने वाला	मर्मज्ञ

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

274.	जो मृत्यु के समीप हो	मरणासन्न
275.	अपनी शक्ति पर	यथाशक्ति
276.	क्रम के अनुसार	यथाक्रम
277.	जिसमें युद्ध की इच्छा हो	युयुत्सु
278.	हमेशा घूमने वाला	यायावर
279.	जो युद्ध में स्थिर रहता हो	युधिष्ठिर
280.	वह धन को आधिकारिक रूप से राज्य को मिलता हो	राजस्व
281.	उत्तराधिकार में मिली जायदाद	रिक्थ
282.	जहाँ रानी निवास करती हो	रनिवास
283.	राधा का पुत्र	राधेय
284.	लाभ की इच्छा	लिप्सा

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

285.	जो पुरुष लोहे की तरह बलिष्ठ है	लौह पुरुष
286.	लम्बे या मोटे उदर (पेट) वाला	लंबोदर
287.	लोभ करने वाला	लोलुप
288.	वीणा है जिसके हाथ मे वह देवी	वीणापाणि
289.	जो समान न हो	विषम
290.	किसी पदार्थ या राज्य का दूसरे पदार्थ या राज्य में मिल जाना	विलय
291.	जो स्त्री विद्वान हो	विदुषी
292.	जो व्यर्थ की ओर बहुत बातें करता है	वाचाल
293.	जिस कन्या का विवाह कर देने का वचन दे दिया गया हो	वागदत्ता

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

294.	कन्या का विवाह कर देने का वचन देने की रसम	वागदान
295.	जिसे वाणी पर पूर्ण अधिकार हो	वाचस्पति
296.	जो व्याकरण को जानने वाला हो	वैयाकरण
297.	तारों भरी रात	विभावरी
298.	बिजली की तरह चमकने वाला	विद्युतप्रभ
299.	जो व्यक्ति अधिक बोलता हो।	वाचाल
300.	'वह व्यक्ति जो विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य करता है'	शिक्षक
301.	जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता	शब्दातीत
302.	समान रूप से ठंडा और गरम	शीतोष्ण
303.	एक ही समय में वर्तमान	समसामयिक
304.	वह स्थान जहाँ स्थायी महत्त्व की वस्तुओं का संग्रह हो	संग्रहालय

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

305.	जहाँ तक और जितना संभव हो	संभवतः
306.	सब कुछ कर सकने की क्षमता रखने वाला	सर्वशक्तिमान्
307.	जो सब काम अपने भरोसे करता हो	स्वावलंबी
308.	जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
309.	जो व्यक्ति अच्छे आचरण वाला हो	सदाचारी
310.	जिस स्त्री का पति जीवित हो	सधवा
311.	जहाँ खाना मुफ्त में मिलता है।	सदावृत्, लंगर
312.	जो सव्य (बांये) हाथ से कम करता हो	सव्यसाची
313.	जो एक जगह से दूसरी जगह न ले जाया सा सके	स्थावर
314.	हवन में लगने वाली लकड़ी	समिधा
315.	अच्छी आँखों वाली स्त्री	सुनयना

## वाक्यांश के लिए एक शब्द

316.	जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो	स्वयंभू
317.	हाथी की पीठ पर रखी जाने वाली चौकी	हौदा
318.	भला या हित चाहने वाला	हितैषी
319.	जिसने पुण्य कार्य हेतु प्राण दिये हो	हुतात्मा / पुण्यात्मा
320.	जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखायी पड़ें	क्षितिज
321.	क्षमा किए जाने योग्य है	क्षम्य
322.	जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो	क्षिप्रहस्त
323.	भौहों के बीच का ऊपरी भाग	त्रिकुटी
324.	भूत, वर्तमान, भविष्य को जानने वाला	त्रिकालदर्शी

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

110.	जो बहुत क्रूर व्यवहार करता हो	आततायी
111.	अपनी हत्या करने वाला	आत्मघाती
112.	आशा से बहुत अधिक	आशातीत
113.	आदि से लेकर अंत तक	आद्योपान्त
114.	दूसरों के (सुख के) के लिए अपने सुखों का त्याग	आत्मोत्सर्ग
115.	जिसकी कामनाएँ पूरी हो गई हो	आप्तकाम
116.	नवीन बनाने की क्रिया	आधुनिकीकरण
117.	आशा से अधिक, जिसकी आशा न की गई हो	आशातीत
118.	जिस पर आक्रमण हुआ हो	आक्रांत
119.	वह कलर्क जो आशुलिपि जानता हैं।	आशुलिपिक
120.	वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो	आगतपतिका

## ROJGAR WITH ANKIT

### **वाक्यांश के लिए एक शब्द**

121.	जो परदेश से आने वाला हो	आगमिस्यतपतिका
122.	अग्नि से सम्बन्धित या आग का	आग्नेय
123.	आत्मा और ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाला	आध्यात्मिक
124.	अपने को धोखा देने वाला	आत्मवंचक
125.	जिसकी इच्छा की गई हो	ईप्सित
126.	पूरब और उत्तर के बीच की दिशा	ईशान कोण
127.	सूर्योस्त की समय दिखने वाली लालिमा	उषा
128.	ऊपर की ओर उछाला या फेंका हुआ	उत्क्षिप्त
129.	सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है	उदयाचल
130.	जिसके ऊपर किसी का उपकार हो	उपकृत
131.	उत्तर दिशा	उदीची

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

132.	खाने से बचा हुआ झूठा भोजन	उच्छिष्ट
133.	जिसने ऋण चुका दिया हो	उऋण
134.	निरन्तर ऊँचे उठने की इच्छा	उदीपा
135.	पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि	उपत्यका
136.	जो छाती / पेट के बल चलता हों	उरग, सर्प
137.	जिस भूमि में कुछ उत्पन्न न होता हो	ऊसर, बंजर
138.	ऊपर की ओर जाने वाला	ऊर्ध्वगामी
139.	जो दिन मे एक बार भोजन करता हो	एकभुक्त
140.	जो खाने योग्य हो	ओदनीय
141.	झाड़—फुंक करने वाला	ओझा
142.	अपनी विवाहित पत्नी से उत्पन्न पुत्र	औरस

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

143.	ऊपरी दिखावे के रूप में होने वाला	औपचारिक
144.	नियमविरुद्ध या निंदनीय कार्य करने वालों की सूची	कालीसूची
145.	दुराचारिणी स्त्री	कुलटा
146.	अपने ही कुल का नाश करने वाला व्यक्ति	कुलांगार
147.	कठिनाई से होने वाला कार्य	कष्टसाध्य
148.	'राजनीतिज्ञों एवं राजदूतों की नीति संबंधी कला'	कूटनीति
149.	जिस की उत्पत्ति स्वभावगत न हो	कृत्रिम
150.	कान का नीचे लटकता हुआ कोमल भाग	कर्णपाली
151.	वह बात या कथा जो प्रचलित हो	किवदन्ती
152.	व्यक्ति, जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो	कूपमंडूक
153.	सारे शरीर की हड्डियों का ढांचा	कंकाल

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

154.	काँटो से भरा हुआ	कंटकाकीर्ण
155.	जिसका जन्म कन्या के गर्भ से हुआ हो	कानीन
156.	किये हुये उपकार को भूल जाने वाला	कृतघ्न
157.	बर्तन बेचने वाला	कसेरा
158.	अपने काम के बारे में कुछ भी निश्चय न करने वाला	किंकर्तव्यविमूढ़
159.	अपना उद्देश्य पूर्ण होने पर संतुष्ट	कृतार्थ
160.	जो दुःख या भय से पीड़ित हो	कातर
161.	स्त्री जो कविता रचती है।	कवयित्री
162.	जिसे खरीद लिया गया हो	क्रीत
163.	जो कम खर्च करने वाला हो	कंजूस, मितव्ययी
164.	आकाश चूमने वाला	गगनचुम्बी

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

165.	गज के समान गति से चलने वाली	गजगामिनी
166.	ग्राम का रहने वाला	ग्रामीण
167.	दिन और रात के बीच का समय	गोधूलि बेला
168.	शरीर का व्यापार करने वाली स्त्री	गणिका
169.	जो बात छिपाई जाए	गोपनीय
170.	जो पहाड़ को धारण करता हो	गिरिधारी
171.	जो आँखों से सुनता हो	चक्षुश्रवा
172.	जो सदा से चला आ रहा हो	चिरन्तन, शाश्वत
173.	जिसके सिर पर चन्द्रमा हो	चंद्रशेखर
174.	चार भुजाओं वाला	चतुर्भुज
175.	वह कृति जिसमे गद्य एवं पद्य दोनों हो	चम्पू

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

176.	चार वेदों को जानने वाला	चतुर्वेदी
177.	छोटे से छोटे दोष को खोजने वाला	छिंद्रान्वेषी
178.	जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
179.	अन्न को पचाने वाली पेट की अग्नि	जठराग्नि
180.	अधिक समय तक जीवित रहने का इच्छुक	जिगीषु
181.	जो अवैध संतान हो	जारज
182.	एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलने वाला	जंगम
183.	जो जन्म से अन्धा हो	जन्मांध
184.	किसी को जीतने की चाह	जिगीषा
185.	कुछ जानने या ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा	जिज्ञासा
186.	अपनी इज्जत बचाने के लिए किया गया अग्नि प्रवेश	जौहर

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

187.	जिसने इन्द्रियों पर विजय पा ली हो	जितेन्द्रिय
188.	जो अवैध संतान हो	जारज
189.	ऐसी जीविका जो आकस्मिक हो	तदर्थजीविका
190.	अध्यात्म के तत्वों को जानने वाला	तत्वज्ञ
191.	तैर कर पार होने की इच्छा रखने वाली	तितीषु
192.	जिसमें बाण रखे जाते हैं	तरकस, तुणीर
193.	तैरने की इच्छा	तितीर्षा
194.	जो किसी का पक्ष न ले	तटस्थ
195.	तर्क के द्वारा जो माना गया हो	तर्कसम्मत
196.	बुरे उद्देश्य से की गई सन्धि	दुरभिसंधि / कुमंत्रणा
197.	कठिनाई से समझने योग्य	दुर्बोध

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

198.	जिस समय बड़ी मुश्किल से भिक्षा मिलती है	दुर्भिक्ष
199.	अपराध और दण्ड देने के नियम निर्धारित करने वाला ग्रन्थ	दंडसंहिता
200.	गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
201.	स्त्री एवं पुरुष का जोड़ा	दंपत्ति
202.	जो दुबारा जन्म लेता हो	द्विज, द्विजन्मा
203.	जंगल की आग	दावानल
204.	अनुचित बात के लिये आग्रह	दुराग्रह
205.	ज्ञान नेत्र से देखने वाला अंधा व्यक्ति	द्विव्यद्रष्टा
206.	कठिनाई से समझने योग्य	दुर्बोधागम्य
207.	दो मित्र भाषा, भाषियों के बीच मध्यस्था	द्विभाषिया

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

208.	जिसने गुरु से दीक्षा ली हो	दीक्षित
209.	जिसे किसी ने डसा हो	दंशित
210.	जिसका मुख दक्षिण की ओर हो	दक्षिणाभिमुख
211.	जिसका दमन करना कठिन हो	दुर्दम / दुर्दम्य
212.	‘जिसे पार करना कठिन हो’	दुस्तर
213.	जिसे लाँघना बहुत कठिन है	दुर्लंध्य
214.	जो द्वार की रक्षा करता है	द्वारपाल
215.	मछली पकड़कर आजीविका चलाने वाला	धीवर
216.	जो गणना के अयोग्य हो	नगण्य
217.	एक देश से दूसरे देश में माल भेजना	निर्यात
218.	रंग—मंच के पर्दे के पीछे का स्थान	नेपथ्य

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

219.	माँस न खाने वाला	निराभिष
220.	जिसके हृदय में ममता न हो	निर्मम
221.	जिसमें दया की भावना न हो	निर्दय
222.	बिना स्वार्थ के कार्य करने वाला	निःस्वार्थी
223.	जिसको किसी प्रकार का लोभ न हो	निःस्पृह
224.	आकाश में विचरण करने वाला	नभचर, खेचर
225.	रात्रि के मध्य—भाग का समय	निशीथ
226.	जिसके विषय में मत—भेद न हो	निर्विवाद
227.	जिसमें तेज न हो	निस्तेज
228.	हाल ही की ब्याही स्त्री	नवोढ़ा
229.	जिसका कोई अर्थ न हो	निरर्थक

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

230.	नख से शिखा तक के सब अंग	नखशिख
231.	किसी के साथ सम्बन्ध न रखने वाला	निःसंग
232.	जिसकी जड़ या आधार का पता न हो	निर्मूल
233.	पृथ्वी से सम्बन्धित या मिट्टी का बना हुआ	पार्थिव
234.	‘जिसके सभी दाँत झड़ चुके हों’	पोपला
235.	जिसके पार देखा जा सके	पारदर्शक
236.	इतिहास के युग से पूर्व का	प्रागैतिहासिक
237.	मार्ग मे खाने के लिये भोजन	पाथेय
238.	जो पहरा देता है	प्रहरी
239.	पिता से प्राप्त हुई सम्पत्ति	पुरन्धि
240.	पत्ते की बनी हुई कुटी	पर्णकुटी

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

241.	कही बात को बार-बार दोहराना	पिष्टपेषण
242.	प्रश्न के रूप में पूछे जाने योग्य	प्रष्टव्य
243.	दिन का पहला भाग (सवेरे से दोपहर)	पूर्वाह्न
244.	आटा पीसने वाली स्त्री	पिसनहारी
245.	पुस्तक या लेखक की हस्तालिखित प्रति	पाण्डुलिपि
246.	जिसकी परीक्षा ली जा चुकी हो	परीक्षित
247.	प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियवंदा
248.	स्त्री, जिसे पति ने छोड़ दिया हो	परित्यक्ता
249.	जो निगाह (आँखो) से परे हो	परोक्ष, अप्रत्यक्ष
250.	जिस पर मुकदमा चल रहा हो	प्रतिवादी
251.	ग्रन्थ के बचे हुए अंश	परिशिष्ट

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

252.	जो दूसरों के अधीन हो	पराधीन
253.	जो पढ़ने में रोचक लगे	पठनीय
254.	स्त्री जिसने बच्चा जना हो	प्रसूता
255.	जिसका जन्म शरीर से हुआ हो	पिण्डज
256.	सूर्योदय से पहले दो घण्टी तक पवित्र समय	ब्रह्ममुहूर्त
257.	जो भूमि उपजाऊ न हो	बंजर
258.	जो बहुत से विषयों का जानकर हो	बहुज्ञ
259.	खाने की इच्छा	बुभुक्षा
260.	आधे से अधिक लोगों की मिलकर एक राय	बहुमत
261.	जिस स्त्री के संतान न पैदा होती हो	बंध्या, बाँझा
262.	बहुत सी भाषाओं का जानने वाला	बहुभाषाविद्

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

263.	भक्तों पर कृपा और प्रेम रखने वाला	भक्त वत्सल
264.	भू—गर्भ विज्ञान का जानकार	भू—गर्भवेत्ता
265.	मरने की इच्छा रखने वाला	मुमूर्षु
266.	बादल की तरह गरजने वाला	मेघनाद
267.	'जो कम बोलता है'	मितभाषी
268.	मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखने वाला	मुमुक्षु
269.	कमल की दण्ड	मृणाल
270.	फूलों का मधु	मकरन्द
271.	शीत ऋतु की वर्षा	महावट
272.	जिसने मृत्यु को जीत लिया हो	मृत्युंजय
273.	किसी बात के मर्म को जानने वाला	मर्मज्ञ

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

274.	जो मृत्यु के समीप हो	मरणासन्न
275.	अपनी शक्ति पर	यथाशक्ति
276.	क्रम के अनुसार	यथाक्रम
277.	जिसमें युद्ध की इच्छा हो	युयुत्सु
278.	हमेशा धूमने वाला	यायावर
279.	जो युद्ध में स्थिर रहता हो	युधिष्ठिर
280.	वह धन को आधिकारिक रूप से राज्य को मिलता हो	राजस्व
281.	उत्तराधिकार में मिली जायदाद	रिक्थ
282.	जहाँ रानी निवास करती हो	रनिवास
283.	राधा का पुत्र	राधेय
284.	लाभ की इच्छा	लिप्सा

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

285.	जो पुरुष लोहे की तरह बलिष्ठ है	लौह पुरुष
286.	लम्बे या मोटे उदर (पेट) वाला	लंबोदर
287.	लोभ करने वाला	लोलुप
288.	वीणा है जिसके हाथ मे वह देवी	वीणापाणि
289.	जो समान न हो	विषम
290.	किसी पदार्थ या राज्य का दूसरे पदार्थ या राज्य में मिल जाना	विलय
291.	जो स्त्री विद्वान हो	विदुषी
292.	जो व्यर्थ की ओर बहुत बातें करता है	वाचाल
293.	जिस कन्या का विवाह कर देने का वचन दे दिया गया हो	वागदत्ता

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

294.	कन्या का विवाह कर देने का वचन देने की रस्म	वागदान
295.	जिसे वाणी पर पूर्ण अधिकार हो	वाचस्पति
296.	जो व्याकरण को जानने वाला हो	वैयाकरण
297.	तारों भरी रात	विभावरी
298.	बिजली की तरह चमकने वाला	विद्युत्प्रभ
299.	जो व्यक्ति अधिक बोलता हो।	वाचाल
300.	'वह व्यक्ति जो विद्यार्थियों को पढ़ाने का कार्य करता है'	शिक्षक
301.	जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता	शब्दातीत
302.	समान रूप से ठंडा और गरम	शीतोष्ण
303.	एक ही समय में वर्तमान	समसामयिक
304.	वह स्थान जहाँ स्थायी महत्त्व की वस्तुओं का संग्रह हो	संग्रहालय

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

305.	जहाँ तक और जितना संभव हो	संभवतः
306.	सब कुछ कर सकने की क्षमता रखने वाला	सर्वशक्तिमान्
307.	जो सब काम अपने भरोसे करता हो	स्वावलंबी
308.	जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ
309.	जो व्यक्ति अच्छे आचरण वाला हो	सदाचारी
310.	जिस स्त्री का पति जीवित हो	सधवा
311.	जहाँ खाना मुफ्त में मिलता है।	सदावृत्, लंगर
312.	जो सव्य (बांये) हाथ से कम करता हो	सव्यसाची
313.	जो एक जगह से दूसरी जगह न ले जाया सा सके	स्थावर
314.	हवन में लगने वाली लकड़ी	समिधा
315.	अच्छी आँखो वाली स्त्री	सुनयना

## ROJGAR WITH ANKIT

### वाक्यांश के लिए एक शब्द

316.	जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो	स्वयंभू
317.	हाथी की पीठ पर रखी जाने वाली चौकी	हौदा
318.	भला या हित चाहने वाला	हितैषी
319.	जिसने पुण्य कार्य हेतु प्राण दिये हो	हुतात्मा / पुण्यात्मा
320.	जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखायी पड़ें	क्षितिज
321.	क्षमा किए जाने योग्य है	क्षम्य
322.	जिसका हाथ बहुत तेज चलता हो	क्षिप्रहस्त
323.	भौहों के बीच का ऊपरी भाग	त्रिकुटी
324.	भूत, वर्तमान, भविष्य को जानने वाला	त्रिकालदर्शी



# UPSI 2023

विनायक बैच

## हिन्दी

विलोम शब्द



LIVE 12-01-2024 08:00 AM

क्र.सं.	शब्द	विलोम
1.	अक्षत	विक्षत
2.	अंकुश	निरकुश
3.	असफल	सफल
4.	अधिकृत	अनाधिकृत
5.	अत्यन्त	अनत्यन्त
6.	अपमान	सम्मान
7.	अटल	चंचल
8.	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
9.	अविचल	जड़
10.	अवलम्ब	निरावलम्ब
11.	अज्ञ	विज्ञ

क्र.सं.	शब्द	विलोम
12.	अनुरक्त	विरक्त
13.	अनुयायी	विरोधी
14.	अपव्यय	मितव्ययी
15.	अनुराग	विराग
16.	अनुज	अग्रज
17.	अल्पज्ञ	बहुज्ञ
18.	अल्पायु	चिरायु
19.	अवरोह	आरोह
20.	अगम	सुगम
21.	आकर्षण	विकर्षण
22.	अनभिज्ञ	भिज्ञ / अभिज्ञ

क्र.सं.	शब्द	विलोम
23.	अधम	उत्तम
24.	अर्पण	ग्रहण
25.	अर्वाचीन	प्राचीन
26.	अमर	मर्त्य
27.	अति	अल्प
28.	अमावस्या	पूर्णिमा
29.	अव्यवस्था	सुव्यवस्था
30.	अधोगामी	उधर्वगामी
31.	अनिवार्य	वैकल्पिक
32.	अपराधी	निरपराध
33.	अमित	परिमित

क्र.सं.	शब्द	विलोम
34.	अपेक्षा	उपेक्षा
35.	अवर	प्रवर
36.	अपकार	उपकार
37.	अथ	इति
38.	अंधकार	प्रकाश
39.	अवलम्ब	निरालम्ब
40.	अनुकूल	प्रतिकूल
41.	अवनि	अम्बर
42.	अवनति	उन्नति
43.	आक्रांत	अनाक्रांत
44.	आधिमूल्यन	अवमूल्यन

क्र.सं.	शब्द	विलोम
45.	आगमन	प्रस्थान
46.	आवास	प्रवास
47.	आवाहन	विसर्जन
48.	आविर्भाव	तिरोभाव
49.	आदि	अनादि
50.	आर्द्र	शुष्क
51.	आशा	निराशा
52.	आज्ञापालन	अवज्ञा
53.	आहार	निराहार
54.	आधार	निराधार
55.	आडंबर	सादगी

क्र.सं.	शब्द	विलोम
56.	आलोक	तिमिर
57.	आरुढ़	अनारुढ़
58.		
59.	आशीष	अभिशाप
60.	आकाश	पाताल
61.	आहूत	अनाहूत
62.	आख्यात	अनाख्यात
63.	आनंद	विषाद
64.	आपत्ति	संपत्ति
65.	आमिष	निरामिष
66.	आय	व्यय

क्र.सं.	शब्द	विलोम
67.	आयात	निर्यात
68.	इष्ट	अनिष्ट
69.	इति	अथः
70.	इच्छा	अनिच्छा
71.	इतिश्री	श्री गणेश
72.	इहलोक	परलोक
73.	ईप्सित	अनीप्सित
74.	ईश्वर	अनीश्वर
75.	ईशा	अनीश
76.	उत्कर्ष	अपकर्ष
77.	उपकार	अपकार

क्र.सं.	शब्द	विलोम
78.	उर्वर	ऊसर
79.	उथला	गहरा
80.	उत्कृष्ट	निकृष्ट
81.	उन्मीलन	निमीलन
82.	उत्साह	निरुत्साह
83.	उग्र	सौम्य
84.	उक्त	अनुक्त
85.	उच्छ्वास	निःश्वास
86.	उज्ज्वल	धूमिल
87.	उन्नति	अवनति
88.	उत्तम	अधम

क्र.सं.	शब्द	विलोम
89.	उपयोगी	अनुपयोगी
90.	उपसर्ग	प्रत्यय
91.	उदयाचल	अस्ताचल
92.	उत्तरायण	दक्षिणायन
93.	उन्मुख	विमुख
94.	उत्थान	पतन
95.	उन्मूलन	रोपण
96.	उदय	अस्त
97.	ऊपरलिखित	निम्नलिखित
98.	ऋजु	वक्र
99.	ऋत	अनृत

क्र.सं.	शब्द	विलोम
100.	ऋद्धि	विपन्न
101.	एकाधिकार	सर्वाधिकार
102.	एषणा	अनैषणा
103.	एकेश्वरवाद	बहुदेववाद
104.	ऐच्छिक	अनैच्छिक
105.	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
106.	ऐक्य	अनैक्य
107.	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
108.	कल्पित	यथार्थ / वास्तविक
109.	एकाग्र	चंचल
110.	एकत्र	विकीर्ण

क्र.सं.	शब्द	विलोम
111.	एकल	सामूहिक
112.	ओजस्वी	निस्तेज
113.	ओतप्रोत	विहीन
114.	औरस	दत्तक
115.	औदार्य	अनौदार्य
116.	औचित्य	अनौचित्य
117.	औपचारिक	अनौपचारिक
118.	करुण	निष्ठुर
119.	कर्कश	मधुर
120.	कर्म	अकर्म
121.	क्रोध	क्षमा

क्र.सं.	शब्द	विलोम
122.	कलंकित	निष्कंलक
123.	कनिष्ठ	ज्येष्ठ / वरिष्ठ
124.	कीर्ति	अपकीर्ति
125.	कुरुप	सुंदर
126.	कपटी	निश्छल
127.	कृष्ण	शुक्ल
128.	कोप	कृपा
129.	कृश (दुर्बल)	पुष्ट, स्थूल
130.	कोलाहल	शांति
131.	खंडन	मंडन
132.	खण्ड	अखण्ड

क्र.सं.	शब्द	विलोम
133.	ग्राम्य	नगरीय
134.	ग्रस्त	मुक्त
135.	गगन	धरा
136.	गुरु	लघु
137.	गृहस्थ	संन्यासी
138.	गणतंत्र	राजतंत्र
139.	गहरा	छिछला
140.	घृणा	प्रेम
141.	जड़	चेतन
142.	जल	थल
143.	जाग्रत	सुषुप्त

क्र.सं.	शब्द	विलोम
144.	ज्योति	तम
145.	तरुण	वृद्ध
146.	तामसिक	सात्त्विक
147.	तृष्णा	वितृष्णा
148.	तीव्र	मंद
149.	तिक्त	मधुर
150.	थोक	फुटकर
151.	दरिद्र	धनाद्य
152.	दिवस	रात्रि
153.	दंड	पुरस्कार
154.	दुराचार	सदाचार



# UPSI 2023

विनायक चैर्च

## हिन्दी

विलोम शब्द

02

LIVE 15-01-2024 08:00 AM



क्र.सं.	शब्द	विलोम
155.	दयालु	निर्दय
156.	धृष्ट	विनम्र
157.	ध्वंस ( <i>विनाश</i> )	निर्माण
158.	धीर	अधीर
159.	निरक्षर	साक्षर
160.	निर्भीक ( <i>उत्तेजित</i> )	भीरु ( <i>उत्तेजित</i> )
161.	निर्माण	ध्वंस
162.	नूतन ( <i>नया</i> )	पुरातन
163.	निरर्थक	सार्थक
164.	निराकार	साकार
165.	निरामिष	आमिष / सामिष

क्र.सं.	शब्द	विलोम
166.	निर्बल	सबल
167.	नैसर्गिक (उत्कृष्टीक)	कृत्रिम (
168.	न्यून	अधिक
169.	निषिद्ध	विहित
170.	परमार्थ	स्वार्थ
171.	पंडित	मूर्ख
172.	प्रमुख	गौण ( गायब )
173.	पक्व पकाऊआ	अपक्व
174.	पराजय	विजय
175.	पद्य ( काव्य )	गद्य
176.	पाप	पुण्य

क्र.सं.	शब्द	विलोम
177.	प्रशंसनीय ✓	निंदनीय
178.	परकीया	स्वकीया
179.	प्रसाद	विषाद ( दुःख )
180.	प्राचीन	अवाचीन
181.	प्रत्यक्ष ( पुति + अवृत्ति )	परोक्ष ( अप्रत्यक्ष )
182.	परिहार्य	अपरिहार्य
183.	पटु	अपटु
184.	प्रीति	द्वेष
185.	फूल	काँटा
186.	बहिरंग	अतरंग
187.	बंधन	मुक्ति / मोक्ष

क्र.सं.	शब्द	विलोम
188.	बर्बर	सम्भ
189.	बाढ़	सूखा
190.	बेमेल	संगत
191.	भेद	अभेद
192.	भव्य	साधारण
193.	भौतिक	आध्यात्मिक
194.	भिज्ज	अनभिज्ज
195.	भग्न (टूटा हुआ)	अभग्न
196.	मलिन (गंदा)	निर्मल (स्वच्छ)
197.	मसृण (कोमल)	रुक्ष (कठोर)
198.	मल	निर्मल

क्र.सं.	शब्द	विलोम
199.	महात्मा	दुरात्मा
200.	मुनाफा	नुकसान
201.	महान्	तुच्छ
202.	मिथ्या	सत्य
203.	मनुज	दनुज
204.	योगी ✓	भोगी ✓
205.	यथेष्ट	कम
206.	योग	वियोग / भोग
207.	यश	अपयश
208.	रद्द	बहाल
209.	रिपु	मित्र

क्र.सं.	शब्द	विलोम
210.	रिक्त	सिक्त (भरा हुआ)
211.	रुद्धिवादी	स्वद्धिवादी स्पन्दिवादी
212.	रक्षक	भक्षक
213.	लाघव	गौरव
214.	लाभ	हानि
215.	वर्ण्य	अवर्ण्य
216.	लोकतंत्र	राजतंत्र
217.	वांछित	अवांछित
218.	वादी	प्रतिवादी
219.	वाद	अपवाद / निर्विवाद
220.	विकल	अविकल

क्र.सं.	शब्द	विलोम
221.	विच्छिन्न	अविच्छिन्न
222.	विज्ञ	अविज्ञ
223.	विधवा	सधवा
224.	विनम्र	उच्छृंखल
225.	विधवा	सधवा
226.	विधि	निषेध
227.	वैमनस्य	सौमनस्य
228.	व्यष्टि	समष्टि
229.	विपन्न	अविपन्न / सम्पन्न
230.	विस्तृत	संक्षिप्त
231.	व्यग्र	अव्यग्र

क्र.सं.	शब्द	विलोम
232.	व्यष्टि	समष्टि
233.	विषाद	हर्ष
234.	विवाद	निर्विवाद
235.	विधि	निषध
236.	विरल	सुलभ
237.	वसंत	पतझड़
238.	शकुन	अपशकुन
239.	शाश्वत	क्षणिक
240.	शाप	आशीर्वाद
241.	शालीन	धृष्ट
242.	शीतल	उष्ण

क्र.सं.	शब्द	विलोम
243.	शूर	भीरु
244.	शोहरत	बदनामी
245.	शोषक	पोषक
246.	शयन	जागरण
247.	शिक्षक	शिक्षिका
248.	सत्कार	तिरस्कार
249.	संकल्प	विकल्प
250.	ससीम	असीम
251.	सदव्यवहार	दुर्व्यवहार
252.	साध्य	असाध्य
253.	सुदिन	दुर्दिन

क्र.सं.	शब्द	विलोम
254.	सदाशय	दुराशय
255.	स्मृद्धि	विनाश
256.	साधारण	विलक्षण
257.	स्थूल	सूक्ष्म
258.	सम्मुख	विमुख
259.	सरस	नीरस
260.	संपन्न	विपन्न
261.	संकोच	निः संकोच
262.	संयोग	वियोग
263.	सक्षम	अक्षम
264.	स्तुति	निंदा

क्र.सं.	शब्द	विलोम
265.	सुदूर	निकट
266.	सम्य	असम्य
267.	सुधा	गरल
268.	सुगन्ध	दुर्गंध
269.	सुबोध	दुर्बोध
270.	सम	विषम
271.	सरल	जटिल
272.	सौभाग्य	दुर्भाग्य
273.	सुमति	कुमति
274.	स्वेजाति	विजाति
275.	सम्मानित	अपमानित

क्र.सं.	शब्द	विलोम
276.	सत्कार	तिरस्कार
277.	स्पर्द्धा	सहयोग
278.	सृजन	विनाश
279.	साहचर्य	पृथक्करण
280.	संधि	विग्रह
281.	स्थावर	जंगम
282.	हस्व	दीर्घ
283.	ह्लास	वृद्धि
284.	हेय	ग्राह्य ✓
285.	हिंसा	अहिंसा
286.	हास	रुदन

क्र.सं.	शब्द	विलोम
287.	क्षुब्द	शान्त
288.	क्षोभ	प्रसन्नता
289.	श्रोता	वक्ता
290.	श्री गणेश	इति श्री
291.	श्रांत	प्रसन्न
292.	श्रव्य	दृश्य
293.	श्रवण	दर्शन

293×2

586 म। ८५

## ROJGAR WITH ANKIT

मुहूर्ते और लोकाक्षियाँ

मूलधातु + ना  
जन्त में

अन्त में मूल धातु न  
ही

- |                                |  |
|--------------------------------|--|
| १. अंगार सिर पर धना            | कठिन दुःख सहना                           |
| २. अंगारों पर मेर रखना         | खतरनाक कार्य करना                        |
| ३. अदाहि -गवल की छिपड़ी        | सबसे अलग सेव्य - विचार रखना              |
| ४. अलग पकाना                   |  |
| ५. अपना किया पाना              | कर्म का फल भोगना                         |
| ६. आकल का दुःखप होना           | मूर्ख होना                               |
| ७. अधर में लटकना या स्फलना     | दुष्प्रिय में पड़े रह जाना               |
| ८. अंगूठे पर मारना             | परवाह न करना                             |
| ९. अन्धेर खाता                 | प्रकृति और नियम के विरुद्ध<br>कार्य करना |
| १०. अन्न-भूत उठाना             | अपनी सत्यता की परीक्षा देना              |
| ११. अस्ति परीक्षा              | कठिन जौन्य                               |
| १२. ओपे की मिति थाल की<br>मिति | नीय की मिति धन बंगुर                     |
| १३. अरप्य रोपन                 | व्यष्टि प्रवास                           |

## ROJGAR WITH ANKIT

१४. उन्हें के आगे रोना। यही प्रयत्न करना

१५. अलवी - ताजी धरी रह जाना निष्प्रभावी हो जाना

१६. ओस - गों प्यास - नहीं कुमती बहुत कम से आवश्यकता की प्रति नहीं हीती है।

१७. अबल जा चुनना अधिक वृद्धिमान

१८. अन्तर के एह खोना छप्प की बात कह देना

१९. अद्यभल गगरी घलकत जाप कम जान समान बाले व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करते हैं।

२०. अजगर करे न जाकरी पछ करे न बाज इश्वर सभी आवश्यकता को प्रीकरता है।

२१. अल्लाट मेहरबान लाजदा पहलवान इश्वर की कृपा से नाकालिल भी काबिल हो जाता है।

२२. अन्धा बांटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को ही दे लाभ स्वयं उठाना (स्वार्थी)

२३. आई मौज फकीर की दिया सीपड़ा छुँक मौजी और विरक्त आदमी किसी पीज की परवाह नहीं करता

२४. आठ बार नों योहार मौज - मस्ती का जीवन

२५. आठ - आठ आंसू रोना बुरी तरट पञ्चमा (GD 2023)

२६. औच्चल पसारना दया की श्रीब माँगना

## ROJGAR WITH ANKIT

३४. आया है जो जार्जा राना रे, सक दिन सभी को मरना है।  
फकीर
३५. आदा तीतर आदा बैटर
३६. आग में छी ठालना
३७. आसमान पर प्रक्षा
३८. ओंचे छोटी करना
३९. ओंबो में घूल जीकना
४०. जास्तीन का रोप
४१. आटे-दाल की फिल हीना
४२. ओंखों में चर्वी-मादना
४३. ओंखे तरसना
४४. बति जी करना
४५. बज्जत उतारना
४६. फट की देवी, माँग का प्रसाद
४७. ईद का चोंप हीना
४८. उल्ल सीधा करना
४९. उड़ती चिह्निया पहचानना
५०. उड़ती चिह्निया के पंख गिनना
- हेमेल हीना/ सुचारू रूप से नहीं  
कोष भड़काना
- अच्छे व्यक्ति को कलंकित करना  
मियवस्तु को देखकर सुप्राप्त करना  
बीबा हीना (५० २०२३)
- विश्वासघाती मिश्र
- जीविका की चिंता करना  
अधिक घमण्ड हीना
- देखने की अच्छुक हीना  
समाप्त करना
- माटी पलीट करना (५० २०२३)
- व्यक्ति के अनुसार आवाङ्गत  
बहुत समय बाद दिखायी देना
- स्वाधि सिद्ध करना
- मन की बात भानना
- विशेष भानकारी प्राप्त कर लेना

## ROJGAR WITH ANKIT

५१. खंडा नीर कोतवाल को होने  
५२. उड़ी गंगा पहाड़ को बदाना  
५३. उड्हेड़ - बुल भें पड़ना / रहना  
५४. ऊँट की जोरी मिट्ठे - मिह्रे  
५५. अपो का लेना ना गांधो का  
५६. ऊँट के नुँद में जिरा  
५७. ऊँची दुकान फौके पकड़ना  
५८. एक तो करेला, दोसों नीम - यज  
५९. एक अनार, दो बीमार  
६०. ईन - जैन  
६१. ओस बज जोती  
६२. कलेजा दो हड़ हीना  
६३. कुर्स में शॉग पड़ना  
६४. किंकर्तव्य - विमुद हीना  
६५. कान का कच्चा हीना  
६६. कान भरना
- दोषी - व्यक्ति निर्देष पर दोष लगाए  
 असम्भव या विपरीत कार्य  
 शोभा विचार करते रहना  
 प्रकट ही जाए ताले कम की  
 घिप - घिप करना।  
 लेटपट से विल्कुल अलग रहना  
 (ब लेना, न देना)
- अपर्याप्त बरतु  
 आडम्बर ही आडम्बर  
 दुर्झणी - दुर्झणी का संलग्न  
 वह बरतु जिसकी लालसा या बद्धा  
 सभी को हो पर उपलब्धता कम हो  
 ठीक बेसा ही
- कुन्दर  
 बहुत दुःख हीना  
 सबकी बुहि श्रष्ट हीना  
 अनिश्चयात्मक रसिति  
 हर सब की बात मान लेना  
 कुराई करना (60 2023)

## ROJGAR WITH ANKIT

<u>६०.</u> कड़ी का द्वा उबाल	मानवी जीवा
<u>६१.</u> कसाई के खंडे से बोंदना	विद्यी व्यक्ति की सीधना
<u>६२.</u> कागजी छोड़ दोड़ना	केवल लिखा - पढ़ि करते रहना
<u>६३.</u> कुद उठा न रखना	जीवि कसर न दोड़ना
<u>६४.</u> कूच कर भाना	-पले आना - चढ़ आना
<u>६५.</u> कुर में बाँस डालना	बहुत तलाहा करना
<u>६६.</u> कलम का धानी	अटका लेखन
<u>६७.</u> कंगाली- मे आठा गील	विपत्ति पर विपत्ति आना (GD 2023)
<u>६८.</u> कहाँ राजा भोज कहाँ गंगा तेली दो असमान व्यक्तियों की तुलना	
<u>६९.</u> काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं पढ़ती	कपटपूर्ण व्यवहार एक बार ही चलता है।
<u>७०.</u> कोंटों में घसीटना	संकट में डालना
<u>७१.</u> करवटे लेपछामा	वैचान रहना
<u>७२.</u> कोलहु को बौल	खूब परिज्ञामी
<u>७३.</u> किस जेत की चूली	आधिकार हीन, राष्ट्रिहीन
<u>७४.</u> कोंटों में घसीटना	संकट में डालना
<u>७५.</u> क्या जाने यग की भाषा	जो जिस संगति में रहता है) उसका श्रेद जानता है।
<u>७६.</u> खुन का प्यासा	जान से मारने पर उतार
<u>७७.</u> खोदा पहाड़ निकली तुहिया	आधिक परिज्ञाम के बद साधरण लाभ
<u>७८.</u> खिलाफी छिलती खम्भा नीचे	क्रायोवेश में अटपटा कार्य करना

## ROJGAR WITH ANKIT

७१. रख्याली सुलभ से पेट नहीं होता
७२. जैत रहना।
७३. खून के घूँट पीना
७४. खाल खींचना
७५. गंगा गये गंगाद्वास अमुना गये अमुना दास
७६. गेहूँ के राश घुन भी पिसता है।
७७. गड़े मुर्दे उखाइना
७८. गले पड़ा ढोल छपना
७९. गाल्हर मूली समझना।
८०. गद्दि उठाना।
८१. गूलर का फूल हाना हो जाना
८२. गध भर की छाती दोना
८३. घोड़े के आगे जाड़ी रखना
८४. घोड़े चेनकर सौजना
८५. पर खीर तो बाटर भी बीर
८६. घोघा बसाना
८७. -होटी - स्टी का जोर लेगाना।
८८. चिकने घड़े पर पसी नहीं ठहरता
८९. चिकने मुँह को सब-ग्रंजत है।
९०. चेहरे पर हवाज़ी उड़ना।
- केवल शोषणी रहने से काम नहीं होता
- संग्रह में भरा जाना
- अपनान सतना
- बहुत पीठना
- अवसर - बादिता
- बुरे के साथ नैक भी बदनाम या बरबाद होते हैं।
- पुरानी बातों पर प्रकाश डालना
- सिर पर पड़ी जिम्मेदारी को मजबूरने पूरा करना।
- तुरंद समझना।
- प्रतिवाद करना।
- न दिखाइ पड़ना (GD 2023)
- उत्साहित देना
- उल्टा कार्य करना / विरुद्धगामी
- जहरी नींद सोना GD (2023)
- घनवान की रुचित सब करते हैं।
- मूर्छि
- भरसक प्रयत्न करना।
- निलिज त्यक्ति पर उपदेशों का प्रभाव नहीं पड़ता।
- सामर्थ्यवान के सब साधी हैं।
- घबराना (GD 2023)

# ROJGAR WITH ANKIT

११. रुटे वर जो दल ऐलो हैं।  
१०८. चेड़ाल - पोकड़ी
१०९. -प्याकनाकर घड़ना
११०. -पेटरे पर हवाझँयां उठना।
१११. -पोर की दधि में तिनका।
११२. -चोंदी का खूता सारना।
११३. -बैल्लू भर पानी में झब गरना।
११४. -यह दिन की -चोंदी। फिर औंचेरी रात
११५. एठी का इध निकालना।
११६. छक्का पंजा भूलना।
११७. दोटा मुँह बड़ी लोट
११८. छोटे मियाँ, छोड़ि भाँड़े लौड़ मियाँ  
सुभान अल्लाह
११९. आद वही थे फिर पर भढ़कर  
लोल
१२०. जी अरद्धा होना।
१२१. जहाँ न पहुँचे राष्ट्र वहाँ चुन्हे  
कोष
१२२. जितने उफली उतने राज
१२३. जिसकी लधि उसकी भैंस
१२४. भेंसे सौंपनाप वेंसे नागनाप
- बहुत गरीबी  
निकम्बे बदनाश लोग  
मरम्भत करना  
घबराना (५० २४२३)
- अपराधी सदैव सशंकित रहता है।  
रिश्वत का प्रस दैना  
अत्यन्त लजिज्जत होना।  
खुब छण - भगुर होता है।
- कठिन काम लेना
- कुछ भी याद न रहना  
सामर्थ्य से अधिक  
झोटे से बड़ा अवगुणों में भारी
- सत्यता दिवार नहीं जा सकती
- तवियत झीक होना (५० २०२३)
- कवि की कल्पना सदम और व्यापक  
हीती है।
- मिन्न - मिन्न मत होना
- शाकितशाली व्यक्ति की ही विजय  
हीती है।
- दी व्यासियों का रुक समान  
अवगुणी होना।

## ROJGAR WITH ANKIT

117. जैसी करनी बैरी भरनी
118. जो गरबते हैं वो अरबते नहीं
119. मितनी-गढ़ ही, उतना ही पैर पसारी
120. जड़ लगाने जारे पानी लेने जारे
121. जो गुड़ खाये सो काम लिपाये
122. जी का जंजाल होना
123. जहर की मुड़िया
124. जहाँ जाये शूख वहाँ पूँछ ला
125. झूठ के पौर नहीं होते
126. टके की तुर्जी जी टके मठसूत
127. टका सा भवाब देना
128. टिप्पस लगाना
129. टेढ़ी उँगली से घी निकालना
130. ठक्कर-सुटाती करना
131. ठोरे ठोरे बदलौंगत
132. ड्योडी का खुलना
133. टाक के बड़ी तीन पात
134. टोल के भीतर पील

कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति  
डिंग नारने वाले कभी काम  
नहीं करते  
सामर्थी के अनुसार काम करना  
  
भीतर से दुर्गम, ऊपर से देस्त  
लाभ पाने वाले को कष्ट सहना  
पड़ता है।  
अच्छा न लगना  
संगड़ालू ओरत  
  
भाष्यकीन की कही हुई नहीं मिलता  
जब व्याप्ति वात पर स्थिर नहीं  
रह पाता  
कम कीमती वस्तु अधिक स्वयं  
पर देना  
लाफ बन्कार करना (40 20 23)  
सिफारिश करवाना  
बलपूर्वक काम निकालना / चतुरार्षि  
प्रविक कार्य करना  
हों मैं हों मिलना  
चूति का चूति से घाल घलना  
दरवार में आने-जाने को मिलना  
हुआ: या तुःय दीनो मे समान  
केवल ऊपरी दिखावा

## ROJGAR WITH ANKIT

135. लग्नगर का बेत सरा नहीं होता
136. तख्त उल्टना
137. तिल धरये को जग्हन न रहना
138. तल्ल भीम से न लगना
139. दन्त कण्ठ
140. दौंत खदें करना
141. दौंति तले ऊँगवी रखना
142. होपडी का चीर होना
143. द्वर के ढोल सुनावने
144. दापा कहने से बनिया गुड़ देता है
145. दिन भर चले जहाँ कोस
146. दिल्ली द्वर है।
147. द्रुध का द्रुध पानी का पानी
148. दो नाव पर चौर रखना
149. देवता बचाकर आना
150. दृष्ट में छास सफेद होना
151. धोकी का हुता न घर का न घाट का
152. धोती धीनी होना
153. धरती पर पौँछ न रखना
154. धज्जियाँ उड़ना
155. नदी नाव संयोग
156. नौं की लकड़ी नवे खच
- अत्याचार का परिणाम अब नहीं होता  
अपदस्थ होना
- पिता - पितृ कर कम करना
- बीलते रहना
- निराधार बात
- पराजित करना
- चकित होना (40 2025)
- अन्त न होना
- वातविकाला द्वर से ही अच्छी लगती है
- मधुर झुग्ग से काम बन जाता है।
- समय अधिक लगना काम कम होना
- सफलता में देरी है।
- निष्पक्ष - याद
- दुष्विधापूर्ण रस्ते होना
- चबरा आना
- अनुभवठीन होना
- जीं कहीं का न हो
- चबरा आना
- घमड़ी होना
- नष्ट अट्ट करना (40 2025)
- धोड़ी समय का साप
- वस्तु के मूल्य से उसके रख - रखने का अर्थ अधिक होना

## ROJGAR WITH ANKIT

158. नई के बारात में जने-जाने क्षमता
159. निवासियों के केर में पड़ना
160. नाक का बाल होना
161. नाक रगड़ना
162. पेट में दृष्टि होना
163. पत्थर की लकड़ियाँ
164. पांचों उंगलियों बराबर नहीं होना
165. व्यासा कुरुं के पास भात है
166. पांचों उंगलियों ची में होना
167. पांच उखड़ना
168. पानी रखना
169. फलदा खोते दौत हैं तो इटे
170. छंक से पठाड़ उड़ाना
171. खतीसी बंद होना
172. बॉम्ब का जाने-पस्त की फीड़ी
173. बंदर चुड़की या भड़की
174. खतीसी बंद होना
175. बड़े पर की ठवा खाना
176. छुपी घोड़ी लाल लगाना
177. बड़े बोल का सिर नीचा
178. बंगुला अगत
179. बोंबे यील भाना
- बहों सभी नेता हो  
धन-संग्रह की विना में पड़ना  
किसी का मिय होना  
दीनता प्रविक्ष प्रार्थना करना (GD 2022)
- झण - मंगुर  
घोड़ी उम्र में बहुत जान होना  
अत्यन्त सत्य  
सब मनुष्य समझ नहीं हो सकते  
जिसे जरूरत होती है वही दूसरों के  
पास जाता है।
- आरों और से नाश होना  
हिम्मत धारना, साहस खोना  
मर्यादा बनारू रखना  
स्वाद के लिए नुकसान भी मंजूर है।  
असम्भव कार्य करने की कोशिश  
करना (GD 2023)
- उपरसी ढा भाना  
अमाव खटकता रहता है।  
प्रमावहीन वनकी  
चुप हो भाना  
जेल भाना  
उम्र के टिसाब से चीज अच्छी लगती है।  
जो घमंड करता है उसको बीचा देखना  
पड़ता है।  
कपटी व्यक्ति / छोंगी व्यक्ति  
मसान होना (GD 2023)

## ROJGAR WITH ANKIT

180. किसा रोख तो मैं भी रुप नहीं मिलती
181. लाप न नारे मेंटकी, वेय तीरदाज
182. लहरी झंगा में हाप होना
183. बड़े बोल का खिर नीचा
184. बद उच्चा बदनाम तुरा
185. किंप गया सो जौती, रह गया सो सीप
186. भागे भ्रत की लंगोटी भर्ती
187. भड़ि गहि सौंप दद्दूदर केरी
188. भौंरा न धोड़ि केतकी, तीव्रे काटक भाज
189. मेंटक को भी भुकाम हुमा है
190. भूसलों ठोल जाना
191. गुंह मिकना, पेट खाली
192. मन-फट जाना
193. तुरे बैल की जड़ी-जड़ी ओंचे
194. तुरठी गत्ता करना
195. युग बोलना
196. राहि का पहाड़ बनाना
197. लिकाका तुल जाना
198. लेलाट में लिखा होना
199. चंकर ढौना
200. शैतान की अंत
201. सर्फ को दीपक दिलना

विना यत्न किये रुप भी नहीं मिलता बड़े से लोटे का उग्गे निकल जाना अवसर का लाभ उठना (40 2023) पगड़ी का सिर नीचा होता है। सुठी अपकीर्ति बुरी होती है। जो बस्तु काम में जाए वही अच्छी आशा के विपरीत रुप मिलना करमकश में पड़ना सेव बाधाएँ नहीं जानता अपनी शक्ति को बढ़ाकर बात करना बहुत चुशा होना (50 2023) केवल अपरी दिखावा व्यधित होना जो घीज नहीं रही उसकी प्रशंसा रिखत देना (60 2023) बहुत समय बाद होना बढ़ा - घटा कर करना ऐद खुल जाना भाग्य में बंधा होना अत्यन्त सीधा होना लम्ही बात (40 2023) किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की प्रशंसा करना

## ROJGAR WITH ANKIT

२०२. रींग बाटकर बदलों में मिल जाना
२०३. शात-धाट का पानी पीना
२०४. लहू लगाकर शहीदों में मिलना
२०५. लिखे इसा पढ़े सूखा
२०६. लाल फील शाही
२०७. धैरे के देने पड़ना
२०८. दोरों का मुट किसने योया
२०९. रूप तो सूप बलनी भी बोले
२१०. सिर मुर्जते ही जोले पड़ना
२११. सिर उठाना
२१२. सुई की नोक के बराबर
२१३. टोली पर सख्सों नहीं बमती
२१४. हाथ कंगन को डारसा करा
२१५. हुक्का पानी छाप्द करना
२१६. हीजड़े के घर जैटा हुआ
२१७. टवा से बोते करना
२१८. हौर की कनी चाटना
२१९. हाथ पसारना
- छाना होकर बदलों जैसा करना  
(GO 2023)
- कई दीप्र का अनुभव होना
- खड़ी -परांसा -चाटना
- गंदी लिखावट
- सरकारी अड़ंगा
- लाभ के बदले हानि (GO 2023)
- रामरथिवान के लिए कोई उपाय नहीं
- दोष ढारा इसरों का दोष निकालना
- कार्य में विच्छन का उपस्थित होना
- विरोध में बड़ा होना (GO 2023)
- जरा सा भी
- बात कहते ही काम नहीं होता
- मत्यज्ञ वस्तु के लिए अमरा की
- आवश्यकता नहीं होती
- जाति से बहिष्कृत करना (GO 2023)
- असंभव बात
- बहुत तेज दीपना
- माणनाशक कार्य करना
- रामना करना

ROJGAR WITH ANKIT

### **समरूपी भिन्नार्थक शब्द**

- ❖ वे शब्द जो दिखने और उच्चरण में लगभग एक जैसे हो, उन्हें समरूपी / समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

1. अकर – न करने योग्य  
आकर – खजाना  
आकार – रूप / आकृति
2. अग – सूर्य / पहाड़  
अघ – पापी / पाप / अपवित्र  
अज्ञ – मूर्ख / अज्ञानी
3. अम्ल – खटास  
अमल – पालन

4. अयश – बदनामी  
अयस – लोहा

5. अजर – देवता, जो बूढ़ा न हो।  
अजिर – आँगन

6. अंगना – स्त्री  
अँगना – आँगन

7. अगद – नीरोग  
अंगद – बालि का पुत्र

8. अचल – स्थिर/पर्वत  
अचला – पृथ्वी
9. अज – बकरा  
अजा – बकरी
10. अतप – ठंडा  
आतप – धूप
11. अगत – न गया हुआ  
आगत – आया हुआ।

12. अजय – न जीता जा सके।  
अजया – बकरी/भाँग का पौधा
13. आगार – स्थान  
आगर – ढेर
14. अनावर्त – न दोहराया गया  
अनावृत – न ढका हुआ।
15. अवनि – पृथ्वी  
अवन – रक्षा

16. उपकार – भलाई  
अपकार – बुराई
17. अपत्य – संतान  
अपथ्य – आरोग्य
18. अवमर्ष – आलोचना  
अवमर्श – स्पर्श
19. अभिज्ञ – विशेषज्ञ / जानकार  
अनभिज्ञ – अनजान

20. असि – तलवार  
अस्सी – 80
21. अंस – कंधा  
अंश – हिस्सा/भाग
22. आहर – पोखर/तालाब  
आहार – भोजन
23. अस्त्र – फेंककर चलाया जाने वाला हथियार  
शस्त्र – हाथ में रखकर चालाया जाने वाला हथियार

24. अस्ति – है  
अस्थि – हड्डी
25. हस्ति – हाथी  
हस्ती – अस्तित्व
26. अनल – आग  
अनिल – हवा
27. अंबुज – कमल  
अंबुद – बादल  
अंबुधि – समुद्र

28. अवलम्ब – सहारा  
अविलम्ब – शीघ्र
29. अवरोध – रुकावट  
अविरोध – बिना विरोध के
30. अवधि – समय–सीमा  
अवधी – भाषा
31. अपहार – अपहरण  
उपहार – भेंट

32. आधि – मानसिक पीड़ा  
आधी – आधा का स्त्रीलिंग
33. आयस – लोहा  
आयसु – आज्ञा
34. आहुत – छवि के रूप में  
आहूत – जिसको बुलाया गया हो
35. उपर्युक्त – उचित  
उपर्युक्त – ऊपर कहा गया।

36. इति – समाप्त  
इति – बाधा
37. उर – हृदय  
उरु – जाँघ / विस्तीर्ण
38. ऋत – सत्य  
ऋतु – मौसम
39. कुल – परिवार  
कूल – किनारा

40. कटक – सेना  
कंटक – काँटा
41. कल्पना – कृत्रिम विचार  
कलपना – दुःखी रहना
42. कपिश – भूरा/मटमैला  
कपीश – वानर मर्कट
43. केतु – झंडी/पताका  
केतू – नक्षत्र

44. कीट – कीड़ा  
कटि – कमर
45. काश – घास  
कास – खाँसी
46. कंत – पति  
कांत – सुंदर / पति  
कांता – पत्नी
47. कृतज्ञ – जो अपने ऊपर किये उपकार को मानता हो  
कृतघ्न – जो अपने ऊपर किये उपकार को न मानता हो।

48. कर्कट – केकड़ा  
करकट – गंदगी
49. क्षति – नुकसान  
क्षिति – पृथ्वी
50. ग्रह – नक्षत्र  
गृह – घर
51. गडना – चुभना  
गढ़ना – बनाना

52. गात — शरीर  
घात — हमला करने के इंतजार में रहना/पकड़ने के इंतजार में
53. घोष — गर्जन  
घोस — बस्ती
54. चपल — चंचल  
चपला — बिजली
55. चास — जुताई  
चाष — नीलकंठ पक्षी

56. जूठा – खाकर छोड़ा हुआ  
झूठा – झूठ बोलने वाला
57. तम – अंधकार  
तमा – रात्रि  
तमी – अंधेरी रात्रि
58. तरणि – सूर्य  
तरणी – नाव  
तरुणी – युवती

59. तृण – तिनका  
त्राण – मुक्ति
60. तड़ाक – शीघ्र  
तड़ाग – तालाब
61. तनु – पतला  
तनू – पुत्र
62. तरि – नाव  
तरी – ठंडक  
तर – गीला

63. द्रव — तरल पदार्थ  
द्रव्य — पदार्थ
64. दूत — संदेशावाहक  
द्यूत (दयूत) — जुआ
65. दह — गंभीर  
देह — शरीर
66. द्वीप — टापू  
द्विप — हाथी

67. देहात — गाँव  
देहान्त — मृत्यु
68. धेय — धारण करने योग्य  
ध्येय — उद्देश्य
69. नियत — निश्चित  
नियति — भाग्य  
नीयत — आदत
70. नाई — हजामत करने वाला  
नाई — समान (तरह)

71. नकल – अनुकरण  
नकुल – नेवला
72. नम – गीला  
नमः – नमस्कार
73. निर्जर – जो बूढ़ा न हो  
निर्झर – झरना
74. निहत – मारा हुआ  
निहित – रखा हुआ

75. नक्र – मगर/नाक  
नर्क – नरक
76. नद – बड़ी नदी  
नाद – बहुत तेज आवरण
77. निश्छल – बिना छल के  
निश्चल – जो चल न सके
78. पथ – रास्ता  
पथ्य – रास्ते के लिए भोजन

79. पावस – वर्षा  
पायस – खीर

80. परीक्षा – परख/जाँच  
परिक्षा – कीचड़

81. पवन – हवा  
पावन – पवित्र

82. परिणाम –  
परिमाण – मात्र नतीजा

83. परुष — कठोर  
पुरुष — आदमी
84. परिचालक — कंडक्टर  
परिचारक — सेवक (नौकर)  
प्रचारक — प्रचार करने वाला
85. परिक्षित — नष्ट—भ्रष्ट  
परीक्षित — जाँचा हुआ
86. पिक — कोयल  
पीक — थूक

87. पर्यंक — पलंग  
पर्यंत — भर/तक
88. पायस — खीर  
पायसा — पड़ोस
89. परिजन — परिवार के लोग  
परजन — शत्रु  
पर्जन्य — बादल
90. परिच्छद — वस्त्र  
परिच्छेद — विभाग

91. प्रेषित — भेजा गया  
प्रोषित — प्रवास करने वाला  
पोषित — पाला हुआ
92. पृथा — कुंती  
प्रथा — रीति
93. पण — मूल्य  
पर्ण — पत्ता
94. प्रणाम — नमस्कार  
प्रमाण — सबूत

95. परिणय – विवाह  
प्रणय – प्रेम
96. प्रत्युपकार – उपकार के बदले अपकार  
प्रत्यपकार – अपकार के बदले उपकार
97. बलि – भेंट  
बली – बलशाली
98. वारिस – उत्तराधिकारी  
वारीश – समुद्र

99. विदुर – ज्ञानी  
विधुर – जिसकी पत्नी मर गई हो
100. बंदी – कैदी  
वंदी – वंदना करने वाला
101. व्याज – सूद  
व्याज – बहाना
102. मंदर – पर्वत  
मंदिर – देवालय

103. मणि – रत्न  
मणी – सर्प
104. मनोज – कामदेव  
मनुज – मनुष्य
105. मरीचि – किरण  
मरीची – सूर्य
106. रंचक – थोड़ा  
रंजक – मेहदी

107. रीस – ईर्ष्या / होड़  
रिस – क्रोध / रिसना
108. व्यजन – पंखा  
व्यंजन – खाद्य पदार्थ
109. वृंत – डंठल  
वृत्त – गोला
110. व्यसन – बुरी आदतें  
वसन – वस्त्र

111. विवरण – ब्यौरा  
विवर्ण – बदरंग
112. विपणि – दूकान  
विपणी – दुकानदार
113. वस्तु – चीज  
वास्तु – मकान / निर्माण
114. शंकर – शिव  
संकर – मिश्रण

115. शुचि – पवित्र  
सूची – नामावली  
सूचि – सूई
116. सब – संपूर्ण  
शब – रात्रि
117. शील – मर्यादा  
सिल – पत्थर
118. शर – बाण  
सर – तालाब

119. सकल – संपूर्ण  
शकल – टुकड़ा
120. शिरा – नाड़ी  
सिरा – छोर
121. शम – शांति  
सम – बराबर/जो विषम न हो।
122. स्वजन – अपने लोग  
श्वजन – कुत्ता

ROJGAR WITH ANKIT

### **समरूपी भिन्नार्थक शब्द**

- ❖ वे शब्द जो दिखने और उच्चरण में लगभग एक जैसे हो, उन्हें समरूपी / समश्रुति भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

1. अकर – न करने योग्य  
आकर – खजाना  
आकार – रूप / आकृति
2. अग – सूर्य / पहाड़  
अघ – पापी / पाप / अपवित्र  
अज्ञ – मूर्ख / अज्ञानी
3. अम्ल – खटास  
अमल – पालन

4. अयश – बदनामी  
अयस – लोहा

5. अजर – देवता, जो बूढ़ा न हो।  
अजिर – आँगन

6. अंगना – स्त्री  
अँगना – आँगन

7. अगद – नीरोग  
अंगद – बालि का पुत्र

8. अचल – स्थिर/पर्वत  
अचला – पृथ्वी
9. अज – बकरा  
अजा – बकरी
10. अतप – ठंडा  
आतप – धूप
11. अगत – न गया हुआ  
आगत – आया हुआ।

12. अजय – न जीता जा सके।  
अजया – बकरी/भाँग का पौधा
13. आगार – स्थान  
आगर – ढेर
14. अनावर्त – न दोहराया गया  
अनावृत – न ढका हुआ।
15. अवनि – पृथ्वी  
अवन – रक्षा

16. उपकार – भलाई  
अपकार – बुराई
17. अपत्य – संतान  
अपथ्य – आरोग्य
18. अवमर्ष – आलोचना  
अवमर्श – स्पर्श
19. अभिज्ञ – विशेषज्ञ / जानकार  
अनभिज्ञ – अनजान

20. असि – तलवार  
अस्सी – 80
21. अंस – कंधा  
अंश – हिस्सा/भाग
22. आहर – पोखर/तालाब  
आहार – भोजन
23. अस्त्र – फेंककर चलाया जाने वाला हथियार  
शस्त्र – हाथ में रखकर चालाया जाने वाला हथियार

24. अस्ति – है  
अस्थि – हड्डी
25. हस्ति – हाथी  
हस्ती – अस्तित्व
26. अनल – आग  
अनिल – हवा
27. अंबुज – कमल  
अंबुद – बादल  
अंबुधि – समुद्र

28. अवलम्ब – सहारा  
अविलम्ब – शीघ्र
29. अवरोध – रुकावट  
अविरोध – बिना विरोध के
30. अवधि – समय–सीमा  
अवधी – भाषा
31. अपहार – अपहरण  
उपहार – भेंट

32. आधि – मानसिक पीड़ा  
आधी – आधा का स्त्रीलिंग
33. आयस – लोहा  
आयसु – आज्ञा
34. आहुत – छवि के रूप में  
आहूत – जिसको बुलाया गया हो
35. उपर्युक्त – उचित  
उपर्युक्त – ऊपर कहा गया।

36. इति – समाप्त  
इति – बाधा
37. उर – हृदय  
उरु – जाँघ / विस्तीर्ण
38. ऋत – सत्य  
ऋतु – मौसम
39. कुल – परिवार  
कूल – किनारा

40. कटक – सेना  
कंटक – काँटा
41. कल्पना – कृत्रिम विचार  
कलपना – दुःखी रहना
42. कपिश – भूरा/मटमैला  
कपीश – वानर मर्कट
43. केतु – झंडी/पताका  
केतू – नक्षत्र

44. कीट – कीड़ा  
कटि – कमर
45. काश – घास  
कास – खाँसी
46. कंत – पति  
कांत – सुंदर / पति  
कांता – पत्नी
47. कृतज्ञ – जो अपने ऊपर किये उपकार को मानता हो  
कृतघ्न – जो अपने ऊपर किये उपकार को न मानता हो।

48. कर्कट – केकड़ा  
करकट – गंदगी
49. क्षति – नुकसान  
क्षिति – पृथ्वी
50. ग्रह – नक्षत्र  
गृह – घर
51. गडना – चुभना  
गढ़ना – बनाना

52. गात — शरीर  
घात — हमला करने के इंतजार में रहना/पकड़ने के इंतजार में
53. घोष — गर्जन  
घोस — बस्ती
54. चपल — चंचल  
चपला — बिजली
55. चास — जुताई  
चाष — नीलकंठ पक्षी

56. जूठा – खाकर छोड़ा हुआ  
झूठा – झूठ बोलने वाला
57. तम – अंधकार  
तमा – रात्रि  
तमी – अंधेरी रात्रि
58. तरणि – सूर्य  
तरणी – नाव  
तरुणी – युवती

59. तृण – तिनका  
त्राण – मुक्ति
60. तड़ाक – शीघ्र  
तड़ाग – तालाब
61. तनु – पतला  
तनू – पुत्र
62. तरि – नाव  
तरी – ठंडक  
तर – गीला

63. द्रव — तरल पदार्थ  
द्रव्य — पदार्थ
64. दूत — संदेशावाहक  
द्यूत (दयूत) — जुआ
65. दह — गंभीर  
देह — शरीर
66. द्वीप — टापू  
द्विप — हाथी

67. देहात — गाँव  
देहान्त — मृत्यु
68. धेय — धारण करने योग्य  
ध्येय — उद्देश्य
69. नियत — निश्चित  
नियति — भाग्य  
नीयत — आदत
70. नाई — हजामत करने वाला  
नाई — समान (तरह)

71. नकल – अनुकरण  
नकुल – नेवला
72. नम – गीला  
नमः – नमस्कार
73. निर्जर – जो बूढ़ा न हो  
निर्झर – झरना
74. निहत – मारा हुआ  
निहित – रखा हुआ

75. नक्र – मगर/नाक  
नर्क – नरक
76. नद – बड़ी नदी  
नाद – बहुत तेज आवरण
77. निश्छल – बिना छल के  
निश्चल – जो चल न सके
78. पथ – रास्ता  
पथ्य – रास्ते के लिए भोजन

79. पावस – वर्षा  
पायस – खीर

80. परीक्षा – परख/जाँच  
परिक्षा – कीचड़

81. पवन – हवा  
पावन – पवित्र

82. परिणाम –  
परिमाण – मात्र नतीजा

83. परुष — कठोर  
पुरुष — आदमी
84. परिचालक — कंडक्टर  
परिचारक — सेवक (नौकर)  
प्रचारक — प्रचार करने वाला
85. परिक्षित — नष्ट—भ्रष्ट  
परीक्षित — जाँचा हुआ
86. पिक — कोयल  
पीक — थूक

87. पर्यंक — पलंग  
पर्यंत — भर/तक
88. पायस — खीर  
पायसा — पड़ोस
89. परिजन — परिवार के लोग  
परजन — शत्रु  
पर्जन्य — बादल
90. परिच्छद — वस्त्र  
परिच्छेद — विभाग

91. प्रेषित – भेजा गया  
प्रोषित – प्रवास करने वाला  
पोषित – पाला हुआ
92. पृथा – कुंती  
प्रथा – रीति
93. पण – मूल्य  
पर्ण – पत्ता
94. प्रणाम – नमस्कार  
प्रमाण – सबूत

95. परिणय – विवाह  
प्रणय – प्रेम
96. प्रत्युपकार – उपकार के बदले अपकार  
प्रत्यपकार – अपकार के बदले उपकार
97. बलि – भेंट  
बली – बलशाली
98. वारिस – उत्तराधिकारी  
वारीश – समुद्र

99. विदुर – ज्ञानी  
विधुर – जिसकी पत्नी मर गई हो
100. बंदी – कैदी  
वंदी – वंदना करने वाला
101. व्याज – सूद  
व्याज – बहाना
102. मंदर – पर्वत  
मंदिर – देवालय

103. मणि – रत्न  
मणी – सर्प
104. मनोज – कामदेव  
मनुज – मनुष्य
105. मरीचि – किरण  
मरीची – सूर्य
106. रंचक – थोड़ा  
रंजक – मेहदी

107. रीस – ईर्ष्या / होड़  
रिस – क्रोध / रिसना
108. व्यजन – पंखा  
व्यंजन – खाद्य पदार्थ
109. वृंत – डंठल  
वृत्त – गोला
110. व्यसन – बुरी आदतें  
वसन – वस्त्र

111. विवरण – ब्यौरा  
विवर्ण – बदरंग
112. विपणि – दूकान  
विपणी – दुकानदार
113. वस्तु – चीज  
वास्तु – मकान / निर्माण
114. शंकर – शिव  
संकर – मिश्रण

115. शुचि – पवित्र  
सूची – नामावली  
सूचि – सूई
116. सब – संपूर्ण  
शब – रात्रि
117. शील – मर्यादा  
सिल – पत्थर
118. शर – बाण  
सर – तालाब

119. सकल – संपूर्ण  
शकल – टुकड़ा
120. शिरा – नाड़ी  
सिरा – छोर
121. शम – शांति  
सम – बराबर/जो विषम न हो।
122. स्वजन – अपने लोग  
श्वजन – कुत्ता

**UPSI 2023**

विनापक सेवा

हिन्दी

पर्यायिकाची शब्द

LIVE 22-01-2024 08:00 AM

1.	अंत	इति, समाप्ति, मरण, अवसान, समापन
2.	अग्नि	आग, पावक, अनल, वैश्वानर, शुचि, वायुसखा, हुताशन, कृशानु, शिखी, रोहिताश्व
3.	अनादर	अवज्ञा, तिरस्कार, अपमान, अवहेलना, परिभव, बेर्झज्जती
4.	अधीन	आश्रित, निर्भर, मातहत
5.	अधीर	बेचैन, उद्धिग्न, आकुल, व्यग्र, अशान्त, उतावला, बेताब
6.	अनंत	असीम, अपरिमित, निस्सीम, अथाह, अकूत
7.	अनुमान	अटकल, अंदाजा, क्यास, आकलन

8.	अभिमान	अंहकार, दर्प, दंभ, मद, घमङ्ड, गुमान
9.	असुर	दैत्य, दानव, राक्षस, निशाचर, रजनीचर, यातुधान, तमचर, देवारि
10.	अमर	अनश्वर, नित्य, सनातन, अविनाशी, वसु
11.	आक्षेप	आरोप, अभियोग, दोषारोपण, लांछन
12.	आँख	नेत्र, नयन, चक्षु, लोचन, दृग, अक्षि, अम्बक, दीठ, चख, चश्म
13.	आँसू	अश्रु, नयनजल, नेत्रनीर, नेत्रवारि, चक्षुजल
14.	आकाश	गगन, अंबर, नभ, व्योम, अभ्र, अर्श, उर्ध्वलोक, तारापथ, द्यौ, धुलोक

15.	आख्यान	किस्सा, कहानी, वृत्तांत
16.	आडम्बर	ढोंग, पाखंड, प्रपंच, दिखावा, सँग
17.	इशारा	संकेत, इंगित, निर्देश
18.	इन्द्र	शक्र, देवराज, पुरंदर, शचीपति, सुरपति, अमरपति, देवेश, सुरेश, वासव, मघवा, विडौजा
19.	ईर्ष्या	डाह, द्वेष, कुङ्घन, मत्सर, रश्क, हसद
20.	उजाला	आलोक, प्रभा, ज्योति, विभा, घोत, नूर
21.	उत्कंठा	लालसा, उत्सुकता, कांक्षा, वांछा, अभिलाषा
22.	उग्र	प्रचंड, उत्कट, तीव्र
23.	उचित	उपयुक्त, वाजिब, मुनासिब, समीचीन

24.	उत्तम	उत्कृष्ट, प्रवर, श्रेष्ठ, विशारद
25.	उद्गम	उद्भव, उत्पत्ति, आविर्भाव, प्रादुर्भाव
26.	उद्देश्य	ध्येय, मकसद, प्रयोजन, हेतु, अभिप्राय
27.	उद्धार	मुक्ति, निस्तार, छुटकारा, मोक्ष, अपमोचन
28.	उदास	उन्मन, अवसन्न, विषादयुक्त
29.	उदासीन	विरक्त, निःस्पृह, निर्लिप्त, अनासक्त
30.	उदाहरण	दृष्टांत, नजीर, नमूना
31.	उल्टा	प्रतिकूल, प्रतिलोम, विलोम
32.	उल्लास	आह्लाद, आनंद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, विनोद
33.	ऊसर	अनुपजाऊ, सस्यहीन, बंजर

34.	ऊँचा	उत्तुंग, बुलंद, उध्व, उदात्त, उत्ताल
35.	ऋद्धि	समृद्धि, संपन्नता, वैभव, ऐश्वर्य
36.	एकांत	निर्जन, वीरान, सूना
37.	ओज	बल, ताकत, दम, कांति
38.	कंगाल	दरिद्र, अकिञ्चन
39.	कंचन	स्वर्ण, सोना, हेम, कुंदन, हाटक, जातरूप
40.	कछुआ	कूर्म, कमठ, कच्छप, चकवार
41.	कटु	कर्कश, रुक्ष, कठोर
42.	कठिन	दुर्बोध, दुरुह, जटिल
43.	कपड़ा	वस्त्र, वसन, पट, चीर

44.	कबूतर	कपोत, कलरव, हारिल, पारावत
45.	कमल	अरविंद, जलज, सरोज, नीरज, पंकज, अंबुज, पुंडरीक, जलजात, नलिन, उत्पल, इन्दीवर, सरसिज, कोकनद, शतदल
46.	कर	महसूल, टैक्स, शुल्क
47.	कायर	भीरु, कातर, डरपोक
48.	किनारा	तीर, तट, पुलिन
49.	किरण	रश्मि, अंशु, मरीचि
50.	कीचड़	पंक, कर्दम, चिकिल
51.	कुत्सित	नीच, अधम, निकृष्ट

52.	कोयल	कोकिल, श्यामा, मदनशलाका
53.	कौआ	काक, काग, वायस, एकाक्ष, करठ, पिशुन
54.	क्रूर	निर्दय, नृशंस
55.	खरा	स्वच्छ, निर्मल, पावन
56.	खल	दुर्जन, अधम, दुष्ट, पामर, कुटिल
57.	खोज	गवेषण, अन्वेषण
58.	गंभीर	गूढ़, जटिल, दुर्लह, विलष्ट
59.	चालाक	चतुर, पटु, दक्ष, प्रवीण, नागर, निपुण, कुशल
60.	चुप	अवाक्, मौन, निस्तब्ध, मूक
61.	चोटी	शिखर, शृंग, तुंग, शिरोबिंदु

62.	छिद्र	सुराख, रंध्र
63.	छल	प्रपंच, फरेब, चकमा, झाँसा
64.	छात्र	शिष्य, अध्येता, शागिर्द, चेला
65.	छोह	ममता, स्नेह, प्रेम, प्रीति, उल्फत, अनुराग, प्रणय, आसक्ति
66.	जनक	जनयिता, पिता, तात, वालिद
67.	जननी	अंबा, महतारी, धात्री, जनयित्री, प्रसू, वालिदा, अम्ब
68.	जंगल	अरण्य, वन, विपिन, कानन, कातांर, सहरा, गहन, विटप, डांग, अख्य

69.	जटिल	विलष्ट, पेंचीदा
70.	जड़	अचेतन, स्थावर, अचर
71.	जल	नीर, वारि, सलिल, अंबु, तोय, उदक, मेघपुष्प, पय, सारंग, सर्वमुख
72.	जीभ	रसना, अरुधंती, ललना, वाचा, रसज्ञा
73.	ज्ञान	इल्म, जानकारी
74.	झंडा	पताका, ध्वज, केतु, निशान
75.	झगड़ा	कलह, वितंडा, टंटा, तकरार, हुज्जत, विवाद, क्लेश
76.	झूठ	अनृत, मिथ्या, निर्मूल, अलीह, मृषा
77.	झुंड	जत्था, गिरोह, पुंज, दल

78.	टेक	अवलम्ब, आश्रय, अवस्तम्भ, सहारा
79.	ठग	वंचक, प्रतारक, फरेबी, छलिया
80.	डाकू	लुटेरा, बटमार, दस्यु, राहजन
81.	तंबू	खेमा, डेरा, वितान, शामियाना
82.	तनिक	लेशमात्र, रंचमात्र, किंचित
83.	तनु	कृश, दुबला, कलेवर, काया
84.	तरंग	उर्मि, विचि, हिलोर
85.	तुरंत	क्षिप्र, शीघ्र
86.	तीखा	प्रखर, तीक्ष्ण, पैना

87.	तोता	शुक, सुग्गा, कीर, सुवा, सुआ, रक्ततुण्ड, दाढ़िमप्रिय
88.	थकान	श्रांति, क्लांति, शिथिलता
89.	दरवाजा	पल्ला, कपाट, पट
90.	दरिद्र	रंक, अकिंचन, कंगाल, दीहीन
91.	दवा	भेषज, तकिला, औषधि
92.	दीप्ति	कांति, आभा, द्युति, चमक, प्रभा, ओज
93.	दुर्जन	खल, पिशुन, असंत, अधम पामर, कुटिल, शठ, पतित

94.	दुःख	व्यथा, पीड़ा, वेदना, क्लेश, कस्क, संताप, खेद, विपदा, यंतणा, पीर
95.	दुर्गम	दुस्तर, अगम्य, औघट
96.	धनंजय	पार्थ, कौन्तेय, गुडाकेश, गांडीवधारी, सव्यसाची, वृहन्नला, कर्णारि, परन्तप, जिष्णु, किरीटी, कणेर
97.	धनुष	चाप, शरासन, कोदंड, पिनाक, सारंग
98.	नग	भूधर, गिरि, शैल, अद्री, तुंग, धरणीधर, मेरु
99.	नदी	सरिता, अपगा, तटनी, सरि, तरंगवती, निझरी, शैलजा, पयस्विनी, निम्नगा

100.	नाग	साँप, भुजंग, उरग, अहि, फणी, व्याल, पन्नग, काकोदर, पवनासन, सारंग
101.	निशा	रात, रजनी, विभावरी, रैन, यामिनी, तमी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, दोष
102.	नृप	राजा, भूप, नरश, महीप, अवनीश
103.	नौका	तरी, नाव, डोंगी, पंतग
104.	पक्षी	खग, विहंग, पखेरु, खेचर, द्विज, शकुन्त, विहग, नीड़ज, परिन्दा, चंचुभृत
105.	पंक	कीचड़, कर्दम, चहला
106.	पड़ोसी	प्रतिवेशी, समीपवर्ती, अंतिक

107.	पत्नी	भार्या, दारा, जाया, जोरू, वामा, परिणीता, कलत्र, वल्लभा, वनिता
108.	पत्ता	पत्र, दल, पर्ण, पल्लव, किसलय, वरक
109.	परुष	कठोर, निष्ठुर
110.	पाणि	हाथ, कर
111.	पादप	द्रुम, पौधा, विटप, तरु, रुख, क्षुप, गुल्म, गाछ
112.	परतन्त्र	पराधीन
113.	पंकित	कतार, अवलि
114.	पारावार	जलधि, उदधि, पयोधि, रत्नाकर, समुद्र, नदीश, अर्णव, वारीश, नीरनिधि, अकूपाद

115.	पृथ्वी	वसुन्धरा, मेदिनी, क्षिति, अचला, अवनि, महि, विकेशी, उर्वा
116.	प्रणय	प्रेम, अनुराग, प्रीति, अनुरक्ति, रति
117.	फौज	लश्कर, कटक, अनीकिनी, अनी, अनीक, चमू, सेना
118.	बर्बर	असभ्य, अशिष्ट, उद्धत
119.	बहेलिया	लुध्क, अहेरी, आखेटक
120.	भगिनी	सहोदरा, हमशीरा, नांधवी, बहिन
121.	मंथर	मंद, धीमा
122.	महक	वास, परिमल, खूशबू, सौरभ

123.	माहुर	गरल, विष, हलाहल, कालकूट
124.	मुकर	दर्पण, आरसी, शीशा, कर्कर
125.	मेघ	वारिद, जलद, घन, अंबुद, श्रीभूत, नीरद, घटा, सारंग, अब्र, अभ्र
126.	मेंढक	मण्डूक, दर्दुर, दादुर, भेक, मेजा
127.	मोर	शिखी, सारंग, केकी, कलापी, केक, नीलकंठ
128.	मौलि	ललाट, मस्तक, माथा
129.	यमुना	सूर्यसुता, कालिंदी, रवितनया, अर्कजा, श्यामा, भानुजा
130.	रक्षा	त्राण, हिफाजत

131.	रत	लिप्त, लीन, निमग्न
132.	रासभ	गर्दभ, खर, धूसर, राशभ, शीतलावाहन, वैशाखनंदन, खोता, सर, बेशर
133.	लक्ष्मी	रमा, पदमा, इंदिरा, कमला, हरिप्रिया, सिंधुसुता, नारायणी
134.	लता	वल्ली, वल्लरी, बेल
135.	लज्जा	हया, ब्रीड़ा, संकोच
136.	लाल	अरुण, सूर्य, लोहित, रक्त
137.	वपु	देह, तन
138.	वस्त्र	वसन, कपड़ा, पट, अम्बर, चीर, चैल

139.	बाण	शर, सायक, शिलीमुख, आशुग, इषु, नाराच
140.	शिव	उमापति, शंभु, चंद्रमौलि, मदनारि, चंन्द्रचूड गंगाधर, पशुपति
141.	संकल्प	ब्रत, प्रण, प्रतिज्ञा
142.	समान	सदृश्य, तुल्य, तद्रूप
143.	साधु	यती, फकीर
144.	सेवक	नौकर, भृत्य, परिचारक, चेरा, चाकर, किंकर, अनुचर, परिचर
145.	हनुमान	पवनसुत, मारुति, आंजनेय, कपीश, बजरंग
146.	हंस	मराल, सरस्वती, मानसौक

147.	आभूषण	आभरण, टूम, अलंकार, भूषण
148.	कुत्ता	सारमेय, सोनहा, शुनक, श्वान, कुक्कुर
149.	केला	कदली, भानुफल, गजतसा, मोचो, रम्भा
150.	गीदड़	नचक, अबुंक, शृंगाल, निशामृग
151.	घी	हव्य, आज्य
152.	चूहा	खंजक, मूषक, आखु, उंदुर
153.	तलवार	करवाल, कृपाण, खड़ग, चन्द्रहास, असि, शमशीर
154.	नियति	प्रारब्ध, भाग्य, होनी, तकदीर
155.	पत्थर	उपल, अश्म, शिला
156.	फूल	कुसुम, पुहुप, सुमन, प्रसून, गुलशन, उत्तमांश

157.	बंदर	कपि, मर्कट, शाखामृग, वानर
158.	ब्राह्मण	विप्र, द्विज, भूसुर
159.	बगीचा	उपवन, निकुंज, बाड़ी
160.	भ्रमर	अलि, मधुकर, मधुप द्विरेफ
161.	मुर्गा	कुक्कुट, ताम्रचूड़, अरुणशिखा
162.	यम	कीनाश, जीवितेश
163.	रावण	लंकेश, लंकापति, दैत्येन्द्र, दशकंध
164.	शेर	केसरी, केशी, मृगेन्द्र, शार्दूल, केहरी, नाहर, ललित, मृगराज
165.	विभूति	ऐश्वर्य, संपत्ति, द्रव्य, माया

166.	खगेश	गरुड़, वातनेय, विषमुख, उरगारि, सुपर्ण
167.	आयुष्मान	चिरंजीवी, जीवी, शतायु, दीर्घायु
168.	आत्मा	क्षेत्रज्ञ, सर्वव्याप्त, जीव
169.	आम	सहकार, अतिसौरभ, रसाल, पिकबंधु
170.	इंद्राणी	पुलोमजा, शची, इन्द्रा
171.	ईनाम	पुरस्कार, पारितोषिक, बख्शीश
172.	एकांत	निर्जन, शून्य
173.	कपूर	घनसार, हिमवालुका
174.	कुबेर	यक्षराज, किञ्चरेश, धनेश
175.	गाय	भद्रा, सुरभी, दोग्धी, गौरी

176.	गणेश	गजवदन, लबोदर, विनायक, भवानीदन
177.	गेंद	कन्दुक, गिरिक
178.	गीदड़	नचक, जंबुक, शृंगाल
179.	चंदन	श्रीखंड, गंधसार, मलयज्ञ
180.	चाँदी	जातरूप, रजत, रूप्य
181.	झरना	प्रपात, सोता, निझर
182.	द्रोपदी	कृष्णा, पांचाली, सैरन्ध्री, याज्ञसैनी
183.	दिन	वासर, दिवा, वार
184.	धूप	निदाध, आतप, रविप्रभा
185.	पुत्र	सुत, तनय, आत्मज, तनुज

186.	बसंत	ऋतुराज, मधुमास, कुसुमाकर
187.	मैना	सारिका, चित्रकोचना
188.	मूँगा	रक्तमणि, प्रवाल, विद्रुम
189.	वज्र	अशनि, कुलिश, पवि
190.	स्वर	निनाद, रव, मुखर, घोष
191.	मछली	मत्स्य, झाख, मीन, झष, सफरी
192.	घूस	रिश्वत, उत्कोच
193.	उपाय	युक्ति, जुगत, चेष्टा
194.	बैल	ऋषभ, पुंगव, बलीवर्द
195.	गेहूँ	कनक, गोधूम, गंदुम

196.	गन्ना	इक्षु, ऊख, उक्षु
197.	चावल	तंदुल, भात, धान
198.	चना	चणक, रहिला, छोला
199.	होंठ	अधर, ओष्ठ
200.	मधु	शहद, कुसुमासव
201.	मृत्यु	देहावसान, निर्वाण
202.	उपवास	फाका, ब्रत, निराहार
203.	बाल	कच, केश, चिकुर, चूल
204.	सीढ़ी	नसैनी, सोपान, जीना
205.	नूतन	नव्य, नवीन

206.	मदिरा	सुरा, मद्य, हाला
207.	गरमी	निदाध, ऊष्मा
208.	देवता	निर्जर, विवृधि, गीर्वाण
209.	मुनि	यती, तापस, संत

**UPSI 2023**

विनापक सेवा

हिन्दी

पर्यायिकाची शब्द

LIVE 22-01-2024 08:00 AM

1.	अंत	इति, समाप्ति, मरण, अवसान, समापन
2.	अग्नि	आग, पावक, अनल, वैश्वानर, शुचि, वायुसखा, हुताशन, कृशानु, शिखी, रोहिताश्व
3.	अनादर	अवज्ञा, तिरस्कार, अपमान, अवहेलना, परिभव, बेर्झज्जती
4.	अधीन	आश्रित, निर्भर, मातहत
5.	अधीर	बेचैन, उद्धिग्न, आकुल, व्यग्र, अशान्त, उतावला, बेताब
6.	अनंत	असीम, अपरिमित, निस्सीम, अथाह, अकूत
7.	अनुमान	अटकल, अंदाजा, क्यास, आकलन

8.	अभिमान	अंहकार, दर्प, दंभ, मद, घमङ्ड, गुमान
9.	असुर	दैत्य, दानव, राक्षस, निशाचर, रजनीचर, यातुधान, तमचर, देवारि
10.	अमर	अनश्वर, नित्य, सनातन, अविनाशी, वसु
11.	आक्षेप	आरोप, अभियोग, दोषारोपण, लांछन
12.	आँख	नेत्र, नयन, चक्षु, लोचन, दृग, अक्षि, अम्बक, दीठ, चख, चश्म
13.	आँसू	अश्रु, नयनजल, नेत्रनीर, नेत्रवारि, चक्षुजल
14.	आकाश	गगन, अंबर, नभ, व्योम, अभ्र, अर्श, उर्ध्वलोक, तारापथ, द्यौ, धुलोक

15.	आख्यान	किस्सा, कहानी, वृत्तांत
16.	आडम्बर	ढोंग, पाखंड, प्रपंच, दिखावा, सँग
17.	इशारा	संकेत, इंगित, निर्देश
18.	इन्द्र	शक्र, देवराज, पुरंदर, शचीपति, सुरपति, अमरपति, देवेश, सुरेश, वासव, मघवा, विडौजा
19.	ईर्ष्या	डाह, द्वेष, कुङ्घन, मत्सर, रश्क, हसद
20.	उजाला	आलोक, प्रभा, ज्योति, विभा, घोत, नूर
21.	उत्कंठा	लालसा, उत्सुकता, कांक्षा, वांछा, अभिलाषा
22.	उग्र	प्रचंड, उत्कट, तीव्र
23.	उचित	उपयुक्त, वाजिब, मुनासिब, समीचीन

24.	उत्तम	उत्कृष्ट, प्रवर, श्रेष्ठ, विशारद
25.	उद्गम	उद्भव, उत्पत्ति, आविर्भाव, प्रादुर्भाव
26.	उद्देश्य	ध्येय, मकसद, प्रयोजन, हेतु, अभिप्राय
27.	उद्धार	मुक्ति, निस्तार, छुटकारा, मोक्ष, अपमोचन
28.	उदास	उन्मन, अवसन्न, विषादयुक्त
29.	उदासीन	विरक्त, निःस्पृह, निर्लिप्त, अनासक्त
30.	उदाहरण	दृष्टांत, नजीर, नमूना
31.	उल्टा	प्रतिकूल, प्रतिलोम, विलोम
32.	उल्लास	आह्लाद, आनंद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, विनोद
33.	ऊसर	अनुपजाऊ, सस्यहीन, बंजर

34.	ऊँचा	उत्तुंग, बुलंद, उध्व, उदात्त, उत्ताल
35.	ऋद्धि	समृद्धि, संपन्नता, वैभव, ऐश्वर्य
36.	एकांत	निर्जन, वीरान, सूना
37.	ओज	बल, ताकत, दम, कांति
38.	कंगाल	दरिद्र, अकिञ्चन
39.	कंचन	स्वर्ण, सोना, हेम, कुंदन, हाटक, जातरूप
40.	कछुआ	कूर्म, कमठ, कच्छप, चकवार
41.	कटु	कर्कश, रुक्ष, कठोर
42.	कठिन	दुर्बोध, दुरुह, जटिल
43.	कपड़ा	वस्त्र, वसन, पट, चीर

44.	कबूतर	कपोत, कलरव, हारिल, पारावत
45.	कमल	अरविंद, जलज, सरोज, नीरज, पंकज, अंबुज, पुंडरीक, जलजात, नलिन, उत्पल, इन्दीवर, सरसिज, कोकनद, शतदल
46.	कर	महसूल, टैक्स, शुल्क
47.	कायर	भीरु, कातर, डरपोक
48.	किनारा	तीर, तट, पुलिन
49.	किरण	रश्मि, अंशु, मरीचि
50.	कीचड़	पंक, कर्दम, चिकिल
51.	कुत्सित	नीच, अधम, निकृष्ट

52.	कोयल	कोकिल, श्यामा, मदनशलाका
53.	कौआ	काक, काग, वायस, एकाक्ष, करठ, पिशुन
54.	क्रूर	निर्दय, नृशंस
55.	खरा	स्वच्छ, निर्मल, पावन
56.	खल	दुर्जन, अधम, दुष्ट, पामर, कुटिल
57.	खोज	गवेषण, अन्वेषण
58.	गंभीर	गूढ़, जटिल, दुर्लह, विलष्ट
59.	चालाक	चतुर, पटु, दक्ष, प्रवीण, नागर, निपुण, कुशल
60.	चुप	अवाक्, मौन, निस्तब्ध, मूक
61.	चोटी	शिखर, शृंग, तुंग, शिरोबिंदु

62.	छिद्र	सुराख, रंध्र
63.	छल	प्रपंच, फरेब, चकमा, झाँसा
64.	छात्र	शिष्य, अध्येता, शागिर्द, चेला
65.	छोह	ममता, स्नेह, प्रेम, प्रीति, उल्फत, अनुराग, प्रणय, आसक्ति
66.	जनक	जनयिता, पिता, तात, वालिद
67.	जननी	अंबा, महतारी, धात्री, जनयित्री, प्रसू, वालिदा, अम्ब
68.	जंगल	अरण्य, वन, विपिन, कानन, कातांर, सहरा, गहन, विटप, डांग, अख्य

69.	जटिल	विलष्ट, पेंचीदा
70.	जड़	अचेतन, स्थावर, अचर
71.	जल	नीर, वारि, सलिल, अंबु, तोय, उदक, मेघपुष्प, पय, सारंग, सर्वमुख
72.	जीभ	रसना, अरुधंती, ललना, वाचा, रसज्ञा
73.	ज्ञान	इल्म, जानकारी
74.	झंडा	पताका, ध्वज, केतु, निशान
75.	झगड़ा	कलह, वितंडा, टंटा, तकरार, हुज्जत, विवाद, क्लेश
76.	झूठ	अनृत, मिथ्या, निर्मूल, अलीह, मृषा
77.	झुंड	जत्था, गिरोह, पुंज, दल

78.	टेक	अवलम्ब, आश्रय, अवस्तम्भ, सहारा
79.	ठग	वंचक, प्रतारक, फरेबी, छलिया
80.	डाकू	लुटेरा, बटमार, दस्यु, राहजन
81.	तंबू	खेमा, डेरा, वितान, शामियाना
82.	तनिक	लेशमात्र, रंचमात्र, किंचित
83.	तनु	कृश, दुबला, कलेवर, काया
84.	तरंग	उर्मि, विचि, हिलोर
85.	तुरंत	क्षिप्र, शीघ्र
86.	तीखा	प्रखर, तीक्ष्ण, पैना

87.	तोता	शुक, सुग्गा, कीर, सुवा, सुआ, रक्ततुण्ड, दाढ़िमप्रिय
88.	थकान	श्रांति, क्लांति, शिथिलता
89.	दरवाजा	पल्ला, कपाट, पट
90.	दरिद्र	रंक, अकिंचन, कंगाल, दीहीन
91.	दवा	भेषज, तकिला, औषधि
92.	दीप्ति	कांति, आभा, द्युति, चमक, प्रभा, ओज
93.	दुर्जन	खल, पिशुन, असंत, अधम पामर, कुटिल, शठ, पतित

94.	दुःख	व्यथा, पीड़ा, वेदना, क्लेश, कस्क, संताप, खेद, विपदा, यंतणा, पीर
95.	दुर्गम	दुस्तर, अगम्य, औघट
96.	धनंजय	पार्थ, कौन्तेय, गुडाकेश, गांडीवधारी, सव्यसाची, वृहन्नला, कर्णारि, परन्तप, जिष्णु, किरीटी, कणेर
97.	धनुष	चाप, शरासन, कोदंड, पिनाक, सारंग
98.	नग	भूधर, गिरि, शैल, अद्री, तुंग, धरणीधर, मेरु
99.	नदी	सरिता, अपगा, तटनी, सरि, तरंगवती, निझरी, शैलजा, पयस्विनी, निम्नगा

100.	नाग	साँप, भुजंग, उरग, अहि, फणी, व्याल, पन्नग, काकोदर, पवनासन, सारंग
101.	निशा	रात, रजनी, विभावरी, रैन, यामिनी, तमी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, दोष
102.	नृप	राजा, भूप, नरश, महीप, अवनीश
103.	नौका	तरी, नाव, डोंगी, पंतग
104.	पक्षी	खग, विहंग, पखेरु, खेचर, द्विज, शकुन्त, विहग, नीड़ज, परिन्दा, चंचुभृत
105.	पंक	कीचड़, कर्दम, चहला
106.	पड़ोसी	प्रतिवेशी, समीपवर्ती, अंतिक

107.	पत्नी	भार्या, दारा, जाया, जोरू, वामा, परिणीता, कलत्र, वल्लभा, वनिता
108.	पत्ता	पत्र, दल, पर्ण, पल्लव, किसलय, वरक
109.	परुष	कठोर, निष्ठुर
110.	पाणि	हाथ, कर
111.	पादप	द्रुम, पौधा, विटप, तरु, रुख, क्षुप, गुल्म, गाछ
112.	परतन्त्र	पराधीन
113.	पंकित	कतार, अवलि
114.	पारावार	जलधि, उदधि, पयोधि, रत्नाकर, समुद्र, नदीश, अर्णव, वारीश, नीरनिधि, अकूपाद

115.	पृथ्वी	वसुन्धरा, मेदिनी, क्षिति, अचला, अवनि, महि, विकेशी, उर्वा
116.	प्रणय	प्रेम, अनुराग, प्रीति, अनुरक्ति, रति
117.	फौज	लश्कर, कटक, अनीकिनी, अनी, अनीक, चमू, सेना
118.	बर्बर	असभ्य, अशिष्ट, उद्धत
119.	बहेलिया	लुध्क, अहेरी, आखेटक
120.	भगिनी	सहोदरा, हमशीरा, नांधवी, बहिन
121.	मंथर	मंद, धीमा
122.	महक	वास, परिमल, खूशबू, सौरभ

123.	माहुर	गरल, विष, हलाहल, कालकूट
124.	मुकर	दर्पण, आरसी, शीशा, कर्कर
125.	मेघ	वारिद, जलद, घन, अंबुद, श्रीभूत, नीरद, घटा, सारंग, अब्र, अभ्र
126.	मेंढक	मण्डूक, दर्दुर, दादुर, भेक, मेजा
127.	मोर	शिखी, सारंग, केकी, कलापी, केक, नीलकंठ
128.	मौलि	ललाट, मस्तक, माथा
129.	यमुना	सूर्यसुता, कालिंदी, रवितनया, अर्कजा, श्यामा, भानुजा
130.	रक्षा	त्राण, हिफाजत

131.	रत	लिप्त, लीन, निमग्न
132.	रासभ	गर्दभ, खर, धूसर, राशभ, शीतलावाहन, वैशाखनंदन, खोता, सर, बेशर
133.	लक्ष्मी	रमा, पदमा, इंदिरा, कमला, हरिप्रिया, सिंधुसुता, नारायणी
134.	लता	वल्ली, वल्लरी, बेल
135.	लज्जा	हया, ब्रीड़ा, संकोच
136.	लाल	अरुण, सूर्य, लोहित, रक्त
137.	वपु	देह, तन
138.	वस्त्र	वसन, कपड़ा, पट, अम्बर, चीर, चैल

139.	बाण	शर, सायक, शिलीमुख, आशुग, इषु, नाराच
140.	शिव	उमापति, शंभु, चंद्रमौलि, मदनारि, चंन्द्रचूड गंगाधर, पशुपति
141.	संकल्प	ब्रत, प्रण, प्रतिज्ञा
142.	समान	सदृश्य, तुल्य, तद्रूप
143.	साधु	यती, फकीर
144.	सेवक	नौकर, भृत्य, परिचारक, चेरा, चाकर, किंकर, अनुचर, परिचर
145.	हनुमान	पवनसुत, मारुति, आंजनेय, कपीश, बजरंग
146.	हंस	मराल, सरस्वती, मानसौक

147.	आभूषण	आभरण, टूम, अलंकार, भूषण
148.	कुत्ता	सारमेय, सोनहा, शुनक, श्वान, कुक्कुर
149.	केला	कदली, भानुफल, गजतसा, मोचो, रम्भा
150.	गीदड़	नचक, अबुंक, शृंगाल, निशामृग
151.	घी	हव्य, आज्य
152.	चूहा	खंजक, मूषक, आखु, उंदुर
153.	तलवार	करवाल, कृपाण, खड़ग, चन्द्रहास, असि, शमशीर
154.	नियति	प्रारब्ध, भाग्य, होनी, तकदीर
155.	पत्थर	उपल, अश्म, शिला
156.	फूल	कुसुम, पुहुप, सुमन, प्रसून, गुलशन, उत्तमांश

157.	बंदर	कपि, मर्कट, शाखामृग, वानर
158.	ब्राह्मण	विप्र, द्विज, भूसुर
159.	बगीचा	उपवन, निकुंज, बाड़ी
160.	भ्रमर	अलि, मधुकर, मधुप द्विरेफ
161.	मुर्गा	कुक्कुट, ताम्रचूड़, अरुणशिखा
162.	यम	कीनाश, जीवितेश
163.	रावण	लंकेश, लंकापति, दैत्येन्द्र, दशकंध
164.	शेर	केसरी, केशी, मृगेन्द्र, शार्दूल, केहरी, नाहर, ललित, मृगराज
165.	विभूति	ऐश्वर्य, संपत्ति, द्रव्य, माया

166.	खगेश	गरुड़, वातनेय, विषमुख, उरगारि, सुपर्ण
167.	आयुष्मान	चिरंजीवी, जीवी, शतायु, दीर्घायु
168.	आत्मा	क्षेत्रज्ञ, सर्वव्याप्त, जीव
169.	आम	सहकार, अतिसौरभ, रसाल, पिकबंधु
170.	इंद्राणी	पुलोमजा, शची, इन्द्रा
171.	ईनाम	पुरस्कार, पारितोषिक, बख्शीश
172.	एकांत	निर्जन, शून्य
173.	कपूर	घनसार, हिमवालुका
174.	कुबेर	यक्षराज, किञ्चरेश, धनेश
175.	गाय	भद्रा, सुरभी, दोग्धी, गौरी

176.	गणेश	गजवदन, लबोदर, विनायक, भवानीदन
177.	गेंद	कन्दुक, गिरिक
178.	गीदड़	नचक, जंबुक, शृंगाल
179.	चंदन	श्रीखंड, गंधसार, मलयज्ञ
180.	चाँदी	जातरूप, रजत, रूप्य
181.	झरना	प्रपात, सोता, निझर
182.	द्रोपदी	कृष्णा, पांचाली, सैरन्ध्री, याज्ञसैनी
183.	दिन	वासर, दिवा, वार
184.	धूप	निदाध, आतप, रविप्रभा
185.	पुत्र	सुत, तनय, आत्मज, तनुज

186.	बसंत	ऋतुराज, मधुमास, कुसुमाकर
187.	मैना	सारिका, चित्रकोचना
188.	मूँगा	रक्तमणि, प्रवाल, विद्रुम
189.	वज्र	अशनि, कुलिश, पवि
190.	स्वर	निनाद, रव, मुखर, घोष
191.	मछली	मत्स्य, झाख, मीन, झष, सफरी
192.	घूस	रिश्वत, उत्कोच
193.	उपाय	युक्ति, जुगत, चेष्टा
194.	बैल	ऋषभ, पुंगव, बलीवर्द
195.	गेहूँ	कनक, गोधूम, गंदुम

196.	गन्ना	इक्षु, ऊख, उक्षु
197.	चावल	तंदुल, भात, धान
198.	चना	चणक, रहिला, छोला
199.	होंठ	अधर, ओष्ठ
200.	मधु	शहद, कुसुमासव
201.	मृत्यु	देहावसान, निर्वाण
202.	उपवास	फाका, ब्रत, निराहार
203.	बाल	कच, केश, चिकुर, चूल
204.	सीढ़ी	नसैनी, सोपान, जीना
205.	नूतन	नव्य, नवीन

206.	मदिरा	सुरा, मद्य, हाला
207.	गरमी	निदाध, ऊष्मा
208.	देवता	निर्जर, विवृधि, गीर्वाण
209.	मुनि	यती, तापस, संत

1. अंक - गोद, चिह्न, संख्या, अध्याय, भाग्य
2. अंग - शरीर, अवयव, शाखा, देह, अंश, सहायक
3. अंबर - वस्त्र, बादल, आकाश, गगन, अभ्रक
4. अतिथि - अग्नि, साधु, यात्री, अपरिचित, मेहमान
5. अज - अजन्मा, ईश्वर, ब्रह्म, बकरा
6. अंतर - हृदय, दूरी, शेष
7. अक्षत - कच्चा चावल, बिना घाव, समूचा, पूरा
8. अरुण - सूर्य का सारथी, लाल, सिंदूर, बाल सूर्य, कुमकुम
9. अमृत - जल, सुधा, दूध, गिलोय, मृत्युरहित, मुक्ति, पारा, स्वर्ण
10. अर्क - काढ़ा, सूर्य, इन्द्र, स्फटिक

11. अम्बर - वस्त्र, आकाश
12. अरूण - सूर्य, लाल, सिंदूर
13. अक्षर - वर्ण, नाशरहित, आत्मा
14. अपेक्षा - इच्छा, आशा, आवश्यकता
15. अधर - होंठ, बिना आधार का
16. अलि - भौंगा, कुत्ता, सखी, कोयल, कौआ, बिच्छू
17. अवैध - जारज, गैरकानूनी, नाजायज
18. अंबुज - कमल, शंख, ब्रह्मा, वज्र
19. आम - आम का फल, मामूली
20. आकर- स्नोत, खान, कोष, पहुँच कर

21. इंगित - इशारा, संकेत, अभिप्राय
22. उत्तर - जवाब, उत्तर दिशा, बदला, हल
23. ऊर्मि - पीड़ा, लहर
24. ऋतु - प्रसन्न, सज्जन
25. कनक - धूतूरा, सोना, गेहूँ, खजूर, टेसू
26. कर - किरण, हाथ टैक्स
27. कृष्ण - काला, कृष्ण भगवान
28. कटक - सेना, समूह
29. काल - मृत्यु, अकाल, समय, यमराज, अवसर
30. कुम्भ - घड़ा, हाथी के मस्तक के दोनों ओर का भाग, प्रयागराज का एक पर्व

31. खल - धतूरा, चुगलखोर, दुष्ट, तलछट, खरल
32. गुरु - अध्यापक, दीर्घ वर्ण, श्रेष्ठ, वृहस्पति, बड़ा, भार
33. ग्रह - तारे, कृपा
34. घोड़ा - बंदूक का खटका, शतरंज का एक मोहरा, एक पशु
35. घट - शरीर, घटा
36. चपला - बिजली, चंचल स्त्री
37. चाप - दबाव, धनुष
38. जरा - थोड़ा बुढ़ापा
39. जीवन - जल, प्राण, पुत्र, जिन्दगी, जीविका-निर्वाह
40. जलज - कमल, शंख, मोती, चंद्रमा, मछली, सेवार

41. टीका - तिलक, व्याख्या, फलदान, अभिषेक, टिप्पणी
42. ठाकुर - ईश्वर, देवता, मालिक, क्षत्रिय, नाई
43. तारा - नक्षत्र, आँख की पुतली, बृहस्पति की स्त्री, बालि की स्त्री, भाग्य
44. तलब - चाह, आवश्यकता
45. तात - पिता, गुरु
46. तेज - तीखा, प्रचंड, शीघ्रगामी, पैना, चरपरा
47. तम - अंधकार, अज्ञान
48. दारू - शराब, दवा, बारूद
49. द्विज - ब्राह्मण, पक्षी, दाँत, चन्द्रमा, क्षत्रिय, वैश्य
50. धात्री - माता, आँवला

51. निशाचर - चोर, गीदड़
52. नीलकंठ - शिव, मोर, एक विशेष पक्षी
53. नाग - साँप, पर्वत, हाथी, बादल, वायु का एक भेद, पान
54. निर्वाण - मोक्ष, शून्य, विश्राम, मृत्यु, संगम
55. नायक - सेनापति, मुखिया, छोटा सेनाधिकरी, नाटक का मुख्य पात्र
56. पानी - चमक, इज्जत, जल
57. पत्र- पत्ता, चिट्ठी, पंख, समाचार पत्र, धातु का पत्तर
58. प्रकृति - स्वामी, माया, स्वभाव
59. पुष्कर - कमल, तालाब, पानी, मद, आकाश, हाथी के सूँड के आग वाला भाग, सर्प, युद्ध

60. पत्र - चिट्ठी, पत्रिका, पत्ता
61. पट - वस्त्र, पर्दा, किवाड़
62. बलि - राजा बलि, उपहार, बलिदान
63. मुद्रा - आकृति, रूप, सिक्का, मोहर, अँगूठी, चिह्न, छापा, धन
64. मधु - शराब मदिरा
65. महावीर - जैन तीर्थकर, हनुमान, शक्तिशाली
66. योग- मेल, लगाव, कुल, जोड़, ध्यान, शुभकाल
67. वर्ण - अक्षर, रंग, जाति, रूप
68. वर्ण - अक्षर, रंग, चातुर्वर्ण्य, जाति रूप

69. सारंग - पपीहा, राजहंस, कामदेव, सर्प, धनुष, कमल, शंख, कपूर, रात्रि,  
घोड़ा, तालाब, केश, वस्त्र, मृग, चन्दन, चन्द्रमा, मोर, एक राग,  
दीपक, काजल, हाथी, दिन, फूल, चातक, सोना, मेघ, हरिण
70. सुरभि - सुगंधित, वसन्त, ऋतु, पृथ्वी, सुन्दर, गौ
71. सार - तत्त्व, निष्कर्ष, रस, रसा, लाभ धैर्य
72. हरि - मेढ़क, सर्प, सिंह, घोड़ा, हाथी, वानर, कामदेव, इंद्र, सूर्य, चाँद,  
यमराज, हंस, कोयल, हरा, रंग, ब्रह्म, विष्णु, महेश (शिव), आग, कृष्ण

## विराम चिन्ह

→ विराम का अर्थ- "ठहराव"

(१). अल्प विराम- जब वाक्य में ठहराव थोड़ी देर के लिए हो-

(क) तिथि बिखंते समाय → 26 जनवरी, 2024

(ख) जब वाक्य की शुरुआत में हाँ, नहीं, सचमुच, बेशक,

निससदैह, अच्छा, वस्तुतः आदि शब्द हों-

उदाहरण- हाँ, ठीक हैं।

(ग) जब और का बोध हो-

उदाहरण-

राम, मीहन और गणेश बाजार गए।

(२). अद्भुत विराम-

(;) जब वाक्य में अल्प विराम से थोड़ा अधिक ठहराव हो-

\* जिन वाक्यों में किन्तु, परन्तु, तरन्, क्योंकि, इसलिए, फिर भी जैसे शब्दों का इस्तेमाल होता है।

उदाहरण-

(क) वह बात तो करती; किंतु माँका नहीं मिल पाया।

(ख) वह केल होता रहा; फिर भी मैहनत नहीं करता था।

(३). पूर्ण विराम चिन्ह-

(।) जब वाक्य पूर्णता से खत्म हो जाए—

उदाहरण-

(क) रमेश ने मुझे खाना दिया है।

(ख) दोहरा, चौपाई, छँद की प्रथम पंक्ति में

(४). अपूर्ण विराम (उपविराम, न्यून विराम)

(॥) जब वाक्य में बात जारी रहे और आगे जानने की इच्छा हो।

(क) मुझे तेरी एक बात पता है: कि तू कल रुकूल नहीं गया।

(५). प्रश्नवाचक चिन्ह (?)

प्रश्न करने के लिए

(क) तुम कौन हो?

# ROJGAR WITH ANKIT

(6). विस्मय चिन्ह (!) - हृषि, शोक, कल्पना, भय, विरुद्धगत आहि को प्रकट करने के लिए - अर! औह! आह!

(क) पाह! क्या बात है।

(ख) आप दीर्घायु हो! }

(ग) आप शतायु हो! } आशीर्वाद के रूप में → अंत में

(7). सम्बोधन चिन्ह (!) -

(क) सुनिए! थहरे आइए।

(ख) खबरदार! आगे मत छढ़ना।

(ग) आईयो और बह्लो। देश का विकास प्राथमिक है।

(8). लाघव चिन्ह (०) - यह संक्षेप प्रदर्शित करने वेतु प्रयोग होता है।

डॉ. सिंहि

ईंजी. नवीन

पी. एच. डी.

बी. ए.

एम. बी. बी. एस.

ए. प्र०. य०.

(9). त्रुटि विराम चिन्ह/हंसपद चिन्ह (।)

(क) सुभ्राष-चंद्र बोस जी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे।

(म). थोजक चिन्ह/सामसिक चिन्ह/संबंध विराम चिन्ह (-)

(क) हृन्द समास के उदाहरण :- माता-पिता

(ख) दो विशेषण शब्दों के बीच :- मोटा-भारी

(ग) को विपरीत शब्दों के बीच :- मोटा-पतला

(द) जहाँ का का लोप हो -

भारत-सम्पत्ति

विश्व-संस्कृति

मातृ-मूल्य

(इ.) यदि शब्दों की पुनरावृत्ति हो -

हाँ-हाँ

नहीं-नहीं

# ROJGAR WITH ANKIT

(प) को अकिला पढ़ थाहि राय हो  
चवाना-पीना, नाचना-कूकना

(छ) अग्ना शलंकार के उत्तरणों में → चाँद सा युन्दर चैह्या।

(११). अवतरण/उद्भरण चिन्ह- : , „ „

(१) जगरुकर प्रसाद ने 'कामायनी' लिखा।

↙  
कोई प्रशिद्ध रचना  
आत्मना-चिन्ह

(२) उद्भरण चिन्ह का प्रयोग किसी प्रसिद्ध उक्ति या कथन के लिए होता है—

(क) सुभाष चंद्र बोस जी ने कहा, "तुम गुझे यून दो, मैं गुड़े आजानी दूँगा"

(३). तुल्यता व्याख्यक चिन्ह-

1 किलोग्राम → 1000 ग्राम  
1 किलोटन → 100. किलोग्राम  
1 टन → 1000 किलोग्राम

(४). कोष्ठक चिन्ह ( ) अधि को और अधिक स्पष्ट करने के लिए

(क) पैदानिक शब्दावाक्यलट (पराईंगनी) किरणों पर अनुरोधान कर रहे हैं।

(५). लोप चिन्ह (--- \* \* \* \*)

(क) स्वतंत्रता सेनानी हमारे दिल की ..... है।

(६). पाद चिन्ह/पाद टिप्पणी चिन्ह/तारक चिन्ह -

\* ↳ यह स्पष्टीकरण के लिए प्रयोग होता है।  
+  
;

(७). पुनरुक्ति/अनुवृत्ति चिन्ह „ „ „

(क) शोधिणी बाजार जा रही है।

(ख) आकांक्षा „ „ „

# ROJGAR WITH ANKIT

## (१). निदेशिक चिन्ह (-)

मनता को स्पष्ट करने के लिए

(क) आलंकार के तीन भेद होते हैं - छंदालंकार, शब्दालंकार,  
अभ्यालंकार

ROJGAR WITH ANKIT

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

CLASS-1

\* हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास -

(क) हिन्दी भाषा भारत की एक राजभाषा है।

\* आज पुनिया में लगभग 3000-3200 भाषाएँ बोली जाती हैं, जिन्हे 13 भाषा-परिवारों में बांटा गया है।

\* हिन्दी भारीपीय भाषा परिवार का हिस्सा है।

\* भारत में 4 भाषा परिवार हैं -

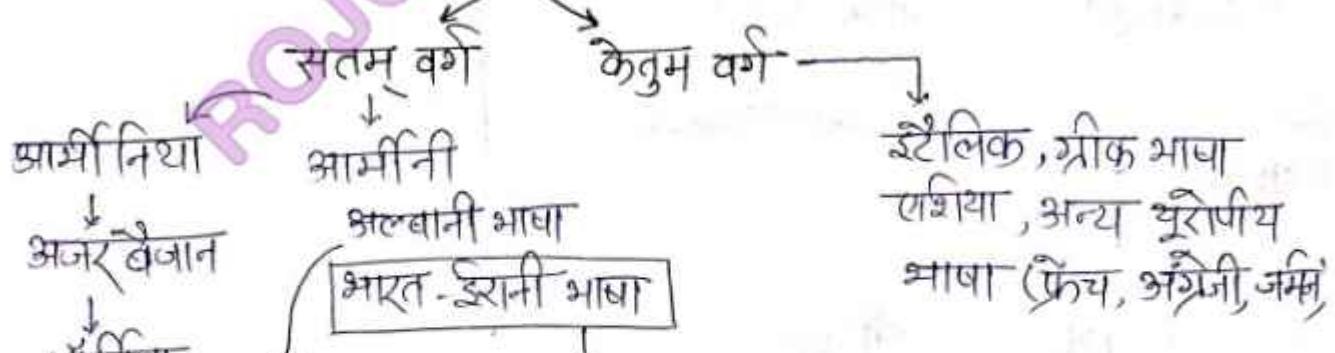
(1) भारीपीय (73%) → हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, महाराष्ट्री, लिखरी

(2) द्रविड़ (25%) → मलयालम, कन्नड़, तेलुगु, तमिल

(3) आँस्ट्रिक (1.3%) → फ़ारशी, पुर्वी एशिया

(4) चीनी तिब्बती (0.7%)

\* हिन्दी भाषा परिवार को दो वर्गों में बांटा जाता है -



(अल्वानिया) इसी परिवार का हिस्सा तंस्कृत भाषा है -

संस्कृत

(1) भारतीय आर्य भाषा

(2) दूरद

चैदिण → लोकिक → पालि → प्राकृत

अपभ्रंश

अवधाद

हिन्दी

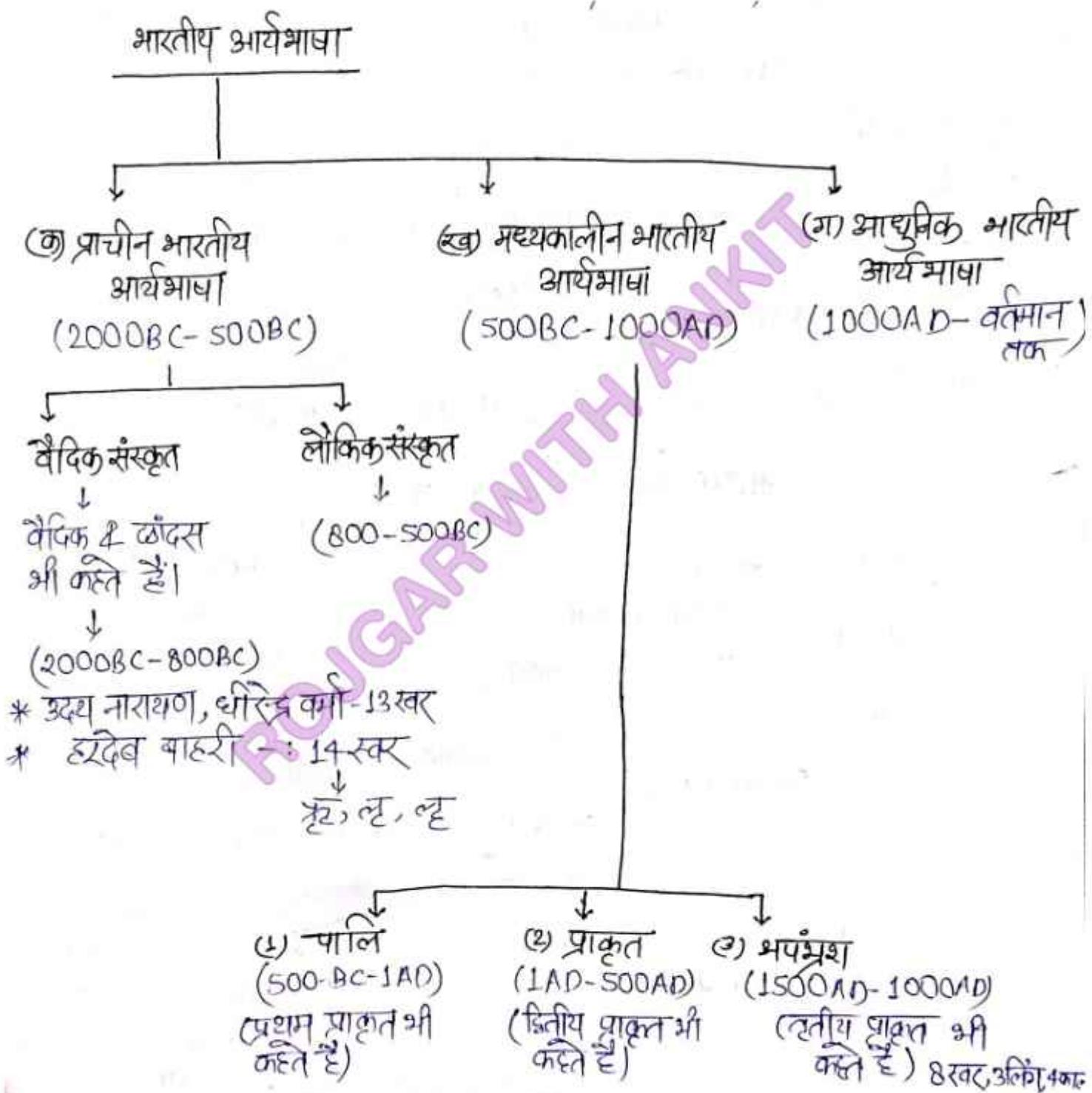
(3) द्वारानीन्

उद्धु, अखी, फारसी, फरी

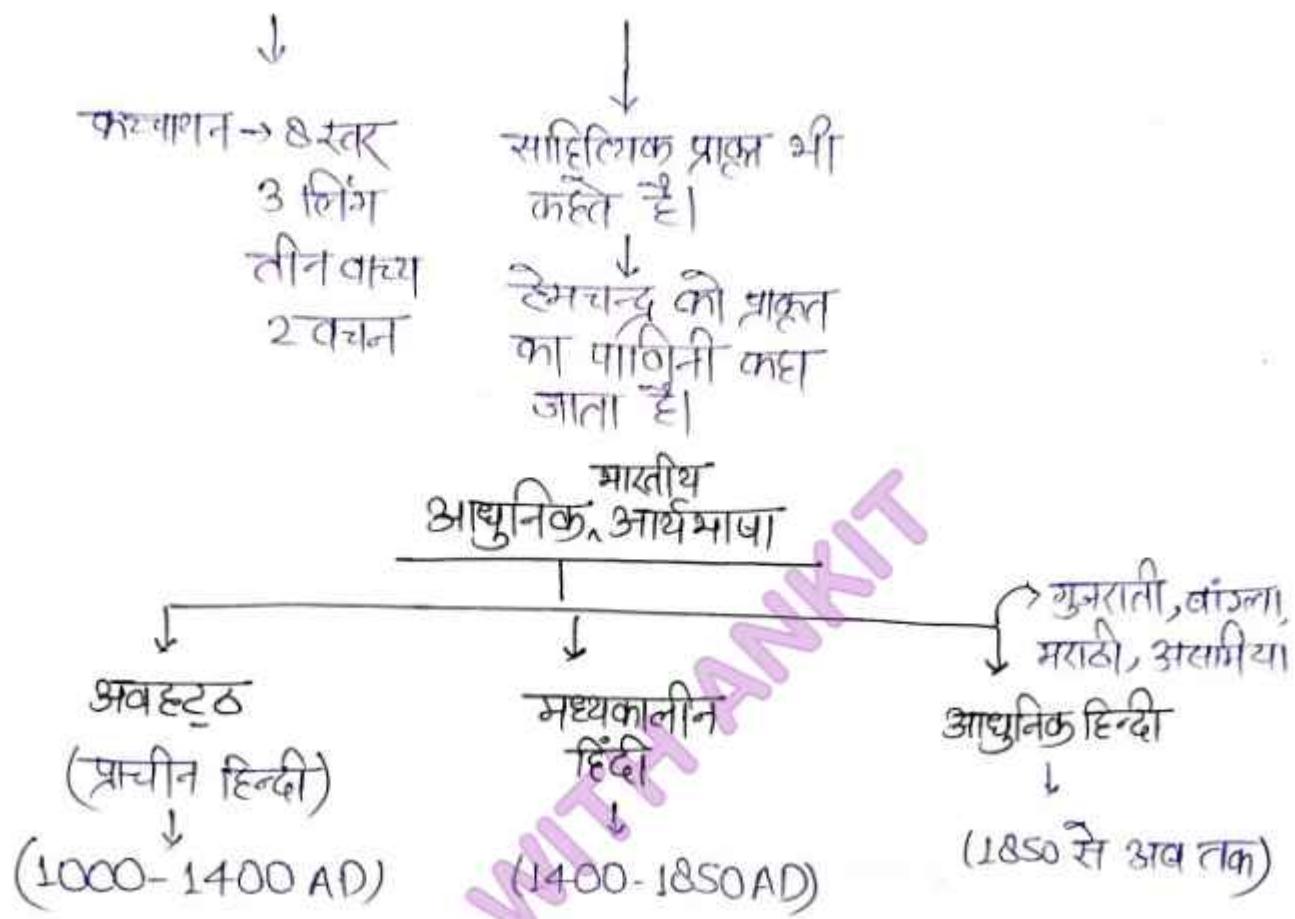
पश्तो आदि -

पंजाबी, उंगरी, कश्मीरी

# ROJGAR WITH ANKIT



# ROJGAR WITH ANKIT



# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

### PART-2

#### मध्यकालीन आर्थि भाषा



#### पश्चिमी हिंदी

- ↳ खड़ी बोली: हिंदुस्तानी, कैरवी, सराहिंदी भी कहते हैं - क्षेत्र NCR
- ↳ बंज भाषा: अंतर्वेदी भी कहते हैं। - क्षेत्र - मधुरा, एटा
- ↳ बांगरू: हरियाणवी भी कहते हैं। - क्षेत्र - रोहतक, हिसार, जीदूं
- ↳ बुदेली: झाँसी के आस-पास के जिने
- ↳ कन्नोजी: कन्नोज

#### पूर्वी हिंदी

- ↳ अवधी: अयोध्या के आस-पास के निले
- ↳ बघली: सतना, रीवा, होशंगाबाद
- ↳ छत्तीसगढ़ी: छत्तीसगढ़ में

#### राजस्थानी

- ↳ जथपुरी: जयपुर के आस-पास
- ↳ मेवात: हरियाणा और राजस्थान की सीमा
- ↳ मालवी: राज. से लेकर मू.प्र० तक
- ↳ मारवाड़ी: जोधपुर, गिरोहीर

# ROJGAR WITH ANKIT

**[पहाड़ी] → ①- शौरसेनी अपघंश**

- ↳ गढ़वाली: दून ध्रेत्र (UK)
- ↳ फुजांड़ी: नैनीताल, भल्मोड़ा (UK)
- ↳ पश्चिमी पहाड़ी: कुल्लू, मनाली (UK)

**[बिहारी] → ②- मागधी अपघंश**

- ↳ मण्डी: पटना के आस-पास
- ↳ ओजपुरी: पूर्वी ब्रह्मप्रदेश से पश्चिमी बिहार
- ↳ मैपिली: मुगेर के आस पास

NOTE १४ लोलियों को ५ अप-भाषा समूह में रखा जाता है।

\* हिंदी की उत्पत्ति:-

- हिंदी शब्द जा सबसे पहला प्रयोग निझीयन्तुर्भि भाषा में मिला है।
- हिंदी फारसी भाषा जा शब्द है।
- फारस धर्म के व्यक्तियों ने ही इसाहिंदी शब्द का सबसे पहले उच्चारण किया, जिसमें थह नाम देने जा श्रेय (अग्री खुररो) को जाता है।

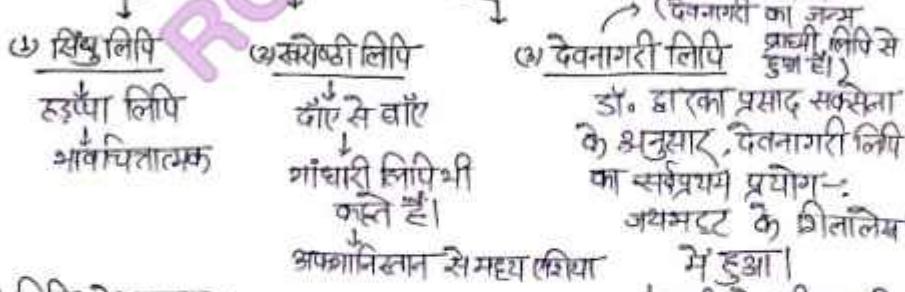
→ हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है।

→ भारत में लिपियों को ०३ बर्णों में लौटा गया है।

लिपि:- किसी भाषा

को लिखने का

तरीका



द्राघी लिपि की  
२ उल्लिखित हैं-



देवनागरी लिपि में सूचारः:-

\* बाल गंगाधर तिलक ने अपने पत्र केसरी के लिए छपियाने में १९० फॉन्ट जा प्रयोग किया जिन्हे "तिलक-फॉन्ट" कहते हैं।

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

### PART-3

#### \* देवनागरी लिपि में सुधारः

→ साक्षकर बंधुओं ने गाँधी जी की पत्रिका 'हरिजन' के लिए हिन्दी की 12 खड़ी तैयार की।

अ आ इ ई उ ऊ ए ओ औ अं अः

→ क ण कि की कु कु के कै को कौ कं कः;

→ डॉ. श्याम सुंदर नास ने पंचमास्त्र के स्थान पर अनुस्वार के प्रयोग की सलाह दी (उ, म, य, न, म ⇒ (-) दण्ड- दंड)

→ 1935 में नागरी लिपि सुधार समिति का गठन हुआ (समाप्ति: गाँधी जी, गठन किया।

→ डॉ. प्र० सरकार ने 1947 में आचार्य नरेन्द्र देव की अव्यक्षता में नागरी सुधार समिति का गठन किया।

→ राजा शिव प्रसाद सिंहरहिंद ने → नुक्ता के प्रयोग की सलाह

क् ख्, घ्, ङ्, झ्

→ हिन्दी एक राजभाषा है।

→ हिन्दी को राजभाषा [14 Sept] 1949 को स्वीकृत किया गया, इसलिए 14 Sept. को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।

विश्व हिन्दी दिवस →

10 Jan

→ संविधान की 8वीं अनुसूची में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस → 21 Feb  
22 भाषाओं के बारे में उल्लेख हैं-  
(भाग - 17 में)

→ मूल संविधान में 14 भाषाएँ थीं -

(1) कन्नड़

(5) हिन्दी

(9) ओडिया

(13) कर्मीरी

(2) मलयालम

(6) बांग्ला

(10) पंजाबी

(14) असमिया

(3) गोराठी

(7) तमिल

(11) सिंहल

(1) गुजराती

(8) तेलुगु

(12) उड़ि

# ROJGAR WITH ANKIT

21<sup>th</sup> संशोधन — रियो (1967)

→ 71<sup>th</sup> संशोधन — नीपाली, मणिपुरी, कॉकणी (1992)

→ 42<sup>th</sup> संशोधन — गोथिली, संघाली, डोंगटी, बोरा (2003)

## \* [राजभाषा आयोग]

→ 7 जून 1955 को राजभाषा आयोग का गठन हुआ (अध्यक्ष: B.G. चैर,

रिपोर्ट: 1956 में ही

(1 अध्यक्ष + 20 अन्य सदस्य)

रिपोर्ट: 1957 में संसद के समक्ष

↓  
संसद के द्वारा एक [संयुक्त संसदीय राजभाषा समिति] का गठन हुआ।

→ 20 सदस्य - लोकसभा

→ 10 सदस्य - राज्यसभा

→ अध्यक्ष: गोविंद वल्लभ पंत

दो स्थाई आयोग के गठन  
के निर्देश दिए

स्थापना

(1) राजभाषा (विधायी) आयोग: 1961

(2) कैजानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग: 1961

↓  
(A) राजभाषा अधिनियम: 1963

(B) राजभाषा नियम: 1976

## \* हिंदी व्याकरण:-

(1) डिक्षनरी ब्रॉक द हिंदुस्तानी लैंग्वेज : जॉन फार्नैसन

(2) भ्रजभाषा का व्याकरण: (1943)

राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण (1949) } किशोरी प्रसाद बाजेपेयी  
हिंदी शब्दानुशासन (1957) }

## \* हिंदी साहित्य के लेखन की परंपरा:-

→ सबसे पहले हिंदी साहित्य का इतिहास क्रेचभाषा में फ्रेंच विद्वान् 'गासो द तासी' ने लिखा।

पुस्तक का नाम: इस्तवर द लिटरेचर ऐन्ड हिंदुस्तानी  
History Literature Hindi Hindustani  
इतिहास साहित्य हिंदी स्थिंतानी

## ROJGAR WITH ANKIT

→ डरा फुरतक के 03 भाग हैं-

→ 1839 }  
→ 1877 } प्रकाशन वर्ष  
→ 1871 }

→ रसायनिक भै कुल 738 फवियों ना जिक्र हुआ।

हिन्दी वाकी भट्ट के कवि  
(72 कवि)

→ इस पुस्तक में कवियों की वर्णक्रम में रखा गया।

→ इस पुस्तक पा हिंदी अनुवाद

→ हिंदी साहित्य के इतिहास के लेखन का दूसरा मंथ 'शिव धिंह सेंगर' ने शिव धिंह सरोज नाम से लिखा।

→ फ्रेंच विद्यान 'जॉर्ज मिलसन' ने  
हिंदी साहित्य का इतिहास (1883, 838 कवियों का जिक्र)

१८ मॉडल वर्नाक्युलर लिटरेचर सांफ हिंदुस्तानी

हिंदी इतिहास का वास्तविक ग्रंथ (पहला)

अनुवाद → हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास नाम से हुआ।

अनुवादक : डॉ. किशोरी लाल गुप्त

→ **मिश्र वयुशो** ने 'मिश्र वंश विनोद' की स्थना की <sup>1957 में</sup>

→ गोश खिलरी, श्याम खिलरी, शुकदेव खिलरी ने लिखा।

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

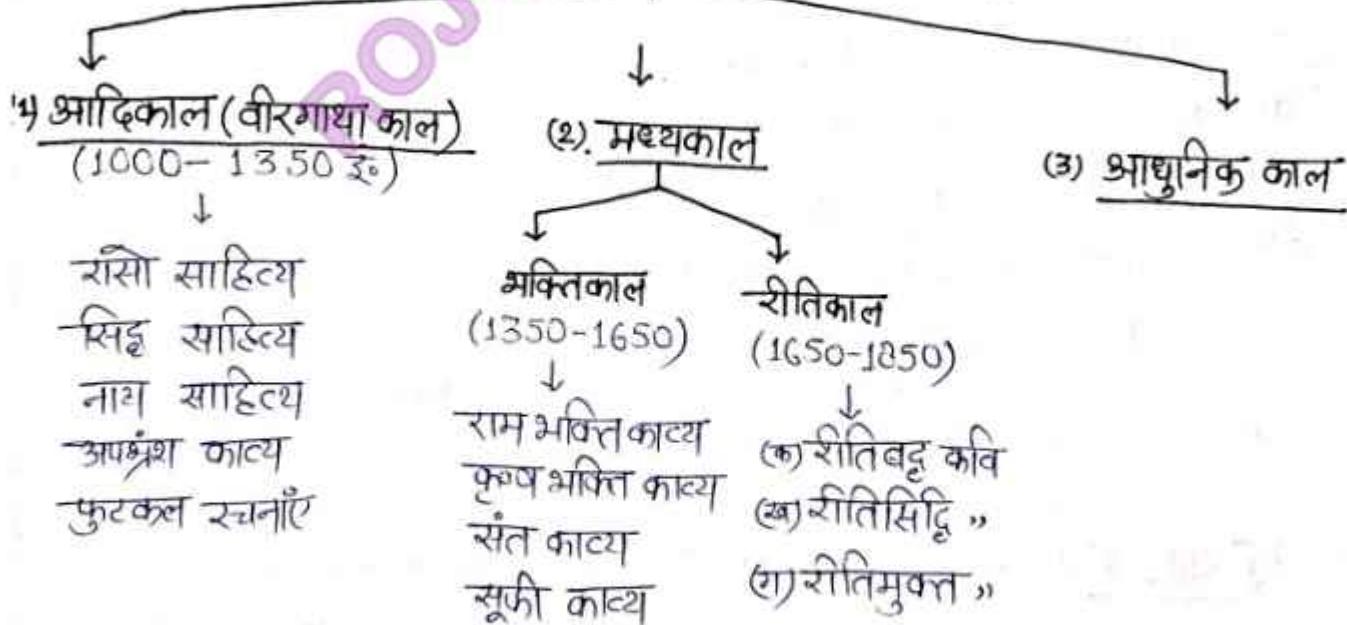
### PART-4

- 1848 में मोतीवी कमरुद्दलैन ने 'तजकिरा ए-शुआराइ' हिन्दी लिखा।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी 03 ग्रंथ लिखे-

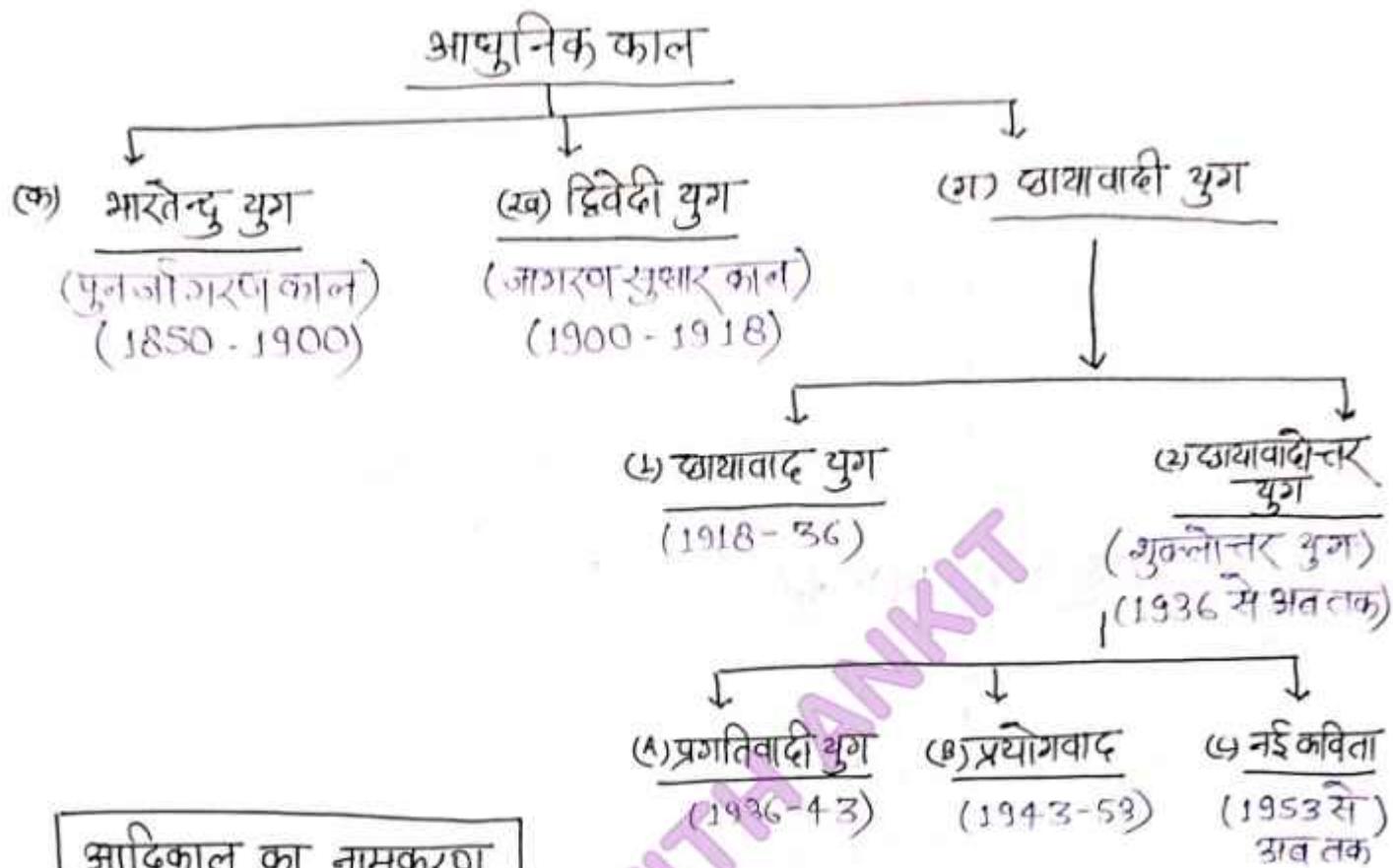
- (1) हिन्दी साहित्य का इतिहास (1940)
- (2) हिन्दी साहित्य: पुढ़भव और विकास (1952)
- (3) हिन्दी साहित्य: का आदिकाल (1952)

### हिन्दी साहित्य का विभाजन-

- रामचंद्र शुक्ल के भनुसार
- (A) आदिकाल → 1050 - 1375
- (B) भक्तिकाल (पूर्वमध्य काल) → 1375 - 1700
- (C) रीतिकाल (उत्तरमध्य काल) → 1700 - 1900
- (D) ग्रंथ काल (आधुनिक काल) → 1900 - 1984
- डॉ. नगेन्द्र का हिन्दी साहित्य का विभाजन:-



# ROJGAR WITH ANKIT



- (1) आदिकाल → हजारी प्रसाद द्विवेदी
- (2) चारण काल → डॉ. गियासेन
- (3) आधार काल → सुगन राजे
- (4) सिद्ध सामंत युग → राहुल सांकृत्यायन
- (5) वीरगाथा काल → रामचन्द्र शुक्ल
- (6) वीर काल → विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- (7) प्रारम्भिक काल → मिश्र बंदु
- (8) वीजिपन काल → महावीर प्रसाद द्विवेदी

- \* शीतिकाल को 'शीतिकाल' कहा → रामचंद्र शुक्ल
- " " 'स्ट्रंगर' काल → विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- " " 'भलंकृत' काल → मिश्र बंदुओं ने
- " " 'ग्रांडकार' काल → श्रिलोचन ने

⇒ सिद्ध साहित्य :- ढोइ धर्म की वज्रथान शारता से शम्भवित है।

- 'सिद्ध कवियों' की कुल संख्या राहुल सांकृत्यायन के अनुसार "४१" है।
- इनमें सरहणा को हिंदी का प्रयग करते गाना जाता है।
- सरहणा की रचना → शोषणीश

# ROJGAR WITH ANKIT

→ अन्य सिद्ध कीवि-: लुइण, डोंगिपा, आर्थिदेवपा  
चम्पकपा

- चर्णपद के लेखक : शत्रूघ्ना (सरहण के ग्रन्थ) (चर्णपद का अन्य नाम : चटपिद)
- लुइपादगीतिका के लेखक : लुइपा (सिद्धि में सबसे प्रमुख)

→ रासो साहित्य-: रासो नामकरण - शुक्लजी ने

सरहण के नाम

→ स्वरोजवज्ज्ञ सरहणद

<u>रासो</u>	<u>लेखक</u>
(क) पृथ्वीराजरासो	चन्द्रवरदाई (पूरी किया : जलहण ने)
↳ अप्रामाणिक : रामचन्द्रशुपल	↳ रुस्गी (अध्याय)
↳ अद्विष्टप्रामाणिक : हनुरीप्रसाद	↳ रसः वीर + शृंगार
↳ प्रामाणिक : श्यामसुंदरचास	

(ख) विजयपाल रासो → नलहसिंह भट्ट

(ग) रघुभल ठंड → श्रीद्वार

(घ) हम्मीर रासो → शार्दृग्रीष्म

(ङ.) राम रासो → समयसुंदर

(च) परमाल रासो → जगनिक (Eng. Translation : वाटफ़ील्ड)  
(आलहा खण्ड)

(छ) वीरलदेव रासो → नरपति नालह

(ज) रुमाण रासो → दलपति विजय

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

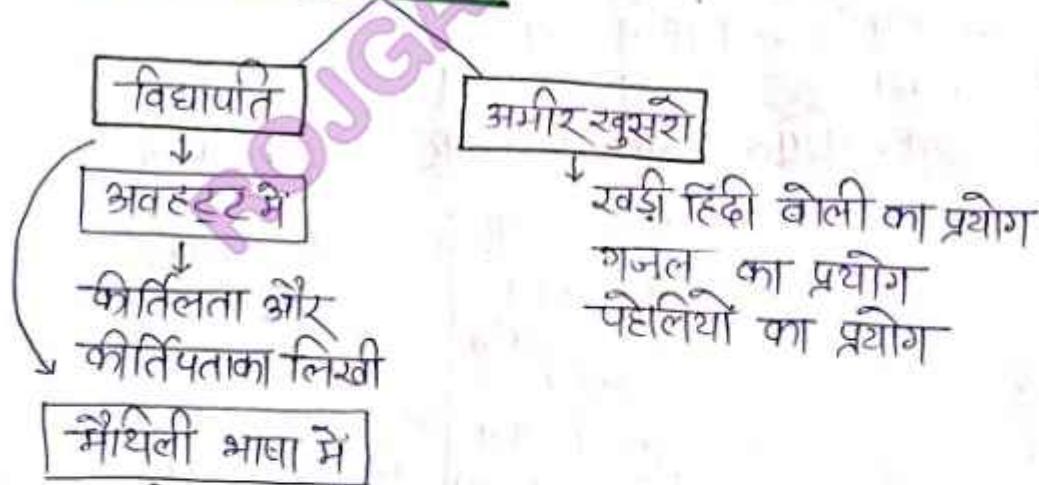
### PART- 5

\* नाथ सम्प्रदाय— शिव भक्तों का साहित्य

→ इसी सम्प्रदाय की कनफरा समुदाय भी कहते हैं।  
→ कुल नाथ कवि = 9

- (1). गत्रस्येन्द्रनाथ (उपनामः विष्णु शर्मा) → पुस्तकः जानकारिका
- (2). गुरु गोरखनाथ (सर्वसे प्रसिद्ध) → पुस्तकः गोरखबानी, प्राण राकली
- (3). जालंधार नाथ
- (4). चर्पटनाथ
- (5). चौरंगीनाथ
- (6). गहिठी नाथ
- (7). गोपीचंद नाथ
- (8). ज्वलिंद्रनाथ
- (9). भर्तनाथ

\* कुटकल और अपश्रंश खनाएँ—



पदावली ने गोरक्ष विजयनाटक  
लिखा

→ विद्यापति के अन्य नाम : मैथिल कोकिल,  
कवि शेखर

⇒ भक्तिकाल—

→ भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का खण्डकाल कहा जाता है।  
→ जोनि ग्रियर्सन ने

# ROJGAR WITH ANKIT

- अक्षितकाल को हजारी प्रसाद द्वितीयी जी ने लिए जगरण काल कहा है।
- अक्षितकाल की दो शाखाएँ हैं -

  - निर्गुण शाखा → ज्ञानाश्रथी शाखा :- इसका नामकरण शुक्ल ने किया।
  - संगुण शाखा →

## निर्गुण शाखा

- निर्गुण शाखा के प्रवर्तक : कबीरदास (शुक्ल, हजारी प्रसाद के अनुसार)
- कबीरदास के गुरु : रामानंद
- जन्म : 1398 : काशी
- मृत्यु : 1518 : मगहर
- स्वनाम :- साखी { खड़ी बोली + राजस्थान } राखी, शब्द, रमेनी का संकलन इनके लिये धर्मदास ने 1464 में बीज्जन नाम से लिखा।
- शब्द  
रमेनी
- प्रजा भाषा + बुवी हिन्दी

\* संत रैदास :- (1388-1518)

- गुरु : रामानंद
- मेरालाई के गुरु
- मन चंगा तो कठोरीती में गंगा
- धूप क्षेत्र पूटे राम नम रट जागी।

\* गुरु नानक :- अपूर्णा, नसीहत नामा, असदीबार रचना के लेखक

\* दादू दक्षाल :-

## कबीर की भाषा

(1) पंचमील खिचड़ी  
(श्याम सुंदर दास के अनुसार)

(2) संधुक्कड़ी भाषा  
(शुक्ल के अनुसार)

(3). दाढ़ी ला डिक्किटर  
जीरदारा को 'हजारी' प्रसाद ने कहा।

कबीर संप्रदाय :	कबीरदास
सिख "	शुक्लनानक
उदासी "	भीचंद
सत्यनामी संप्रदाय	जगदीन
निरंजनी संप्रदाय :	हटप्रसाद

⇒ निर्गुण शाखा (सूफी शाखा) बैशरा शाखा

- भारत में सूफी शाखा के प्रवर्तक : मोइनुद्दीन चिश्ती
- इस शाखा की पहली रचना असाज्जत की 'दंगातली' की माना जाता है।
- शरा (हिंदू) → बैशरा (सूफी)
- लेखक रचना
- ↓      ↓      ↓ (1370 AD)

# ROJGAR WITH ANKIT

लेखक रचना

मुल्लाशूद → चंद्रायन (लोरकहा, लोरकया)

शेख नबी → ज्ञानदीप

मालिक मो. जायसी → पदमावत, चंहावत, अखरावट, आखिरी कलम  
नूर मोहम्मद → (1540 AD) इद्रावती

कुतुबन → मृगावती

कासिम शाह → हँस जवाहिर

ईश्वरदास → सत्यवती कथा

मँसन → मधु मालती

जटमल → प्रेम विलास, प्रेम लता

नरपति व्यास → नलदम्यंती

एकमात्र हिन्दू लेखक

“पंजाब का सुरक्षास”

उस्मान → चित्रावली

समुण्डारा

# हिन्दी साहित्य

## Part - 6

### \* संगुण धारा :-

संगुण धारा के प्रतिपादक आदिगुरु शंकराचार्य को माना जाता है जिन्होने अद्वैतवाद दर्शन दिया।

माद्वाचार्य : द्वैतवाद

वल्लभाचार्य : शुद्धाद्वैतवाद

रामानुजा चार्य : विष्णवाद्वैतवाद

निम्बर्काचार्य : द्वृताद्वैतवाद

→ दक्षिण में अलवार & नयनार संत दुष्ट।

अलवार → विष्णु के उपासक (वैष्णव)

नयनार → शिव के उपासक (शैव)

\* अलवार संतों की कुल संख्या = 12 {अलवार संतों में सबसे लोकप्रिय 'शठकोप' है}

\* नयनार संतों की कुल संख्या = 63 {एकमात्र माटला सत: अंडाल (गोदा) }  
↓  
द. भारत की मीरा

### \* संगुण धारा (शम भक्त शाखा)

\* रामभक्त (संगुण धारा) शाखा के प्रथम कवि = तुलसीदास  
 • जन्म स्थान : सोरों (रुटा) : उजारीपुसाद के अनुसार  
 राजापुर (बांदा) : रामचन्द्र शुक्ल, शिव सिंह सेंगर

- (1532-1623) : जीवनकाल
  - ↓  
वाराणसी (अस्सीघाट)
- पिता  $\Rightarrow$  आत्माराम दूबे, माता  $\Rightarrow$  दुलसी, पत्नी  $\Rightarrow$  रत्नावली
- तुलसीदास की रचनाएँ :-

- |                    |           |
|--------------------|-----------|
| 1) वैराग्य संदीपनी | } पंचरत्न |
| 2) राम लला नटहुँ   |           |
| 3) जनकी मंगल       |           |
| 4) पार्वती मंगल    |           |
| 5) बर्खे रामायण    |           |

- 6) गीतावली (पदाकली रामायण)
- 7) कवितावली (द्वनुमान बाहुक)
- 8) दोषावली
- 9) विनयपत्रिका
- 10) कृष्णगीतावली
- 11) रामज्ञा पुरनः
- 12) रमचरित मानसः

- इसमें 5 बड़े और 7 छोटे ग्रन्थ हैं; इस प्रकार तुलसीदास जी के कुल 12 ग्रन्थ धारानिक माने जाते हैं।
- उपनाम (तुलसीदास) :- कलिकाल का वाल्मीकि : नाभादास  
मुग्लकाल का सबसे महान् व्यक्ति : स्मिथ  
जातीय कवि : रामविलास शर्मा  
मानस का हंस : अमृतलल नगर
- तुलसीदास के गुरु :- नरदीर्दिदास (नरआर्थदास)

कृष्णगीतावली, वैराग्य संदीपनी,  
कवितावली, विनयपत्रिका  
दोषावली, गीतावली

$\vdash$ : ब्रजभाषा, बाकी रचनाएँ अवधी  
भाषा में।

- तुलसीदास जी ने पहली बार रामचरितमानस, रसखान को  
सुनाई।

- नाभदास ने 'भक्तभाल' की स्चना की।
- के शवदास :- रामचंद्रिका  
(1555-1617) : रसिकपिया  
: रत्न बावनी  
: विज्ञानगीता  
: नखरीख  
: द्वन्दमाल
- रामचंद्रिका की ईर्ष्या में 'कृष्ण-चंद्रिका' को → गुमनाम कवि ने लिखा
- माधवदास चरण → रामरासो
- रायभूल पांडे → हनुमच्चरित
- जालदास → अवध विलास
- \* समुण्ड धारा (कृष्ण भावत शाखा)

- प्रतिपादक : निष्ठाकार्त्तिचार्य (स्चना : दशरथलोकी)
- श्रीभट्ट और उनके शिष्य द्विरिव्यास देव ने इस शाखा  
को { आगे बढ़ाया। }  
पुगल शतक } स्चना से } महावाणी (स्चना)  
जाग्रिवाणी }
  - जयदेव ने 'गीत गोविंद' की स्चना की।
  - वल्लभाचार्य ने { पूर्व मीमांसा भाष्य }  
(उत्तर मीमांसा भाष्य)  
अषुभाष्य (अषुरा) → इसको पूर्व इनके  
पुत्र विठ्ठलनाथ ने किया।

- 1565 में विठ्ठलनाथ ने अपने 5 शिष्यों और वल्लभाचार्य के 4 शिष्यों को मिलाकर 'अष्टद्वाप' स्थापित किया।

- 1) कुम्भनदास (UP) → पहले उष्टाहापी कवि
- 2) कृष्णदास (Guj)
- 3) सुरदास (UP)
- 4) परभानंददास (UP) → वल्लभाचार्य
- 5) द्वीतस्वामी (UP)
- 6) गोविंदस्वामी (Guj/Raj)
- 7) चतुर्भुज दास (UP)
- 8) नंद दास (UP)

- **सुरदास :** { शुरसागर : ५१३६ पद : इसमें ३ भ्रमरगीत लिखे गए हैं।

1478 - 1583 } सुरसारावली : ११०७ पद  
 ↓              ↓  
 आगरा    मधुरा } साहित्य लघरी : ११८ पद

- रसखान (संचयद इब्राहिम)

(1533-1618) : दानलीला  
 : सुजान सागर  
 : सुजान रसखान  
 : चेमवाटिका  
 : अष्टद्वाप

- मीराबाई : (1516-1546) :

: नरसी जी का मायरा, गीतगोविंद की टीका, रागगोविंद  
 : गुरु : संत रंदास

\* रीतिकाल :

## हिन्दी राहित्य

### PART - 7

रीतिकाल

रीतिवट्ट

रीतिमुक्त (स्वचंद्र धरा)

- रीति को अनंगृत काल कल → मिश्र बंधु
- रीति काल → ग्रियर्सेन
- अंशकार काल → त्रिलोचन
- झूँगार काल → विज्ञनाथ मिश्र

→ रीतिकाल के प्रवर्तक : चिंतामणि तिपाठी

↓  
रचना : रामायण  
झूँगार मंजरी  
रस विलास

भूषण : शिवराज भूषण  
ठन्त्रशाल दशक  
शिवा बावनी

घनानंद : सुजान सार

⇒ चिंतामणि, भूषण → रीतिवट्ट कवि

घनानंद → रीति मुक्त

प्रिखारी दास : गतरंज शतिका

मतिराम : ललित ललाम, फूलमंबरी, रसराज

किलारी लाल : बिलारी सतसई

↳ 719 दोहे

छजभाषा के  
कवि

आधुनिक काल

- भारतेन्दु काल
- भारतेन्दु काल के प्रवर्तक : भारतेन्दु हरिष्चन्द्र (1850 - 1885)
- भारतेन्दु काल की हिन्दी का पुनर्जीवरण काल कहते हैं।
- भारतेन्दु का छपनाम : रसा
- शुरू → शिव प्रसाद, हिंद सिलाइ

रचना-: प्रेम मालिका, द्वारी विलाप, प्रेम सरोवर, प्रेम गायुरी, प्रेम फुलवारी,  
फूलों का गुल्हा, विजयी विजय, विजय वेंजाथी  
तर्षा विनोद

### भारतीन्दु मण्डल के कवि

- (1). वद्धीनारायण चौधरी → वही बिन्दु, लालित्य नहरी
- (2). प्रताप नारायण भिन्न → प्रेम तुलपाली
- (3). डॉ. जगमीहन सिंह →

देवदानी  
तत्कालीन मेचदूत का ब्रजभाषा में अनुवाद  
(4). अमितका कन्त व्यास → हो ही होरी

### द्विवेदी युग → 1900-1918

→ जगरण सुधार काल

→ डॉ. नेशन्द्र ने कहा है।

• श्रीदर पाठ्क : नुणवंत हूमंत (खड़ी बोली की पहली कविता)

: कश्मीर सुधमा

: बनाइट्क

: श्रमरन्ति

• मलवीर प्रसाद द्विवेदी : झंगा लहरी

: काव्य मंजूबा

• श्योदया सिंह उपाध्याय 'हरिशंख' : आधुनिक काल का सूरक्षास

प्रथम प्रवास (पुर्व नाम: ब्रजांगनाविलाप) (गणिपति नंद गुप्त ने कहा)

मंगला पास्तीषिक

शुरुकार प्राप्त

प्रथम प्रवास (पुर्व नाम: ब्रजांगनाविलाप)

→ खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य

: देही बनवास

: चौखी चौपड़े, पुञ्जी चौपड़े

: प्रेम प्रफंच

: वारिजात

: रशफलश

: कल्पलता

• मैथिलीशरण गुप्त (आधुनिक युग का तुलसीलाल)

: जयद्रुष्ट वद्य (1910)

किसान

शुरुकान

संकार

झापर

साकेत

आत्म भारती (1912)

पर्वती

मैहानाथ वद्य

इसी स्पर्श के लिए M.K. गांधी ने इन्हें राष्ट्रकवि कहा।

## द्विवेदी गंडल से बाहर के कवि

- (1) कामता प्रसाद शुक्लः पद चुन्पावलि  
 ↓  
 विनय पचासा  
 भौमायुरवद  
 हिंदी भाषा के लगिनी
- (2) मुकुट दर पाठियः कानन कुसुम  
 छायावाद → 1919-26

छायावाद का नामकरण मुकुटदर पाठिय ने किया।

- |                        |  |                     |  |
|------------------------|--|---------------------|--|
| छायावाद के<br>चतुर्थदर | 1. सुभित्रानदन पति (विष्णु)<br>2. जयशंकर प्रसाद (बैद्या)<br>3. सूर्यकान्त त्रिपालि निताला (महारा)<br>4. महाकली तर्मा<br>5. रामकृष्णार वर्मा<br>6. भगवती चर्ण वर्मा |                     |  |
|                        | छायावाद के लघुतथी  | छायावाद के वृद्धतथी |  |
|                        |  |                     |  |
|                        |  |                     |  |
|                        |  | छायावाद के लघुतथी   |  |
|                        |  |                     |  |
|                        |  |                     |  |

जयशंकर प्रसाद — शुक्ल - भौमिनीलाल

अनाम — कलाचर

पहली कविता — 1906 : सावन पंचक

पहली छायावादी कविता : 1919 प्रथम प्रगत

चनाएँ — : उर्वशी (1923)

→ चम्बुकाल्य (गंध + पद)

: झरना (1924) :- वहली प्रथोगवाला

रचना, छायावाद की पहली रचना

: आँखु (1925)

→ दिली भाषा का मेघदूत

: कामापनी (1935)

→ इलम 15 भर्ग है. → मनु, खंडा, रहा

→ यहे छायावाद का अनिवाद फैलते हैं।

: लहर

2) सूर्यकान्त त्रिपालि निताला —

अनामिला 1923

तोड़ती पत्थर

रमनी शमिल पुजा  
 परिमिल — सांच्य चुंदरी, गृही की कली,  
 शिलुक, वाले राग

प्रथम काव्या  
 गृही की कली

कुकुरमुला (1942)

- : नरो पल्लो, तेला (१९१६)
- : गीतिका (१९३६)
- : अचीना (१९५०)
- : सांख्य कान्ती (अंग्रेजी भाष्य संग्रह)

- (३) सुग्रीवानंदन पते-
- : उद्घट्टन (प्रथम व्यायावाली स्वना)
  - : पल्लव
  - : वीणा
  - : लोकायन
  - महात्मा गांधी के जीवन पर**
    - : भुजान्त
    - : युग्मवाणी
    - : चिप्पघरा → १९६०: रामपाठ चुरस्कार
    - : फाला और बुद्ध चैंडे

- (४) मध्येकी कमी-
- आधुनिक युग की मीरा**
    - : नीषार (१९३०)
    - : आगा (१९४०) → १९८२ में रामपीठ
    - : नीरजा
    - : रमिन
    - : दीपशिखा
    - : सांख्यगीत

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

### PART-8

- राष्ट्रीय गांरकृतिक शारा के कवि-
- मारवनलाल चतुर्वेदी (उपनामः एक भारतीय आत्मा)
  - हिमकिरिटनी (1943)
  - हिमतरंगिणी (1949)
  - रामर्घण
  - केदी भाँर कोकिला
- बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
  - कुमकुम
  - रश्मि रेखा
- सुभ्रानुगारी चौहान
  - जलियाँवाला बाग
  - साँरी की रानी
  - त्रिद्वारा
  - मुफ्फल
  - झण्ड की झज्जत में
  - स्वदेश के प्रति

**द्वायावदोन्तर (1936-42)**

- 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई।
  - लेखनक्र में
  - प्रथम प्रश्न्यकः मुंगी प्रेगचंद्र
- केदारनाथ अग्रवाल (वलिन्दु)
  - बोल-बील-अबोल
  - जो शिलाएं तोड़ते हैं;
  - कापूरी
  - फूल नहीं रंग बोलते हैं।
  - नीह के बादल
  - युग की गंगा
- नागार्जुन (उपनामः भारत का राजनीतिक कवि, यात्री)
  - त्यासी पथराइ भाँखि
  - भर्गांकुर
  - तुम्हें कहा था—
  - बादलों को घिरते देखा हैं।
- शितमंगल रिंग 'सुमन' मिट्टी की बारात
  - हिल्लोल
- वासुदेव रिंग 'त्रिलोचन' प्रस जनपद का कवि है
  - ताप के ताएँ हैं दिन

# ROJGAR WITH ANKIT

→ धर्मवीर भास्ती

ठण्डा लोहा

आँधा युग

कनू प्रिया

देशांतर

→ जगानन माधव 'मुकिलबीय'

चौंद का मुँह टेढ़ा है

भूरि-2 खाक धूल

→ रवीश्वर द्याल स्कैप्टा

खुटियों पर टैगे लोग

एक सूनी नाव

जंगल का छड़ी

→ रामधारी सिंह दिनकर

(उपनाम :- डिल्ली राज्यकवि, उत्तरीयों का गाति, समय सूर्या)

उर्वरी (1935) → 1942 में जानपीठ पुस्कार प्राप्त

आत्मा की बाँखें

परशुराम की पतिष्ठा

कुलदेश

रसातली

दंगार

रघुनाथ

रामरत्नी

इतिहास के शाँख

→ सचिनकान्द हीरामन्द 'तारसाप्तक' चिंता

4 तारसाप्तक जारी किए।

पहला तारसाप्तक - 1943

द्वितीय " - 1951

तीसरा " - 1959

चौथा " - 1979 (चौथी तारसाप्तक का श्रेयः नाम्पत्र  
ऐसा कोई घर शापने को जाता है। सिंह  
इत्यलप्य)

हरी धासु पर धूण पर  
कितनी नवों में जितनी लार (1967)

आँगन के पर झर (1961)

किंता

सुनहली शैवाल

सूर्वी

असाध्य वीणा

अग्नेदुर्त

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिंदी लेखकों

चतुर्भूज चतुरेश— हंडी का फ़ैलारा

ईश्वरी प्रसाद शर्मा— नवा-चौलेना

रणधेर रिह लम्हुर— इनी आपने पास, कहीं लहूत दूर गे युन रसा है।  
हरिंश राण 'बंजन'

मधुशाला (1935)

मधुवाला (1936)

मधुकालश (1937)

एकात् संगीत

प्रानेपश

हला हल

खादी के फूल

## हिंदी गद्य ज्ञानिकास

→ हिंदी गद्य की पहली रचना : वर्ष रत्नाकर (मौखिकी भाषा में)  
लेखक → नवातिरिक्तरी ठाकुर

→ खड़ी बोली गद्य की पहली रचना : गोरा बादल की कहानी

लेखक → जटमल  
→ गोकुलनाथ (पिट्ठूनाथ के पुत्र) ने "४४ वेष्णवी की तारी" और '२५२ वेष्णवी' की वार्ता  
अंग्रेज लिखी।

→ सूरति मित्र ने १७६७ में 'वेताल पञ्चिसी' को लिखा

↪ खड़ी बोली में अनुवाद → मजहर अली लल्लू लाल  
↪ वेताल पञ्चिसी

लल्लू लाल— मादाव विलास

सिंहसन वल्लीसी

भैसागर

सदायुख लाल नियाज— सुखसागर

सुंदरवन्त तारिया

इशा कला न्यौ— रघी केतकी की कहानी (अथ नाण-उदयभान चरित)

↪ हिंदी की पहली मौखिक गद्य कथा

राजल मित्र— नासिकेतोपारत्यान (चंद्रावली)

पत्रकारिता—

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिंदी साहित्य

### PART-9

#### \*पत्रकारिता:

"गण्डीश हिंदी पत्रकारिता दिवस"

→ हिंदी भाषा की पहली साप्ताहिक पत्रिका -: उद्धंत मार्टिन्ड (30 मई, 1826)

सम्पादक -: पंडित जुगल किशोर

प्रकाशन -: कलकत्ता

→ हिंदी भाषा की दूसरी पत्रिका -: चंगदूत - कलकत्ता : राजाराम मोहन राथ

→ हिंदी भाषा की चौहला दैनिक पत्र -: समाचार सुधावर्धण (कलकत्ता)

→ उ०प्र० की पहली साप्ताहिक पत्रिका -: बनारस अखबार (1845)

सम्पादक -: श्याम चंद्र दास

सम्पादक -: शिव प्रसाद सिंहरे हिंदू

→ उ०प्र० का पहला दैनिक पत्र -: हिंदौस्ता (1887)

→ रचना - राजा गोग का सपना

: प्रतापगढ़

: राजा रामधान

#### हिंदी नाटक

-पिता

→ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार, गौपालचंद्र गिरिधर दास हारा रचित 'नुहू' को प्रथम नाटक माना गया है।

→ दूसरा नाटक -: शकुनेला (लेखक - राजा लक्ष्मण सिंह)

#### भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

: भारत दुदेशा (1880) : हिंदी भाषा का पहला मौलिक

: अधिर नगरी (1881) : राजनीतिक नाटक

: वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति

: सती प्रताप (अधूरा) - कृष्णदास ने पूर्णी

: नील देवी

: भारत जननी

: विदा सुंदर (पहला नाटक)

#### हरिश्चन्द्र की मैंजीन -:

: कविवचन सुधा (1867-68) : वाराणसी

: हरिश्चन्द्र मैंजीन (1873)

: बाला बोधिनी (1874)

→ हिंदी भाषा का पहला दुःखान्त नाटक -: रणधीर सेम मोहिनी (लेखक - श्री निवास, फौस)

→ माखनलाल चतुर्वेदी -: कृष्णजुन युद्ध

→ गलवीर सिंह -: नल कग्यांती

# ROJGAR WITH ANKIT

- लक्ष्मी प्रसाद - : अर्जी (नाटक)
- जयशंकर प्रसाद - : राजन (1910) - जयशंकर प्रसाद का पहला नाटक  
 : कल्याणी  
 : फ़रुणालय  
 : आजातशत्रु  
 : रक्तदग्धुल  
 : धूतस्वागिनी  
 : राजकी  
 : कामना  
 → ईमचंद - : जनोजय का नामदाता  
 : प्रायशिचत  
 : विशाख  
 : चन्द्रगुल  
 : कविला  
 : संग्राम
- रामवृक्ष बेनीपुरी - : आमलपाली
- अयोध्या सिंह व्याह्याय - : रुक्मिणी परिणाथ
- विष्णु प्रभाकर - : डॉक्टर, युग-युगे जीति
- गोविंद पल्लभ पंत - : यथाति
- अज्ञसाहनी - : हानुश, जविरा खड़ा बाजार में
- मोहन राफेश - : आषाढ़ का एक दिन (1958)  
 आद्ये अधूरे  
 लहूरी के राजहंस  
 अण्ड के छिलके  
 चैर तले की जमीन
- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - : बकरी
- उपेन्द्र नाथ ('आश्क') - : अब नरीबी हटाओ
- हजारी प्रसाद द्विवेदी - : बाणगट्ट की आत्मकथा

## एकांकी

- हिंदी साहित्य का पहला एकांकी : एक घुट (जयशंकर प्रसाद)
- अगवती चरण वर्मा - : सर्वेसे बड़ा आदमी 1930
- विष्णु प्रभाकर - : प्रकाश और पर्खाई
- धर्मवीर भारती - : नदी व्यासी थी

# ROJGAR WITH ANKIT

→ डॉ. रामकुमार वर्गी-: रेशमी टट्टू  
 कौमुदी गहोत्राव  
 पृथ्वीराज की ओंचे

**हिन्दी उपन्यास**

→ हिन्दी का पहला उपन्यास-: परीक्षा शुरू (1882)

→ अयोध्यासिंह आश्चर्य-: लाला श्री निवास दास

: ठेठ हिन्दी का ठान (1899) - गुहारों की पढ़ग  
 : अद्याखिला फूल पुस्तक

→ देवकीनंकन खत्री-: चन्द्रकाला (1888)

: अनुठी बैगम

: भूतनाथ (अद्यूरा)- दुर्गादिस खत्री ने पूर्ण

→ बालकृष्ण भट्ट-: सौ अजान एक सुजान : हिन्दी का पहला अद्यतिप्रथम

: नूतन ब्रह्मचारी उपन्यास

→ राधा कृष्ण दास-:

निरस्सहयादिंदु : पहला उपन्यास जिसमें मुहिलम समाज

→ कुँकूर हेमत सिंह-:

चन्द्रकला : " " " " स्त्रियों के बलात्  
 बीखण का अंकन

**मुंशी चैम्चंद (1886-1936)**

जन्म-: लमही, वाराणसी

→ मूल नाम-: धनपत राय

→ चैम्चंद नाम उद्दे के प्रयोग कवि दयानारायण विग्रह ने दिया।

→ इनको उपन्यास सम्मान 'शरतचंद्र चटोपाध्याय' ने कहा।

→ इन्हें शुरुआती रचनाएँ 'नवाब राय' नाम से थीं।

→ हिन्दी में मूल रूप से पहला उपन्यास-: काथाकल्प

→ पहला उपन्यास-: असरारे मुमाविद (उद्दे) (1903-05)

→ उपन्यास-: सेवासदन (1918)

वरदान (1921)

प्रिमाश्रुम (1922)

रंगभूमि (1925)

निर्मला (1927)

शबन (1931)

कर्मशूमि (1933)

गोदान (1936)

प्रतिशा (प्रिमा का नाम बदलकर)

मंगलसूत्र (अद्यूरा)

# ROJGAR WITH ANKIT

- जयशंकर प्रसाद - : कंकाल  
: तितली  
: ब्रावती (अधूरा)
- सूर्यकान्त तिपाठी 'निराला' - : बिल्लीसुर बफरिहा  
: कुल्लीभाट  
: निरुपमा  
: अपारा
- जीनेन्द्र - : त्यागपत्र  
: परख  
: सुनिता  
: मुकिलबोध  
: सुखदा, कल्याणी
- सच्चिदानन्द सियनैंड वात्स्यायन 'अद्वैय' - : भेखरः एक जीनी  
: नदी के द्वीप
- विष्णु प्रभाकर - : अद्वैनारीश्वर  
: संकल्प

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

### PART - 10

⇒ भगवती-चरण वर्णा :-

- : पतन
- : शंकुचैत्र
- : चत्त्वारी राजीवी वात
- : चित्रलेखा
- : भूते-विषये चित्र
- : टैटू-भेटू-रामेत्र

⇒ राहुल सांकृत्यायन :-

- : शिंह रेनापति

⇒ अमृतलाल नागर :-

- : मानस का हृदय
- : सुहाग के नुपर
- : अमृत और विष्णु (1966)
- : दूँढ़ और समुद्र

⇒ चतुरसेन शास्त्री :-

- : तीर्थाती की नगरवाच्य

⇒ रामेय राघव :-

- : गुरु का टीला

⇒ हजारी प्रसाद द्विवेदी :-

- : पुर्णनेता
- : वाठभट्ट की आत्मकथा
- : अनामनास का चीड़ा
- : चाहू चंद्र लैख

⇒ श्री लाल शुक्ल :-

- : राज क्लवारी
- : अज्ञातवास
- : सूनी धाटी का सूरज

⇒ फणीश्वर नाथ रेणु :-

- : मैला झाँचल
- : किलने चारहे
- : परती परिकथा

## ROJGAR WITH ANKIT

⇒ वैद्यनाथ मिश्र - : तलचनमा

: गतिनाथ की चाची  
: परो

⇒ रजिन्द्र थार्डः

## १० शाहू-बोर्ड-ग्रात

- एक छंच गुस्ताका (गहलौटिका - मन्त्र अडारी)
- उरवडे हुए लोग

⇒ धर्मपीर भारती :-

→ : गुलामी का देवता

- सूरज का सातेंतो घोड़ा
- ब्यारह सप्तों का देश

$\Rightarrow$  अधिक साहनी- : इरोड़ा

३८४

⇒ मोल रेकिएशन:

## अधिकारी वैद कमार

न अनि वला कल

⇒ सुरेन्द्र वर्मा :- अधिकारी से परे

• अपर स पर  
• मुझे चांद चाहिए

⇒ विनोद शुक्ल—: दीवार में एक खिड़की रहती थी।

⇒ अशपाल :- : दादा कामेड़

અમિતા

: सूर्यो सूर्य

: मेरी तेरी असकी बात

→ \* हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध महिला अपन्यासकार

→ हिन्दी भाषा की पहली महिला उपन्यासकारः साध्वी सती अबला

# ROJGAR WITH ANKIT

⇒ शशिष्ठा शास्त्री → श्रमसंतास

⇒ कृष्णा सोबती :-  
: जिंदगीनगा  
: मित्री मरजानी  
: दिलो दानिश  
: डार से बिलुड़ी

⇒ अल्पा व्यावधी :-

: कलिकथा : याथा वर्डिफ्स  
: गेप काढ़वरी

⇒ चिता मुद्गाल :-  
: एक जमीन अपनी  
: आदाँ

⇒ मैंत्रेयी पुण्य :-  
: अल्मा क्षूतरी  
: इद्धनम्

⇒ प्रभा खेतान :-  
अपने- अपने चहरे

⇒ रजनी गुप्ता :-  
कुल जमा वीस

⇒ मदुला गर्गी :-  
: चित्तलकालरा  
कठगुलाब

⇒ मनु भण्डारी :-  
: आपका घरी  
: महाओज  
: यही सच है  
: एक ऊँचे मुख्कान

⇒ ममता फालिया :-  
दुक्खम्, सुक्खम्  
बैबर

⇒ नालिया शर्मी :-  
ठीकरे नी भँगनी  
कुइयाजान  
सात नदियों ले समुद्र

→ स्त्रियों कहानी

→ रामचंद्र मुक्ति के अनुसार हिन्दी की पहली कहानी किशोरीलाल गोस्वामी

# ROJGAR WITH ANKIT

इतर चित्र 'इन्दुमती' है।

⇒ मुंशी प्रेमचन्द की पहली कहानी - : श्वेतदुनिया व हुस्ते वतन (1908)

⇒ मुंशी प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह - : जीवि वतन (इकलानियों का संग्रह) भाषा - अंग्रेजी

- (1). थही मेरा वतन है
- (2). सिल ए मातम (शोक का पुरस्कार)
- (3). सांसारिक श्रीर केश प्रेम
- (4). दुनिया जा मर्वैस अनमोल वतन
- (5). शेख मर्वार

⇒ प्रेमचन्द की हिन्दी में पहली कहानी - : 1910 'बड़े घर की बेटी'

पात्र - : आनंदी, बैनी माधव, बिंदु, श्रीरांति, सिंह

⇒ प्रेमचन्द की हिन्दी में अंतिम कहानी - : 1936 'कफन'

पात्र - : धीरु, माधव, तुष्णिया

⇒ अन्य कहानी

- (1) नगर का दोषिगा (राजीवर, चं. अलोहीढीन)
- (2) चैप्पजी
- (3) पंच परमेश्वर (बुम्मन शेख, अलगू-राजीवरी)
- (4) घूस की रात (हल्का, मुन्नी, झबरा)
- (5) दो बेंलों की कथा (झुरी, हीरा, मीती)
- (6) शतरंज के खिलाड़ी
- (7) दूध का ढाम
- (8) नरक का मार्ग
- (9) मुक्तिधन
- (10) निवासन
- (11) ईदगाह (हामिद, अमीना, बुरे)
- (12) सवा सेर गहुँ
- (13) बूढ़ी काफी

⇒ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - : लिली

: सखी

# ROJGAR WITH ANKIT

- ⇒ बेचन शर्मा 'छुय' :- नॉकलेट
  - ⇒ मोहन रामेश :- मनवे का मालिक
  - ⇒ श्रीष्म साहनी :- चीफ की दातत
  - ⇒ कमलेश्वर :- जॉर्ज पंचम जी नान
  - ⇒ पंद्रधर शर्मा 'गुरुरी' :- थसने कहा था
  - ⇒ जयशंकर प्रसाद :- माम (पहली कहानी)  
: सालवती (अंतिम कहानी)  
: आकाश द्वीप  
: इन्द्रजाल  
: प्रतिष्ठान  
: दुर्घाटा
  - ⇒ राहुल सांकृत्यायन :- बोलगा से गंगा तक  
सतमी के बच्चे
  - ⇒ भगवती-करण वर्मा :- इंस्टालमेंट
  - ⇒ उपेन्द्र नाथ काश्क :- पिंजरा
  - ⇒ अमृत बाल नागर :- एक दिल हजार अफसोने
  - ⇒ अब्दीय :- विपद्धगा
  - ⇒ जैनेन्द्र :- फाँसी
  - ⇒ धर्मविरभाती :- स्पष्टि  
: मुर्दे आ गाँव  
: चाँद और ट्रॉट हुए लोग
- ← महिला कहानीकार-**
- पत्ती महिला कहानीकार :- रजिन्द्र बाला धीष → भाई - वीहन
- स्पना :-  
दुलाईवाली  
→ हृष्ण परीक्षा

## ROJGAR WITH ANKIT

- ⇒ सुभद्रा कृष्णारी चौहान- : लिखित जोति
- ⇒ कृष्णा सीबती- : छात्वारी के घरे
- ⇒ ममता जालिया- : मुखबोटा  
: छुटकारा

ROJGAR WITH ANKIT

# ROJGAR WITH ANKIT

## हिन्दी साहित्य

### निर्वाचन

### PART-11

- हिन्दी भाषा में निर्वाचन के प्रत्यक्ष --:  
    : भारतेन्दु हरिगचन्द्र<sup>वर्ष 1935</sup>  
    : भारतवर्षी की उन्नति के से सकती है?  
    : कश्मीर कुसुम  
    : संगीत खार
- ⇒ बालकृष्ण भट्टर (हिन्दी भाषा का स्टील)  
    : बालदेव  
    : बाल-विवाह
- ⇒ प्रताप नरायण मिश्र (हिन्दी भाषा का एडीसन)  
    : रघुआमद  
    : नास्तिक  
    : सीनि का डैडा
- ⇒ सरदार पूर्ण सिंह : भाचरण की सङ्घर्षता  
    : मजदूरी और प्रेम  
    : जन्मची शिक्षा  
    : कन्यादान
- ⇒ चन्द्रधर शर्मा 'बुलबुल' : मोरसि भाष्टु कुठात  
    : कदुब्रा धगी
- ⇒ महावीर प्रसाद छिपेकी : महाकाली भाषा का प्रभात वर्णन  
    : प्रभात
- ⇒ बाल मुकुंद गुप्त : शिवशम्भू का चिट्ठा
- ⇒ चिन्तामणि निर्वाचन संग्रह :-  
    ग्रन्थ-1 → रामचंद्र शुक्ल (1939)  
    ग्रन्थ-2 → अविज्ञानार्थ प्रताप (1945)  
    ग्रन्थ-3 → नामवर सिंह (1983)  
    ग्रन्थ-4 → भौमप्रकाश सिंह तथा कुसुम चतुर्वेदी (1902-1939)

# ROJGAR WITH ANKIT

- ⇒ बाबू गुलाब राय : हलुआ कलत  
: मैरी असफलता
- ⇒ शिवपूजन सहय : (भाषा का जादूगर)  
: कुट्ठ
- ⇒ महादेवी वर्मी : क्षणदा  
: भृत्यला की कड़ियाँ
- ⇒ हजारी प्रसाद छिवेदी : कुट्ठ  
: नरपति क्यों बढ़ते हैं?  
: अवौक के फूल  
: कल्पलता  
: आलीक पर्व
- ⇒ रामवृष्ण बैनीपुरी : गेहूँ और गुलात
- ⇒ रामधारी सिंह दिनकर : रेती के फूल  
: आद्वनारीश्वर  
: वट पीपल  
: मिट्टी की धोर
- ⇒ विद्यानिवास मिश्र : तुम चंदन हम पानी  
: छिलकन की छाँह
- ⇒ धर्मवीर भारती : पश्यन्ती  
: ठेले पर हिमालय
- ⇒ अस्त्रेय : त्रिशंकु
- ⇒ हरिबंकर परसाई : ठिरुता दुआ गणतंत्र  
: वैद्यमानी की पसू  
: पगड़ियों का जमाना

# ROJGAR WITH ANKIT

→ आलोचना ग्रंथ

→ प्रधाम आलोचक : भारतेन्दु हरिशचन्द्र

↳ प्रालोचना 'नाटक' लिखा।

⇒ गिरुवर्णु : हिन्दी नाटक

⇒ श्याम सुंदर बास : साहित्य लेखन

: माला रस्ता

: रूपक रहस्य

⇒ रामचंद्र शुक्ल : भगवगीत सार

: रस मीमांसा

: जयसी घन्थावली

⇒ धर्मवीर भारती : लिट् याहित्य

⇒ शिवदान सिंह-चौहान : हिन्दी याहित्य के ४० वर्ष

→ आत्मकथा

→ पहली आत्मकथा : अट्टकथा (लेखक : बलारसी जैन)

→ पहली प्रशिद्ध आत्मकथा : गेरी आत्म कहानी (श्याम सुंदर बास)

⇒ राहुल सांकृत्याशन : मेरी जीतन यात्रा

⇒ अमिकदन्त रवास : निज वृत्तांत

→ याहित्य की पहली आत्मकथा, लेखिका : जानकी देवी बजाज

⇒ ममता कालिया : किन्तु शही मे कितनी लाद  
↳ रचना : मेरी जीतन यात्रा

⇒ कृष्णा अभिलेखी : लगता नहीं है दिल मेरा

⇒ मन्तु भण्डारी : एक कहानी थह भी

⇒ प्रभा चैतार्ण : प्रभा से अनन्या

⇒ मंत्रेयी गुप्ता : गुडिया भीतर गुडिया

# ROJGAR WITH ANKIT

अन्य

⇒ हरिवंश रथ त्रयीन : नीड़ का निर्माण हिर  
: क्या भूल करा थाद कहे ?  
: लखरे से दूर

⇒ यशपाल : सिंहवलोकन (भाग-I, II, III)

⇒ अमिष साहनी : आज के अतीत

⇒ अमृतलाल नागर : दुकड़े दुकड़े दास्तान

\* **जीवनी**

⇒ अमृत रथ : कलम का सिपाही

⇒ राहुल सांकृत्यायन : स्टालिन की जीवनी  
: लेनिन की जीवनी  
: काल मार्क्स की जीवनी  
: माओआल्से तुंग की जीवनी

⇒ राम कप्सल रथ : शिखर से सफर तक

\* **यात्रा साहित्य**

⇒ राहुल सांकृत्यायन : मेरी तिक्कत यात्रा  
: मेरी लट्ठारख यात्रा  
: चीन में क्या देखा ?  
: किन्नर देश में  
: घुमक्कड़ शास्त्र  
: मेरी यात्रा के पन्ने

⇒ यशपाल : रस के 46 दिन

⇒ भालेन्दु हरिश्चन्द्र : यरयू पार जी यात्रा  
: लखनऊ की यात्रा  
: महादावल जी यात्रा

# ROJGAR WITH ANKIT

- ⇒ रामवृष्ण बेनीपुरी : पेरो में कंख ताँदाकर  
: कड़ते चलो उड़ते चलो
- ⇒ रामदासी दिनकर : मेरी धात्राएँ  
: देश- विदेश
- ⇒ मोहन राजेश : अग्निरी छट्टान तक
- ⇒ धर्मवीर भारती : थोड़े पूरोष की
- ⇒ सचिनदानन्द सिन्हा : और थायावर थाद रहेगा  
: एक बूँद सहस्रा उफली
- ⇒ नरेश मेहता : कितना अकेला आकाश
- \* रेखाचित्र
- ⇒ रामवृष्ण बेनीपुरी : साठी की मुरते
- ⇒ महादेवी पर्मी : मेरा परिवार  
: अतीत के चलाचित्र  
: स्मृति की रेखाएँ
- ⇒ विष्णु प्रभाकर : कुछ शहद
- ⇒ माखनलाल यतुर्वेदी : समय के पाँव
- ⇒ श्रीमसेन त्यागी : भ्राद्रमी से आदमी तक
- \* संस्मरण
- ⇒ पद्मप्रिंद शर्मी : पद्म पराग  
: प्रबन्ध मेंजरी
- ⇒ कमलेश्वर : मेरे हमद्रम मेरे लेस्ता

# ROJGAR WITH ANKIT

- ⇒ कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' : जिंदगी गुरकाई
- ⇒ अजैथ : स्मृति लेखा
- ⇒ रामबृहस्पति पुरी : जंगली भोज बीवरे
- ⇒ कृष्णा सोबंती : हम स्थानत
- ⇒ विद्या निवास मिश्र : चिड़िया रेन बसरा
- ⇒ हरिवंश राय 'बच्चन' : नये पुराने झरोखे

## \* **रिपोर्टर्ज**

↳ जनक -: शिवदान सिंह चौहान

↓  
1938 में 'लहमपुरा' लिखा

→ मौत के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई

- ⇒ चंडी प्रसाद सिंह : धुतराज की यात्रा

## \* **डायरी**

- ⇒ जनक -: राम शर्मा (सेवाग्राम की डायरी)

- ⇒ हरिवंश राय 'बच्चन' : प्रवासी की डायरी

## \* **साक्षात्कार**

- ⇒ जनक -: प० कनारसीलाल घटुवेदी

↳ रचना -: रत्नाकर जी से बातचीत

- ⇒ भीष्म साहनी -: मेरे साक्षात्कार



# UPSI 2023

विनायक छेष

# हिन्दी

## हिन्दी साहित्य

12

LIVE 14-02-2024 08:00 AM



# भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार



## ज्ञानपीठ पुरस्कार – संस्थापक – शान्ति प्रसाद जैन

भारतीय ज्ञानपीठ श्री मती रमा जैन न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। इसका गठन 22 मई 1961 को हुआ था। भारत का कोई भी नागरिक जो आठवीं अनुसूची में बताई गई 22 भाषाओं में से किसी भाषा में लिखता हो इस पुरस्कार के योग्य है। इस पुरस्कार में 2005 में 7 लाख रुपये तथा वर्तमान में 11 लाख रुपये की धनराशि, प्रशस्तिपत्र और वागदेवी की कांस्य प्रतिमा दी जाती है। 1982 तक यह पुरस्कार लेखक की किसी एक कृति के लिए दिया जाता था। लेकिन इसके बाद से यह लेखक के भारतीय साहित्य में संपूर्ण योगदान के लिए दिया जाने लगा। (भाषा - 22 + 1)

रचना	साहित्यकार	भाषा	वर्ष
ओटक्कुषल (बाँसुरी)	गोविन्द शंकर कुरुप	मलयालम	1965
गणदेवता	तारा शंकर बंद्योपाध्याय	बांग्ला	1966
चिदम्बरा	सुमित्रा नन्दन पंत	हिन्दी	1968
गुलेनग्मा	फिराक गोरखपुरी	उर्दू	1969
उर्वशी	रामधारी सिंह दिनकर	हिन्दी	1972
प्रथम प्रतिश्रुति	आशापूर्णा देवी	बांग्ला	1976
कितनी नावों में कितनी बार	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय	हिन्दी	1978

कागज ते कैनवास	अमृता प्रीतम	पंजाबी	1981
यामा	महादेवी वर्मा	हिन्दी	1982
सम्पूर्ण साहित्य	नरेश मेहता	हिन्दी	1992
सम्पूर्ण साहित्य	MT वासुदेव नायर	मलयालम	1995
सम्पूर्ण साहित्य	निर्मल वर्मा	हिन्दी	1999
सम्पूर्ण साहित्य	कुंवर नारायण	हिन्दी	2005
सम्पूर्ण साहित्य	अमरकांत एवं श्रीलाल शुक्ल	हिन्दी	2009
सम्पूर्ण साहित्य	केदारनाथ सिंह	हिन्दी	2013

सम्पूर्ण साहित्य	कृष्णा सोबती	हिन्दी	2017
द शैडो लाइन्स	अमिताभ घोष	अंग्रेजी	2018
साहित्य क्षेत्र में	नीलमणि फूकन	असमिया	2021
साहित्य क्षेत्र में	दामोदर मौउजो	कोंकणी	2022

## साहित्य अकादमी पुरस्कार



साहित्य अकादमी पुरस्कार – साहित्य अकादमी पुरस्कार सन् 1954 ई. से ही प्रदान किया जाता है। साहित्य अकादमी प्रतिवर्ष प्रमुख भाषाओं में से प्रत्येक में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक कृति को पुरस्कार प्रदान करती है। वर्तमान समय में यह पुरस्कार 24 भाषाओं में प्रदान किया जा रहा है।

यह 22 भाषाओं के लिए + 2 भाषा (अंग्रेजी और राजस्थानी)

साहित्य अकादमी पुरस्कार में प्रत्येक विजेता को एक लाख रुपये, एक प्रशस्ति पत्र (ताम्रफलक) और शॉल दिये जाते हैं। पुरस्कार की स्थपाना

के समय पुरस्कार राशि 5,000 रुपये थी, जो सन् 1983 में बढ़ाकर 10,000 रुपये कर दी गई, फिर सन् 1998 में बढ़ाकर इसे 25,000 रुपये कर दिया गया। सन् 2001 से यह राशि 40,000 रुपये की गई थी। सन् 2003 से यह राशि 50,000 रुपये की गई तथा सन् 2010 से यह राशि 1 लाख रुपये कर दी गई है।

रचना	साहित्यकार	वर्ष
हिमतरंगिनी (काव्य)	माखनलाल चतुर्वेदी	1955 ई.
पद्मावत : संजीवनी व्याख्या (व्याख्या)	वासुदेवशरण अग्रवाल	1956 ई.
बुद्ध धर्म दर्शन (दर्शन)	आचार्य नरेंद्र देव	1957 ई.
मध्य एशिया का इतिहास (इतिहास)	राहुल सांकृत्यायन	1958 ई.
संस्कृति के चार अध्याय (भारतीय संस्कृति)	रामधारी सिंह दिनकर	1959 ई.

कला और बूढ़ा चाँद (काव्य)	सुमित्रा नन्दन पंत	1960 ई.
भूले बिसरे चित्र (उपन्यास)	भगवतीचरण वर्मा	1961 ई.
	कोई पुरस्कार नहीं	1962
प्रेमचंद : कलम का सिपाही (जीवनी)	अमृत राय	1963 ई.
आँगन के पार द्वार (काव्य)	अज्ञेय	1964 ई.
रस-सिद्धांत (विवेचना)	नगेन्द्र	1965 ई.
मुक्तिबोध (उपन्यास)	जैनेन्द्र कुमार	1966 ई.

अमृत और विष (उपन्यास)	अमृतलाल नागर	1967 ई.
दो चट्टानें (काव्य)	हरिवंश राय बच्चन	1968 ई.
रागदरबारी (उपन्यास)	श्रीलाल शुक्ल	1969 ई.
निराला की साहित्य साधना (जीवनी)	रामविलास शर्मा	1970 ई.
कविता के नए प्रतिमान (आलोचना)	नामवर सिंह	1971 ई.
बुनी हुई रस्सी (काव्य)	भवानी प्रसाद मिश्र	1972 ई.

आलोक पर्व (निबन्ध)	हजारी प्रसाद द्विवेदी	1973 ई.
मिट्टी की बारात (काव्य)	शिवमंगल सिंह सुमन	1974 ई.
तमस (उपन्यास)	भीष्म साहनी	1975 ई.
मेरी तेरी उसकी बात (उपन्यास)	यशपाल	1976 ई.
चुका भी हूँ नहीं मै (काव्य)	शमशेर बहादुर सिंह	1977 ई.
उतना वह सूरज है (काव्य)	भारत भूषण अग्रवाल	1978 ई.
कल सुनना मुझे (काव्य)	सुदाम पांडेय धूमिल	1979 ई.
जिन्दगीनामा -जिन्दा रुख (उपन्यास)	कृष्णा सोबती	1980 ई.

ताप के ताये हुए दिन (काव्य)	त्रिलोचन	1981 ई.
विकलांग श्रद्धा का दौर (व्यंग)	हरिशंकर परसाई	1982 ई.
खूँटियों पर टँगे लोग (काव्य)	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	1983 ई.
लोग भूल गए हैं (काव्य)	रघुवीर सहाय	1984 ई.
कब्बे और काली पानी (कहानी संग्रह)	निर्मल वर्मा	1985 ई.
अपूर्वा (काव्य)	केदारनाथ अग्रवाल	1986 ई.
अरण्या (काव्य)	नरेश मेहता	1988 ई.

अकाल में सारस (काव्य)	केदारनाथ सिंह	1989 ई.
नीला चाँद (उपन्यास)	शिव प्रसाद सिंह	1990 ई.
मैं वक्त के हूँ सामने (काव्य)	गिरिजाकुमार माथुर	1991 ई.
ढाई घर (उपन्यास)	गिरिराज किशोर	1992 ई.
अर्द्धनारीश्वर (उपन्यास)	विष्णु प्रभाकर	1993 ई.
कहीं नहीं वहीं (काव्य)	अशोक वाजपेयी	1994 ई.
कोई दूसरा नहीं (काव्य)	कुँवर नारायण	1995 ई.
मुझे चाँद चाहिए (उपन्यास)	सुरेन्द्र वर्मा	1996 ई.

अनुभव के आकाश में चाँद (काव्य)	लीलाधर जगूड़ी	1997 ई.
नए इलाके में (काव्य)	अरुण कमल	1998 ई.
दीवार में एक खिड़की रहती थी (उपन्यास)	विनोद कुमार शुक्ल	1999 ई.
हम जो देखते हैं (काव्य)	मंगलेश डबराल	2000 ई.
कलिकथा वाया बाईपास (उपन्यास)	अलका सरावगी	2001 ई.
दो पंक्तियों के बीच (काव्य)	राजेश जोशी	2002 ई.

कितने पाकिस्तान (उपन्यास)	कमलेश्वर	2003 ई.
दुष्प्रक्र में सृष्टा (काव्य)	वीरेन डंगवाल	2004 ई.
क्याप (उपन्यास)	मनोहर श्याम जोशी	2005 ई.
संशयात्मा (काव्य)	ज्ञानेन्द्रपति	2006 ई.
इन्हीं हथियारों से (उपन्यास)	अमरकान्त	2007 ई.
कोहरे में कैद रंग (उपन्यास)	गोविन्द मिश्र	2008 ई.
हवा में हस्ताक्षर (काव्य)	कैलाश वाजपेयी	2009 ई.
मोहन दास (कहानी)	उदय प्रकाश	2010 ई.

रेहन पर रग्धू (उपन्यास)	काशीनाथ सिंह	2011 ई.
पत्थर फेंक रहा हूँ (काव्य)	चंद्रकांत देवताले	2012 ई.
मिलजुल मन (उपन्यास)	मूढ़ला गांग	2013 ई.
विनायक (उपन्यास)	रमेश चन्द्र शाह	2014 ई.
आग की हँसी (काव्य)	रामदरश मिश्र	2015 ई.
पारिजात (उपन्यास)	नासिरा शर्मा	2016 ई.
विश्व मिथक सरित सागर (आलोचना)	रमेश कुंतल मेघ	2017 ई.

पोस्ट बॉक्स नं. 203 – नाला सोपारा (उपन्यास)	चित्रा मुद्रल	2018 ई.
छीलते हुए अपने को (कविता)	नन्दकिशोर आचार्य	2019 ई.
टोकरी में दिगंत-थेरीगाथा:2014 (कविता)	अनामिका	2020 ई.
सम्राट अशोक (नाटक)	दया प्रकाश सिन्हा	2021 ई.
तुमड़ी के शब्द (कविता)	बद्री नारायण	2022 ई.
मुझे पहचानो (उपन्यास)	संजीव	2023 ई.

## **व्यास सम्मान**



❖ व्यास सम्मान – व्यास सम्मान भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद दूसरा सबसे बड़ा साहित्य सम्मान है। इस पुरस्कार को 1991 ई. में के.के. बिडला फांउडेशन ने प्रारंभ किया था। इस पुरस्कार में 4 लाख रुपये नकद प्रदान किये जाते हैं। दस वर्षों के भीतर प्रकाशित हिन्दी की कोई भी साहित्यिक कृति इस पुरस्कार की पात्र हो सकती है।

रचना	रचनाकार	वर्ष
भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी	रामविलास शर्मा	1991 ई.
आत्मजयी	कुँवर नारायण	1995 ई.
बिस्तामपुर का संत	श्रीलाल शुक्ल	1999 ई.
पहला गिरमिटिया	गिरिराज किशोर	2000 ई.
आवाँ	चित्रा मुद्रल	2003 ई.
कठगुलाब	मृदुला गर्ग	2004 ई.

समय सरगम	कृष्णा सोबती	2007 ई.
एक कहानी यह भी	मनू भण्डारी	2008 ई.
आम के पत्ते	रामदरश मिश्र	2011 ई.
न भूतो न भविष्यति	नरेन्द्र कोहली	2012 ई.
क्षमा	सुनीता जैन	2015 ई.
दुक्खम - सुक्खम	ममता कालिया	2017 ई.
जितने लोग उतने प्रेम	लीलाधर जगूड़ी	2018 ई.
कागज की नाव	नासिरा शर्मा	2019 ई.

पाटलिपुत्र की साम्राज्ञी (उपन्यास)	शरद पगारे	2020 ई.
महाबली (नाटक)	असगर वजाहत	2021 ई.
पागलखाना (व्यंग उपन्यास)	डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी	2022 ई.
यादें, यादें और यादें (संस्मरण)	पुष्पा भारती	2023 ई.

मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार

शुरूआत — 1923

संस्थापक — पुरुषोत्तम दास टंडन

प्रथम पुरस्कृत व्यक्ति — पदम सिंह शर्मा

सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार

शुरूआत — 1965

प्रथम पुरस्कृत व्यक्ति — सुमित्रानन्दन पंत (लोकायतन)

भारत भारती पुरस्कार

शुरूआत — 1982

पुरस्कार राशि — 5 लाख 2 हजार रुपये

प्रथम पुरस्कृत व्यक्ति — महादेवी वर्मा

शलाका सम्मान

शुरूआत — 1986—87

प्रथम पुरस्कृत — डॉ. रामविलास शर्मा

सेक्सरिया पारितोषिक

शुरूआत — 1931

प्रथम पुरस्कृत — सुभद्रा कुमारी चौहान (मुकुल कविता)

महादेवी वर्मा (नीरजा कविता)

## हिन्दी महत्वपूर्ण सभा और संस्थाएँ

नागरी प्रचारिणी सभा	— 1893 — वाराणसी	— श्याम सुन्दर दास
		रामनारायण मिश्र
		शिवकुमार सिंह
हिन्दी साहित्य सम्मेलन	— 1910 — प्रयागराज	— मदन मोहन मालवीय
प्रगतिशील लेखक संघ	— 1936 — लखनऊ	— प्रेमचन्द्र
साहित्य अकादमी	— 1954 — दिल्ली	— पं जवाहर लाल नेहरू

## विश्व हिन्दी सम्मेलन

क्रम	वर्ष	शहर	देश
पहला	10-14 जनवरी, 1975	नागपुर	भारत
दूसरा	28-30 अगस्त, 1976	पोर्टलुईस	मॉरीशस
तीसरा	28-30 अक्टूबर, 1983	दिल्ली	भारत
चौथा	02-04 दिसम्बर, 1993	पोर्टलुईस	मॉरीशस

पांचवाँ	04-08 अप्रैल, 1996	पोर्ट ऑफ स्पेन	त्रिनिदाद एवं टोबेर्गो
छठा	14-18 सितम्बर, 1999	लन्दन	यूनाइटेड किंगडम
सातवाँ	06-09 जून, 2003	पारामारिबो	सूरीनाम
आठवाँ	13-15 जुलाई, 2007	न्यूयार्क	अमेरिका
नवाँ	22-24 सितम्बर, 2012	जोहान्सवर्ग	दक्षिण अफ्रीका
दसवाँ	10-12 सितम्बर, 2015	भोपाल	भारत

म्यारहवाँ	18-20 अगस्त 2018	पोर्टलुईस	मॉरीशस
बारहवाँ	15-17 फरवरी 2023	नाडी	फिजी

POJGAR WITH ANKIT